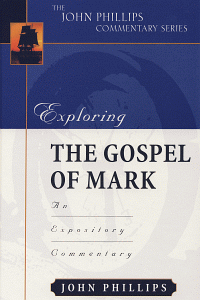
जॉन फिलिप्स (कमेंट्री) टीका श्रृंखला

मरकुस रचित सुसमाचार की व्याख्या

जॉन फिलिप्स द्वारा लिखित एक व्याख्यात्मक टीका



©2004 by John Phillips. Database © 2009 WORDsearch Corp.

[](http://www.kregel.com/)

[WORDsearch Corp.](http://wordsearchbible.com/)

**परिचय**

यूहन्ना मरकुस यरूशलेम की एक धनी स्त्री का पुत्र था जिसका घर प्रारम्भिक कलीसिया की प्रार्थना सभाओं में से एक था (प्रेरितों 12:12, 25)। मरकुस नि:संदेह कलीसिया के सभी प्रारम्भिक अगुवों को जानता था। उसके माता-पिता न केवल यहूदी थे बल्कि वह बरनबास (कुलु. 4:10) का रिश्तेदार भी था,जो प्रारम्भिक यहूदी कलीसिया के अगुवों में से एक था। पतरस मरकुस को अपना “पुत्र” कहता है (1 पत. 5:13), या तो इसलिये क्योंकि उसने उसकी प्रभु में अगुवाई की थी या फिर इसलिये क्योंकि वह उसके चेलों में से एक था।

पौलुस और बरनबास के साथ मरकुस उनकी पहली मिशनरी यात्रा पर पिरगा तक गया, जहाँ उसने उन्हें छोड़ दिया और यरूशलेम लौट आया था। ऐसा लगता है कि वह मिशनरी कार्य के बारे में निराश हो गया था और घटनाओं के मोड़ से भयभीत था। जब वह दल साइप्रस द्वीप से मुख्य भूभाग पर पहुँचा, तो मरकुस ने स्पष्ट रूप से देखा कि शाऊल ने, जो अब स्वयं को पौलुस कह रहा था, चाचा बरनाबास को पूरी तरह से ढक लिया था। इसके अलावा, पौलुस एक ऐसा यात्रा कार्यक्रम प्रस्तावित कर रहा था जो उस मिशनरी दल को किलिकिया के फाटकों, तोरस पर्वतों और गलातिया में ले जाएगा। मरकुस ऐसे किसी भी कार्य से जुड़े खतरों से भयभीत था। आगे लुटेरे, जंगली पशु और जोखिमभरे क्षेत्र थे। मरकुस वापस लौट गया (प्रेरितों 12:25; 13:5, 13)। वह शाऊल और बरनबास का “सेवक” (सेवादार) बनने, उनके कार्यों को पूरा करने और कामों को करने के लिये इस मिशनरी कार्य पर आया था। परन्तु यह असहनीय हो गया था! अत: वह घर वापस चला गया।

कुछ समय बाद, जब पौलुस ने बरनबास से दूसरी मिशनरी यात्रा के बारे में सलाह ली, तो बरनबास इस योजना से सहमत हो गया। हालाँकि, वह फिर से मरकुस को साथ ले जाना चाहता था। नि:संदेह उसने यह तर्क दिया कि उसका जवान भतीजा खेदित है, कि उसने अपना सबक सीख लिया है, और उसे दूसरा अवसर मिलना चाहिए, परन्तु पौलुस ने ऐसी किसी भी बात पर विचार करने से इन्कार कर दिया। इस मामले पर उसके और बरनबास के बीच इतनी तीखी असहमति हो गई कि, अंत में, उन्होंने अलग-अलग मार्गों पर जाने का निर्णय लिया। पौलुस अपने दूसरे मिशनरी कार्य पर निकल पड़ा, और बरनबास मरकुस को अपने साथ वापस साइप्रस ले गया, जहाँ वह सबसे परिचित था और जहाँ उसकी अपनी सम्पत्ति भी हुआ करती थी (प्रेरितों 15:36-39)।

ऐसा नहीं है कि पौलुस ने मरकुस को पूरी तरह से ठुकरा दिया था। उदाहरण के लिये, हमें बताया गया है कि रोम में उसकी पहली कैद के समय मरकुस उसके साथ था (कुलु. 4:10; फिले. 24)। बाद में, वह बेबीलोन में था, जहाँ से उसने पतरस के साथ मिलकर विभिन्न स्थानों पर मसीही विश्वासियों को अभिवादन भेजे (1 पत. 5:13)। रोम में पौलुस की दूसरी और अंतिम कैद के समय, मरकुस इफिसुस में तीमुथियुस के साथ था। पौलुस ने अपनी कैद से तीमुथियुस को पत्री लिखी और उससे आग्रह किया कि वह जितनी जल्दी हो सके, उसके पास आ जाए। उसे मरकुस के साथ-साथ पौलुस का बागा और उसकी पुस्तकें लानी थीं। पौलुस ने कहा, “सेवा के लिये वह मेरे बहुत काम का है” (2 तीमु. 4:11)। मरकुस एक बार सेवक के रूप में असफल हो गया था, परन्तु अब उसने सेवक के रूप में एक प्रतिष्ठा अर्जित कर ली थी।

पौलुस के द्वारा मरकुस की निन्दा और उसके द्वारा मरकुस की प्रशंसा के अंतराल में कही, सम्भवत: किसी ने पौलुस को एक हस्तलिपि देकर कहा होगा, “पौलुस, यह लो, इसे पढ़ो।”

हम कल्पना कर सकते हैं कि पौलुस उस हस्तलिपि को लगातार बढ़ती रूचि के साथ पढ़ रहा है। हम उसे यह कहते हुए सुन सकते हैं,“यह वास्तव में बहुत बढ़िया है! मसीह का एक सच्चा सुसमाचार! इसे किसने लिखा है? क्या इसे पतरस ने लिखा है?”

उसे बताया गया होगा, “नहीं! इसे यूहन्ना मरकुस ने लिखा है।”

पौलुस ने कहा होगा, “ठीक है! आखिरकार बरनबास मरकुस के बारे में सही था।”

एक प्राचीन परम्परा कहती है कि पतरस ने मरकुस को मिस्र देश भेजा, जहाँ उसने सिकंदरिया की कलीसिया की स्थापना की थी और वह उस कलीसिया का बिशप बन गया था। ऐसा लगता है कि अंत में उसे उस प्रसिद्ध नगर में शहादत को सहन करना पड़ा।

मरकुस रचित सुसमाचार में यीशु को परमेश्वर के सिद्ध *सेवक* के रूप में चित्रितकरना उचित जान पड़ता है। मरकुस रचित सुसमाचार की मुख्य आयत कहती है, “क्योंकि मनुष्य का पुत्र इसलिये नहीं आया कि उसकी सेवा टहल की जाए, पर इसलिये आया कि आप सेवा टहल करे, और बहुतों की छुड़ौती के लिये अपना प्राण दे।” (मर. 10:45)। यह पाठ उसके सुसमाचार को दो भागों में विभाजित करता है। सबसे पहले, हम प्रभु यीशु को *सेवा* में अपना जीवन देते हुए देखते हैं (अध्याय 1-10), फिर हम उसे *बलिदान में* अपना जीवन देते हुए देखते हैं(अध्याय 11-16)।

यह व्यापक रूप से स्वीकार किया जाता है कि मरकुस रचित सुसमाचार पतरस की शिक्षा को प्रतिबिम्बित करता है। कलीसिया के पादरी पापियास (60-150 ईस्वी) ने भी इस बात की पुष्टि की है। पापियास के बारे में कहा जाता है कि उसने यह जानकारी 100 ईस्वी के बहुत समय बाद प्राप्त नहीं की थी और उसने इसे एक ऐसे व्यक्ति से प्राप्त किया जो प्रेरितों का समकालीन था। पापियास ने मरकुस को “पतरस का अनुवादक” कहा, और सम्भवत: इसलिये कहा होगा क्योंकि पतरस ने अपनी मूल अरामी भाषा में उपदेश एवं शिक्षा दी और मरकुस ने उसके वचनों का यूनानी भाषा में अनुवाद किया।[1]

मरकुस रचित सुसमाचार के आंतरिक साक्ष्य बताते हैं कि यह मुख्य रूप से रोमियों के लिये ही लिखा गया था, ठीक वैसे ही जैसे मत्ती रचित सुसमाचार यहूदियों के लिये, लूका रचित सुसमाचार यूनानियों के लिये और यूहन्ना रचित सुसमाचार कलीसिया के लिये लिखा गया था। मरकुस रचित सुसमाचार में तुलनात्मक रूप से पुराने नियम के उद्धरण (वचन) कम मिलते हैं। यह मूसा की व्यवस्था को अनदेखा करते हुए यहूदी रीति-रिवाजों की व्याख्या करता है, और यह इस प्रकार की बातें बताता है कि फसह के मेम्ने को कब मारा गया था, और इत्यादि। ये सभी तथ्य गैर-यहूदी पाठकों की ओर संकेत करते हैं। विद्वान लोग हमें बताते हैं कि मरकुस रचित सुसमाचार की यूनानी भाषा काम चलाऊ है, परन्तु रोम में कुछ प्रारम्भिक मसीही मण्डलियों का गठन करने वाले दासों और स्वतंत्र लोगों के लिये यह सराहनीय रूप से उपयुक्त है।

मरकुस रचित सुसमाचार सम्भवत: 50 ईस्वी के आसपास लिखा गया था, जो इसे नये नियम के सबसे प्रारम्भिक लेखनों में से एक बनाता है। यह कैसरिया में दिए गए पतरस के उपदेश का विस्तार है (प्रेरितों 10:34-43)। मरकुस रचित सुसमाचार यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की सेवकाई से आरम्भ होता है और प्रभु यीशु के स्वर्गारोहण के साथ समाप्त होता है। ग्राहम स्क्रोगी का यह सुझाव है कि मरकुस उन आधा दर्जन लोगों में से एक था जो उस ऐतिहासिक अवसर पर कुरनेलियुस के घर पतरस के साथ गए थे, जब कलीसिया का द्वार अन्यजातियों के लिये खोला गया था (प्रेरितों 10-11 )।

मरकुस ने अपना सुसमाचार उस बिंदु से आरम्भ किया, जब पतरस ने स्वयं को प्रभु के साथ जोड़ लिया था। ऐसा प्रतीत होता है कि उसे विशेष रूप से प्रभु के गलील की सेवकाई में रुचि थी, विशेष रूप से कफरनहूम में उसकी गतिविधियों में, जहां पतरस रहता था। अत: इस सुसमाचार को लिखने वाला हाथ मरकुस का था; बोलने वाली आवाज पतरस की आवाज है।[2] मरकुस रचित सुसमाचार में शामिल 678 आयतों में से, 285 में, पूर्णरूप से या आंशिक रूप से, मसीह के वास्तविक वचन मिलते हैं। इसके अलावा, मरकुस रचित सुसमाचार का एक बहुत बड़ा हिस्सा मत्ती और लूका रचित सुसमाचारों में शामिल किया गया है।

ग्राहम स्क्रोगी ने मरकुस रचित सुसमाचार को सेवा के एक “दिन” के रूप में चित्रित किया है:

परिचय (1:1-13)। एक दिन पहले

(क) अभिनन्दन (1:14-45)। भोर

(ख) विरोध (2:1-3:6)। सुबह

(ग) अलगाव (3:7-6:6)। दोपहर से पहले

(घ) समापन (6:7-8:26)। दोपहर

(ग) निर्देश (8:27-10:52)। दोपहर के बाद

(ख) दोषी ठहराया जाना (11:1-13:37)। संध्या

(क) क्रूस पर चढ़ाया जाना (14:1-15:47)। रात्रि

निष्कर्ष (16:1-20)। अगला दिन[3]

इस सुसमाचार की व्याख्या करते हुए, मैंने बाइबल के पाठ पर एक विस्तृत, विश्लेषणात्मक, अनुप्रासपूर्ण रूपरेखा और आयत-दर-आयत टिप्पणी लिखी है। तो आइए, और मरकुस रचित सुसमाचार की खोज करें।

**भाग 1.   
सेवक अपना जीवन सेवा में दे देता है**

मरकुस 1:1-10:52

**खंड 1—रूपरेखा**

**खंड 1: सेवक का कार्य (1:1-3:35)**

1. सेवक का काम आरम्भ हुआ (1:1-45)
   1. रहस्य (1:1-2)
      1. एक शुरुआत (1:1)
         1. सेवक की आवश्यक मानवता (1:1a -b)
            1. वह कौन था: यीशु (1:1a)
            2. वह क्या था: मसीह (1:1b)
         2. सेवक की आवश्यक ईश्वरीयता (1:1c)
      2. एक पुस्तक (1:2)
         1. पुराने नियम के भविष्यद्वक्ता (1:2a)
         2. पुराने नियम की प्रतिज्ञा (1:2b)
   2. संदेशवाहक (1:3-4)
      1. व्यक्ति (1:3)
         1. विवरण (1:3a)
         2. निवास (1:3b)
         3. माँग (1:3c)
      2. घोषणा (1:4)
         1. इसका दृश्यमान आयाम (1:4a)
         2. इसका मौखिक आयाम (1:4b-c)
            1. मन फिराव (1:4b)
            2. छुटकारा (1:4c)
   3. भीड़ (1:5-8)
      1. यूहन्ना की सफलता (1:5)
         1. वह आया (1:5a)
         2. उसन्होंने अंगीकार किया (1:5b-c)
            1. प्रतीकात्मक रूप से (1:5b)
            2. विशेष रूप से (1:5c)
      2. यूहन्ना की सादगी (1:6)
         1. उसकी पोशाक: बाहरी दिखावे को क्रूस पर चढ़ा दिया (1:6a)
         2. उसका आहार : भूख को क्रूस पर चढ़ा दिया (1:6b)
      3. यूहन्ना का विषय (1:7-8)
         1. परमेश्वर के पुत्र के आगमन की प्रतिज्ञा (1:7)
            1. उसकी श्रेष्ठ सामर्थ्य (1:7a)
            2. उसकी श्रेष्ठ महिमा (1:7b)
         2. परमेश्वर के आत्मा के आगमन की प्रतिज्ञा (1:8)
            1. यूहन्ना का प्रतीकात्मक बपतिस्मा (1:8a)
            2. यीशु का अलौकिक बपतिस्मा (1:8b)
   4. स्वामी (1:9-13)
      1. मुलाकात (1:9)
         1. वह स्थान जहाँ से उद्धारकर्ता आया (1:9a)
         2. वह उद्देश्य जिसके लिये उद्धारकर्ता आया (1:9b)
      2. दर्शन (1:10)
         1. वह स्थान जहाँ से आत्मा आया (1:10a)
         2. वह उद्देश्य जिसके लिये आत्मा आया (1:10b)
      3. आवाज (1:11)
         1. वह स्थान जहाँ से पिता ने बात की (1:11a)
         2. वह उद्देश्य जिसके लिये पिता ने बात की (1:11b)
      4. विजय (1:12-13)
         1. एक आसाधारण रूप से अलग अनुभव (1:12)
         2. एक विशेष रूप से नीरस अनुभव (1:13a)
         3. एक पूर्णरूप से क्रूर अनुभव (1:13b)
         4. एक सम्भावित खतरनाक अनुभव (1:13c)
         5. समय-समय पर होने वाला एक सुखमयी अनुभव (1:13d)
   5. चाल (1:14-15)
      1. समय (1:14-15a)
         1. मानवीय समय (1:14)
            1. संदेशवाहक के लिये कैद (1:14a)
            2. स्वामी के द्वारा घोषणा (1:14b-c)

उसने कहाँ प्रचार किया (1:14b)

उसने क्या प्रचार किया (1:14c)

* + - 1. स्वर्ग का समय (1:15a)
    1. सत्य (1:15b-e)
       1. भविष्यद्वाणी का सत्य (1:15b)
       2. प्रमुख सत्य (1:15c-d)
          1. लोगों को दोषी ठहराना (1:15c)
          2. लोगों का हृदय परिवर्तन करना (1:15d)
       3. व्यावहारिक सत्य (1:15e)
  1. मनुष्य (1:16-20)
     1. दो मनुष्य अपने जाल डालते हुए (1:16-18)
        1. उनका परिश्रम (1:16)
        2. उनकी आज्ञाकारिता (1:17-18)
           1. चुनौती (1:17)
           2. चुनाव (1:18)
     2. दो मनुष्य अपने जाल सुधारते हुए (1:19-20)
        1. उनका परिश्रम (1:19)
        2. उनकी आज्ञाकारिता (1:20)
           1. एक नया प्रभु जिसके पीछे हो लेना है (1:20a)
           2. एक पुरानी विश्वासयोग्यता को त्याग देना है (1:20b)
  2. आश्चर्यकर्म (1:21-45)
     1. घर में (1:21-34)
        1. अपने पिता के घर में (1:21-28)
           1. निर्देश (1:21)

जगह (1:21a)

सब्त का दिन (1:21b)

आराधनालय (1:21c)

* + - * 1. रुचि (1:22)

उनका आश्चर्य (1:22a)

उसका अधिकार (1:22b)

* + - * 1. बाधा (1:23-28)

दुष्टात्माग्रस्त व्यक्ति चिल्लाता है (1:23-25a)

हम दुष्टात्माओं को बोलते हुए सुनते हैं (1:23-24)

उन्होंने क्या समझा (1:23-24)

वे किससे डरते थे (1:24b)

उन्होंने क्या घोषणा की (1:24c)

हमने दुष्टात्माओं को चुप करवा दिया है (1:25a)

दुष्टात्माएँ निकाली गईं (1:25b-28)

आदेश (1:25b)

अनुपालन (1:26)

टिप्पणियाँ (1:27-28)

भीड़ के द्वारा उसकी प्रसिद्धि पर चर्चा (1:27)

उसने जो शिक्षा दी वे उस पर आश्चर्यचकित थे

उसने जो कर दिया वे उस पर आश्चर्यचकित थे

देश भर में उसकी प्रसिद्धि की चर्चा (1:28)

* + - 1. अपने मित्रों के घर में (1:29-34)
         1. निजी चंगाई (1:29-31)

स्थान (1:29a)

लोग (1:29b)

समस्या (1:30-31)

तुरन्त सहायता (1:31-31a)

तुरन्त स्वास्थ्य (1:31b)

* + - * 1. सार्वजनिक चंगाइयाँ (1:32-34)

दृश्य (1:32a)

बीमार (1:32b-33)

मामले (1:32b)

भीड़ (1:33)

उद्धारकर्ता (1:34)

रोगी लोग ठीक हो गए (1:34a)

दुष्टात्माओं से शुद्ध किए गए (1:34b-c)

दुष्टात्माएँ तुरन्त बाहर निकाल दी गईं (1:34b)

दुष्टात्माओं को प्रमुख रूप से बाहर निकाला गया (1:34c)

* + 1. राजमार्ग पर (1:35-45)
       1. प्रभु (1:35-37)
          1. एक शान्त समय की खोज (1:35)

प्रभु की योजना (1:35a)

प्रभु का उद्देश्य (1:35b)

* + - * 1. शान्त समय नष्ट हो गया (1:36-37)

अनावश्यक बाधा (1:36)

अनावश्यक जानकारी (1:37)

* + - 1. देश (1:38-39)
         1. नगर (1:38)
         2. यात्रा (1:39a)
         3. गुरु (1:39b-c)

उनके आराधनालयों में जाना (1:39b)

अपने उपदेशों को सही ठहराना (1:39c)

* + - 1. कोढ़ी (1:40-45)
         1. उसका आगमन (1:40)

उसका बड़ा साहस (1:40a)

उसकी बड़ी इच्छा (1:40b)

* + - * 1. उसका शुद्धीकरण (1:41-43)

यीशु का तरस (1:41)

उसका हृदय शामिल हो गया था (1:41a)

उसका हाथ शामिल हो गया था (1:41b)

यीशु की आज्ञा (1:41c-42)

वचन बोला गया (1:41c)

कार्य किया गया (1:42)

* + - * 1. उसका आदेश (1:43-45)

यह कैसे दिया गया (1:43-44)

इस व्यक्ति को क्या देने से मना कर दिया गया था (1:43-44a)

इस मनुष्य से क्या माँगा गया था ([1:44b-c)](file:///Z:\Finished%20CROSS%20Goods\SOURCE\PhillipsCmty\ExpMark\source\%25server%25ref=Mark%201:44)

व्यवस्था के प्रावधान (1:44b)

व्यवस्था के याजक (1:44c)

इसका किस तरह से अनादर किया गया था (1:45)

जिन लोगों से उसने सम्पर्क किया (1:45a)

उसने जो समस्याएँ उत्पन्न कीं (1:45b)

यह अनुमान लगाया गया है कि मत्ती ने मरकुस रचित सुसमाचार का 96 प्रतिशत, अर्थात् इसके वास्तविक वचनों का पाँचवाँ-छठवाँ हिस्सा, अपने सुसमाचार में शामिल किया है। इसका अर्थ यह नहीं है कि मत्ती ने, जो मसीह की सेवकाई में एक प्रेरित और प्रत्यक्षदर्शी दोनों था, बस मरकुस रचित सुसमाचार को लेकर उसे अपने सुसमाचार में शामिल कर लिया। परन्तु ऐसा लगता है कि उसने अपने सुसमाचार को एक साथ रखते समय इसका व्यापक रूप से उपयोग किया। यदि मरकुस पतरस के उपदेश को प्रतिबिम्बित कर रहा था तो यह सम्भावना काफी कुछ समझ में आती है।

दोनों सुसमाचारों के बीच का अंतर सामग्री से अधिक विधि का मामला है। मरकुस रचित सुसमाचार सीधा और संक्षिप्त है – अर्थात् स्पष्ट होने की हद तक – और अद्वितीय स्पर्शों से भरपूर है जो हमारे लिये प्रभु को जीवंत करने में सहायता करते हैं। वह हमें यीशु को एक क्रियाशील व्यक्ति, एक कार्यकर्ता और एक सेवक के रूप में दिखाता है। वह उपदेश को कम और कर्म (क्रिया) को अधिक शामिल करता है। इसके विपरीत, मत्ती एक व्यवस्थित व्यक्ति था, लूका भाषा और शैली दोनों में एक कलाकार व्यक्ति था, और यूहन्ना एक धर्म-वैज्ञानिक था। मरकुस रचित सुसमाचार सशक्त और व्यावहारिक है। यह संवादात्मक, आकस्मिक, चित्रात्मक और व्यावहारिक है; यह प्रतिदिन की बातों के संदर्भों से भरा हुआ है। यह हमें प्रभु के रूप, हाव-भाव और भावनाओं के बारे में बताता है, जिसमें उसका गुस्सा और नाराजगी भी शामिल है। मरकुस को विवरण देना पसंद था। उसके मुख्य वचन *तुरन्त* और *सीधे* होते हैं।

**खंड 1: सेवक का कार्य (1:1-3:35)**

**क. सेवक का काम आरम्भ हुआ (1:1-45)**

**1. रहस्य (1:1-2)**

यह एक बहुत ही व्यस्त छोटा सा सुसमाचार है! पहले अध्याय से ही हम गतिविधि के भंवर में फँस जाते हैं:

*परमेश्‍वर के पुत्र यीशु मसीह के सुसमाचार का आरम्भ। जैसा यशायाह भविष्यद्वक्‍ता की पुस्तक में लिखा है “देख, मैं अपने दूत को तेरे आगे भेजता हूँ, जो तेरे लिये मार्ग सुधारेगा।” (1:1-2)*

मरकुस हमें बताता है कि यह सब कैसे आरम्भ हुआ। वास्तव में, उसका सुसमाचार अक्सर बातों के आरम्भ से सम्बन्धित है।[1] चारों सुसमाचार प्रचारकों में से प्रत्येक की सुसमाचार की कहानी एक अलग बिंदु से आरम्भ होती है। मत्ती लम्बे समय से प्रतीक्षा किए गए यहूदी मसीह के वंश और जन्म से आरम्भ होता है। लूका रचित सुसमाचार यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के जन्म से आरम्भ होता है। यूहन्ना रचित सुसमाचार समय के आरम्भ से पहले प्रभु के वचन के रूप में देहधारण से पूर्व के अस्तित्व में वापस जाता है। मरकुस रचित सुसमाचार का आरम्भ अन्य सभी सुसमाचारों की तुलना में एक बिंदु पर देर से हुआ - यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की वास्तविक सेवकाई के साथ।

मरकुस ने “सुसमाचार” के लिये जिस शब्द का उपयोग किया है वह यूएंजेलियन (euangelion) है। इसका उपयोग रोमी संसार में (जिसने मरकुस को इतना आकर्षित किया) यह घोषणा करने के लिये किया जाता था कि एक नया सम्राट सिंहासन पर बैठ गया है। इसे “शुभ समाचार” माना जाता था। पवित्र आत्मा इस शब्द को अपनाता है। लम्बे समय से घोषित उद्धारकर्ता आ गया था, और यह वास्तव में शुभ समाचार था क्योंकि यह उद्धारकर्ता एक सम्प्रभु और एक सेवक दोनों होगा।

मरकुस इस लम्बे समय से प्रतीक्षा किए गए मसीह को उसकी उचित उपाधि प्रदान करता है - “यीशु मसीह, परमेश्वर का पुत्र।” यहूदियों को किसी शुभ समाचार सुसमाचार की अत्यन्त आवश्यकता थी, क्योंकि परमेश्वर ने उनसे चार सौ वर्षों तक बात नहीं की थी, और वे वर्ष बड़े भयानक थे। यह सब इस तथ्य पर निर्भर था कि, यरूशलेम में, हेरोदेस महान नामक एक एदोमी दुष्टात्मा वाला व्यक्ति इस्राएल के सिंहासन पर बैठा था। प्रतिज्ञा किया गया देश स्वयं एक विशाल और विदेशी साम्राज्य में एक छोटे और तिरस्कृत प्रांत में आकार और महत्व में सिमट गया था। इसके अलावा, देश के तट पर कैसरिया का शासन था, जो पूरी तरह से रोमी नगर था। एक मूर्तिपूजक रोमी राज्यपाल (पुन्तियुस पिलातुस) दूर रोम में एक गैर-यहूदी सम्राट (औगस्तुस) के स्थानीय हितों की अध्यक्षता करता था, और वह सम्राट यह माँग कर रहा था कि उसे ईश्वरीय सम्मान दिया जाए। यह सब यहूदी लोगों के लिये बुरा समाचार था। इसके अलावा, यह उनके लिये एक रहस्य था। क्या वे चुने हुए लोग नहीं थे? क्या पलिश्तीन प्रतिज्ञा किया गया देश नहीं था? इतने लम्बे समय तक परमेश्वर इतना चुप क्यों रहा? क्या उनके कष्टों और अपमान का कोई अंत नहीं था?

परन्तु आखिरकार शुभ समाचार आया! यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला इसका अग्रदूत था। यूहन्ना स्वयं एक प्राचीन भविष्यद्वाणी का विषय था (मला. 3:1; यशा. 40:3), और उसके आने से एक नया आरम्भ हुआ। संदेशवाहक आ चुका था! मसीह अपने मार्ग पर था! परमेश्वर ने ग्रह पर आक्रमण किया था, और बातें फिर कभी वैसी नहीं हो सकती थीं। संदेशवाहक का काम आने वाले राजा के लिये मार्ग तैयार करना था।

**2. संदेशवाहक (1:3-4)**

*जंगल में एक पुकारनेवाले का शब्द सुनाई दे रहा है कि प्रभु का मार्ग तैयार करो, और उसकी सड़कें सीधी करो।” यूहन्ना आया, जो जंगल में बपतिस्मा देता, और पापों की क्षमा के लिये मनफिराव के बपतिस्मा का प्रचार करता था। (1:3-4)*

मरकुस *व्यक्ति* से आरम्भ करता है(1:3)। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का जन्म याजक बनने के लिये हुआ था। हालाँकि, जीवन के प्रारम्भिक दिनों में, और नि:संदेह अपने जन्म की अद्भुत परिस्थितियों से प्रेरित होकर, यूहन्ना ने निर्णय लिया कि इस्राएल को हारून की वंशावली के अनुसार एक और याजक की आवश्यकता नहीं है, बल्कि एलिय्याह के क्रम के अनुसार एक और भविष्यद्वक्ता की आवश्यकता है।

रोमी सताव के अलावा इब्री लोगों को भी बुरे समय का सामना करना पड़ा था। मृत औपचारिकता उनके धर्म की विशेषता थी। इस औपचारिकता की जड़ें, जो मलाकी के दिनों में अंकुरित हो रही थीं, अब गहरी हो गई थीं। रब्बी परम्परा ने बड़े पैमाने पर बाइबल की जगह ले ली थी। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला फरीसियों के पाखंड, सदूकियों के संदेह, हेरोदियों के भौतिकतावाद और अवसरवाद, और कट्टरपंथियों की कट्टरता के बारे में सब कुछ जानता था। इब्रानियों अध्याय 11 में सराहा गया पूर्वजों की विश्वास अब “यहूदियों का धर्म” बन गया था (गला. 1:13)।

किसी को इस मानव निर्मित परम्परा की उलझी हुई झाड़ियों के बीच से मार्ग निकालने की आवश्यकता थी। मसीह आ रहा था! यह सही समय था कि कोई बोले। अत: यूहन्ना वह बन गया जिसे मरकुस “जंगल में पुकारने वाले का शब्द “ कहता है। यूहन्ना ने बड़े नगरों की खोज नहीं की, और वह यरूशलेम की सड़कों के पीछे नहीं गया। इसके बजाय, उसने नदी के किनारे एकांत, सुनसान जगहों की खोज की, जो पगडंडी से दूर थीं। वह लोगों के पास नहीं गया। उसने लोगों को अपने पास आने के लिये विवश किया, और वे तब तक आते रहे, जब तक कि विशाल भीड़ उसे उपदेश सुनने के लिये जंगलों में उमड़ नहीं पड़ी।

आज हम सेवकाई के विभिन्न पहलुओं की निगरानी के लिये धर्मयुद्ध के दल भेजते हैं। हम सहायकों को जुटाने, धन का प्रबंधन करने, व्यवस्था करने और हृदय परिवर्तित लोगों का अनुसरण करने के लिये एक विशाल संगठन बनाते हैं। परन्तु यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले को सामूहिक गायक मंडली, वाद्य बजाने वालों, संगीत के अगुवों या एकल गायकों की आवश्यकता नहीं थी। किराए का मैदान उसके लिये नहीं था। उसे ग्रामीण इलाकों को पोस्टरों से भरने और डाक प्रणाली को प्रचार-पत्रों से भरने की आवश्यकता नहीं थी। उसे किसी बजट या धन की अपील की आवश्यकता नहीं थी। और न ही उसे भीड़ को लाने के लिये विशेष परिवहन की व्यवस्था करने की आवश्यकता थी। उसने बस जंगल में अपनी आवाज उठाई और भीड़ आ गई!

अगली बात, मरकुस ने *घोषणा* के बारे में बताया (1:3)। उसने कहा, “तैयार करो!” यूहन्ना ने जब इस शब्द का उपयोग किया, तो उसमें एक अनिवार्य सैन्य आदेश की पूरी शक्ति थी।

“उसकी सड़कें सीधे करो!” यूहन्ना की जन्मभूमि के राजमार्ग घुमावदार, टेढ़े-मेढ़े थे। यात्री को एक लम्बी, खड़ी पहाड़ी पर चढ़ने के लिये विवश होना पड़ता था, फिर उसका मार्ग एक घाटी से होकर गुजरता था, फिर वह किसी बाधा के चारों ओर मुड़ जाता था, और बाद में वह एक नदी के मार्गों पर चलता था। रोमी लोग, जिनके लिये मरकुस ने लिखा था, ऐसे पुराने मार्गों का मजाक उड़ाते थे। उन्होंने अपने समूचे साम्राज्य में बहुत शानदार सड़कें बनाईं। उनके बढ़िया “अंतर्राज्यीयमार्ग” सभी बाधाओं को दरकिनार करते हुए बिलकुल सीधे चलते थे। क्या मार्गों में कोई नदी या घाटी थी? उनके पुल निर्माताओं ने उस पर पुल बना दिया। क्या मार्गों में कोई पहाड़ था? रोमियों ने इसे हटा दिया या इसे काटकर बीच से एक सड़क निकाल दी। सम्राट के कार्य में शीघ्रता की आवश्यकता थी। सड़क जितनी सीधी होगी, उसके संदेशवाहक उतनी ही तेजी से चल सकेंगे या उसकी सेनाएँ पैदलयात्रा कर सकेंगी। रोमी अंतर्राज्यीय प्रणाली में पचास हज़ार मील प्रथम श्रेणी के सैन्य राजमार्ग और दो लाख मील माध्यमिक राजमार्ग शामिल थे। रोमियों ने यूहन्ना के संदेश के इस हिस्से की सराहना की होगी—”उसकी सड़कें सीधी करो।”

यूहन्ना ने चिल्लाते हुए कहा, “उसकी सड़कें सीधी करो!” यह उसके अपने देशवासियों के लिये एक स्पष्ट बुलाहट थी कि वे अपने जीवन को साफ करें और आने वाले राजा के मार्ग में बाधा डालने वाली सभी नैतिक और धार्मिक बाधाओं को दूर करें।

हालाँकि, यूहन्ना के संदेश में दृश्य के साथ-साथ मौखिक आयाम भी था: बपतिस्मा मन फिराव का प्रतीक था। मूसा की व्यवस्था में कई तरह के “धोने” का आदेश दिए गए थे, परन्तु वे बपतिस्मा से काफी अलग थे।[2] कुछ विद्वानों का मानना है कि, नये नियम के समय तक, यहूदियों ने यहूदी धर्म अपनाने वालों के लिये बपतिस्मा को एक आरम्भिक संस्कार के रूप में अपना लिया था, परन्तु यूहन्ना के बपतिस्मा का इससे कोई लेना-देना नहीं था। न ही इसे मसीही बपतिस्मा (प्रेरितों 19:1-7) के साथ भ्रमित किया जाना चाहिए।

यूहन्ना का बपतिस्मा मन फिराव पर केंद्रित था। यूहन्ना को धर्म परिवर्तन करने वाले लोग नहीं चाहिए थे; उसे मन फिराव करने वाले लोग चाहिए थे। उसका बपतिस्मा पाप को धो नहीं सकता था, परन्तु उसका उपदेश पाप के प्रति दृढ़ बोध उत्पन्न कर सकता था। यूहन्ना के उपदेश के तहत जो लोग मन फिराव करते थे, वे सरलता से, और सबसे सार्वजनिक तरीके से, यरदन में डूबकर अपने *मन फिराव को दर्शाते थे।* शुद्धीकरण के लिये मसीह की सेवकाई का प्रतीक्षा करनी होगी।

**3. भीड़ (1:5-8)**

*सारे यहूदिया प्रदेश के, और यरूशलेम के सब रहनेवाले निकलकर उसके पास गए, और अपने पापों को मानकर यरदन नदी में उस से बपतिस्मा लिया। यूहन्ना ऊँट के रोम का वस्त्र पहने और अपनी कमर में चमड़े का कटिबन्ध बाँधे रहता था तथा टिड्डियाँ और वन मधु खाया करता था। (1:5-6)*

सबसे पहले, हमारे *पास यूहन्ना की सफलता है* (1:5)। लोग आए! उसके संचालन का आधार यरदन नदी के एक घाट पर था, और उसका उपदेश एक विश्राम वर्ष के साथ मेल खाता हुआ प्रतीत होता है, अर्थात् एक ऐसा समय जब लोग अपने कृषि परिश्रम से स्वतंत्र होते थे और इस क्रांतिकारी उपदेशक को सुनने के लिये यरदन की तीर्थयात्रा करने में सक्षम होते थे। किसी भी मामले में, लोग आए। अधिक परिष्कृत यहूदी और यरूशलेम के और भी अधिक सुसंस्कृत और सुसज्जित लोग आए। आम लोग आए, और उनमें से कई को अपने पापों का बोध हुआ और उन्होंने यरदन में अपना स्थान ग्रहण किया, अपने पापों को स्वीकार किया और उन लोगों की बढ़ती हुई कतार में शामिल हो गए जो आने वाले मसीह की प्रतीक्षा कर रहे थे।

यूहन्ना की जीवनशैली ने उनके उपदेशों को एक अलग ही रूप दिया; उसने जो उपदेश दिया, उसका पालन भी किया। उसके पहनावे और खान-पान की सादगी ने उन लोगों पर जो उसे सुनने आए थे तुरन्त प्रभाव डाला। उन्होंने एक ऐसे व्यक्ति को देखा जो ऊँट के बालों से बना कपड़ा पहने हुए था और चमड़े की कमरबंद पहने हुए था। ऐसा लगता है कि उसने जानबूझकर ऐसा पहनावा चुना था जो लोगों को पुराने नियम के बड़े भविष्यद्वक्ता एलिय्याह (2 राजा 1:7-8; मला. 4:5) की याद दिलाए। लोग उसके पहनावे और खान-पान दोनों पर ध्यान देते थे। यूहन्ना को दाखरस पीने की और भोजन खाने की आवश्यकता नहीं थी। वह एक तपस्वी की तरह रहता था, जो स्वादहीन टिड्डे को खाने के साथ-साथ चटनी के रूप में जंगली शहद खाने से संतुष्ट रहता था।

परन्तु यूहन्ना का विषय—मसीह—सबसे सुस्त आत्मा को जागृत करने के लिये बनाया गया था! उसने मसीह के आने का प्रचार किया और एक ऐसी आत्मिक जागृति उत्पन्न की, जो सदियों से नहीं देखी गई थी। नि:संदेह, मक्काबियों के समय देशभक्ति का जोश और धार्मिक उत्साह की झड़ी लग गई थी, परन्तु जाति को परमेश्वर से अंतिम बार सुने हुए चार सौ वर्ष बीत गए थे। मलाकी की अंतिम तीखी टिप्पणी (4:4) से पता चलता है कि मलाकी ने स्वयं अपने उपदेश के लिये कोई प्रतिक्रिया नहीं देखी या उसका अनुमान नहीं लगाया। ठीक है! लोगों को एलिय्याह के वापस आने की प्रतीक्षा करने दें!

अत: अब एलिय्याह की तरह कपड़े पहने हुए यूहन्ना ने अपनी आवाज उठाई। एक नया दिन आ गया था! उग्र, रेगिस्तानी भविष्यद्वक्ता जो अचानक सामने आया था, उसकी चर्चा देश के एक छोर से दूसरे छोर तक हो रही होगी। “क्या तुम अभी तक उसे सुनने गए हो?” “क्या तुम जानते हो कि मेरी सास का पिछले महीने बपतिस्मा हुआ था?” यह मसीह के आने का शुभ संकेत था क्योंकि, हालाँकि सत्तारूढ़ धार्मिक प्रतिष्ठान ने यूहन्ना को एक सनकी के रूप में ठुकरा दिया था, तौभी वे उससे डरते थे। हेरोदेस भी ऐसा ही करता था। जहाँ तक आम लोगों की बात है, वे हृदय और आत्मा से मानते थे, कि यूहन्ना जीवित परमेश्वर का भविष्यद्वक्ता था।

हम *यूहन्ना की सादगी* पर भी ध्यान देते हैं(1:6)। यूहन्ना ने वैसा ही व्यवहार किया जैसा कि आम धारणा में भविष्यद्वक्ता को करना चाहिए। जो लोग उसे सुनने आए थे, वे बालों से बना कुरता पहनने और सूखी टिड्डियाँ खाने की इच्छा नहीं रखते थे, परन्तु यूहन्ना ने ऐसा किया, जिससे वे आकर्षित हुए। भविष्यद्वक्ताओं को इसी तरह के कपड़े पहनने चाहिए, भविष्यद्वक्ताओं को इसी तरह का भोजन करना चाहिए और भविष्यद्वक्ताओं को इसी तरह का उपदेश देना चाहिए।

फिर यूहन्ना का विषय आया (1:7-8) – पहली बात, *परमेश्वर के पुत्र के* आगमन की प्रतिज्ञा:

*और यह प्रचार करता था, “मेरे बाद वह आने वाला है, जो मुझ से शक्‍तिमान है; मैं इस योग्य नहीं कि झुककर उसके जूतों का बन्ध खोलूँ। (1:7)*

यूहन्ना ने परमेश्वर के पुत्र के आने के बारे में प्रचार किया। यूहन्ना स्वयं शक्तिशाली था, और लोग उसकी उग्र वाक्पटुता के सामने काँपते थे। यहाँ तक कि शक्तिशाली, दुष्ट हेरोदेस अन्तिपास भी उससे डरता था। जब उसने फरीसी और सदूकी को “हे साँप के बच्चों” कहकर उनकी निन्दा की, तो वे डर गए, परन्तु उन्होंने उसे छूने का साहस नहीं किया। यूहन्ना शक्तिशाली था, परन्तु आने वाले की तुलना में, वह कुछ भी नहीं था। वह शक्तिशाली था, परन्तु आने वाला *सर्वशक्तिमान था।* यूहन्ना और यीशु के बीच एक बड़ी खाई तय की गई थी, जो स्तर की नहीं बल्कि प्रकार की खाई थी। यूहन्ना एक साधारण मनुष्य था; यीशु भी एक मनुष्य था, परन्तु मनुष्य से कहीं बढ़कर था। यूहन्ना एक आवाज था; यीशु वचन था। यूहन्ना ने मन फिराव के लिये कहा; यीशु ने नये जन्म की माँग की। यूहन्ना एक संदेशवाहक था; यीशु मसीह था। माना जाता है कि यूहन्ना की माता और यीशु की माता बहनें थीं, परन्तु कोई यूहन्ना के पिता के बारे में प्रभु यीशु मसीह के पिता के साथ एक ही सुर में बात नहीं कर सकता था।

इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि यूहन्ना ने घोषणा की कि वह आने वाले के जूते खोलने के लिये नीचे झुकने के योग्य नहीं है! दस हज़ार स्वर्गदूत दस हज़ार बार अत्यन्त प्रसन्नता के साथ ऐसा करने के लिये एक हज़ार आकाशगंगाओं का शासन छोड़ देते, परन्तु वे यूहन्ना से अधिक योग्य नहीं थे।

एक और प्रतिज्ञा थी - *परमेश्वर की आत्मा* का आगमन:

*मैं ने तो तुम्हें जल से बपतिस्मा दिया है पर वह तुम्हें पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देगा। (1:8)*

यूहन्ना ने कहा, “जो मुझ से शक्तिमान है।” “मैं ने तो तुम्हें जल से बपतिस्मा दिया है पर वह तुम्हें पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देगा।” लोगों को मन फिराव के लिये प्रेरित करने का यूहन्ना का मिशन आम लोगों के साथ सफल रहा था। सभी प्रकार के लोग – व्यापारी और किसान, गृहिणियाँ और सैनिक, माताएँ और पिता, युवा और बूढ़े, धनवान और निर्धन, यहूदी और गलीली समाज के सभी वर्गों के लोग आए थे। उसने उन्हें मसीह की ओर संकेत किया। यूहन्ना ने उन्हें जल से बपतिस्मा दिया, परन्तु वह इतना ही कर सकता था।

उसने कहा, “वह तुम्हें पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देगा!” बस यही था! यूहन्ना के जल से प्रतीकात्मक बपतिस्मे और यीशु के आत्मा से अलौकिक बपतिस्मे के बीच संसार भर की भिन्नता थी। यूहन्ना ने लोगों पर उनके स्वभाविक हृदय प्रकट किए; यीशु ने लोगों को नये हृदय प्रदान किए। यूहन्ना लोगों को यरदन, अर्थात् मृत्यु की नदी के पास ले गया; यीशु लोगों को जीवन की नदी के पास ले गया।

डेविड लिविंगस्टोन, अफ्रीका के साहसी अग्रणी मिशनरी, एक अवसर पर अपने साथ कुछ मूल निवासियों को गहरे अंदरूनी इलाकों से तट पर ले आए। वहाँ अचानक भूमि समाप्त हो गई। आश्चर्यचकित अफ्रीकियों में से एक ने कहा, “हम जंगलों और मैदानों, पहाड़ों और गहरी घाटियों में श्वेत पिता का अनुसरण करते रहे। भूमि आगे और आगे ही बढ़ती गई। फिर, अचानक, यह समाप्त हो गई। इसका अर्थ है कि 'अब मेरा कोई अस्तित्व नहीं है।'” यूहन्ना ने भी लगभग यही कहा। “मैं तुम्हें जल के पास ले आया हूँ। अब मेरा कोई अस्तित्व नहीं है, मैं और कुछ नहीं कर सकता। यहाँ यूहन्ना का अंत है। अब तुम्हें यीशु की आवश्यकता है। 'अवश्य है कि वह बढ़े और मैं घटूँ'” (यूहन्ना 3:30)।

**4. स्वामी (1:9-13)**

सबसे पहले, हमारे पास *मुलाकात* है:

*उन दिनों में यीशु ने गलील के नासरत से आकर, यरदन में यूहन्ना से बपतिस्मा लिया। (1:9)*

“उन दिनों में!” यह एक रोचक कथन है। इस ग्रह के इतिहास में उन दिनों जैसे दिन कभी नहीं आए।

उदाहरण के लिये, हम उन प्रारम्भिक दिनों के बारे में सोचते हैं जब आदम वाटिका की घाटियों और वृक्षों के बीच में घूमता था, जो कुछ भी देखता था वह उसका राजा था। उन प्राचीन दिनों में जो कुछ भी वह जानता था वह स्वास्थ्य, प्रसन्नता और पवित्रता थी। परन्तु अभी तक उसकी परीक्षा नहीं हुई थी। अंतरिक्ष के अंधकार से, एक प्राणी की बिना नींद वाली आँख अथक और निरंतर द्वेष के साथ उस क्षण की प्रतीक्षा कर रही थी जब यह पुरुष गिर पड़ेगा।

फिर, ऐसे भी, दिन आए जब नूह ने तूफानी समुद्र में, तूफानी चक्रवात और भयानक लहरों पर विजय प्राप्त की। परन्तु यह एक दु:खद विजय थी, क्योंकि उसके चारों ओर का संसार पवित्र परमेश्वर के क्रोध के तहत टूटकर बिखर रहा था।

एक दिन ऐसा आया जब अब्राहम ने अपना सामान बाँधकर ऊँटों पर लादा और प्रतिज्ञा किए गए देश की ओर चल पड़ा। फरात नदी से लेकर नील नदी तक, हर जगह जहाँ उसने अपना पाँव रखा, वह उसकी हो गई। परन्तु मिस्र देश में उसने लगभग सब कुछ खो दिया, हाज़िरा के साथ लगभग सब कुछ खो दिया, और एक पलिश्ती राजा के हाथों लगभग सब कुछ खो दिया क्योंकि अब्राहम, चाहे वह कितना भी महान क्यों न हो, उसके पाँव मिट्टी के थे।

ऐसे दिन भी आए जब मूसा ने मिस्र देश को धूल में मिलाकर इस्राएल को स्वतंत्र किया था, और बीस या तीस लाख लोगों को दासत्व के घर से बाहर निकालकर कनान की यात्रा पर भेज दिया था। परन्तु मूसा के पास अपनी “मिश्रित भीड़” थी, जिसके साथ उसे संघर्ष करना था, और सम्पूर्ण महिमामय अभियान कादेशबर्ने में लगभग ध्वस्त हो गया था। और फिर से उसे समस्याओं का सामना करना पड़ा जब मूर्तिपूजक बालाम ने मोआब के राजा बालाक को अपने धूर्त सिद्धांत की व्याख्या की: “हे मेरे प्रभु, यदि तू उन्हें जीत नहीं सकता, तो उन्हें भ्रष्ट कर दे।”

“ऐसे दिन” आए जब दाऊद, महिमा और सम्मान से सुशोभित होकर, अविनाशी राजवंश की स्थापना करने के लिये सिंहासन पर बैठा। परन्तु यह बतशेबा से मिलने से पहले की बात थी और यह उससे पहले की बात थी जब उसे अपने आँसूओं से भीगे पश्चातापी भजन लिखने पड़े थे।

आदम के बाद से लेकर अब तक के “ऐसे दिन” वाले सभी लोग, हम एक सिद्ध मनुष्य की खोज में व्यर्थ ही भटकते रहे, जो उस नींद से भरी हुई आँख में वापस देखने में सक्षम था और स्वयं गिरे हुए लूसीफर को चुनौती दे सकता था कि वह आकर उसके साथ युद्ध करे। अत: यह “ऐसे दिन” थे, जिनके आने के बारे में मरकुस ने बात की थी। “उन दिनों” में, यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने मन फिराव और लम्बे समय से प्रतीक्षा किए गए मसीह के अवश्य प्रकट होने का प्रचार किया। “उन दिनों” में, “समय की परिपूर्णता” आई, और परमेश्वर ने “अपने पुत्र को भेजा जो स्त्री से जन्मा, और व्यवस्था के अधीन उत्पन्न हुआ” (गलातियों 4:4)। वह इस्राएल को दिखाए जाने के दिन तक गुमनामी में पला-बढ़ा। फिर यूहन्ना के शब्द ने, जिसने पूरे देश को हिला दिया था, उसकी आत्मा को भी हिला दिया।

मरकुस कहता है कि “वह गलील के नासरत से आया था।” यहूदिया में गलील और नासरत दोनों के लिये अवमानना व्यापक थी, विशेष रूप से रब्बी समुदाय में। गलील के लोगों को उनकी बोली, व्याकरण सम्बन्धी त्रुटियों और शब्दों के गलत उच्चारण से आसानी से पहचाना जा सकता था। रोमी सम्राट, जूलियन द एपोस्टेट ने मसीह को “गलील का परमेश्वर” कहकर उसका उपहास किया और रोम की शक्ति के विरुद्ध स्वयं का बचाव करने की चुनौती दी। अंत में, साम्राज्य के मसीही विश्वासियों से लड़ते हुए जूलियन मर गया। जब वह अपने घावों से मर रहा था, तो उसने अपने लहू की एक मुट्ठी उठाई और उसे आकाश की ओर फेंकते हुए चिल्लाया, “हे *गलील, तूने विजय हासिल की है।” इस सब में आश्चर्य की बात यह है कि यीशु को गलीली* के रूप में पहचाने जाने में कोई लज्जा महसूस नहीं हुई थी। वास्तव में, उसके कई सबसे शक्तिशाली आश्चर्यकर्म और उसकी सबसे जबरदस्त शिक्षाएँ गलील में की गई थीं।

नासरत के बारे में, पुराने नियम में या यहूदी इतिहासकार जोसेफुस के द्वारा इसका एक बार भी उल्लेख नहीं किया गया है। फिर भी, यह मगिद्दो से केवल दस मील की दूरी पर स्थित है। यह आसपास की पहाड़ियों के द्वारा निर्मित एक घाटी में छिपा हुआ था, और यहूदियों ने इसके अधर्म एवं नैतिकता की कमी के कारण इसका तिरस्कार किया। यीशु ने “नासरत के यीशु” की उपाधि से परहेज नहीं किया, यद्यपि इसकी आबादी संकर जाति की थी, इसकी बोली असभ्य और प्रांतीय थी, तथा इसके लोग विद्रोही और तिरस्कृत थे। समय बीतने के साथ, मसीही विश्वासियों को स्वयं “नासरी” कहा जाने लगा। यह तिरस्कार का शब्द था, जिसने उन्हें, लोकप्रिय मन में, समान रूप से तिरस्कृत यीशु के अनुयायी के रूप में चिन्हित किया। अपने समय में, उसके शत्रुओं के मन में, नासरत के साथ प्रभु के जुड़ाव ने उसे एक झूठे मसीह के रूप में स्थापित किया। बाइबल ने बताया है कि मसीह का नगर नासरत नहीं, बल्कि बैतलहम होना था।

यीशु ने नासरत में जो “दिन” बिताए, वे लगभग पूरी तरह से मौन में लिपटे हुए हैं। उसके सौतेले भाई, याकूब और यहूदा, जो कलीसिया के उल्लेखनीय लोग थे, और उसके चचेरे भाई, याकूब और यूहन्ना, जो आरम्भ से ही प्रेरितों में प्रमुख थे, सभी “उन दिनों” के बारे में चुप हैं। वे उसकी सार्वजनिक सेवा को, जो कि मात्र साढ़े तीन वर्ष की थी, केवल हल्के-फुल्के ढंग से बताते हैं। चारों सुसमाचार, मसीह के जीवन की अंतिम घटनाओं पर ध्यान केंद्रित करते हैं। वास्तव में, चारों सुसमाचार स्वयं मात्र ज्ञापनों से अधिक कुछ नहीं हैं।

नासरत के वे छिपे हुए दिन, नि:संदेह अनन्तकाल में हमारे लिये प्रकट होंगे। यूहन्ना उन दिनों के बारे में बताता है कि उनके बारे में “पुस्तकें जो लिखी जातीं वे संसार में भी न समातीं” (यूह. 21:25)। जब हम “उन दिनों” की पूरी कहानी सीखते हैं, तो हम शीबा की रानी के साथ चिल्लाएँगे, “इसका आधा तो हमें कभी बताया ही नहीं गया!” (2 इति. 9:6)।

*उन दिनों* में “यीशु ने... आकर, यरदन में यूहन्ना से बपतिस्मा लिया।” वह एक तिरस्कृत नगर और एक तिरस्कृत प्रांत से एक तिरस्कृत नदी पर आया था। “क्या दमिश्क की अबाना और पर्पर नदियाँ इस्राएल के सब जलाशयों से उत्तम नहीं हैं?” जब एलीशा ने नामान से कहा कि यदि वह चंगा होना चाहता है तो उसे यरदन में स्नान करना चाहिए तो नामान कोढ़ी ने उपहास किया (2 राजा 5:10-12)।

जिस उद्देश्य से मसीह आया था *वह* उस *स्थान* केजितना ही असाधारण था जहाँ से वह आया था। वह “यरदन में यूहन्ना से बपतिस्मा” लेने आया था। यूहन्ना का बपतिस्मा मन फिराव का था। क्या यीशु को मन फिराव की आवश्यकता थी? वास्तव में, नहीं! स्वयं यूहन्ना इस विचार से भयभीत था। उसके सामने “परमेश्वर का पवित्र जन” खड़ा था। यूहन्ना एक भला और धर्मी व्यक्ति था, और वह इस जन की उपस्थिति में अपने स्वयं के पापी होने की भावना से अभिभूत था। यीशु को उसे बपतिस्मा देना चाहिए था, इसके बजाय कि वह यीशु को बपतिस्मा दे। परन्तु मसीह ने दृढ़ता से उसकी सभी आपत्तियों को ठुकरा दिया। यीशु यरदन के पानी में चला गया, मृत सागर में गाड़े जाने के लिये जल्दी से आगे बढ़ा, और यूहन्ना ने उसे लहरों के नीचे डुबो दिया। इस प्रकार, उसने स्वयं की सार्वजनिक रूप से उस बर्बाद जाति के साथ पहचान करवाई जिसे वह बचाने आया था। यरदन में उसका बपतिस्मा कलवरी पर मृत्यु की नदी में उसके आने वाले बपतिस्मा की एक ज्वलंत तस्वीर थी।

अगली बात हमारे पास है, *दर्शन:*

*और जब वह जल से निकलकर ऊपर आया, तो तुरन्त उसने आकाश को खुलते और आत्मा को कबूतर के समान अपने ऊपर उतरते देखा। (1:10)*

फिर दर्शन मिला और आवाज आई। आकाश खुल गया! आत्मा प्रकट हुआ! मसीह उस पानी से भरी कब्र से ऊपर आया! आत्मा ऊपर से नीचे उतरा और उस पर ठहर गया। तब से, प्रभु यीशु, जो हमेशा आत्मा से भरा हुआ था, अब आत्मा से अभिषिक्त भी हो गया।

खुला हुआ आकाश! आकाश उस समय से बार-बार खुलता रहेगा। आखिरकार, आकाश और पृथ्वी, कभी भी इतने दूर नहीं रहे - और न ही, पृथ्वी और नरक।

इस सब में कुछ प्रतीकात्मक बात है - यीशु का “ऊपर आना” और आत्मा का “नीचे उतरना।” पिन्तेकुस्त फसह और कटनी के पर्व से केवल पचास दिन पहले था। यीशु मृत्यु के जल से “बाहर आया”, अपने पीछे एक विजय प्राप्त कब्र और एक खाली कब्र छोड़ गया। ऊपर आया! ऊपर आया! जब तक कि पृथ्वी पीछे नहीं रह गई और एक खुला आकाश उसे ऊँचे पर महामहिमन् के दाहिने हाथ पर अपने आसन पर नहीं ले गया। फिर आत्मा ठहरने के लिये नीचे उतरा, और एक नया दिन उत्पन्न हुआ – कबूतर का दिन! क्रोध, प्रतिशोध, न्याय और धार्मिक प्रतिशोध सभी अब स्थगित हो गए थे, और अनुग्रह को पृथ्वी पर सदियों तक साम्राज्य दिया गया था। परमेश्वर की कठोरता के बजाय, हम परमेश्वर के अनुग्रह का अनुभव करते हैं। प्रभु ऊपर जाता है; आत्मा नीचे आता है। आत्मा अभी भी यहाँ है - फटकार लगा रहा है, पुनर्जीवित कर रहा है, और संयमित कर रहा है - और यहाँ वह तब तक रहेगा जब तक यीशु फिर से नहीं आता। अब *आवाज आती है:*

*और यह आकाशवाणी हुई, “तू मेरा प्रिय पुत्र है, तुझ से मैं प्रसन्न हूँ।” (1:11)*

वह प्रिय पुत्र वहाँ था! परमेश्वर का आत्मा वहाँ था! पिता स्वयं वहाँ था! तीन व्यक्ति, एक परमेश्वर। ईश्वरत्व का प्रत्येक सदस्य खोए हुए संसार को उद्धार दिलाने में सक्रिय रूप से शामिल है।

पिता की प्रशंसा ने प्रभु के जन्म से लेकर उसके बपतिस्मा तक के मौन वर्षों पर ईश्वरीय स्वीकृति की छाप लगा दी। पिता ने उसे नासरत के उस घर में देखा था - एक शिशु के रूप में, एक लड़के के रूप में, एक भाई के रूप में, और एक व्यापारी के रूप में। उसने उसे घर में, पाठशाला में, खेल के मैदान में, कुएँ पर, गाँव में और दुकान पर देखा था। उसने उसे गुप्त स्थान पर देखा था। वह हर बातचीत के अदृश्य श्रोता था; हर भोजन में अदृश्य अतिथि; हर कार्य के अदृश्य साक्षी; और हर गुप्त विचार, कल्पना और इच्छा के अदृश्य अभिलेखक। उन छिपे हुए तीस वर्षों पर उसका निर्णय यहाँ है: “यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं बहुत प्रसन्न हूँ!”

इस प्रकार पिता की सार्वजनिक स्वीकृति यरदन के तट पर प्रकट हुई, जब यह महिमामय व्यक्ति वहाँ खड़ा था और उसके कपड़ों से अभी भी पानी बह रहा था।

और अब, काम करने के लिये! परन्तु पहले, एक अंतिम परीक्षा। ईश्वरीय यात्रा, ईश्वरीय दर्शन, और ईश्वरीय वाणी के बाद अब ईश्वरीय विजय होगी।

मानवीय दृष्टिकोण से, जबकि ईश्वरत्व की असाधारण अभिव्यक्ति हर किसी के मन में ताजा थी, यह राजधानी पर पैदलयात्रा करने के लिये एक रणनीतिक क्षण था। ऐसे शानदार प्रचार को क्यों बर्बाद किया जाए? सरल कारण से कि यह कोई प्रचार वाला पैंतरा नहीं था। परमेश्वर सस्ते प्रचार से घृणा करता हैं। अत:, जैसे ही यीशु को सार्वजनिक रूप से और आश्चर्यचकित रूप से परमेश्वर का प्रिय पुत्र घोषित किया गया, वैसे ही वह गायब हो गया।

साथ ही, हम *विजय* पर भी ध्यान देते हैं:

*तब आत्मा ने तुरन्त उस को जंगल की ओर भेजा। (1:12)*

यहाँ “भेजा” के लिये शब्द *एकबाल्लो* है, जो वास्तव में एक बहुत ही सशक्त शब्द है। इसका शाब्दिक अर्थ है “बाहर निकालना,” या “भीतर से बाहर करना।” इसका उपयोग प्रभु के द्वारा दुष्टात्माओं को निकालने के लिये किया जाता है (मर. 1:34, 39)। सबसे पहला काम जो परमेश्वर के अभिषिक्त आत्मा ने किया वह प्रभु यीशु को मरुस्थल में ले जाना था, जहाँ उसे गहन मानसिक एकाग्रता की पकड़ में रखा गया था। अब उसे शैतान से अकेले युद्ध में भिड़ना था।

परीक्षा के बारे में मरकुस के विवरण में शब्दों का अर्थप्रबंध चौंका देने वाला है। यह सब एक ही आयत में समाप्त हो गया है! मत्ती हमें सबसे पूर्ण विवरण प्रदान करता है; लूका का विवरण काफी संक्षिप्त है। यूहन्ना ने इसका बिलकुल भी उल्लेख नहीं किया है क्योंकि यूहन्ना को मसीह के ईश्वरत्व की चिन्ता थी, और परमेश्वर के रूप में, प्रभु परीक्षा में नहीं पड़ सकता था (याकूब 1:13)।

*जंगल में चालीस दिन तक शैतान ने उसकी परीक्षा की; और वह वन पशुओं के साथ रहा, और स्वर्गदूत उस की सेवा करते रहे। (1:13)*

“वह वहाँ था,” मरकुस ने *व्यक्ति* और *स्थान* को रेखांकित करते हुए कहा!दोनों को एकदम विपरीत रूप में रखा गया है। “*वह* वहाँ था।” वह, जगत का सृष्टिकर्ता, जिसने अदन में पूर्व की ओर उस वाटिका को लगाया, वह जो सभी सौंदर्य और जीवन का निर्माता है। “वह *वहाँ था* “ - उस उजाड़, चीखते हुए जंगल में; उस भयावह मरुस्थल में, जो उजाड़ और मृत्यु के दृश्यों से घिरा हुआ था। यह बिच्छू और साँप का घर था। यह एक ऐसी जगह थी जहाँ प्रचंड सूर्य ने कुछ नहीं किया, केवल तपाया, झुलसाया और जला दिया। वह एक वचन कहता और वह मरुस्थल गुलाब की तरह खिल जाता। परन्तु ऐसा कोई वचन नहीं आया। उसे शैतान से उसी के मैदान पर मिलना था, वह दुष्ट जो ऐसे सभी दृश्यों का निर्माता था। झाड़ियाँ, ऊँटकटारे और प्यासी मिट्टी इस ग्रह पर उसकी उंगलियों के निशान हैं, परमेश्वर के नहीं।

यद्यपि मरकुस ने परीक्षा के बारे में विस्तार से नहीं बताया, परन्तु उसने अपनी ओर से एक रोचक बात अवश्य कही। जंगल में उस चालीस दिन के प्रवास के दौरान, यीशु “वन पशुओं के साथ” था। वह उनके *साथ* रहा था। वे उसके लिये जंगली नहीं थे। वे उसके साथी बनने, उसे आदर अर्पित करने के लिये आए, अपने सृष्टिकर्ता के रूप में नहीं, बल्कि अंतिम आदम, उनके प्रभु के रूप में। वे उसके वश में थे और उसके एकांत के दिनों में उसके दरबारी और साथी थे।

और शैतान भी वहाँ था। मरकुस का तात्पर्य है कि परीक्षा निरंतर हो रही थी। वह चालीस दिन की अवधि के दौरान निरंतर कार्रवाई की बात करते हुए वर्तमान काल का उपयोग करता है। मत्ती तीव्र चरमसीमा को दर्ज करता है, मरकुस दैनिक युद्ध को दर्ज करता है। “परीक्षा” शब्द का अर्थ है “जाँच करना।”

परन्तु, यदि वह वन पशुओं और दुष्ट के साथ था, तो वह स्वर्गदूतों के साथ भी था। मरकुस का विरोधाभास आकर्षक है: “वन पशुओं के साथ रहा, और स्वर्गदूत...” यह क्रिया अपूर्ण काल में है, जो निरंतर क्रिया की ओर संकेत करती है। उस सम्पूर्ण समय के दौरान, बढ़ती शारीरिक निर्बलता और शैतानी दबाव के तीव्र होने से चिन्हित, स्वर्गदूत उसकी आत्मिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये खड़े रहे।

**5. चाल (1:14-15)**

*समय* पर ध्यान दें (1:14):

*यूहन्ना के पकड़वाए जाने के बाद यीशु ने गलील में आकर परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार प्रचार किया।*

*साथ ही, सत्य* पर भी ध्यान दें (1:15):

*और कहा, “समय पूरा हुआ है, और परमेश्‍वर का राज्य निकट आ गया है; मन फिराओ और सुसमाचार पर विश्‍वास करो।”*

आयत 13 और 14 के बीच हमें एक पूरे वर्ष के बीतने के लिये जगह बनानी चाहिए। इस अवधि के दौरान, प्रभु ने अपने पहले चिह्न और आश्चर्यकर्म किए तथा अपनी कुछ आरम्भिक शिक्षाएँ दीं। उसने गलील और यहूदिया के बीच भी यात्रा की। आश्चर्यकर्म अधिकतर गलील में किए गए, और शिक्षा मुख्य रूप से यहूदिया में दी गई। इस अवधि को “अस्पष्टता का वर्ष” कहा गया है, और यदि यूहन्ना रचित सुसमाचार न होता, तो हम इसके बारे में बहुत कम या कुछ भी नहीं जानते।

मरकुस ने प्रभु की सेवकाई का विवरण उस स्थान से आरम्भ किया, जहाँ यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले को हेरोदेस ने बन्दी बना लिया था, और यीशु यहूदिया छोड़कर गलील लौट आया, तथा उसने अधिक सार्वजनिक और गहन धर्मयुद्ध आरम्भ किया।

यूहन्ना को बन्दीगृह में डाल दिया गया। देश की अंतरात्मा को जागृत करने के लिये एक सच्चे एलिय्याह बनने का यह उसका पुरस्कार था। जोसेफुस के अनुसार, यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला मैकेरस के दृढ़ किले में कैद कर दिया गया था। यह पीरिया में दक्षिण की ओर सबसे चरम बिंदु को चिन्हित करता है। यह दक्षिण-पूर्व (अरब की ओर) में सीमान्त किला था, अत: इसकी सुरक्षा सबसे महत्वपूर्ण थी। रोमियों ने इस जगह को, जो कि स्वभाव से दृढ़ थी, पूरी तरह से अभेद्य बनाने का हर सम्भव प्रयास किया।

हेरोदेस महान ने पहाड़ी की ऊँचाई पर एक नगर बनाया और इसे मीनारों से मजबूत दीवारों से घेर दिया। महल और भी ऊँचा था। यह भी दीवारों से घिरा हुआ था और इसके दोनों ओर 160 हाथ ऊँची मीनारें थीं। भीतर एक शानदार महल था। लम्बे समय तक घेराबंदी की स्थिति में कुएँ, गोदाम और शस्त्रागार उपलब्ध करवाए गए थे। किले का सबसे ऊँचा स्थान पश्चिम में था, जहाँ से यह एक घाटी में दिखता था। उत्तर और दक्षिण में, किला घाटियों से समान रूप से कटा हुआ था, जिसे घेराबंदी के उद्देश्यों के लिये नहीं भरा जा सकता था। पूर्व में एक सौ हाथ गहरी घाटी थी, परन्तु यह मैकेरस के सामने एक पहाड़ पर समाप्त हो गई, जो स्पष्ट रूप से एक दुर्बल बात थी।

पश्चिम में, इस लम्बे किले के अंत में और दक्षिण की ओर देखने पर एक चौकोर किला है। सुरक्षा का सबसे ऊँचा और मजबूत हिस्सा 150 गज की खड़ी ढलान पर पूर्वी गढ़ है। यह छोटा किला ठीक एक सौ गज व्यास का है। अभी भी एक बहुत गहरे कुएँ और छत के साथ एक गहरे पक्के किए हुए कुंड के अवशेष खड़े हैं। इससे भी भयानक दो कालकोठरियाँ हैं, उनमें से एक बहुत गहरी, बहुत ही गहरी है – यह वही भयानक बन्दीगृह है जहाँ हेरोदेस ने यूहन्ना को रखा था। एडर्सहेम कहते हैं, “जब हम इसके गर्म अंधेरे में देखते हैं, तो हम यह महसूस करके कांप उठते हैं कि यह भयानक किला लगभग दस महीने तक स्वतंत्र 'जंगल' के उस पुत्र, आने वाले राज्य के साहसी अग्रदूत, विनम्र, ईमानदार, आत्म-त्यागी यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का बन्दीगृह था।”[3]

और अब हम एक तरफ गढ़ में गहरी कालकोठरी की कल्पना करते हैं, और दूसरी तरफ, उस ढलान के नीचे, हेरोदेस का आलीशान महल। वहाँ वह अपनी व्यभिचारी, हत्यारी पत्नी के साथ बैठा था, उसी समय पागलों वाली मौज-मस्ती और नशे में चूर उल्लास की चीखें चारों ओर उठ रही थीं!

यूहन्ना ने क्या सोचा होगा? जिस राज्य की घोषणा करने वह आया था, उसका क्या हुआ? मसीह कहाँ था? वह क्या कर रहा था? क्या वह पूरे समय चुंगी लेने वालों और पापियों के साथ खा-पी रहा था, जबकि वह, यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला, उसके लिये कष्ट सह रहा था?[4]

यूहन्ना ने प्रभु यीशु के बारे में कहा था, “अवश्य है कि वह बढ़े और मैं घटूँ” (यूहन्ना 3:30)। हालाँकि, उसने बन्दीगृह और मृत्यु की कल्पना नहीं की थी।

इस बीच, शैतान का काम बिगाड़ दिया गया। सच है, “यूहन्ना के पकड़वाए जाने के बाद,” “यीशु ने गलील में आकर... प्रचार किया!” यह शैतान के लिये एक बुरा झटका था। उसे मरुस्थल में एक जबरदस्त पराजय का सामना करना पड़ा था। अब जीवित परमेश्वर का पुत्र देश में ही था, और ठीक वही काम कर रहा था जिसकी पुराने नियम के भविष्यद्वक्ता ने भविष्यद्वाणी की थी, अर्थात् गलील में प्रचार कर रहा था (मत्ती 4:13-16; यशा. 9:1-2)।

गलील महानगरीय स्थान था। यह एक ऐसा क्षेत्र था जहाँ रोमी, यूनानी और यहूदी आपस में घुलमिल गए थे क्योंकि गलील की आबादी जितनी यहूदी थी उतनी ही गैर-यहूदी भी थी। तिबिरियास इसका एक अच्छा उदाहरण था। हेरोदेस अंतिपास ने इसे सम्राट तिबिरियास (सन् 14-57 ईस्वी) के सम्मान में बनवाया और इसका वही नाम रखा। हालाँकि, कोई भी कट्टर यहूदी वहाँ नहीं जाता था, क्योंकि यह कब्रिस्तान के ऊपर बना था। वहाँ विदेशी रीति-रिवाज बहुत प्रचलित थे और यह यीशु के दिनों में गलील की राजधानी थी। मरकुस हमें स्मरण दिलाता है कि यीशु गलील गया था। जहाँ यूहन्ना ने जंगल की खोज की थी, वहीं यीशु ने मुख्य सड़कों की खोज की थी। यूहन्ना को अपेक्षा थी कि लोग उसके पास आएँगे; और यीशु लोगों के पास गया।

यीशु का संदेश यूहन्ना के संदेश के समान ही था: “समय पूरा हुआ है, और परमेश्वर का राज्य निकट आ गया है; मन फिराओ और सुसमाचार पर विश्वास करो।”

“विश्वास करो!” यही संदेश था। मन फिराओ? हाँ! परन्तु साथ में छुटकारा, मेल-मिलाप और नया जन्म भी। एक दशक के भीतर, उन अद्भुत सत्यों का वर्णन करने के लिये एक पूरी नयी शब्दावली की आवश्यकता होगी जो अब प्रकट होने वाले थे।

प्रभु के संदेश में एक *भविष्यद्वाणी* तत्व था: “समय पूरा हुआ है।” संसार लगभग चार हज़ार वर्षों से किसी को यह कहते हुए सुनने का प्रतीक्षा कर रहा था! पुराने नियम में, उत्पत्ति 3 अध्याय से मलाकी 4 अध्याय तक, मसीह को आने वाले व्यक्ति के रूप में चित्रित किया गया था। अब वह आ गया था! भविष्यद्वाणी पूरी हो चुकी थी, तब भी पूरी हो रही थी, और पूरी होती रहेगी। समय आ गया था! घड़ी आ गई थी!

प्रभु के संदेश में एक *स्पष्ट रूप से दिखाई देने वाला* तत्व भी था: “परमेश्वर का राज्य निकट आ गया है।” भविष्यद्वक्ताओं ने उस राज्य की तस्वीरें चमकीले, गहरे रंगों और आभा में चित्रित की थीं। प्रतिज्ञा किया गया राजा इस्राएल के सभी शत्रुओं को मार गिराएगा। वह दाऊद की तरह शासन करेगा, अपने सभी शत्रुओं को परास्त करेगा। वह सुलैमान की तरह समृद्धि और शान्ति में शासन करेगा। मरुस्थल अदन के वैभव से स्वयं को सजाएँगे। शेर मेम्ने के साथ लेटेगा और बैल की तरह भूसा खाएगा। फसल इतनी भरपूर होगी कि हल चलाने वाला काटने वाले से आगे निकल जाएगा। अपराध और बीमारी को समाप्त कर दिया जाएगा, और मृत्यु को भी कठोर नियंत्रण में रखा जाएगा। सौ वर्ष की आयु में एक मनुष्य केवल एक जवान होगा, और लोग युद्ध नहीं सीखेंगे। सभी देश राजाओं के राजा को अपनी श्रद्धा अर्पित करने के लिये यरूशलेम की वार्षिक तीर्थयात्रा करेंगे। इब्री लोग मसीह के साथ उसके राजदूत, राज्यपाल और प्रशासक के रूप में शासन करेंगे। वास्तव में गहरे रंग होंगे!

परन्तु भविष्यद्वाणियों के पटल पर उदास भूरे, फीके भूरे और प्रबल काले रंग भी डाले गए थे। भविष्यद्वक्ताओं ने एक मसीह के बारे में बात की जो लोगों के द्वारा “तुच्छ जाना जाता और मनुष्यों का त्यागा हुआ था; वह दु:खी पुरुष था, रोग से उसकी जान पहचान थी” (यशा. 53:3)। उन्होंने उसके हाथ और पाँव छेदे जाने की बात कही। उन्होंने उसकी आत्मा पर गहरे, ठंडे पानी के बहने और उसकी आवाज के बारे में बताया जो चिल्ला रही थी क्योंकि उसे परमेश्वर ने त्याग दिया था।

“परमेश्वर का राज्य निकट आ गया है।” प्रभु को अच्छी तरह पता था कि मुकुट तक पहुँचने का मार्ग क्रूस से होकर जाता है। हालाँकि, यहूदियों ने इस तथ्य को पहचानने से इन्कार कर दिया, और यहाँ तक कि उसके चेले भी इससे कतराने लगे। परन्तु यीशु ने यह सब देखा।

इस कारण, उसके उपदेश में एक *व्यावहारिक* टिप्पणी शामिल थी: “मन फिराओ और सुसमाचार पर विश्वास करो।” आत्मिक को भौतिक से ऊपर उठना चाहिए। “परमेश्वर के प्रति मन फिराव और हमारे प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास” होना चाहिए (प्रेरितों 20:21)। प्रभु ने यूहन्ना के संदेश को बल दिया, जो अब चुप हो गया था और बन्दीगृह में कैद था। लोगों को अपने पाप से फिर जाना चाहिए। उन्हें प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करना चाहिए। मन फिराव दिशा के परिवर्तन को दर्शाता है; प्रभु यीशु के प्रति विश्वास भक्ति के परिवर्तन को दर्शाता है।

**6. मनुष्य (1:16-20)**

**क. दो मनुष्य अपने जाल डालते हुए (1:16-18)**

*गलील की झील के किनारे किनारे जाते हुए, उसने शमौन और उसके भाई अन्द्रियास को झील में जाल डालते देखा; क्योंकि वे मछुवे थे। यीशु ने उनसे कहा, “मेरे पीछे आओ; मैं तुम को मनुष्यों के मछुवे बनाऊँगा।” वे तुरन्त जालों को छोड़कर उसके पीछे हो लिये। (1:16-18)*

नि:संदेह, प्रभु अपने बचपन के वर्षों में उस छोटी झील के किनारे सौ बार चला होगा। आखिरकार, नासरत उस झील के किनारे कफरनहूम से केवल बीस मील दूर था, जहाँ उनके रिश्तेदार रहते थे। वास्तव में, यीशु के दिनों का पलिश्तीन केवल 140 मील लम्बा और उत्तर में लगभग 23 मील चौड़ा और दक्षिण में 80 मील चौड़ा था। यीशु शायद तट के हर कोने को जानता था। अत; प्रभु झील के किनारे किनारे चला, जैसा कि उसने पहले भी कई बार किया था। केवल इस बार वह एक विशेष उद्देश्य को ध्यान में रखकर चला।

गलील की झील यरूशलेम से लगभग साठ मील दूर है। यह 80 से 160 फुट गहरी है। यह भूमध्य सागर के स्तर से 680 फुट नीचे स्थित है। तिबिरियास सहित नौ नगर इसकी सीमा पर थे, जिनमें से प्रत्येक की आबादी लगभग पंद्रह हज़ार या उससे अधिक थी। प्रभु के दर्ज किए गए आश्चर्यकर्मों में से आधे गलील की झील के आसपास के इलाकों में किए गए थे।

आकार के मामले में यह एक बहुत छोटी झील है, परन्तु महत्व के मामले में यह एक वास्तविक “समुद्र” है। यह हमारे ग्रह के भूगोल पर एक मात्र बिंदु है, परन्तु कलीसिया की सोच और भजन-शास्त्र में यह एक विशाल महासागर है। वहाँ जो हुआ, उसके कारण यह महत्वपूर्ण है। यह सुसमाचारों पर हावी है, ठीक वैसे ही जैसे सुसमाचार दो हज़ार वर्षों तक मानवजाति की सोच पर हावी रहे हैं। यह गलील की झील के पास हुआ जहाँ यीशु ने हमें पहाड़ी उपदेश और अपने कई दृष्टान्त दिए। वहाँ उसका नाम पहली बार प्रसिद्ध हुआ। वहाँ भी, उसे अपने सबसे करीबी अनुयायी और मित्र मिले, जैसा कि मरकुस हमें स्मरण दिलाता है।

उदाहरण के लिये, यहीं पर उसने “शमौन और उसके भाई अन्द्रियास” को बुलाया। शमौन! वह मरकुस के नायकों में से एक बन गया। नि:संदेह, मरकुस को इस महत्वपूर्ण मुलाकात के बारे में जानकारी स्वयं शमौन से मिली होगी। परन्तु मरकुस, हमेशा की तरह, जल्दी में था, और वह ऐसे कई विवरण छोड़ देता है जो अन्य सुसमाचार प्रचारक देते हैं। फिर भी, मरकुस हमें पतरस के साथ यीशु की मुलाकात के बारे में बताने के लिये प्रतीक्षा नहीं कर सकता। “उसने शमौन... को देखा।” और बाद में मरकुस कहता है, “और उसके भाई अन्द्रियास को।” वास्तव में, अन्द्रियास पतरस से पहले मसीह के पास आया था; वास्तव में, सबसे पहले अन्द्रियास ही पतरस को यीशु के पास लाया था। मरकुस उन सब बातों को अनदेखा करता है। यह कुछ समय पहले ही हो चुका था। मरकुस हमें पतरस और यीशु के बारे में बताने की जल्दी में है। किसी भी मामले में, वह पतरस के हृदय परिवर्तन को नहीं, बल्कि उसकी बुलाहट को दर्ज कर रहा है।

“उसने शमौन... को देखा!” सभी ने शमौन पतरस को देखा या कम से कम उसे सुना! शमौन हमेशा भीड़ का केंद्र होता था। वह हमेशा वहीं होता था जहाँ कार्रवाई होती थी। खेलों में, शमौन को पहले बल्लेबाजी करनी होती थी। नाटक में, शमौन को दूल्हा बनना पड़ता था यदि वे विवाह नाटक रहे होते, और यदि वे अंतिम संस्कार खेल रहे होते तो रब्बी - या इससे भी बेहतर, लोथ बनना पड़ता था! विशेष रूप से यदि खेल में पुनरुत्थान शामिल होता!

“उसने शमौन... को देखा।” परन्तु उसने उससे भी अधिक देखा। उसने “पतरस” को देखा। जैसे माइकल एंजेलो ने संगमरमर के एक टुकड़े में दाऊद को देखा, वैसे ही यीशु ने एक साहसी मछुवारे में एक प्रेरित को देखा। उसने शमौन को अपना जाल डालते देखा, परन्तु साथ ही उसने तीन हज़ार लोगों को एक ही उपदेश से उद्धार पाते हुए देखा जो आने वाले पिन्तेकुस्त पर पतरस देगा। उसने पतरस को देखा, और उसने गैर-यहूदियों को भी कलीसिया में जुड़ते देखा। उसने पतरस को देखा, और उसने एक पुरुष को मृत्युदण्ड की पहाड़ी पर एक क्रूस ले जाते हुए देखा, जो मृत्यु तक, यहाँ तक कि क्रूस की मृत्यु तक भी विश्वासयोग्य था। उसने पतरस को देखा, और उसने एक नाम को महिमा में लिखा हुआ देखा, एक लोहे की कलम और सीसे से हमेशा के लिये चट्टान में उकेरा गया, स्वर्गीय नगर की नींव के पत्थरों में काटा गया। उसने अन्द्रियास का नाम भी देखा, क्योंकि अपने शान्त, एकांतप्रिय तरीके से, अन्द्रियास अपने घमंडी भाई पतरस जितना ही बड़ा पुरुष था। जब भी हम सुसमाचारों में अन्द्रियास से मिलते हैं, तो वह किसी को यीशु के पास ला रहा होता है। प्रभु ने इसे देखा।

हम शान्त व्यक्ति को अनदेखा कर देते हैं। परन्तु यीशु को नहीं! उसके पास अन्द्रियास के लिये उतनी ही जगह है जितनी उसके बड़े भाई के लिये। अन्द्रियास उन दोनों में से पहला था जो यीशु के पास आया था। वह जल्द ही अपने भाई को साथ लेकर वापस आ गया। वह उस दिन पतरस की तरह ही अपने जाल को डालने में परिश्रमी था। इन भाइयों को, जो कि प्रकार और स्वभाव में इतने भिन्न थे, एक साथ काम करते हुए, व्यस्त और सामंजस्य में देखकर प्रभु प्रसन्न हुआ।

“मेरे लौट आने तक लेन–देन करना,” यह प्रभु का हम सभी के लिये वचन है (लूका 19:13)। प्रभु ने बेकार लोगों को अपना चेला बनने के लिये नहीं बुलाया; उन्होंने व्यस्त लोगों को बुलाया। उसे यह देखकर प्रसन्नता हुई कि ये लोग अपनी अनिवार्य बुलाहट के साथ आने के प्रतीक्षा के दौरान उन कार्यों को कर रहे थे जिन्हें वे सबसे अच्छे तरीके से करना जानते थे।

“मेरे पीछे आओ; और मैं तुम को मनुष्यों के मछुवे बनाऊँगा।” बड़ी कठिनता से एक दर्जन शब्द बोले! बस इतना ही पर्याप्त था।

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने जिस मसीह के बारे में प्रचार किया था, उसके बारे में शमौन और अन्द्रियास को बहुत कुछ रहस्यमयी लगा होगा। उसने अभी तक कोई आश्चर्यकर्म नहीं किया था। यूहन्ना ने अनिच्छा से उसे बपतिस्मा दिया था, और स्वर्ग से भयानक आवाज गूँजी थी। परन्तु फिर वह गुरु मरुस्थल की गहराई में गायब हो गया था। नि:संदेह, दोनों भाइयों को उसके गायब होने पर आश्चर्य हुआ होगा। अब, वह यहाँ था, और झील के किनारे किनारे टहलते हुए उनकी ओर आया।

इस समय तक, शमौन और अन्द्रियास ने सम्भवत: अपने साथियों, याकूब और यूहन्ना के साथ अपनी टिप्पणियों की तुलना कर ली होगी, जो कुछ समय पहले मसीह से मिली थीं, ठीक वैसे ही जैसे वे थे। उन्होंने सोचा होगा कि यह दाऊद के सिंहासन पर दावा करने का एक कम महत्वपूर्ण, बिना झंझट वाला तरीका था।

उसके बाद, यह भी तथ्य था कि वे शायद नासरत के यीशु को मानवीय स्तर पर वर्षों से जानते थे! याकूब और यूहन्ना की माता सलोमी थी, जो कुँवारी मरियम की बहन लगती थी। यदि ऐसा है, तो याकूब और यूहन्ना उसके मौसेरे भाई थे। निश्चित रूप से यीशु के जन्म के आसपास की विचित्र परिस्थितियों के बारे में, कम से कम परिवार के लोगों में कहानियाँ प्रचलित रही होंगी। पूर्ण भलाई के लिये यीशु की प्रतिष्ठा अच्छी तरह से जानी जाती थी। परन्तु, यदि वह मसीह था, तो उसने इसकी घोषणा करने में इतनी लम्बी प्रतीक्षा क्यों की? और वह सभी जगहों में से नासरत में रहने से क्यों संतुष्ट था?

परन्तु अब सभी संदेह दूर हो गए थे। यीशु आ गया था। उसकी बुलाहट गूँजी, तथा शमौन और अन्द्रियास ने तुरन्त उत्तर दिया - जैसा कि थोड़ी देर बाद याकूब और यूहन्ना ने भी किया, जब उन्हें भी बुलाया गया था। जो आवाज गूँजी वह अधिकार से भरी हुई थी। “मेरे पीछे आओ!” यीशु ने कहा। पतरस को, जो जन्मजात अगुवा था, अनुयायी बनने के लिये आमंत्रित किया गया। यीशु ने कहा, “मैं तुम को मनुष्यों के मछुवे बनाऊँगा।” उन्होंने एक पल के लिये भी संकोच नहीं किया। एक पल वे मछुवारे थे; अगले ही पल वे अनुयायी बन गए।

**ख. दो मनुष्य अपने जाल सुधारते हुए (1:19-20)**

*और कुछ आगे बढ़कर, उस ने जब्दी के पुत्र याकूब, और उसके भाई यहून्ना को, नाव पर जालों को सुधारते देखा। उस ने तुरन्त उन्हें बुलाया; और वे अपने पिता जब्दी को मजदूरों के साथ नाव पर छोड़कर, उसके पीछे हो लिये। (1:19-20)*

पतरस और अन्द्रियास झील के किनारे-किनारे कुछ दूर तक उसके पीछे-पीछे चले और वहाँ पहुँचे जहाँ याकूब और यूहन्ना भी उतने ही व्यस्त थे जितने वे पहले थे। वे एक अलग काम में लगे हुए थे, परन्तु वे भी उतने ही परिश्रमी थे।

ऐसा लगता है कि जब्दी एक सम्पन्न व्यक्ति था क्योंकि वह सहायकों को काम पर रखने में सक्षम था और सम्भवत: यरूशलेम में उसके महत्वपूर्ण सम्पर्क थे। यदि उसकी पत्नी, सलोमी, वास्तव में मरियम की बहन थी, जैसा कि लगता है, तो वह भी राजसी वंश की थी। याकूब और यूहन्ना भी, जिन्होंने पतरस के साथ मिलकर जल्द ही चेलों के बीच एक आंतरिक मंडली बनाई।

इन लोगों को शायद ही पता था कि यीशु का अनुसरण करना उन्हें आखिरकार कहाँ ले जाया जाएगा! पतरस का मार्ग उसे यरूशलेम, याफा, अन्ताकिया और समुद्र पार और बहुत दूर ले जाएगा। परम्परा कहती है कि वह रोम गया था। सभी विवरणों के अनुसार वह बेबीलोन गया था। यूहन्ना का मार्ग उसे दूर इफिसुस और अंत में पतमुस ले गया, एक ऐसी जगह जिसके बारे में उसने शायद उन प्रारम्भिक गलीली दिनों में कभी नहीं सुना था। उस दिन इन मछुवारों को शायद ही पता था कि वे सभी समय के सबसे प्रसिद्ध लोगों में गिने जाएँगे या कि वे ऐसी पुस्तकें लिखेंगे जो मूसा और मलाकी के परिचित लेखन की तरह ही बाइबल का एक हिस्सा होंगी।

याकूब और यूहन्ना! विरोधाभासों में एक और अध्ययन! याकूब पहला शहीद प्रेरित बन गया, यूहन्ना अंतिम प्रेरित संदेशवाहक। याकूब हमें दिखाएगा कि मसीह के लिये कैसे मरना है, यूहन्ना मसीह के लिये कैसे जीवन बिताना है। प्रभु यीशु ने इस जोड़ी को “गर्जन के पुत्र” का उपनाम दिया। यूहन्ना को यीशु ने अपनी माता की देखभाल सौंपी, जब वह कलवरी के क्रूस पर लटका हुआ था। जहाँ तक इन प्रेरितों के माता-पिता की बात है, वे उन सभी माताओं और पिताओं का प्रतिनिधित्व करते हैं जो उदारतापूर्वक अपने पुत्र-पुत्रियों को यीशु को देते हैं, भले ही वे उनका गौरव और आनन्द हों, उनके दैनिक मामलों में भागीदार हों, और उनके बुढ़ापे का अपेक्षित सहारा हों।

जब उन्हें बुलाया गया, तो भाइयों की एक जोड़ी अपना जाल *डाल रही थी*; वे सुसमाचार प्रचारक का प्रतिनिधित्व करते हैं। उन्होंने अपने परिश्रम के लिये तत्काल परिणाम देखे। दूसरा जोड़ा अपने जाल *सुधार रहा था*; वे पासबान-शिक्षक का प्रतिनिधित्व करते हैं। उनका काम अधिक थकाऊ था और इतना शानदार पुरस्कार नहीं था। कलीसिया को दोनों प्रकार के अगुवों की आवश्यकता है। यीशु ने पहले पतरस और अन्द्रियास को बुलाया, फिर याकूब और यूहन्ना को। इसी रीति से, प्रचारक का काम पहले आता है, उसके बाद उन लोगों का धैर्यपूर्ण परिश्रम आता है जो स्थानीय कलीसिया के मामलों को अच्छी तरह से सम्भालते हैं।

दोनों बुलाहटों के साथ प्रतिक्रिया तत्काल थी। दोनों बुलाहटों के साथ मरकुस ने इसका वर्णन करने के लिये अपने पसंदीदा शब्द *सीधे,* या *तुरन्त का उपयोग किया है।* मरकुस रचित सुसमाचार मसीह और मसीही विश्वासी दोनों के सेवक वाले चरित्र पर जोर देता है। तत्काल, तत्पर और प्रसन्नतापूर्वक आज्ञाकारिता सेवक की पहचान है।

प्रभु के पहले चार चेले मछुवारे थे! मानवीय मानकों के हिसाब से यह विचित्र लगता है। वह एक राज्य की स्थापना करने और एक कलीसिया बनाने जा रहा था। निश्चित रूप से उसे अपने लोगों के लिये राजधानी जाना चाहिए था। निश्चित रूप से उसे विद्वानों के लिये रब्बी पाठशालाओं की छानबीन करनी चाहिए थी और सरकार एवं व्यवस्था में कुशल लोगों के लिये महासभा जाना चाहिए था। निश्चित रूप से, यदि उसे रोम की शक्ति का सामना करना था, तो उसे सैन्य प्रतिभा वाले लोगों की आवश्यकता होगी, न कि केवल गलीली मछुवारों की। हालाँकि, उसके तरीके हमारे तरीके नहीं हैं। वह सम्भावित सैनिकों की खोज नहीं कर रहा था, बल्कि पासबानों और शिक्षकों की खोज कर रहा था। अत: वह आम लोगों के पास गया। वह समय आने पर रोम का सामना करेगा, युद्ध और नीति और षड्यंत्र से नहीं बल्कि विश्वास और आशा और प्रेम से। शहीदों का लहू कलीसिया का बीज होगा। रोमी संसार में मसीहियों का बड़ा हिस्सा दासों और स्वतंत्र लोगों की श्रेणी से लिया जाना था। उन्हें यह जानकर प्रोत्साहन मिलेगा कि जब यीशु ने अपने चेलों को चुना, तो उसने कामगारों को चुना।

अत: यीशु ने बुलाया, और मरकुस ने लिखा कि “वे अपने पिता जब्दी को मजदूरों के साथ नाव पर छोड़कर, उसके पीछे हो लिये।” जब्दी के पास अभी भी व्यवसाय को आगे बढ़ाने के लिये सक्षम सहायता थी, परन्तु उसे अपने पुत्रों की बहुत याद आई होगी।

हम पतरस और अन्द्रियास के बारे में बहुत कम जानते हैं। वे याकूब और यूहन्ना के साथ साझेदार थे, इस कारण नि:संदेह, वे काफी सम्पन्न थे। हम जानते हैं कि पतरस विवाहित था और उसका कफरनहूम में एक घर था। स्पष्ट है कि जब प्रभु ने अपनी सार्वजनिक सेवकाई आरम्भ की, तो उसने पतरस के घर को अपने संचालन का आधार बनाया।

**7. आश्चर्यकर्म (1:21-45)**

**क. घर में (1:21-34)**

**(1) अपने पिता के घर में (1:21-28)**

(क) निर्देश (1:21)

*तब वे कफरनहूम में आए, और वह तुरन्त सब्त के दिन आराधनालय में जाकर उपदेश करने लगा। (1:21)*

मरकुस ने काम आरम्भ करने में कोई समय बर्बाद नहीं किया। उसने दो दर्जन से भी कम आयतों में सभी प्रारम्भिक बातें बताईं, ताकि रोमियों और बाकी संसार को दिखाया जा सके कि परमेश्वर का सिद्ध सेवक काम कर रहा है। उसने आश्चर्यकर्म से आरम्भ किया - जो कि यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले से बिलकुल अलग था, जिसने कोई आश्चर्यकर्म नहीं किया (यूह. 10:41)।

सब्त के दिन यीशु कफरनहूम के स्थानीय आराधनालय में अपने स्थान पर था। आराधनालय के शासक ने संकोच नहीं किया; उसने मंच यीशु को सौंप दिया। हमें यह नहीं बताया गया है कि यीशु ने उस दिन क्या शिक्षा दी, परन्तु हम निश्चित हो सकते हैं कि प्रभु ने सभी का ध्यान आकर्षित किया था। हम सुसमाचार के अन्य भागों से प्रभु के उपदेश की शैली और सार को जानते हैं। वह उस राज्य के बारे में शिक्षा देगा जो अब इस्राएल को दिया जा रहा था। वह उस राज्य में प्रवेश के मार्ग के रूप में नये जन्म की आवश्यकता और उसमें नागरिकता के प्रमाण के रूप में पवित्र जीवन व्यतीत करने पर जोर देगा। संदेश को प्रतिदिन की वस्तुओं और घटनाओं से भव्य रूप से चित्रित किया जाएगा, और इसे पुराने नियम के कई संदर्भों या संकेतों के द्वारा पूरी तरह से प्रलेखित किया जाएगा।

इसका प्रभाव तत्काल था। “और लोग उसके उपदेश से चकित हुए” (1:22)। इसके अलावा, उसकी शिक्षा में पूर्ण आश्वासन और अधिकार था, और इसने उनके हृदयों को जकड़ लिया। अब तक, वे रब्बियों की शिक्षा के सूखे छिलकों पर ही पल रहे थे। वे रब्बियों की मौखिक परम्पराओं के आदी हो चुके थे, जिनमें से कई परमेश्वर के वचन के विपरीत थीं। यीशु ने इस उलझी हुई झाड़-झंखाड़ को काट दिया और लोगों को पुराने नियम के बाइबल सत्य के ऊँचे पेड़ों को स्वयं देखने दिया।

प्रभु की कुछ बेहतरीन शिक्षाएँ कफरनहूम और उसके आसपास ही दी गई थीं; उसके कुछ शक्तिशाली आश्चर्यकर्म भी वहाँ किए गए। कफरनहूम के लोगों ने प्रभु की शिक्षा पर *क्रोध* से प्रतिक्रिया नहीं की, जैसा कि नासरत के लोगों ने किया था (लूका 4:16-30), परन्तु, अंत में, वे भी उतने ही बुरे थे। उन्होंने *उदासीनता* से प्रतिक्रिया की।परिचितता ने उनमें घृणा उत्पन्न की, जैसा कि उसके गृहनगर नासरत के लोगों के हृदयों में था, और अंत में, उसने कफरनहूम को न्याय के लिये सौंप दिया (मत्ती 11:23-24)। हालाँकि, उस समय, वह “नौ दिन का आश्चर्य” था। कफरनहूम के लोगों ने उसके उपदेश की तुलना स्थानीय और आने वाले रब्बियों के उपदेश से की, जिन्हें उन्होंने अक्सर सुना था और जिन्होंने उन्हें भ्रमित किया था और अंतहीन अनुष्ठानों, नियमों और विनियमों के साथ उनके जीवन को जटिल बना दिया था।

(ख) रुचि (1:22)

*और लोग उसके उपदेश से चकित हुए; क्योंकि वह उन्हें शास्त्रियों के समान नहीं, परन्तु अधिकारी के समान उपदेश देता था। (1:22)*

शास्त्री उस देश के बुद्धिजीवी लोग थे और बेबीलोन से देश लौटने के बाद, राज्य के सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति थे। मूल रूप से, उन्हें पवित्रशास्त्र को भ्रष्ट होने से बचाने और प्रचलन के लिये उनकी प्रतिलिपि बनाने के लिये नियुक्त किया गया था। वे इस कार्य में परिश्रमी थे, हर पृष्ठ पर हर अक्षर की गिनती करते थे और प्रतिलिपियों को लिपि सम्बन्धी त्रुटियों से बचाने के लिये हर उस बात की गिनती करते थे जिसे गिना जा सकता था।

उन्होंने स्वंय को तथाकथित “मौखिक व्यवस्था” के संरक्षक भी बनाया। रब्बी सिद्धांत के अनुसार, परमेश्वर ने मूसा को *लिखित* वचन और *मौखिक* वचन दिए। लिखित व्यवस्था पुराने नियम का पवित्रशास्त्र था; “मौखिक व्यवस्था” वह था जिसे रब्बियों ने अपनी शिक्षाओं और परम्पराओं में संरक्षित किया। इसका अपना एक अलग जीवन था। यह बढ़ता और फैलता रहा। विश्वासों के इस निरंतर बढ़ते समूह में अनुष्ठान के प्रश्नों पर रब्बी के निर्णयों का लेखा (*हलाकोथ)*, उन निर्णयों से उत्पन्न एक कानूनी संहिता (*मिश्ना)*, इब्रानी पवित्र किंवदंतियों का संग्रह (*गेमारा)*, पुराने नियम पर टिप्पणियाँ (*मिड्राशिम)*, और पारम्परिक शिक्षण के इस निरंतर विस्तारित निकाय पर तर्क (*हागाडा)* शामिल थे। इन सभी की एक रहस्यमय शाखा के रूप में *कबाला था,* जो एक रहस्यमय और अर्ध-जादुई स्वभाव की अत्यधिक कल्पनाशील और रूपक अटकलों में विशेषज्ञ था। कई शताब्दियों तक, परम्परा के सत्य और त्रुटि का यह सामूहिक मिश्रण केवल रब्बियों और शास्त्रियों की विशाल स्मृतियों में संरक्षित था क्योंकि इसे लिखना मना था। बाद में इसने तालमूद का निर्माण किया,जिसने वास्तविक रूप से यहूदियों के बीच पवित्रशास्त्र की जगह ले ली।[5]

प्रभु धार्मिक लाल फीताशाही के इस उलझे हुए ढेर को काटकर लोगों को बाइबल की ओर वापस ले गया, प्रतिदिन की भाषा में बात की, और हर जगह से अपने दृष्टान्त निकाले। उसने हृदय और मन, विवेक और इच्छा से बात की। और उसने अधिकार के साथ बात की, पवित्र आत्मा ने उनके वचन की सच्चाई की गवाही दी। यहाँ तक कि उसके शत्रुओं ने भी कहा, “किसी मनुष्य ने कभी ऐसी बातें नहीं कीं” (यूह. 7:46)। कफरनहूम के आराधनालय के लोग सबसे पहले उसे सुनने वालों में से थे।

हम इस बात को लेकर आश्वस्त हो सकते हैं कि उसने “प्राचीनों की परम्पराओं” की निन्दा करके आरम्भ नहीं किया, यद्यपि उसने बाद में स्पष्ट शब्दों में ऐसा किया। अभी के लिये, उसने इसे अनदेखा कर दिया। “एक व्यक्ति,” वह कहता था, “उसके दो पुत्र थे।” या, “स्वर्ग का राज्य राई के दाने के समान है।” या, “धन्य है वह पुरुष जो।” यह सब इतना सरल, इतना ठोस और इतना प्रेरक था।

(ग) बाधा (1:23-28)

*उसी समय, उनके आराधनालय में एक मनुष्य था, जिसमें एक अशुद्ध आत्मा थी। (1:23)*

ऐसे संदेशों के साथ जो उन्होंने पहले कभी नहीं सुने थे, ऐसे आश्चर्यकर्म भी आए जो उन्होंने पहले कभी नहीं देखे थे। शैतान उस सब्त के दिन आराधनालय में था, और सेवा को बाधित करने के अवसर की प्रतीक्षा कर रहा था। हमें नहीं पता कि यह दुष्टात्माग्रस्त व्यक्ति पहले कितनी बार आराधनालय में गया था; सम्भवत: वह नियमित रूप से उपस्थित होता था। शैतान को सामान्य आराधनालय सेवा से डरने की कोई आवश्यकता नहीं थी। निश्चित रूप से अशुद्ध आत्मा वाले व्यक्ति ने पहले कभी वहाँ कुछ ऐसा नहीं सुना था, जिससे उसे परेशानी हुई हो। परन्तु यह नये प्रकार के प्रचार कुछ और ही थे। शास्त्रियों की शिक्षा ने कभी भी उस भयावह भ्रष्टता की गहराई को नहीं छुआ था जो इस व्यक्ति की पीड़ित आत्मा में व्याप्त थी, परन्तु यीशु के प्रचार ने ऐसा किया। इसने एक अचानक और विद्युतीय प्रतिक्रिया को उकसाया। हम अच्छी तरह से कल्पना कर सकते हैं कि जब दुष्टात्माग्रस्त व्यक्ति की आवाज सुनाई दी तो मण्डली में भय और सदमे की उत्तेजना फैल गई होगी।

*हे यीशु नासरी, हमें तुझ से क्या काम? क्या तू हमें नष्ट करने आया है? मैं तुझे जानता हूँ, तू कौन है? परमेश्वर का पवित्र जन! (1:24)*

बहुवचन और एकवचन के बीच व्यक्तिगत् सर्वनामों के बदलाव पर ध्यान दें। व्यक्तित्व का भ्रम दुष्टात्माग्रस्त व्यक्ति के मामलों में काफी आम है। इस मनुष्य में रहने वाला दुष्टात्मा प्रभु यीशु के व्यक्तित्व और उसके द्वारा पहनी गए अद्भुत पवित्रता से भयभीत था। वह दुष्टात्मा यह सहन नहीं कर सकी। वह अच्छी तरह जानती थी कि नासरत का यह मनुष्य, यीशु कौन है। वह परमेश्वर का पवित्र जन था। यीशु की पवित्रता उस दुष्टात्मा के विवेक में लाल-गर्म लोहे की तरह जल उठी।

दुष्टात्माएँ हमें उलझन में डालती हैं। वे दुष्टात्माएँ हैं जो सामान्य मानवजाति से परे दुष्टता की चपेट में हैं। इसके अलावा, उन्हें शरीर पर नियंत्रण करने की लालसा होती है, और जब भी अवसर मिलता है वे मानवीय शरीर पर नियंत्रण कर लेते हैं। वे सूअर के शरीर को बिना किसी शरीर के पसंद करेंगी। वे शैतान के अधिकार में प्रतीत होती हैं, और वह उनका उपयोग मनुष्यों को बन्दी बनाने के लिये करता है। हालाँकि, वे पतित स्वर्गदूतों के समान नहीं हैं। स्वर्गदूत शारीरिक रूप धारण कर सकते हैं (उत्प. 18:1-33) और उन्हें मानवीय शरीर चुराने की कोई आवश्यकता नहीं है। एक सुझाव यह है कि दुष्टात्माएँ आदम से पहले की जाति के प्राणियों की देह रहित आत्माएँ हैं जिनका अब कोई निशान या लेखा नहीं बचा है। बाइबल के दृष्टिकोण से, हम मनुष्य के आने से पहले हमारे ग्रह पर क्या हुआ, इसके बारे में बहुत कम या कुछ भी नहीं जानते हैं। हम जानते हैं कि संसार बर्बाद हो गया था (उत्प. 1:2) और यह उस तरह से नहीं बनाया गया था (यशा. 45:18)। सम्भवत: हमारा ग्रह और इसका सौरमण्डल लूसीफर के पतन से पहले उसके आधिपत्य का हिस्सा था, और हो सकता है कि उत्पत्ति की आरम्भिक आयतों में वर्णित अराजकता की स्थिति उस पतन का हिस्सा थी।

किसी भी मामले में, आराधनालय में इस दु:खी मनुष्य में रहने वाली दुष्टात्मा ने यीशु को तुरन्त पहचान लिया और उसे तुरन्त स्वीकार कर लिया। दुष्टात्मा ने प्रभु को सम्बोधित करते हुए बहुवचन का उपयोग किया: “हमें अकेला छोड़ दो; *हमें* तुझ से क्या काम?” या तो उस मनुष्य में एक से अधिक दुष्टात्माएँ थीं, या वह दुष्टात्मा सामान्य रूप से दुष्टात्माओं के लिये बोल रहा था। उस दुष्टात्मा ने माँग की कि उसे अकेला छोड़ दिया जाए, ताकि प्रभु उसके साथ हस्तक्षेप न करें। उसी समय, उसने पहचाना कि उसके और उनके बीच एक बड़ी खाई तय की गई थी। दुष्टात्मा(ओं) को यह भी पता था कि यीशु के पास ईश्वरत्व की सारी सामर्थ्य थी।

नये नियम में केवल दुष्टात्माएँ ही हैं जो परमेश्वर के मसीह को “यीशु” कहकर सम्बोधित करती हैं। उसने अपने चेलों से कहा, “तुम मुझे गुरु और प्रभु कहते हो, और ठीक कहते हो, क्योंकि मैं वही हूँ” (यूह. 13:13)। यह एक प्रकार की धृष्टता और अहंकार था तथा उनकी भयंकर दुष्टता का एक अनैच्छिक प्रदर्शन था कि दुष्टात्माओं ने उसे इस तरह से सम्बोधित करने का साहस किया। उसने हमेशा उन्हें चुप कर दिया और उन्हें बाहर निकाल दिया और उन्हें अपनी इच्छा के कैदी बना लिया।

हालाँकि, यह उसकी पवित्रता ही थी जो उस बेचारे मनुष्य की पीड़ा देने वाली दुष्टात्मा में आग की तरह जल रही थी। यह बिजली की तरह थी, जो जलती भी है और चमकती भी है। उसकी पवित्रता ने, जिसके आगे चमकते हुए साराप भी सिकुड़ जाते हैं (यशा. 6:2), इस दुष्टात्मा की अथाह दुष्टता और बुराई को उजागर किया। वह इससे दूर भागा, इसके विरुद्ध आवाज उठाई और इसकी चमक के नीचे तड़प उठा।

*यीशु ने उसे डाँट कर कहा, “चुप रह; और उसमें से निकल जा।” तब अशुद्ध आत्मा उसको मरोड़कर, और बड़े शब्द से चिल्‍लाकर उसमें से निकल गई। (1:25-26)*

यीशु ने दुष्टात्मा को तुरन्त चुप करा दिया। “चुप रह; और उसमें से निकल जा।” दुष्टात्मा की धृष्टता को फटकार लगाई गई, और उसकी घिनौनी जीभ को, जिसने एक बार सच बोला था, बाँध दिया गया। यीशु ऐसे स्रोत से कोई प्रमाण नहीं चाहता था। इसके अलावा, इस बेचारे मनुष्य के शरीर पर उसका नियंत्रण समाप्त कर दिया गया।

सुसमाचारों में, प्रभु की सेवकाई को शैतान और अभूतपूर्व दुष्टात्माओं की गतिविधियों के द्वारा चुनौती दी गई थी। ऐसा लगता है कि नरक की सेनाएँ परमेश्वर के पुत्र का विरोध करने के लिये एकत्रित हो गई थीं। उसकी प्रतिक्रिया बस हर उस दुष्टात्मा को बाहर निकालना था जो उसके मार्गों में आती थी। इस प्रकार, उसने मानवजाति को खतरे में डालने वाले भयानक खतरों को उजागर किया और जीवन की सभी स्थितियों और परिस्थितियों पर अपना पूर्ण प्रभुत्व प्रकट किया। उसने पहले ही जंगल में शैतान को व्यक्तिगत् रूप से हरा दिया था। अब उसने उसके राज्य में तबाही मचा दी। इसके अलावा, वह कल, आज और हमेशा एक जैसा है।

यहाँ तक कि परमेश्वर के पुत्र के आमने-सामने होने पर भी, इस दुष्टात्मा ने अपने शिकार से बाहर निकलने को यथासम्भव पीड़ादायी और सार्वजनिक बना दिया। उसे एक अंतिम बार छुरा मारना था और एक अंतिम शब्द कहना था। परन्तु वह बाहर निकल गई, और बेचारा मनुष्य स्वतंत्र हो गया। मरकुस परिणाम पर ध्यान नहीं देता, परन्तु यह एक नये दिन की सुबह की तरह रहा होगा। जिस अंधे मनुष्य को यीशु ने चंगा किया, उसने गवाही दी, “एक बार मैं अंधा था, परन्तु अब मैं देख सकता हूँ।” यह पूर्व ग्रसित व्यक्ति कह सकता था, “एक बार मैं बंधा हुआ था, परन्तु अब मैं स्वतंत्र हूँ!” एक बार फिर उसने अपने शरीर और मन पर नियंत्रण कर लिया।

*इस पर सब लोग आश्‍चर्य करते हुए आपस में वाद–विवाद करने लगे, “यह क्या बात है? यह तो कोई नया उपदेश है! वह अधिकार के साथ अशुद्ध आत्माओं को भी आज्ञा देता है, और वे उसकी आज्ञा मानती हैं।” (1:27)*

सब्त के दिन आराधनालय में उपस्थित लोगों को आश्चर्य हुआ। उन्होंने पूछा, “यह कौन सी नयी शिक्षा है?” उन्होंने कभी भी अपने किसी प्रचारक को ऐसा कुछ करते नहीं देखा था जिसकी तुलना मसीह ने अभी-अभी जो किया, उससे की जा सके, परन्तु यह कोई “नयी शिक्षा” नहीं थी। यह अनन्त सत्य था, जिसने सभी परम्परावाद और त्रुटियाँ हटा दी थीं, यह सत्य स्वर्ग के साथ, पल-पल के सम्पर्क में रहने वाले जीवन के द्वारा समर्थित था। दुष्टात्माओं ने उस तथ्य को पहचाना, भले ही लोगों ने नहीं पहचाना।

नि:संदेह, आज भी संसार कलीसिया में यही देखने का प्रतीक्षा कर रहा है - हमारे बीच मसीह का सबूत। संसार हमारी विधिवादिता, कर्मकांडवाद, तर्कवाद और पाखंड से थक चुका है। यह हमारी निष्फल शिक्षा, मनोवैज्ञानिक उपदेश, घिसी-पिटी बातों, “करिश्माई” अतिवाद, नकली सार्वभौमिकता और मृत उपदेशों से थक चुका है। यह पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से जुड़ी शिक्षाओं को देखने का प्रतीक्षा कर रहा है। फिर, जैसे जब दुष्टात्माओं को बाहर निकाला गया था, तब लापरवाह, मसीह को अस्वीकार करने वाला संसार पूरी तरह से आँखें और कान बन जाएगा।

*और उसका नाम तुरन्त गलील के आसपास के सारे प्रदेश में फैल गया। (1:28)*

देश के पूरे उत्तरी भाग को इस बात की जानकारी थी कि एक भविष्यद्वक्ता देश में आ गया है। मत्ती हमें बताता है कि एक प्राचीन भविष्यद्वाणी पूरी हुई क्योंकि परमेश्वर हमेशा अपने वचन के अनुसार काम करता है: “जबूलून और नप्तालीम के देश, समुद्र के मार्ग से, यरदन के पार, अन्यजातियों का गलील। जो लोग अंधकार में बैठे थे, उन्होंने बड़ी ज्योति देखी; और जो मृत्यु के देश और छाया में बैठे थे, उन पर ज्योति चमकी” (मत्ती 4:15-16; यशा. 9:1-2)।

देश का यह हिस्सा एक निर्जन भूमि, एक प्रतिरोधी क्षेत्र था, जो दक्षिण में यरूशलेम, यहूदिया और यहूदी लोगों संसार और उत्तर में अन्यजातियों के संसार के बीच था। जैसा कि हमने देखा है, इसमें यहूदियों और अन्यजातियों का मिश्रण था। यह दक्षिण के इब्री यहूदियों के द्वारा लगभग उतना ही तिरस्कृत था जितना कि स्वयं अन्यजातियों के संसार के द्वारा। यह वास्तव में “अन्यजातियों का गलील” था (मत्ती 4:15)। फिर भी, यहीं पर प्रभु ने दिखाया कि वह कौन था - “सूखी भूमि से निकली एक जड़” (यशा. 53:2)।

**(2) अपने मित्रों के घर में (1:29-34)**

सबसे पहले, हमारे पास *निजी चंगाई है* (1:29-31):

*वह तुरन्त आराधनालय में से निकलकर, याकूब और यूहन्ना के साथ शमौन और अन्द्रियास के घर आया। (1:29)*

प्रभु ने अपने पिता के घर में एक उल्लेखनीय आश्चर्यकर्म करने के बाद, अब अपने मित्र के घर में भी एक आश्चर्यकर्म किया। सब्त के दिन आराधनालय की सेवा के बाद, यीशु और उनके चेले भोजन और विश्राम के लिये पतरस के घर गए। नि:संदेह, पतरस की पत्नी अपनी बीमार माता की सेवा करने और तैयारियाँ करने के लिये पहले ही चली गई थी। जिस तरह से मरकुस ने इसका वर्णन किया है, वह पतरस के घर से बहुत दूर नहीं था। नि:संदेह मरकुस को घर के बारे में अच्छी तरह से पता था जब वह पतरस का अनुवादक बन गया था। ऐसा भी लगता है कि पतरस का घर प्रभु का घर बन गया था।

यह किस तरह का घर था? सम्भवत: यह पत्थर से बना था। यह इतना बड़ा था कि इसमें पतरस, उसकी पत्नी, उसकी सास, सम्भवत: उसका भाई अन्द्रियास और एक मेहमान रह सकते थे। इस बात की पूरी सम्भावना है कि इसमें सामान्य सीढ़ियाँ थीं जो बाहरी दीवारों में से एक से होकर सपाट छत तक जाती थीं, जो दिन भर का काम समाप्त होने के बाद परिवार और मित्रों के इकट्ठा होने की पसंदीदा जगह थी। बहुत सम्भव है कि यह झील और आसपास की पहाड़ियों का शानदार दृश्य प्रस्तुत करता हो - साथ ही पड़ोसियों के आंगन और संकरी गलियाँ और पास का आराधनालय, तट के किनारे खड़ी या झील के उस पार नावों के साथ तटबंध का तो जिक्र ही न करें।

एच.वी. मॉर्टन एक विशिष्ट पलिश्तीन घर का वर्णन इस प्रकार करते हैं:

मैंने जिन घरों का दौरा किया, उनमें से एक घर शायद मसीह के समय से ही अपरिवर्तित रहा हो। पुरुष पशुओं की देखभाल कर रहा था, दो गधे और एक बछड़ा, जो गुफा में चट्टान से बंधे थे। ऊपर के कमरे में स्त्री छलनी से बाजरे जैसे कुछ छोटे अनाज को छान रही थी। बीच-बीच में वह अपने पति से बात करती थी, जबकि वह नीचे के कमरे में व्यस्त था।

बैठक कक्ष में, पूर्व के अधिकांश कमरों की तरह, फर्नीचर नहीं था। इसके एक कोने में चटाई वाले बिस्तर लपेटे हुए थे और दृष्टि से दूर रखे हुए थे।

मेरे मन में यह विचार आया कि जिस तरह की इमारत में यीशु मसीह का जन्म हुआ था, उसके सबसे समीप शायद कोनीमारा कक्ष है। मुझे स्मरण है कि एक बार मैं बैतलहम के इन घरों की तरह एक छोटे से सफेद कक्ष में जागरण में गया था, सिवाय इसके कि यह सब एक ही मंजिल पर था। बैठक कक्ष को पशुओं के कमरे से एक खंभे और बोरी के पर्दे से अलग किया गया था। जब हम घुड़दौड़ की जगह की आग के चारों ओर बैठे थे, तो पशुओं के पैर पटकने की आवाज हमें स्पष्ट सुनाई दे रही थी। मुझे स्मरण है कि उस समय मैंने सोचा था कि शायद जन्मोत्सव उसी विनम्र परिवेश में हुआ होगा।[6]

सम्भवत: पतरस का घर भी इतना अलग नहीं था। हम निश्चित हो सकते हैं कि उस घर में यीशु को बहुत प्रेम किया जाता था। पवित्र लोगों को आतिथ्य का आग्रह करते हुए, पवित्र आत्मा कहता है, “ पहुनाई करना न भूलना, क्योंकि इसके द्वारा कितनों ने अनजाने स्वर्गदूतों की पहुनाई की है” (इब्रा. 13:2)। पतरस और उसके परिवार ने उस व्यक्ति का आतिथ्य किया जिसकी स्वर्गदूत उपासना करते हैं।

*शमौन की सास ज्‍वर से पीड़ित थी, और उन्होंने तुरन्त उसके विषय में उससे कहा। (1:30)*

शायद उन्होंने घर लौटते समय उसे पतरस के बीमार रिश्तेदार के बारे में बताया हो। शायद उन्होंने अचानक कहा हो: “पतरस की सास बीमार है। उसे बुखार है।” नि:संदेह उन्होंने उसे बताया, आशा करते हुए कि वह उसे ठीक कर देगा। आखिरकार, एक ऐसे व्यक्ति के लिये बुखार क्या मायने रखता है जो एक दुष्टात्मा को ठीक कर सकता है? निश्चित रूप से वह एक बुखार का इलाज कर सकता है!

इस घटना से हमें पता चलता है कि पतरस, कम से कम, प्रेरितों के बीच, एक विवाहित व्यक्ति था जिसके पास घरेलू जिम्मेदारियाँ थीं। उसे अपनी पत्नी का भरण-पोषण करना था; शायद वह उसकी माता का भी भरण-पोषण करता था। हम प्रभु के चेलों के बारे में यह सोचते हैं कि वे युवा और सबसे अलग, उन्मुक्त और बैरागी थे। हालाँकि, कम से कम पतरस के मामले में ऐसा नहीं था।

हम इस बात पर पूरी तरह से आश्वस्त हो सकते हैं कि प्रभु पतरस की स्थिति के प्रति विचारशील थे। चारों सुसमाचार के लेखकों ने यीशु के कई लम्बे प्रचार दौरों का वर्णन किया है। परन्तु जहाँ तक हम जानते हैं, अधिकतर समय वह या तो कफरनहूम में अपने घर के पास ही रहता था या अक्सर वहाँ वापस आता था। (सुसमाचार की सभी कहानियों का बड़ा हिस्सा प्रभु के जीवन के केवल एक सप्ताह के बारे में है।) तो ऐसा लगता है कि पतरस के घर को प्रभु ने अपना घर बना लिया था, जब वे कफरनहूम में रहने के लिये चले गए।

अत:, उस शनिवार की सुबह, उस असाधारण सब्त के दिन की सेवा के बाद, वे सभी पतरस के घर की ओर चल पड़े। और उन्होंने उसे कुछ ऐसा बताया जो वह पहले से ही जानता था—पतरस की पत्नी की माता बीमार थी।

पतरस की पत्नी! वह कैसी थी? उसकी आयु कितनी थी? उसके और पतरस के विवाह को कितना समय हो गया था? उसका नाम क्या था? क्या वह स्थानीय लड़की थी? उसके माता-पिता कौन थे? क्या उनके कोई सन्तान थी? उसकी रुचियाँ क्या थीं? स्पष्ट है, वह अपनी माता की अच्छी बेटी थी और पतरस के मित्रों की अतिथि-सत्कार करती थी। हम यहाँ केवल उसकी छाया देखते हैं। उसके एक तरफ पतरस और अन्द्रियास हैं। दूसरी तरफ उसकी माता है। बीच में प्रभु है। हम उसे किसी दिन बेहतर तरीके से जान पाएँगे, जब हम स्वर्ग पहुँचेंगे और पुस्तकें खोली जाएँगी और वह अपने प्रतिफल के लिये आएगी। तब प्रभु का घर उसका घर होगा! महिमा हो!

*तब उसने पास जाकर उसका हाथ पकड़ के उसे उठाया; और उसका ज्‍वर उतर गया, और वह उनकी सेवा–टहल करने लगी। (1:31)*

जैसे ही वे पतरस के घर पहुँचे, प्रभु वहाँ पहुँचा जहाँ बीमार स्त्री लेटी हुई थी। उसने उसका हाथ पकड़ा और उसे उठाया। और तुरन्त ही बुखार भाग गया! नि:संदेह भाग गया! यह तथ्य कि उसके स्पर्श से बीमारी गायब हो गई, उतना ही अविश्वसनीय है जितना कि उसके वचन से दुष्टात्मा भाग गई। अविश्वसनीय तब *होता* यदि ये बातें *नहीं* होतीं। वह जगत का सृष्टिकर्ता था, समय, स्थान और पदार्थ के सभी कारकों पर उसका नियंत्रण था, और अब वह देह में प्रकट हुआ हैं। सर्वज्ञानी और सर्वशक्तिमान सामर्थ्य उसकी थी। यह वास्तव में विचित्र होता यदि वह भोजन करने बैठता परन्तु पीड़ित स्त्री को उसके बिस्तर पर कराहने के लिये छोड़ देता और पतरस की पत्नी को अपनी माता के रोने से विचलित होकर इधर-उधर भागने के लिये छोड़ देता।

हालाँकि, उसके एक स्पर्श से ही वह वृद्ध स्त्री उठ खड़ी हुई और वापस रसोई में चली गई, और मेहमानों के लिये भोजन के कटोरे लेकर आई। “वह उनकी सेवा –टहल करने लगी!” यह उस हृदय की स्वाभाविक प्रतिक्रिया है जिसने परमेश्वर के मसीह के परिवर्तनकारी स्पर्श को जाना है।

इसके बाद, हमारे पास *सार्वजनिक चंगाइयाँ हैं* (1:32-34):

*संध्या के समय जब सूर्य डूब गया तो लोग सब बीमारों को और उन्हें, जिनमें दुष्‍टात्माएँ थीं, उसके पास लाए। और सारा नगर द्वार पर इकट्ठा हुआ। (1:32-33)*

उन्होंने सम्भवत: उस दोपहर को आराम में बिताया, परन्तु सब्त का दिन सूर्यास्त के समय समाप्त हो गया था, और यही कारण था कि लोग प्रतीक्षा कर रहे थे। समाचार पूरे मोहल्ले में फैल गया था, और पतरस के घर को घेर लिया गया था। मरकुस कहता है, “सारा नगर,” “द्वार पर इकट्ठा हुआ।” वे पतरस के घर के सामने एक विशाल, विविध समूह में खड़े थे, आश्चर्यकर्मों के लिये उत्सुक थे। और फिर भी वे आए, समुद्र के मनोभावों की तरह विविध, और उनमें एक बात समान थी: वे अपनी आवश्यकता जानते थे - किसी को भी उन्हें इसके बारे में समझाने की आवश्यकता नहीं थी - और यह इलाज के आधे मार्गों पर था। उन्होंने यीशु के बारे में सुना था, पता लगाया था कि वह कहाँ है, और वे आ गए थे। उन्होंने पतरस के घर को घेर लिया। वे सड़क पर उमड़ पड़े। वे उत्सुकता से उद्धारकर्ता की खोज कर रहे थे। यह पिन्तेकुस्त का पूर्वाभास था। नि:संदेह, पतरस इस स्थिति के लिये उपयुक्त नहीं था, परन्तु यीशु था।

नगर के सभी लोग आए! आराधनालय के सरदार और स्थानीय रब्बी, मछुवारे और उनकी पत्नियाँ और बच्चे, स्थानीय चुंगी लेने वाले और दुकानदार। संशयवादी आए। जिज्ञासु आए। धनी और निर्धन, बंधुए और स्वतंत्र, युवा और बूढ़े। सभी आए। पीछे वालों ने आगे वालों को पुकारा। आगे वालों ने द्वार के सामने धावा बोला।

*उसने बहुतों को जो नाना प्रकार की बीमारियों से दु:खी थे, चंगा किया, बहुत सी दुष्‍टात्माओं को निकाला, और दुष्‍टात्माओं को बोलने न दिया, क्योंकि वे उसे पहचानती थीं। (1:34)*

प्रत्येक मामला उसके सामने आया, ऐसे मामले जो हमारी चिकित्सा की पाठ्यपुस्तकों में भरे पड़े हैं। ऐसे लोग जिनके रोग का कोई नाम नहीं था, या जिनका नाम तो था परन्तु उनका कोई इलाज नहीं था, उन्हें उसके पास लाया गया। हालाँकि, महान चिकित्सक, जिसने कभी कोई मामला नहीं हारा या कोई शुल्क नहीं लिया, वह आया था। उस रात इतने आश्चर्यकर्म हुए कि एक पुस्तक भर गई, इतने आश्चर्यकर्म कि सबसे कठोर संदेहवादी भी संतुष्ट हो जाएँ। इतिहास में संसार ने कभी ऐसा नहीं देखा था जैसा उस दिन पतरस के सामने वाले द्वार पर हुआ था।

जहाँ तक दुष्टात्माओं का प्रश्न है, उसने उन्हें बाहर निकालने के साथ ही उन्हें चुप भी करवा दिया। आज तक, कोई भी दुष्टात्मा यह स्वीकार नहीं कर सकती कि यीशु मसीह देहधारी होकर आया है (1 यूह. 4:1-3)। “वे उसे जानती थी!” वास्तव में उन्होंने उसे पहचाना, परन्तु हमें यह नहीं बताया गया कि कैसे। निश्चित रूप से उसकी प्रज्वलित पवित्रता ने उनकी घोर दुष्टता को उजागर किया, और उसके निर्विवाद अधिकार ने उनकी चुराई हुई सामर्थ्य को उजागर किया। शायद उन्होंने किसी दूसरे युग में किसी पिछले मुठभेड़ से उसकी आवाज को पहचाना। किसी भी मामले में, वे उसे परमेश्वर का पुत्र मानते थे। मनुष्य विचित्र तरह से अंधे हो सकते थे कि वास्तव में उनके बीच कौन था, परन्तु दुष्टात्माओं को बिलकुल भी संदेह नहीं था।

**ख. राजमार्ग पर (1:35-45)**

**(1) प्रभु (1:35-37)**

*भोर को दिन निकलने से बहुत पहले, वह उठकर निकला, और एक जंगली स्थान में गया और वहाँ प्रार्थना करने लगा। (1:35)*

अगली सुबह जब वह घर से निकला तो अभी भी अंधेरा था। पिछला दिन बहुत लम्बा था, शाम तक खिंचता चला गया। यह एक शानदार दिन था। वर्षों बाद, पतरस को अभी भी यह याद है जैसे कि यह कल की ही बात हो। उसने अपने युवा चेले, मरकुस को इसके बारे में बताया, और मरकुस हमें इसके बारे में बताता है।

स्पष्ट है, वह उस रात बिस्तर पर गया, और इस मामले में वह हम जैसे ही था। उसके पास माँस और लहू का शरीर था जिसे आराम की आवश्यकता थी। इसलिये वह बिस्तर पर गया। परन्तु कुछ घंटों बाद वह फिर से उठ गया। चुपचाप, उसने अपना बागा और चप्पल पहनी तथा चुपचाप घर से बाहर निकल गया। वह भी हम जैसे ही था कि उसे स्वर्ग में अपने पिता के साथ अकेले रहने की आवश्यकता थी। कुछ घंटों की नींद से उसका बाहरी मनुष्य नया हो गया था, उसके भीतरी मनुष्य को भी नया होना था। और उसे दिन के लिये मार्गदर्शन की आवश्यकता थी, जो उस समय भी पूर्वी आसमान को भोर के पहले गुलाबी संकेतों से रंग रहा था।

उसने और पिता ने किस बारे में बात की? हमें ज्ञान देने के लिये प्रभु की कई आदर्श प्रार्थनाएँ हैं। “प्रभु की प्रार्थना”, जिसे *पैटरनोस्टर* कहा जाता है, स्पष्ट रूप से प्रार्थना के प्रति प्रभु के अपने दृष्टिकोण की एक रूपरेखा है। यूहन्ना के द्वारा दर्ज की गई महायाजकीय प्रार्थना (17 अध्याय), हमें उसकी प्रार्थनाओं के सार के बारे में बेहतर जानकारी देती है।

प्रार्थना में ध्यान लगाने के लिये उसे एकांत और शान्ति की आवश्यकता थी। पतरस के भीड़ भरे घर में उसे एकांत और शान्ति नहीं मिल पाया। कुछ ही देर में पतरस की सास उठकर आग जलाकर नाश्ता बनाने लगी। पतरस अन्द्रियास को रात की पकड़ी हुई मछलियाँ देखने के लिये समुद्र तट पर आने के लिये बुला रहा था। सब कुछ वैसा ही था जैसा होना चाहिए था। दूसरे दिन की घटनाओं के आने से पहले ही प्रभु चले गए। उसे परमेश्वर के साथ अकेले रहने की आवश्यकता थी।

*तब शमौन और उसके साथी उसकी खोज में गए। जब वह मिला, तो उससे कहा, “सब लोग तुझे ढूँढ़ रहे हैं।” (1:36-37)*

हालाँकि वे इतने कम समय के लिये ही उनके साथ थे, परन्तु उन्हें इस बात का पूरा अनुमान था कि उनका खोया हुआ गुरु कहाँ होगा। इसके अलावा, वे पहले से ही उससे इतने जुड़ चुके थे कि वे उसके बिना एक दिन की भी कल्पना नहीं कर सकते थे।

जब उन्होंने उसे खोज लिया तो उन्होंने कहा, “सब लोग तुझे ढूँढ़ रहे हैं!” उन्हें लगा कि यह शुभ संकेत है। इतना लोकप्रिय मसीह जल्द ही अनुयायी, और फिर सेना बना सकता है। चेलों को आंदोलन के आग पकड़ने, गलील और आसपास के जिलों में तेजी से फैलने, दक्षिण में फैलने, यहूदिया पर तूफान लाने के सुखद सपने थे - सभी को शक्तिशाली आश्चर्यकर्मों से सहायता मिली। एक बार जब यरूशलेम की स्थापना इस आंदोलन में शामिल हो गई, तो बहुत समय नहीं बीता कि प्रवासी इस कारण से जुड़ गए। बस एक यरूशलेम फसह की आवश्यकता थी, जब संसार भर से हजारों यहूदी राजधानी में होंगे। बस उन्हें नये मसीह को कार्रवाई में देखने दें, उसकी उत्तेजक बुलाहट सुनें, और उसके आश्चर्यजनक आश्चर्यकर्म देखें! चेले पूरी बात देख सकते थे! पिछली रात के आश्चर्यकर्मों ने उनकी आँखें खोल दी थीं। रोम एक यहूदी सेना के विरुद्ध क्या कर सकता था जो आश्चर्यकर्मों से सुरक्षित थी और घर पर उत्साही आबादी और विदेश में हर देश, राज्य और नगर में ऊर्जावान यहूदी पाँचवें स्तंभ के द्वारा समर्थित थी? चेले पूरी बात देख सकते थे! और सोचिए कि यह सब पतरस के घर से आरम्भ हुआ था! उन्होंने कहा, “सब लोग तुझे ढूँढ़ रहे हैं।”

**(2) देश (1:38-39)**

*उसने उनसे कहा, “आओ; हम और कहीं आसपास की बस्तियों में जाएँ, कि मैं वहाँ भी प्रचार करूँ, क्योंकि मैं इसी लिये निकला हूँ।” (1:38)*

उनके समाचार से थोड़ा सा भी प्रभावित न होते हुए उसने कहा, “और भी जगहें हैं।” अभी तक, उन्हें अभी भी उसकी विधि, उसके संदेश या उसके मिशन के बारे में थोड़ी सी भी समझ नहीं थी। जहाँ तक उसके आश्चर्यकर्मों की बात है, जिन पर वे इतना भरोसा करते थे, प्रभु ने उनका उल्लेख तक नहीं किया। उसने उन्हें कोई विशेष महत्व नहीं दिया। आश्चर्यकर्मों पर आधारित अनुसरण को और अधिक आश्चर्यकर्मों की आवश्यकता होगी, और ऐसा अनुसरण जल्द ही समाप्त हो जाएगा जब आश्चर्यकर्म वापस ले लिये जाएँगे।

वह प्रचार करने आया था। वह ऐसे अनुयायी चाहता था जो परमेश्वर के वचन पर आधारित हों। परन्तु यह रब्बियों के द्वारा सिखाए गए घटिया और कमजोर वचन नहीं हो सकते थे; यह परमेश्वर का वचन होना चाहिए जैसा कि वह स्वयं जानता था, समझता था, व्याख्या करता था और उसका पालन करता था। चेलों को अभी तक यह तथ्य समझ में नहीं आया था, और वे पिन्तेकुस्त के बाद तक इसे वास्तव में नहीं समझ पाए।

*अत: वह सारे गलील में उनके आराधनालयों में जा जाकर प्रचार करता और दुष्‍टात्माओं को निकालता रहा। (1:39)*

प्रभु ने गलील के नगरों और गाँवों का दौरा किया, ग्रामीण इलाकों में फैले आराधनालयों में प्रचार किया और उन प्रारम्भिक दिनों में, उन्हें संचालन के लिये एक तैयार आधार प्रदान किया। यद्यपि रब्बियों ने अपनी मानव निर्मित परम्पराओं के साथ ईश्वरीय सत्य को अव्यवस्थित कर दिया था, कम से कम वे अभी भी आराधनालयों में बाइबल पढ़ते थे। अत: एक के बाद एक आराधनालयों में, बाइबल खोली और पढ़ी गई - और उसने प्रचार किया।

जब पौलुस की बारी आई तो उसने भी यही किया। रोमी सड़कों ने पहुँच के साधन उपलब्ध करवाए, एक आम यूनानी भाषा ने संचार के साधन उपलब्ध कराए, और यहूदी आराधनालयों ने मण्डली उपलब्ध करवाई। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि पौलुस ने लिखा कि यीशु “समय की परिपूर्णता” में आया (गला. 4:4)।

यीशु का हर जगह स्वागत किया गया। हर कोई आश्चर्यकर्म देखना चाहता था, और यीशु ने उनमें से कई आश्चर्यकर्म किए, विशेष रूप से दुष्टात्माओं को बाहर निकालना, जो पृथ्वी पर टिड्डियों की तरह उतरी हुई लगती थीं। दुष्टात्माओं को बाहर निकालना, पृथ्वी पर शैतान के साम्राज्य के विरुद्ध युद्ध छेड़ने के प्रभु के तरीकों में से एक था।

**(3) कोढ़ी (1:40-45)**

हम *उसके आगमन* पर ध्यान देते हैं:

*एक कोढ़ी उसके पास आया, उससे विनती की, और उसके सामने घुटने टेककर उससे कहा, “यदि तू चाहे तो मुझे शुद्ध कर सकता है।” (1:40)*

और उसने कोढ़ियों को शुद्ध किया। जहाँ तक हम जानते हैं, पूरे पुराने नियम की अवधि में केवल तीन कोढ़ियों को शुद्ध किया गया था - मूसा, मरियम और नामान।[7] परन्तु यीशु ने उन्हें स्वाभाविक रूप से शुद्ध किया।

कोढ़! इस शब्द से ही लोग भयभीत हो जाते थे। यहूदी इसे “परमेश्वर का प्रहार” मानते थे। कोढ़ी अपने शरीर में भ्रष्टाचार, संदूषण और मृत्यु लेकर घूमता था। समाज ने उसे बहिष्कृत कर दिया और उसे कठोर रूप से अलग-थलग कर दिया ताकि वह समुदाय के अन्य लोगों को दूषित न कर दे। यदि कोई उसके आसपास भटकता था, तो उसे अपना मुँह ढककर चिल्लाना पड़ता था, “अशुद्ध! अशुद्ध!” ताकि दूसरे व्यक्ति को चेतावनी दी जा सके। उसे देश के धार्मिक जीवन, समारोहों और उत्सवों से बहिष्कृत कर दिया गया था। उसके एकमात्र साथी अन्य कोढ़ी थे जो उसी तरह की दयनीय स्थिति में थे। वह काम नहीं कर सकता था क्योंकि कोढ़ी की वस्तुएँ और सेवाएँ कौन चाहेगा? वह अपनी इच्छा से आ-जा नहीं सकता था। उसने जीवित मृत्यु को सहन किया, क्योंकि उसकी बीमारी फैल गई और लाइलाज थी। अक्सर, यह एक छोटे से तरीके से आरम्भ होती थी। उसने अपनी उंगलियों, अपने पैरों और अपने अंगों में संवेदना खो दी। कुछ ही समय में, वह सड़े हुए तने के साथ एक भयानक दृश्य प्रस्तुत करता था, जहाँ कभी स्वस्थ अंग हुआ करते थे। उसके पास कोई आशा नहीं थी। वह अपने परिवार से, अपने पुराने मित्रों से और परमेश्वर के लोगों की संगति से अलग हो गया था। वह केवल मृत्यु की आशा कर सकता था। कोई आश्चर्य नहीं कि कोढ़ के रोग को अक्सर पाप का एक प्रकार और चित्र माना जाता है।

यह पुरुष कोढ़ी था, परन्तु उसने एक बुद्धिमानी भरा निर्णय किया था; वह मसीह के पास आएगा। वह उस निषेधाज्ञा का उल्लंघन करेगा जिसके तहत वह जीवन बिता रहा था। वह व्यवस्था के गरजने वाले आदेशों और दंडों का सामना करेगा; वह मसीह के पास आएगा।

उस निर्णय पर अमल करने के लिये बहुत साहस की आवश्यकता थी। एक बात तो यह थी कि भीड़ हमेशा यीशु को घेरे रहती थी, और भीड़ की हरकतों का कौन अनुमान लगा सकता था? हो सकता है कि उस व्यक्ति को मसीह के पास पहुँचने से बहुत पहले ही पत्थर मार दिया गया हो। तो क्या हुआ? वह वैसे भी मर रहा था। उसके पास खोने के लिये कुछ नहीं था और पाने के लिये सब कुछ था। सम्भवत: उसके साथी कोढ़ी उसे रोकने का प्रयत्न कर रहे थे क्योंकि उनमें से कोई भी उसके साथ नहीं था। कोई बात नहीं! वह आएगा। और इस कारण उसने यीशु के पास अपनी एकाकी यात्रा आरम्भ की। और देखो! उसके सामने एक मार्ग खुल गया। चेले, जो मसीह के पास आने की चाह रखने वाली माताओं और बच्चों को भगाने के लिये “साहसी” थे, इस कोढ़ी को भगाने में इतने आगे नहीं थे। इसके विपरीत, हम निश्चित हो सकते हैं कि जब उन्होंने उसे आते देखा, उसके कोढ़ी की चीख सुनी, और उसके सामने भीड़ को जाते देखा, तो उन्होंने अपनी दूरी बनाए रखी। वे एक कोढ़ी से बहुत दूर रहना चाहेंगे!

यह व्यक्ति मसीह के पास आधुनिक गर्व “नाम बताओ! दावा करो!” की मनोवृत्ति के साथ नहीं आया था। उसे अपनी भयानक स्थिति का इतना बड़ा अनुमान था कि वह नामान की तरह उद्धार की माँग नहीं कर सकता था। इसके विपरीत, वह विनती करते हुए आया, “यदि तू चाहे तो मुझे शुद्ध कर सकता है।” यह दोषरहित विश्वास था। हम *उसकी शुद्धि पर भी ध्यान देते हैं* (1:41-43):

*उसने उस पर तरस खाकर हाथ बढ़ाया, और उसे छूकर कहा, “मैं चाहता हूँ तू शुद्ध हो जा।” (1:41)*

सम्भवत:, वहाँ कुछ लोग आलोचना से द्रवित हुए होंगे: “यह बहुत साहस की बात है! एक ऐसा मनुष्य! सचमुच मसीह के पास आ रहा है! उसे स्वयं पर लज्जा आनी चाहिए! उसे पत्थर मार देना चाहिए। वह सार्वजनिक रूप से एक खतरा है।” परन्तु यीशु तरस से भर गया। वह स्वयं को उस दु:खी व्यक्ति के साथ पहचानने में सक्षम था जिसका जीवन इस “परमेश्वर के प्रहार” से इतना बर्बाद और तबाह हो गया था। वह उसे छूता, उसे बदलता, और उसके बाद, हमेशा के लिये उसे स्वयं के साथ पहचाना जाता।

पूरा दृश्य उद्धार की योजना का एक सूक्ष्म रूप है। यह प्रभु के असीम तरस और अद्भुत बचाने वाली सामर्थ्य थी जिसने “इतना महान उद्धार” सम्भव बनाया। उसने इस दु:खी मनुष्य को *छुआ।* वह प्रेम का कार्य था। जब से वह कोढ़ी के रूप में जाना जाने लगा, तब से किसी ने उसे जानबूझकर नहीं छुआ था।

इसके अलावा भी कुछ था। यीशु ने उससे कहा, “मैं चाहता हूँ तू शुद्ध हो जा।” यह “उसकी सामर्थ्य का वचन” था (इब्रा. 1:3)। परमेश्वर के अलावा और कौन संसारों को अस्तित्व में ला सकता है, ज्योति को चमकने का आदेश दे सकता है, या भूमि या समुद्र के वितरण का आदेश दे सकता है (उत्प. 1 अध्याय)? परमेश्वर के अलावा और कौन कोढ़ी को शुद्ध होने का आदेश दे सकता है? यह था

... वही सर्वशक्तिमान वचन

अराजकता और अंधकार ने उसे सुना,

और वे उड़ चले...

सुबह भोर के समय में। केवल अब “वचन देहधारी हुआ,” और ईश्वरत्व मानवता में आ गया। “मैं करूँगा!” यीशु ने कहा, “शुद्ध हो जा।” बस ऐसे ही!

*और तुरन्त उसका कोढ़ जाता रहा, और वह शुद्ध हो गया। (1:42)*

अपने पूरे सुसमाचार में, मरकुस इस बात से प्रभावित हुआ कि प्रभु की आज्ञाओं का पालन कितनी तेजी से किया गया। उसने कहा! और वह हो गया! कोई लम्बी और पीड़ादायी शल्य-चिकित्सा नहीं हुई; कोई लम्बा स्वास्थ्य लाभ नहीं हुआ; कोई लम्बा चंगाई का काम, व्यायाम और आहार नहीं हुआ; और कोई दवा नहीं दी गई जिसे महीनों तक दिन में चार बार लेना पड़े। कोढ़ी के लिये तुरन्त शुद्धीकरण, बीमार के लिये तुरन्त इलाज, मरे हुओं के लिये तुरन्त जीवन, अंधे के लिये तुरन्त दृष्टि और दुष्टात्माओं का तुरन्त निष्कासन हुआ। और पाप का तुरन्त उन्मूलन हुआ।

धर्म और नया जन्म में यही अंतर है। धर्म की एक कार्य-सूची होती है। यह पुण्य कर्म, उपवास और कोड़े मारने, अनुष्ठान और कर्मकांड, तपस्या और तीर्थयात्रा, बलिदान और आत्म-त्याग, याजकीय और भुगतान की माँग करता है। परन्तु धर्म ने कभी किसी कोढ़ी को शुद्ध नहीं किया या दोषी विवेक को शान्ति नहीं दी।

धर्म ऐसा ही है। सभी धर्म मानवीय सरलता, दर्शन और बुद्धि से उत्पन्न हुए हैं, और सभी धर्म एक जैसे हैं – उद्धार अर्जित किया जाना चाहिए, अच्छे काम से खरीदा जाना चाहिए। इसके विपरीत, नया जन्म (जिसे यूहन्ना और पतरस “नया जन्म” कहते हैं) तात्कालिक, आश्चर्यकर्म वाला और अनन्त है। “जैसे ही उसने कहा,” मरकुस कहता है, “तुरन्त उसका कोढ़ जाता रहा, और वह शुद्ध हो गया।”

*उसके आदेश* (1:43-45) और *यह कैसे दिया गया* (1:43-44) पर भी ध्यान देते हैं:

*तब उसने उसे चिताकर तुरन्त विदा किया। (1:43)*

कोढ़ी को शुद्ध करने के बाद, यीशु ने उसे विदा किया। आधुनिक तथाकथित “विश्वास चंगा करने वाला” उसे एक उपयोगी विज्ञापन के रूप में अपने पास रखता। उसे अपनी गवाही देने के लिये मंच पर रखा जा सकता था। वह भीड़ को आकर्षित करेगा। हालाँकि, यही वह बात थी जिससे यीशु बचना चाहता था। यरूशलेम की भीड़, जो एक दिन “होसन्ना!” चिल्लाती थी, अगले दिन उतनी ही आसानी से “क्रूस पर चढ़ा!” चिल्लाएगी। अत: यीशु ने इस शुद्ध कोढ़ी को अपना आदेश देकर विदा किया। यह उस व्यक्ति के अपने भले के लिये था जितना कि किसी अन्य कारण से।

आजकल हम उन मशहूर हस्तियों को नायक बना देते हैं जो बच जाते या उद्धार पाते हैं। हम उन्हें महिमामंडित करते हैं, उन्हें मंच पर और राष्ट्रीय टेलीविजन पर पेश करते हैं, उनसे उनकी गवाही दिलवाते हैं, पूरे देश में उनका प्रचार करते हैं, उन्हें बातचीत के कार्यक्रम में पेश करते हैं, और उनकी प्रशंसा करते हैं और उनकी सराहना करते हैं। उन्हें वास्तव में जिस बात की आवश्यकता है वह है शान्ति और एकांत, एक छोटे समूह की संगति, और अनुग्रह में बढ़ने और परमेश्वर के ज्ञान में वृद्धि करने का समय। “किसी पर अचानक हाथ न रखना” एक ठोस बाइबल सिद्धांत है (1 तीमु. 5:22)। अत: यीशु ने उस मनुष्य को विदा कर दिया। इससे चेलों को आश्चर्य हुआ होगा - शायद अब तक, वे प्रभु के अपरम्परागत तरीकों के अभ्यस्त हो रहे थे।

*और उससे कहा, “देख, किसी से कुछ मत कहना, परन्तु जाकर अपने आप को याजक को दिखा, और अपने शुद्ध होने के विषय में जो कुछ मूसा ने ठहराया है उसे भेंट चढ़ा कि उन पर गवाही हो।” (1:44)*

प्रभु ने न केवल उस व्यक्ति को घर भेजा बल्कि उसे यह भी कहा कि वह अपनी चंगाई के बारे में बात न करे। हालाँकि, उसे एक काम करना था; उसे स्वयं को याजक के सामने पेश करना था ताकि वह मूसा की व्यवस्था के प्रतिनिधि के द्वारा व्यवस्था के रूप से शुद्ध प्रमाणित हो सके। साथ ही, याजक को स्वयं भी यह जानना था कि यह असामान्य मसीह वास्तव में एक चंगा करने वाला था!

लैव्यव्यवस्था 14 अध्याय में शुद्ध किए गए कोढ़ी के लिये निर्देश विस्तृत रूप से बताए गए हैं। पूरी प्रक्रिया में एक सप्ताह से अधिक समय लगा। उस व्यक्ति को तुरन्त ही इब्रानी *परिवार में वापस लाया गया, परन्तु उसे* परमेश्वर के लोगों की *संगति* में वापस आने के लिये नये सप्ताह के पहले दिन तक प्रतीक्षा करनी पड़ी।

शायद, यह समझ में आता है, और यह बिलकुल भी असामान्य नहीं है, कि इस नये शुद्ध व्यक्ति ने वह नहीं किया जो प्रभु ने आदेश दिया था। इसके बजाय, उसने अपने जीवन में परिवर्तनकारी आश्चर्यकर्म के बारे में सभी को बताना आरम्भ कर दिया। आजकल हम ऐसा करने के लिये एक नये हृदय परिवर्तित व्यक्ति की सराहना करेंगे। हालाँकि, इस व्यक्ति के मामले में, उसकी गवाही प्रतिकूल थी।

हम *उसका आदेश और उसकी किस प्रकार अवहेलना की गई* इस पर भी ध्यान देते हैं:

*परन्तु वह बाहर जाकर इस बात का बहुत प्रचार करने और यहाँ तक फैलाने लगा कि यीशु फिर खुल्‍लमखुल्‍ला नगर में न जा सका, परन्तु बाहर जंगली स्थानों में रहा; और चारों ओर से लोग उसके पास आते रहे। (1:45)*

यीशु ने नये शुद्ध किए गए कोढ़ी को याजक के पास भेजा, परन्तु वह लोगों के पास गया, या जैसा कि हम आज कहते हैं, “वह लोगों के पास गया।” शायद वह याजक के पास जा रहा था। नि:संदेह, वह अपने शुद्धीकरण से इतना रोमांचित था कि वह लोगों को बताने के लिये उतावला था। शायद कुछ लोगों ने उसे पहचान लिया और जानना चाहा कि वह कोढ़ी मोहल्ले से बाहर क्या कर रहा था।

किसी भी मामले में, वह विचलित हो गया था। निरीक्षण, पृथक्करण और निर्देश की निर्धारित अवधि के लिये दृष्टि से बाहर निकलने के बजाय, वह एक ज्वलंत सुसमाचार प्रचारक बन गया।

हालाँकि, परमेश्वर हमेशा सबसे अच्छा जानता हैं। इस व्यक्ति के कोढ़ को शुद्ध करने के अनुष्ठान में निहित अद्भुत शिक्षा की आवश्यकता थी। यदि उसने परमेश्वर की बात मानी होती, तो वह इस अनुष्ठान के समाप्त होने पर अधिक बुद्धिमान व्यक्ति होता। हालाँकि, जैसा कि हुआ, प्रभु के कार्य में बाधा उत्पन्न हुई। ऐसी भीड़ के कारण प्रभु स्वयं नगर में प्रवेश न कर सका, और परमेश्वर के बिना “पुनरुत्थान” बहुत लम्बे समय तक चलने वाला नहीं था। आज हम ऐसी उत्साही भीड़ से प्रसन्न होंगे। हम अपनी सफलता पर स्वयं को बधाई देंगे। परन्तु प्रभु को बाधा उत्पन्न हुई, और वह इस सतही उत्साह में नहीं था।

उसे बाधा पहुँचाई तो गयी, परन्तु रोका नहीं गया! वह “जंगली स्थानों” पर चला गया। लोगों को अब *उसकी* शर्तों पर उसे खोजना था। और उन्होंने वैसा ही किया। वे हर जगह से उसके पास आए। और वहाँ जंगल के शान्त ठहराव में, उसने अपना काम जारी रखा।

मरकुस के अनुसार, प्रभु के प्रति विरोध को सामने आने में अधिक समय नहीं लगा। उसके आलोचकों ने जल्द ही उसकी *पद्धति* (2:1-12), उसके *लोगों* (2:13-28) और उसकी *सेवकाई* (3:1-6) में दोष ढूँढ़ निकाला।

मरकुस 2 अध्याय का आरम्भ प्रभु के “घर में” वापस आने से होता है, जो सम्भवत: पतरस का घर है। तुरन्त ही घर पर लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी, जो प्रभु की शिक्षा सुनने के लिये उत्सुक थे और नि:संदेह कुछ और आश्चर्यकर्म देखने की आशा कर रहे थे। पतरस का घर कभी इतना लोकप्रिय नहीं रहा था! भीड़ ने उसके रहने के कमरे को भर दिया, द्वार को अवरुद्ध कर दिया, भीड़ उसके आँगन में फैल गई, और सड़क पर इतनी भीड़ उमड़ पड़ी कि बड़ी कठिनाई से कोई भी आगे बढ़ पाया।

और लोगों की इस भारी भीड़ से घिरा हुआ यीशु था। भीड़ के साथ बहुत कुछ नहीं किया जा सकता, चाहे वह मित्रवत् भीड़ ही क्यों न हो, परन्तु यीशु ने प्रचार करने के लिये भीड़ की उपस्थिति का लाभ उठाया। “वह उन्हें वचन सुना रहा था” (2:2)। ऐसा लगता है कि पतरस को याद नहीं है कि उसने क्या प्रचार किया था - कम से कम मरकुस तो हमें यह नहीं बताता। शायद उसने उन्हें उनके पुराने नियम के पवित्रशास्त्र से कोई कहानी सुनाई हो। शायद उसने मूसा और उसकी भीड़ के बारे में बताया हो, या कर्मेल पर्वत पर एलिय्याह और उसकी भीड़ के बारे में बताया हो। या शायद उसने भविष्यद्वक्ता की भाषा उधार ली हो और “निबटारे की तराई में” (योएल 3:14) उन बढ़ी हुई भीड़ के बारे में बात की हो। किसी भी मामले में, हम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि उसने उन भीड़ पर तरस की दृष्टि से देखा और उन्हें “उन भेड़ों के समान, देखा जिनका कोई रखवाला न हो” देखा (मर. 6:34) और उनसे प्रेम किया और उन्हें सम्पूर्ण हृदय से परमेश्वर का वचन सिखाया।

1. सेवक के काम को छोटा बताया गया (2:1-3:6)
   1. उसकी कार्यप्रणाली में दोष ढूँढ़ना (2:1-12)
      1. परिस्थिति (2:1-5)
         1. खचाखच भरा स्थान (2:1-2)
            1. लोग (2:1-2a)
            2. प्रचारक (2:2b)
         2. एक अनोखा प्रदर्शन (2:3-4)
            1. लकवाग्रस्त व्यक्ति (2:3)
            2. समस्या (2:4a)
            3. व्यावहारिक लोग (2:4b)
         3. क्षमा किया गया रोगी (2:5)
      2. शास्त्री (2:6-12)
         1. उनके विचार उजागर हो गए (2:6-8)
            1. उनकी गुप्त शत्रुता को संजोया गया (2:6-7)

क्यों? (2:6-7a)

कौन? (2:7b)

* + - * 1. उनकी गुप्त शत्रुता को चुनौती दी गई (2:8)

प्रभु ने क्या समझा (2:8a)

प्रभु ने क्या माँगा (2:8b)

* + - 1. उनके विचार विस्तृत हुए (2:9-12)
         1. उसने जो प्रश्न पूछा (2:9)
         2. प्रश्न का उत्तर उसने दिया (2:10-12)

उसके दावे का महत्व (2:10a)

उसके दावे का कार्यान्वयन (लागूकरण) (2:10b-12a)

उसके दावे का प्रभाव (2:12b)

* 1. उसके लोगों में दोष ढूँढ़ना (2:13-28)
     1. उसके चुंगी लेने वाले मित्र (2:13-17)
        1. भीड़ (2:13)
           1. वे कहाँ थे (2:13a)
           2. वे क्या चाहते थे (2:13b)
        2. मनुष्य (2:14)
           1. उसकी धर्मनिरपेक्ष बुलाहट (2:14a)
           2. उसकी आत्मिक बुलाहट (2:14b)
        3. स्वामी (2:15-17)
           1. वह कहाँ गया था (2:15)
           2. वह क्यों गया था (2:16-17)

उसके आलोचकों का तिरस्कार (2:16)

उसके आलोचकों को चुप करा दिया गया (2:17)

* + 1. उसके निजी मित्र (2:18-28)
       1. उपवास के विषय में एक चुनौती (2:18-22)
          1. आलोचक (2:18)
          2. मसीह (2:19-22)

उसका प्रश्न पूछा गया (2:19a)

उसके प्रश्न का उत्तर दिया गया (2:19b-22)

विवाह का मामला (2:19b-20)

जब दूल्हा उनके साथ था (2:19b)

जब दूल्हा उनसे दूर था (2:20)

पहनावे का मामला (2:21)

मशक का मामला (2:22)

* + - 1. भोज के विषय में चुनौती (2:23-28)
         1. चेलों के कार्य का वर्णन (2:23)

दिन (2:23a)

कार्य (2:23b)

* + - * 1. चेलों के कार्य की निन्दा (2:24)

अंधविश्वासी (2:24a)

आपत्ति (2:24b)

* + - * 1. चेलों के कार्य का बचाव (2:25-28)

बाइबल का संदर्भ (2:25-26)

एक गहरी आवश्यकता (2:25)

एक अत्यन्त आवश्यकता (2:26)

एक बुनियादी कारण (2:27)

एक चकाचौंध कर देने वाला प्रकाशन (2:28)

* 1. उसकी सेवकाई में दोष ढूँढ़ना (3:1-6)
     1. आराधनालय (3:1a)
     2. पीड़ित (3:1b)
     3. सब्त (3:2)
     4. उद्धारकर्ता (3:3-6)
        1. एक कानूनी विनियमन (3:3-4)
        2. बिजली का प्रकाशन (3:5)
           1. छुटकारा देने वाले हृदय का (3:5a)
           2. धार्मिक हृदय वाला (3:5b)
        3. स्थायी पुनर्स्थापना (3:5c)
        4. घातक प्रतिक्रिया (3:6)

1. सेवक का कार्य धन्य है (3:7-19)
   1. सेवक और जयजयकार करने वाली भीड़ (3:7-12)
      1. उसने उन्हें कैसे सम्भाला (3:7-8)
         1. स्थान (3:7a)
         2. लोग (3:7b-8)
            1. वे क्षेत्र जहाँ से वे आए (3:7b-8a)
            2. वे क्यों आए (3:8ब)
         3. योजना (3:9)
      2. उसने उन्हें कैसे चंगा किया (3:10-12)
         1. उसकी बहुतायत की क्षमता (3:10)
         2. उसका पूर्ण अधिकार (3:11-12)
            1. उसके विरुद्ध शैतानी गवाही दी गई (3:11)
            2. शैतानी गवाही उसके द्वारा अस्वीकार कर दी गई दिया गया (3:12)
   2. सेवक और उसके चुने हुए लोग (3:13-19)
      1. उनकी बुलाहट (3:13-14a)
         1. उसने उनको कैसे ढूँढ़ा (3:13)
         2. उसने उन्हें कैसे सिखाया (3:14a)
      2. उनका आदेश (3:14b-15)
         1. उसने उनसे क्या काम लिया (3:14b)
         2. उसने उन्हें कैसे सशक्त बनाया (3:15)
            1. बीमारी से निपटने के लिये (3:15a)
            2. दुष्टात्माओं से निपटने के लिये (3:15b)
      3. उनकी संगति (3:16-19)
         1. एक राई का दाना (3:16-19a)
            1. तीन व्यक्ति (3:16-17)

जिसे उसने नया नाम दिया (3:16)

जिन्हें उसने उपनाम दिया (3:17)

* + - * 1. दल (3:18)
        2. देशद्रोही (3:19a)
      1. कार्यवाही (3:19b)

1. सेवक के काम की निन्दा (3:20-35)
   1. उसके मित्रों से विरोध (3:20-21)
      1. भारी भीड़ (3:20)
      2. गलत निष्कर्ष (3:21)
         1. उन्होंने क्या निर्णय लिया (3:21a)
         2. उन्होंने क्या घोषणा की (3:21b)
   2. उसके शत्रुओं से विरोध (3:22-30)
      1. मसीह का स्पष्ट रूप से अस्वीकार (3:22)
         1. कुछ उल्लेखनीय अतिथि (3:22a)
         2. कुछ नया प्रतिशोध (3:22b)
      2. मसीह के द्वारा तीखा खंडन (3:23-30)
         1. उसकी निर्विवाद बुद्धि (3:23-27)
            1. दृष्टान्त (3:23-26)

पूछा गया प्रश्न (3:23)

प्रश्न का उत्तर (3:24-26)

धर्मनिरपेक्ष क्षेत्र में (3:24-25)

एक राजा और उसके राज्य (3:24)

एक पुरुष और उसके सेवक (3:25)

शैतानी क्षेत्र में (3:26)

* + - * 1. मुद्दा (3:27)

बलवान की सम्पत्ति (3:27a)

अधिक शक्तिशाली मनुष्य की शक्ति (3:27b)

* + - 1. उसकी स्पष्ट चेतावनी (3:28-30)
         1. दोहरी वास्तविकता (3:28-29)

एक अचूक उद्धारकर्ता (3:28)

एक क्षमा न किया जाने वाला पाप (3:29)

* + - * 1. एक भयानक कारण (3:30)
  1. उसके परिवार से विरोध (3:31-35)
     1. उसका स्वाभाविक परिवार (3:31-32)
        1. उनका आगमन जानबूझकर किया गया था (3:31)
           1. उनका रिश्ता (3:31a)
           2. उनका संकल्प (3:31ब)
        2. उनके आगमन को अनदेखा कर दिया गया (3:32)
     2. उसका नया परिवार (3:33-35)
        1. जिसे प्रभु ने अस्वीकार कर दिया (3:33)
        2. प्रभु ने क्या घोषणा करी (3:34)
           1. अपने वर्तमान चेलों के विषय में (3:34)
           2. अपने भावी चेलों के विषय में (3:35)

**B. सेवक के काम को छोटा बताया गया (2:1-3:6)**

**1. उसकी कार्यप्रणाली में दोष ढूँढ़ना (2:1-12)**

**क. परिस्थिति (2:1-5)**

*कई दिन के बाद वह फिर कफरनहूम में आया, और सुना गया कि वह घर में है। फिर इतने लोग इकट्ठा हुए कि द्वार के पास भी जगह नहीं थी; और वह उन्हें वचन सुना रहा था। और लोग एक लकवे के रोगी को चार मनुष्यों से उठवाकर उसके पास ले आए। (2:1-3)*

भीड़ निश्चित रूप से उस छोटे जुलूस के मार्गों में थी जो अब आ रहा था। कुछ मित्र एक बीमार पुरुष को खाट पर लेकर आ रहे थे। वे उसे यीशु के पास ले जाना चाहते थे। वे भीड़ के बीच से सफलतापूर्वक घर के द्वार तक पहुँच गए थे, परन्तु वे वहाँ तक ही पहुँच पाए थे; वहाँ से कोई भी हिल नहीं सकता था। बाधा से घबराए बिना, चार पुरुष घर की सपाट छत पर चढ़ गए और अपने मित्र को खींचकर ऊपर ले आए। फिर उन्होंने छत में एक बड़ा छेद किया और साहस करके बीमार पुरुष को नीचे के कमरे में उतारा, जहाँ भीड़ से घिरे प्रभु बैठा हुआ था।

*परन्तु जब वे भीड़ के कारण उसके निकट न पहुँच सके, तो उन्होंने उस छत को जिसके नीचे वह था, खोल दिया; और जब वे उसे उधेड़ चुके, तो उस खाट को जिस पर लकवे का रोगी पड़ा था, लटका दिया। (2:4)*

हम पतरस के आश्चर्य और घबराहट की कल्पना कर सकते हैं, जब छत में बड़ा छेद करने के उद्देश्य से किए गए प्रहार उसके घर में गूँजने लगे! परन्तु वह भी घिरा हुआ था! उसे अपनी सम्पत्ति पर इस हमले को रोकने के लिये बाहर निकलना उतना ही कठिन लगता जितना कि इन लोगों को भीतर घुसने में लगा था। वह बस वहीं खड़ा रह सकता था और अपनी छत के टूटने को देख सकता था। हम कल्पना कर सकते हैं कि बाद के वर्षों में उसने अपने युवा सहयोगी मरकुस को किस व्यंग्यात्मक हास्य के साथ यह कहानी सुनाई होगी। नि:संदेह, प्रभु ने भी स्वयं कार्यवाही देखी होगी, और इसके हास्य की सराहना की होगी। पतरस के मुँह का अध्ययन किया जाना चाहिए!

यीशु ने इस व्यक्ति के मित्रों का विश्वास देखा, परन्तु उसने इससे भी अधिक देखा; उसने बीमार व्यक्ति की शारीरिक और आत्मिक आवश्यकताओं को देखा। सभी को आश्चर्यचकित करते हुए, उसने बीमार व्यक्ति का सबसे अपरम्परागत् वचनों के साथ अभिवादन किया, जैसा कि मरकुस ने दर्ज किया है:

*यीशु ने उनका विश्‍वास देखकर उस लकवे के रोगी से कहा, “हे पुत्र, तेरे पाप क्षमा हुए।” (2:5)*

यह वह नहीं था जिसकी वह व्यक्ति आशा कर रहा था। हालाँकि, प्रभु इस व्यक्ति की आत्मा को पढ़ सकता था। पौलुस हमें उस दिन की याद दिलाता है जब प्रभु “मनुष्यों की गुप्‍त बातों का न्याय करेगा” (रोमियों 2:16)। इस व्यक्ति की आत्मा के रहस्य प्रभु के लिये उतने ही खुले और स्पष्ट थे जितने उसके शरीर की बीमारी। उसके विचार से, उस व्यक्ति के पाप उसके लकवा से कहीं अधिक गम्भीर थे, अत: वह पहले उनसे निपटा।

“हे पुत्र, तेरे पाप क्षमा हुए!” यहाँ हमारे पास सुसमाचार के दो सबसे अद्भुत शब्द हैं: *पुत्र* और *क्षमा!* पहला शब्द मनुष्य को परमेश्वर के *परिवार* में रखता है; दूसरा शब्द उसे परमेश्वर की *संगति* में रखता है (1 यूह. 1:7-10)। हमें मन फिराव करने वाले उड़ाऊ पुत्र की याद आती है (लूका 15 अध्याय)। उसने पहले ही तय कर लिया था कि उसे अपने पिता से क्या कहना है, परन्तु जब वह इस भाग पर पहुँचा कि “अब इस योग्य नहीं रहा कि तेरा पुत्र कहलाऊँ,” तो पिता के प्रेम के द्वार खुल गए, और भटके हुए लड़के को एक अंगूठी, एक वस्त्र, जूते और मेज पर एक स्थान देकर परिवार और पिता की संगति में वापस लाया गया। “पुत्र!”

*क्षमा हुए!* पाप के बोझ से दबी आत्मा के लिये यह कितना धन्य वचन है! कर्ज उतर गया! अपराध बोध दूर हो गया! विवेक शुद्ध हो गया! अतीत क्षमा कर दिया गया! लेखा हटा दिया गया! क्षमा कर दिया गया!

परन्तु कहानी का अंत यहीं नहीं था। आलोचनात्मक आँखें और कान देख रहे थे, सुन रहे थे, प्रतीक्षा कर रहे थे और असहमति जता रहे थे।

**ख. शास्त्री (2:6-12)**

ध्यान दें कि *उनके विचार किस प्रकार उजागर हुए:*

*तब कई शास्त्री जो वहाँ बैठे थे, अपने–अपने मन में विचार करने लगे, “यह मनुष्य क्यों ऐसा कहता है? यह तो परमेश्‍वर की निन्दा करता है! परमेश्‍वर को छोड़ और कौन पाप क्षमा कर सकता है?” यीशु ने तुरन्त अपनी आत्मा में जान लिया कि वे अपने–अपने मन में ऐसा विचार कर रहे हैं, और उनसे कहा, “तुम अपने–अपने मन में यह विचार क्यों कर रहे हो?” (2:6-8)*

शास्त्री शिक्षित लोग थे। बेबीलोन की कैद के बाद, वे यहूदी राष्ट्र के अगुवे थे। एज़्रा एक शास्त्री था। उसका कार्य पवित्रशास्त्र की प्रतिलिपि बनाना था। वे मूसा की व्यवस्था के पेशेवर व्याख्याकार भी थे और इसके धार्मिक और नागरिक संहिताओं दोनों को प्रशासित करते थे। शास्त्री यह निर्धारित करते थे कि व्यवस्था के विवरण को प्रतिदिन के जीवन में कैसे लागू किया जाना चाहिए। समय के साथ, वे तथाकथित “मौखिक व्यवस्था” के संरक्षक बन गए, जो यीशु के दिनों तक, जीवन के नियम के रूप में पहले से ही लिखित व्यवस्था की जगह ले रहा था। शास्त्री ऐतिहासिक और सैद्धांतिक मामलों के अधिकारी माने जाते थे। वे राष्ट्र के शिक्षक थे, प्रत्येक शास्त्री के पास उसके आसपास कई चेले होते थे। मलाकी के द्वारा पुराने नियम की ग्रंथसूची को बंद करने और भविष्यद्वाणी बंद होने के बाद उनकी शक्ति बढ़ गई। महासभा के सदस्यों में उनमें से कई थे। वे मसीह के कट्टर शत्रु थे, उसका न्याय करते थे और उसके के द्वारा किए गए और कहे गए लगभग हर काम में दोष निकालते थे।

यीशु को पता था कि भीड़ में कुछ शास्त्री थे। वह निश्चित रूप से! यह भी जानता था कि जब वह लकवाग्रस्त व्यक्ति के पापों को क्षमा करने की घोषणा करेगा तो उनकी प्रतिक्रिया क्या होगी! उन्होंने मानसिक रूप से उस पर ईशनिन्दा का आरोप लगाया, स्वयं को उन बातों को करने की क्षमता का अहंकार करने का जो केवल परमेश्वर ही कर सकता है। परन्तु क्या उसने कोढ़ी को शुद्ध करने और कफरनहूम में किए गए कई अन्य आश्चर्यकर्मों में पहले ही ऐसा नहीं किया था? नि:संदेह, उसने किया था! यह अविश्वास की विशेषता है कि यह सुविधाजनक रूप से विचित्र तथ्यों को अनदेखा कर देता है।

प्रभु को उनकी शत्रुता के बारे में पता था। जैसे ही उनके मन में आरोप लगाने वाले विचार आए, प्रभु को पता चल गया था।

मरकुस कहता है, “यीशु ने अपनी आत्मा में जान लिया।” इसके विपरीत, उन्होंने “अपने हृदयों में तर्क किया,” अर्थात् अपनी आत्माओं में। नया जन्म न पाए हुए व्यक्ति को अपनी तर्क शक्ति पर निर्भर रहना पड़ता है। प्रभु यीशु को यह तर्क करने की आवश्यकता नहीं थी कि उसके कथन पर इन लोगों की प्रतिक्रिया क्या होगी। वह तुरन्त इसके बारे में जानता था। इससे पहले कि वे कुछ कह पाते, उसने उन्हें चुनौती दी: “तुम अपने–अपने मन में यह विचार क्यों कर रहे हो?” यह ऐसा प्रश्न नहीं था जिसके लिये उत्तर की आवश्यकता थी। वह उत्तर जानता था, उसका पूर्वानुमान लगाता था, और उसे रद्द कर देता था।

ध्यान दें कि उनके विचार कैसे *विस्तृत हुए* (2:9-12):

*सहज क्या है? क्या लकवे के रोगी से यह कहना कि तेरे पाप क्षमा हुए, या यह कहना कि उठ अपनी खाट उठा कर चल फिर? (2:9)*

“*सहज क्या है?*” नि:संदेह, दोनों ही *बातें कहना समान रूप से आसान है।* परन्तु यदि कोई ढोंगी है और बिना किसी सबूत या काम के अधिकार की प्रतिष्ठा प्राप्त करना चाहता है, तो स्पष्ट है, “तेरे पाप क्षमा हुए” कहना आसान है, इसके बजाय कि “उठ, अपनी खाट उठाकर अपने घर चला जा।” कौन कह सकता है कि पाप क्षमा हो गए हैं? परन्तु क्या आवश्यकता में पड़ा व्यक्ति अपना बिस्तर उठाकर वास्तव में चलता है, यही असली परीक्षा है।

यीशु ने कहा, “तेरे पाप क्षमा हुए! उठ, अपनी खाट उठा कर अपने घर चला जा।” थोमा एक्विनास के शब्द उस अपने समय के पोप के लिये तीखे थे। पोप अपने काउंटिंग हाउस में अपने पैसे गिन रहे थे। पोप ने कहा, “देखो थोमा, कलीसिया को अब यह कहने की आवश्यकता नहीं है, 'हमारे पास चांदी और सोना नहीं है।'”

एक्विनास ने कहा, “हे पवित्र पिता, सच बात है, और न ही यह बीमार से कहा जा सकता है, 'अपनी खाट उठा कर अपने घर चला जा।'”

*परन्तु जिस से तुम जान लो कि मनुष्य के पुत्र को पृथ्वी पर पाप क्षमा करने का भी अधिकार है।” उसने उस लकवे के रोगी से कहा, “मैं तुझ से कहता हूँ, उठ, अपनी खाट उठाकर अपने घर चला जा।” (2:10-11)*

प्रभु यीशु अपनी प्रतिष्ठा को दाँव पर लगाने के लिये पूरी तरह तैयार था। यदि वह व्यक्ति लकवाग्रस्त होकर वहीं पड़ा रहा, तो सब समाप्त हो जाएगा। उस स्थिति में, प्रभु यीशु, परमेश्वर के पुत्र होने के अपने सभी दावों के बावजूद, एक और धार्मिक ढोंगी के रूप में उजागर हो जाएगा। अत: हम अच्छी तरह से कल्पना कर सकते हैं कि दर्शक कितनी उत्सुकता से देख रहे थे कि क्या होने वाला है। प्रभु को स्वयं इस बात पर कोई संदेह नहीं था कि क्या होने वाला है। वह न केवल यह जानता था कि वह मनुष्य उठ जाएगा, बल्कि उसने उसे उसके तत्काल भविष्य के कदमों के बारे में कुछ निर्देश भी दिए थे। उसे उठकर घर जाना था। इसमें कोई संदेह नहीं कि उसके विश्वासयोग्य मित्रों की चौकड़ी हर कदम पर विजयी जुलूस में उसके साथ पैदलयात्रा करेगी।

प्रभु के वचनों में एक गहन सत्य निहित है: “परन्तु जिस से तुम जान लो कि मनुष्य के पुत्र को पृथ्वी पर पाप क्षमा करने का भी अधिकार है।” यदि हमारे पापों को क्षमा किया जाना है, तो यह तब होना चाहिए जब हम अभी भी *पृथ्वी पर हैं।* एक बार जब हम मर जाते हैं तो बहुत देर हो जाती है क्योंकि चरित्र और नियति दोनों ही मृत्यु पर तय होते हैं। गम्भीर घोषणा है, “जो अन्याय करता है, वह अन्याय ही करता रहे; और जो मलिन है, वह मलिन बना रहे; और जो धर्मी है, वह धर्मी बना रहे; और जो पवित्र है; वह पवित्र बना रहे।” (प्रका. 22:11)। रोम के शोधन गृह के लिए बहुत कुछ,, मृत लोगों की आत्माओं के लिये कहे जाने वाले अंतहीन सामूहिक प्रार्थना और अंत में पवित्र लोग घोषित किए जाने की व्यर्थ आशा। बाइबल ऐसी कोई शिक्षा नहीं जानती। बाइबल कब्र से परे उद्धार की कोई आशा नहीं देती। धनी व्यक्ति और लाजर दोनों जानते थे कि मृत्यु के बाद उनकी स्थिति परिवर्तन से परे तय थी। उनके बीच “एक भारी गड़हा ठहराया गया है” (लूका 16:19-31)। एक मार्ग धरती से स्वर्ग की ओर जाता है, और एक मार्ग धरती से नरक की ओर जाता है, परन्तु कोई मार्ग नरक से स्वर्ग की ओर नहीं जाता। शोधन गृह एक मिथक है। हमें धरती पर अपने पापों की क्षमा मिलती है - या बिलकुल भी नहीं। और धरती पर पापों को क्षमा करने की सामर्थ्य केवल मनुष्य के पुत्र के पास है। उसने यह सामर्थ्य किसी और को नहीं सौंपी है।

*वह उठा और तुरन्त खाट उठाकर सब के सामने से निकलकर चला गया; इस पर सब चकित हुए, और परमेश्‍वर की बड़ाई करके कहने लगे, “हम ने ऐसा कभी नहीं देखा।” (2:12)*

वह पुरुष तुरन्त उठा, अपना बिस्तर उठाया और भीड़ के बीच से कोहनी से मार्ग बनाते हुए घर से बाहर निकल गया। क्या वह बाद में पतरस की छत ठीक करने में सहायता करने के लिये वापस आया? क्या पूर्व बढ़ई ने वह काम अपने हाथ में ले लिया? यह जानना रूचिकर होगा।

वहाँ मौजूद लोगों पर इसका असर तुरन्त हुआ। वे आश्चर्यचकित होकर परमेश्वर की महिमा करने लगे। उन्होंने कहा, “हमने ऐसा पहले कभी नहीं देखा था!”

रब्बी और शास्त्री, फरीसी और सदूकी, याजक और लेवी, और सभी धार्मिक प्रतिष्ठानों ने कभी भी इस तरह की सामर्थ्य और अधिकार का प्रदर्शन नहीं किया था, चाहे वे जो उपदेश देते थे या जो वे करते थे, चाहे व्यक्तिगत् रूप से या सामूहिक रूप से। यह नया था! यहाँ एक ऐसा व्यक्ति था जो अधिकार के साथ बोलता था। वह आदेश दे सकता था कि पापों को क्षमा किया जाए, और वह आदेश दे सकता था कि बीमारी को ठीक किया जाए।

*परमेश्‍वर को छोड़ और कौन पाप क्षमा कर सकता है?* भला, परमेश्वर के अलावा कौन बीमारी को भगा सकता है? एक ऐसे व्यक्ति को तुरन्त ठीक करने की अपनी क्षमता साबित करने के बाद, जो स्पष्ट रूप से बहुत बुरी हालत में था, इतना बीमार कि वह अपने बिस्तर से भी नहीं उठ सकता था, उसने पापों को क्षमा करने की अपनी क्षमता साबित की और इस कारण, उनके सामने साबित कर दिया कि वह परमेश्वर था।

इस समय तक, आधिकारिक यहूदी प्रतिष्ठान की शत्रुता अभी तक निश्चित विरोध में कठोर नहीं हुई थी। हालाँकि, जल्द ही, वे उसे सबसे असाधारण काम करते देखने के इतने आदी हो गए कि वे कठोर हो गए। वे प्रभु की अद्भुत सामर्थ्य के लिये कुछ प्रशंसनीय व्याख्या खोज लेंगे, जो उन्हें उसके ईश्वरत्व का सामना करने के लिये विवश नहीं करेगी। वे कहेंगे कि वह शैतान के साथ गठबंधन में है।

**2. उसके लोगों में दोष ढूँढना (2:13-28)**

**क. उसके चुंगी लेनेवाले मित्र (2:13-17)**

*वह फिर निकलकर झील के किनारे गया, और सारी भीड़ उसके पास आई, और वह उन्हें उपदेश देने लगा। जाते हुए उस ने हलफई के पुत्र लेवी को चुंगी की चौकी पर बैठे देखा, और उस से कहा, “मेरे पीछे हो ले।” और वह उठकर उसके पीछे हो लिया। (2:13-14)*

यीशु अब झील के किनारे किनारे चला गया, और भीड़, और अधिक आश्चर्यकर्म देखने के लिये उत्सुक, उसके पीछे दौड़ी। मरकुस कहता है, “वह उन्हें उपदेश देने लगा।” संदेश आश्चर्यकर्मों से अधिक महत्वपूर्ण था। जिस तरह उसने इम्माऊस के मार्ग पर चेलों को सभी पवित्रशास्त्र से “अपने बारे में बातें” शिक्षा दी (लूका 24:27), उसी तरह उसने इस गलीली भीड़ को शिक्षा दी। रब्बियों ने परमेश्वर के वचन की दीवार पर अपनी स्वयं की मानव निर्मित परम्पराओं के भित्तिचित्र लिखे। यीशु लोगों को परमेश्वर के वचन की शानदार, प्राचीन सच्चाई की ओर वापस ले गया और उन्हें इसके समृद्ध रंग, इसकी ईश्वरीय बनावट और इसके अतुलनीय मूल्य दिखाए।

फिर वह आगे बढ़ गया। अब उसकी दृष्टि एक नये भर्ती हुए व्यक्ति, लेवी, हलफई के पुत्र, पर थी, जिसे हम मत्ती के नाम से जानते हैं। जब यीशु ने उसे बुलाया तो वह व्यस्त था। अधिकतर यहूदियों का उससे कोई लेना-देना नहीं था। जिस बदनाम पेशे को उसने चुना था, उसके कारण वे उसे बहुत ही तुच्छ समझते थे।

हम नहीं जानते कि लेवी (मत्ती) का पिता हलफई वही था जो प्रभु के एक अन्य चेले याकूब का पिता था, परन्तु वह प्रभु के सबसे प्रसिद्ध चेलों में से एक बन गया।

वह कफरनहूम में रहता था और पतरस एवं उसके व्यापारिक साझेदारों को अच्छी तरह से जानता होगा। वह स्पष्ट रूप से लेवी के गोत्र का था, वह गोत्र जिसे परमेश्वर ने पवित्र कामों में अन्य गोत्रों की सेवा करने के लिये अलग रखा था। मसीह के समय तक, कई लेवी राष्ट्र के वकील थे। यह उसके माता-पिता के लिये एक कड़वी निराशा रही होगी जब युवा मत्ती (जिसका नाम “यहोवा का उपहार” है) ने जल्दी से धनी बनने के लिये कानूनी पेशे से मुंह मोड़ लिया, किसी भी दाम पर, यहाँ तक कि एक चुंगी लेने वाले बनकर अपने चरित्र को खोने के दाम पर भी। चुंगी लेने वाले रोमी सरकार के लिये कर एकत्र करते थे, और यहूदी उन्हें देशद्रोही और जबरन वसूली करने वाले मानते थे। वे कर निर्धारण में हेराफेरी करके धनी बनते थे जिसे उन्हें एकत्र करना था। मत्ती सम्भवत: झील के किनारे एक कर कार्यालय वाला एक सीमा शुल्क अधिकारी था; वह आकर्षक मछली पकड़ने के व्यापार पर सीमा शुल्क एकत्र करने के लिये जिम्मेदार था।

मत्ती ने नि:संदेह प्रभु के कुछ आश्चर्यकर्म देखे थे। उसने प्रभु का उपदेश सुना था, और उसका हृदय अवश्य ही छू गया था। जब प्रभु ने बुलाया तो वह तैयार था।

एक चुंगी लेने वाले के बुलावे पर दूसरे चेलों ने कैसी प्रतिक्रिया की*?* नि:संदेह, पहले तो उनकी भावनाएँ आहत हुई होंगी, और उन्होंने अपने नये साथी की ओर संदेह भरी दृष्टि से देखा होगा। परन्तु मत्ती उस दृष्टि से अभ्यस्त था, और वह निर्बल नहीं था। यदि वह उपहास और शत्रुतापूर्ण आँखों के प्रति संवेदनशील होता, तो वह कभी चुंगी लेने वाला नहीं बन पाता।

*जब वह उसके घर में भोजन करने बैठा, तब बहुत से चुंगी लेनेवाले और पापी, यीशु और उसके चेलों के साथ भोजन करने बैठे; क्योंकि वे बहुत से थे, और उसके पीछे हो लिये थे। (2:15)*

अब दृश्य मत्ती के घर में बदल जाता है। स्पष्ट है, मरकुस एक भव्य अवसर का वर्णन कर रहा है, जिसने पतरस के मन पर गहरा प्रभाव डाला। मत्ती ने अपने सभी पुराने मित्रों को अपने सभी नये मित्रों से मिलवाने के लिये लाने की व्यवस्था की। वह विशेष रूप से चाहता था कि उसके सभी पुराने मित्र यीशु से मिलें। मत्ती शायद धनी था और सम्भवत: उसका एक बड़ा घर था। उसके निम्न वर्ग में भी कई मित्र रहे होंगे। धार्मिक संसार ने उन लोगों को वर्गीकृत किया जिनके साथ मत्ती ने संगति की थी, बस “चुंगी लेने वालों और पापी” के रूप में और उनसे कोई लेना-देना नहीं था। हालाँकि, यीशु ने उन्हें प्रसन्नता के साथ स्वीकार किया। उनके अनुयायियों ने उन्हें स्वीकार किया क्योंकि उसने उन्हें स्वीकार किया था, परन्तु एक को संदेह है कि उन्होंने उन्हें अनिच्छा से स्वीकार किया।

यदि यीशु न होता, तो यह मुलाकात असम्भव होती। चुंगी लेने वालों और पापियों का संसार ऐसे ईमानदार लोगों, ऐसे ईमानदार व्यापारियों, ऐसे नैतिक और धार्मिक महानुभावों जैसे पतरस, याकूब और जब्दी भाइयों के संसार से बहुत अलग था। इस बिंदु तक, दोनों समूहों ने एक-दूसरे को तुच्छ जाना था और एक-दूसरे के लिये कठोर नाम, बुरी भावनाएँ और कटु टिप्पणियाँ के अलावा कुछ नहीं था। यहाँ तक कि मान लें कि कोई भली मंशा वाला व्यक्ति दोनों समूहों के बीच मेल मिलाप करवाना चाहता था और बातचीत और विचारों के आदान-प्रदान के लिये दोनों पक्षों से यथासम्भव अधिक से अधिक लोगों को इकट्ठा करने की व्यवस्था करता, तो कितने लोग आते? उन्हें एक-दूसरे से बात करने के लिये क्या मिलता? हममें से अधिकांश ने विवाह जैसे समारोहों में भाग लिया है, जहाँ विपरीत सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक और नैतिक ध्रुवों के लोगों को एक समारोह में एक साथ रखा जाता है। ऐसी स्थितियों में, लोग अपने ही तरह के लोगों की ओर आकर्षित होते हैं। कोई भी पारस्परिक बातचीत उथली और जबरदस्ती होती है और केवल तभी की जाती है जब आवश्यक हो।

मत्ती के समारोह में भी ऐसा ही हुआ, क्योंकि मत्ती की लोकप्रियता उसके अपने लोगों में थी। यीशु ने अंतर उत्पन्न किया; *दोनों* पक्ष *उसमें रुचि रखते थे।* वह एक ऐसा सामान्य केंद्र था जिसके आसपास वे सभी एकत्रित हुए थे। वे सभी उसके बारे में बात कर सकते थे। उसके चेले अपने कुछ अनुभव साझा कर सकते थे। कर चुंगी लेने वाले और पापी अपने आश्चर्य और प्रसन्नता को व्यक्त कर सकते थे कि वह उनके ही जैसे लोगों के द्वारा बुलाई गई सभा में इतनी स्वेच्छा से आया। हम मत्ती को उसके साहसिक कार्य की सफलता पर मुस्कराते हुए देख सकते हैं। एकमात्र कड़वाहट बाहर से आई, और यह आने में अधिक समय नहीं लगा।

*शास्त्रियों और फरीसियों ने यह देखकर कि वह तो पापियों और चुंगी लेनेवालों के साथ भोजन कर रहा है, उसके चेलों से कहा, “वह तो चुंगी लेनेवालों और पापियों के साथ खाता पीता है!” (2:16)*

जब उसने लकवाग्रस्त व्यक्ति के पापों को क्षमा किया, तो शास्त्रियों ने आपत्ति की थी, यद्यपि चुपचाप की थी। अब फरीसी भी उनके साथ शामिल हो गए, और उन्होंने अपनी आलोचना को जोर से व्यक्त किया। हालाँकि, उस समय भी, उनकी आपत्ति सावधानी से की गई थी। वे चेलों के पास गए, न कि स्वयं प्रभु के पास; वे अभी भी कुछ हद तक उसके प्रति भयभीत थे। शास्त्री पवित्रशास्त्र के *वचन* *के संरक्षक थे; फरीसी पवित्रशास्त्र की परम्पराओं* के संरक्षक थे। वे अनगिनत मानव निर्मित नियमों और विधियों को बनाए रखने में सावधानी बरतते थे जो मूसा की व्यवस्था की बुनियादी 613 आज्ञाओं के आसपास विकसित हुए थे। पवित्र व्यक्ति के बारे में उनका विचार *अलगाव* शब्द में संक्षेपित किया जा सकता है। एक अच्छा पुरुष स्वयं को देशद्रोहियों के साथ जोड़कर दूषित नहीं होना चाहेगा। वह सामाजिक रूप से समझौता नहीं करना चाहेगा या ऐसी संगति से अपनी प्रतिष्ठा को बर्बाद नहीं करना चाहेगा।

“चुंगी लेने वाले! पापी!” हम उनकी आवाज में भय और घृणा सुन सकते हैं। हम उनके चेहरों पर घृणा देख सकते हैं। क्यों, ऐसे लोग नैतिक रूप से कोढ़ी थे। वे बहिष्कृत, अछूत थे। धार्मिक प्रतिष्ठान का कोई भी सदस्य सपने में भी नहीं सोच सकता कि उसका नाम ऐसे लोगों के साथ जोड़ा जाएगा।

फिर भी, यहाँ नासरत का यह युवा भविष्यद्वक्ता पड़ोस के बदमाशों के द्वारा रखे गए भोज में शामिल हुआ। वे उसके आश्चर्यकर्मों का खंडन नहीं कर सकते थे, परन्तु अब वे उसकी नैतिकता पर प्रश्न उठाने लगे। उन्होंने उसके चेलों को चुनौती दी कि वे अपने भविष्यद्वक्ता के इस विचित्र व्यवहार की व्याख्या करें। निश्चित रूप से एक भविष्यद्वक्ता का काम ऐसे लोगों की निन्दा करना और उन्हें धिक्कारना था, उनके साथ भोजन करना नहीं। हालाँकि, प्रभु को अपने चेलों के द्वारा उसके लिये कोई बहाने बनाने की आवश्यकता नहीं थी। मरकुस कहता है कि, वह स्वयं को अच्छी तरह से समझाने में सक्षम था।

*यीशु ने यह सुनकर उनसे कहा, “भले चंगों को वैद्य की आवश्यकता नहीं, परन्तु बीमारों को है : मैं धर्मियों को नहीं, परन्तु पापियों को बुलाने आया हूँ।” (2:17)*

चारों ओर बहुत शोर हो रहा होगा। दर्जनों लोग वहाँ थे। उनमें से कई पुराने मित्र या सहकर्मी थे। ऐसे अवसरों पर बातचीत की गूँज जल्द ही शोर में बदल जाती है। परन्तु प्रभु के कानों ने कुछ भी नहीं छूटा, यहाँ तक कि उसकी आँखों ने सब कुछ देखा। उसने चेलों को देखा, जो स्पष्ट रूप से अपने आप में बहुत अच्छी तरह से रह रहे थे, जबकि शास्त्री और फरीसी अपनी आलोचना के साथ आ रहे थे। उसने उनकी बातें सुनीं, जैसे वह सब सुनता है जो कहा जाता है।

इससे पहले कि शर्मिंदा चेले कुछ अपर्याप्त उत्तर दे पाते, उसने मंच सम्भाला। उसने एक सरल परन्तु स्पष्ट समानता बताई। उसने कहा, “स्वस्थ लोगों को चिकित्सक की आवश्यकता नहीं होती, बल्कि बीमार लोगों को होती है।” “भले लोगों को उद्धारकर्ता की आवश्यकता नहीं होती, बल्कि बुरे लोगों को होती है।”

प्रभु के आलोचक, नि:संदेह, स्वयं को अच्छे लोग समझते थे, और वे चुंगी लेने वालों और वेश्याओं को बुरे लोगों के रूप में वर्गीकृत करते थे। उन्होंने सुसमाचार के एक महान तथ्य पर ध्यान केंद्रित किया—कोई भी व्यक्ति इतना बुरा नहीं है कि प्रभु यीशु उसे बचा न सकें, परन्तु बहुत से लोग स्वयं को इतना अच्छा समझते हैं कि उन्हें उद्धार की आवश्यकता नहीं है।

जो लोग स्वयं को इतना अच्छा समझते हैं कि उन्हें बचाए जाने की आवश्यकता नहीं है, वे स्वयं को और दूसरों को सापेक्ष मूल्यों के पैमाने पर आंकते हैं। वे पाप को विभिन्न श्रेणियों में रखते हैं और अलग-अलग स्तर के अनुसार उसे वर्गीकृत करते हैं। इस कारण, उड़ाऊ पुत्र के पाप उनके लिये उसके बड़े भाई के पापों से कहीं अधिक दुष्ट होंगे। उनके पैमाने पर, एक वेश्या एक पाखंडी से कहीं अधिक बुरी होगी और एक हत्यारा एक कुड़कुड़ाने वाले से कहीं अधिक बुरा होगा। परन्तु परमेश्वर के पास एक अलग पैमाना है—उसकी अपनी पूर्ण भलाई। इससे सभी एक ही श्रेणी में आ जाते हैं। हम *सभी* खोए हुए पापी हैं जिन्हें एक उद्धारकर्ता की आवश्यकता है।

**ख. उसके निजी मित्र (2:18-28)**

**(1) उपवास से सम्बन्धित चुनौती (2:18-22)**

सबसे पहले *आलोचकों पर ध्यान दें:*

*यूहन्ना के चेले, और फरीसी उपवास करते थे; अत: उन्होंने आकर उससे यह कहा, “यूहन्ना के चेले और फरीसियों के चेले क्यों उपवास रखते हैं, परन्तु तेरे चेले उपवास नहीं रखते?” (2:18)*

अब हम कुछ विचित्र साथियों से परिचित होते हैं। फरीसियों ने एक समूह के रूप में यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की सेवकाई को अस्वीकार कर दिया। बदले में, यूहन्ना ने फरीसियों को “हे साँप के बच्चों” के रूप में धिक्कारा (मत्ती 3:7)। परन्तु यहाँ यूहन्ना के चेले और फरीसियों के चेले, जो अधिकांश बातों पर असहमत हैं, पाते हैं कि उनके बीच एक बात समान है - उपवास। यूहन्ना के चेलों ने स्पष्ट रूप से उपवास किया क्योंकि उन्हें लगा कि यह उनके मन फिराव का प्रमाण है; फरीसियों ने उपवास किया क्योंकि वे इसे अपने धर्म का हिस्सा मानते थे।

फरीसियों और यूहन्ना के अनुयायियों को यह देखकर आश्चर्य हुआ कि यीशु के चेलों ने बिलकुल भी उपवास नहीं किया। *यूहन्ना के चेलों ने* पवित्रता के लिये इस तरह की स्पष्ट सहायता से बचने पर काफी *आश्चर्य के साथ देखा होगा।* यूहन्ना स्वयं एक पूर्ण तपस्वी था, जिसके कठोर आत्म-त्याग के जीवन ने उसे पूरे राष्ट्र से अलग कर दिया था। *फरीसियों* और उसके चेलों ने उपवास से बचने को काफी *संदेह के साथ देखा होगा। यीशु की कथित भविष्यद्वक्ता स्थिति* के लिये इतना ही काफी है यदि उसने और उसके चेलों ने एक पवित्र व्यक्ति के सबसे स्पष्ट कर्तव्य की उपेक्षा की - उपवास करना, और जितना अधिक समय तक और जितनी अधिक बार उतना बेहतर।

अब *मसीह पर ध्यान दें* (2:19-22):

*यीशु ने उनसे कहा, “जब तक दूल्हा बरातियों के साथ रहता है, क्या वे उपवास कर सकते हैं? अत: जब तक दूल्हा उनके साथ है, तब तक वे उपवास नहीं कर सकते। परन्तु वे दिन आएँगे जब दूल्हा उनसे अलग किया जाएगा; उस समय वे उपवास करेंगे।” (2:19-20)*

जैसा कि सुलैमान ने कहा था, हर बात के लिये एक समय और स्थान होता है (सभो. 3:1-8)। विवाह के भोज के दौरान उपवास करना सबसे अनुचित होगा। दूल्हा आ गया था! यह विलाप का नहीं, बल्कि हर्षित होने का समय था; यह उपवास का नहीं, बल्कि भोज का समय था। आखिरकार, इस तरह के सभी आत्म-त्याग का अंतिम लक्ष्य प्राप्त हो चुका था। महिमा का प्रभु आ गया था! यह आनन्दित होने और प्रसन्न होने का समय था। एक नया दिन आरम्भ हो चुका था। एक नये युग का जन्म हुआ था। पवित्रता अब भारीपन के साथ-साथ नहीं चलती थी; यह प्रसन्नता के साथ-साथ हाथ में हाथ डाले चलती थी।

हालाँकि, प्रभु ने भविष्य में होने वाले परिवर्तन को पहले ही देख लिया था। दूल्हे को वापस ले जाया जाना था। तब उपवास के लिये पर्याप्त समय होगा।

इस प्रकार, अपनी सेवकाई के आरम्भ में ही प्रभु को पता था कि यह सब कहाँ समाप्त होगा। उसे अस्वीकार कर दिया जाएगा और वह अपने घर वापस चला जाएगा। मनुष्य की दुष्टता के लिये स्वर्ग का उत्तर एक लम्बी, अभेद्य चुप्पी होगी। तब दुल्हन के कक्ष के बच्चों के पास उपवास करने के लिये बहुत सारे कारण होंगे।

उपवास का अपना महत्व है। यह हमारी प्रार्थनाओं को प्रभावित कर सकता है। हालाँकि, इस साधन उपयोग करना एक कठिन कार्य है। यह पवित्रता की झूठी भावना उत्पन्न कर सकता है। यह उपयोगकर्ता को यह महसूस करवा सकता है कि वह परमेश्वर को विवश कर सकता है। यह आदत बन सकता है और औपचारिकता में बदल सकता है। यह व्यक्ति को आत्म-धर्मी और दूसरों की आलोचना करने वाला बना सकता है। यह वास्तविक पवित्रता का विकल्प बन सकता है। और यह कानूनी हो सकता है।

दूसरी ओर, यीशु ने उपवास किया। जंगल में शैतान से आमना-सामना होने के दौरान उसने चालीस दिन तक उपवास किया। फरीसियों और यूहन्ना के चेलों के द्वारा उठाए गए प्रश्न का उत्तर देते हुए, उसे सच्चे उपवास को कम नहीं आंका। उसने बस यह समझाया कि उसके चेले *उस समय उपवास क्यों नहीं करते थे।* ऐसा करना उस समय के चरित्र के बिलकुल विपरीत होता।

*कोरे कपड़े का पैवन्द पुराने वस्त्र पर कोई नहीं लगाता; नहीं तो वह पैवन्द उसमें से कुछ खींच लेगा, अर्थात् नया, पुराने से, और वह पहले से अधिक फट जाएगा। (2:21)*

कपड़े का नया टुकड़ा वही था जिसे हम अब मसीहियत कहते हैं। पुराना कपड़ा, पैवन्द लगा हुआ और घिसा हुआ, यहूदी धर्म था, जिसमें उसके पर्व और उपवास और नियम और व्यवस्था और बलिदान और समारोह थे। यूहन्ना और फरीसियों के चेलों को स्वयं यह एहसास होना था कि मसीह के आगमन ने सब कुछ बदल दिया था। वह कुछ नया और अलग लाने के लिये आया था। वह यहूदी धर्म को पैवन्द लगाने नहीं आया था, जो पहले ही अपना उद्देश्य पूरा कर चुका था और अपनी उपयोगिता खो चुका था। यहूदी धर्म पर मसीहियत को जोड़ने का प्रयत्न काम नहीं करेगा। यहूदी धर्म अप्रचलित था और इसे पूरी तरह से बदलना था।

*नये दाखरस को पुरानी मशकों में कोई नहीं रखता, नहीं तो दाखरस मशकों को फाड़ देगा, और दाखरस और मशकें दोनों नष्‍ट हो जाएँगी; परन्तु नया दाखरस नई मशकों में भरा जाता है। (2:22)*

दाखरस पवित्र आत्मा है। दाखरस की मशकें विश्वासी का प्रतिनिधित्व करती हैं। मसीह हमें पवित्र आत्मा के वास के लिये नये, उपयुक्त बर्तन बनाने के लिये आया था। इस प्रकार, अब सब कुछ एक नये जन्म के साथ आरम्भ होता है, “नये मनुष्य” के साथ, जैसा कि पौलुस के पसंदीदा अभिव्यक्तियों में से एक का उपयोग करते हैं। हमारे पास मसीह में नया जीवन है। पवित्र आत्मा को पुराने जीवन में नहीं डाला जा सकता था और न ही डाला जा सकता है। वह इसे टुकड़े-टुकड़े कर देगा। प्रभु हमारे पुराने स्वभाव को सुधारने के लिये नहीं आया था; वह हमें एक नया स्वभाव प्रदान करने के लिये आया था जो बपतिस्मा, वास, भरने और परमेश्वर के शक्तिशाली आत्मा के अभिषेक को सम्भालने में सक्षम हो। यह पिन्तेकुस्त का संदेश है। इस नये तरीके से आत्मा का आगमन आग की लपटों और एक शक्तिशाली, तेज हवा के साथ हुआ था - ऐसी शक्तियाँ जो किसी व्यक्ति को चीर सकती हैं। कोई आश्चर्य नहीं कि एक नये जन्म और एक नये मनुष्य की आवश्यकता थी! सभी बातें नयी बना दी गईं - नयी दाखरस के लिये नयी शीशियाँ।

**(2) भोज के सम्बन्ध में चुनौती (2:23-28)**

*ऐसा हुआ कि वह सब्त के दिन खेतों में से होकर जा रहा था, और उसके चेले चलते हुए बालें तोड़ने लगे। (2:23)*

हालाँकि, जल्द ही आलोचकों को आलोचना करने के लिये कुछ और मिल गया।

हर तरफ सुनहरे अनाज के खेत थे। यहाँ प्रभु था और वहाँ चेले थे। चेले भूखे थे और चूँकि मूसा की व्यवस्था के अनुसार पैदल यात्री को अनाज खाने की अनुमति थी, इसलिये उन्होंने ऐसा किया। *फसल का प्रभु* स्वयं उनके साथ था। उसने बोए गए बीज को बनाया था। उसने वर्षा भेजी थी और मिट्टी भी प्रदान की थी। उसने अपने चमकते सूरज को खेतों और फसलों पर मुस्कुराने का आदेश दिया था और अब पूरी भूमि अनाज से भरी हुई थी, अपने सृष्टिकर्ता को स्वीकार करने के लिये झुक रही थी।

क्या चेले भूखे थे? वैसे, उन्हें व्यवस्था में दिए गए प्रावधान का लाभ उठाने दें। उसका हाथ ही था जिसने पत्थर की उन पट्टियों पर लिखा था जिन्हें मूसा पहाड़ से नीचे ले आया था। उसकी आवाज ही थी जिसने मूसा को कंगालों के लिये प्रावधान करने के लिये निर्देशित किया था। उन्हें उस भरपूर पुरस्कार में से थोड़ा सा लेने दें जो उनके पास था।

और उन्होंने ऐसा ही किया, उसकी आशीष के साथ - परन्तु यह सब्त का दिन था। “जितना बेहतर दिन होगा, उतना ही बेहतर काम होगा,” जैसा कि हम कहेंगे। उसने सब्त के दिन होने में कोई बाधा नहीं देखी। सब्त का दिन उसके अपने लोगों के लाभ और आशीष के लिये उसका प्रावधान था। वह *सब्त के दिन* के साथ-साथ फसल का भी स्वामी था।

*तब फरीसियों ने उससे कहा, “देख; ये सब्त के दिन वह काम क्यों करते हैं जो उचित नहीं?” (2:24)*

फरीसी रब्बियों के द्वारा संकुचित हो गए थे और तथाकथित “मौखिक व्यवस्था” में डूब गए थे। उन्होंने प्रभु पर आक्रमण किया, इसलिये नहीं कि उनके चेलों ने पास के खेत से कुछ मकई खा ली थी, बल्कि इसलिये कि उन्होंने सब्त के दिन ऐसा किया था। वास्तव में, सब्त के प्रति प्रभु के रवैये से अधिक उन्हें किसी और बात ने क्रोधित नहीं किया। रब्बियों ने सब्त के दिन के चारों ओर विशाल दीवारें खड़ी कर दी थीं। उन्होंने इसे हज़ारों मानव निर्मित नियमों और विधियों से घेर दिया था, जिनमें से अधिकतर हास्यास्पद थे। उन्होंने सब्त के दिन को बोझ बना दिया था, जबकि परमेश्वर ने इसे आशीष के रूप में बनाया था। उनके विचार में, मकई का एक दाना तोड़ना कटनी करने के बराबर था; भूसी को रगड़ना भूसी निकालने के समान था। इसलिये, फरीसियों की परम्पराओं के अनुसार, चेलों ने सब्त के दिन का उल्लंघन किया था और व्यवस्था को तोड़ा था।

उन्होंने कहा, “देख!” यह स्पष्ट था। इसे किसी स्पष्टीकरण की आवश्यकता नहीं थी। निश्चित रूप से, सबसे अज्ञानी यहूदी भी जानता था कि प्रभु के चेले जो कर रहे थे वह व्यवस्था का उल्लंघन था। क्या वह अंधा था?

*उसने उनसे कहा, “क्या तुम ने यह कभी नहीं पढ़ा कि जब दाऊद को आवश्यकता हुई, और जब वह और उसके साथी भूखे हुए, तब उसने क्या किया था?” (2:25)*

प्रभु ने उनके लिये अपनी बाइबल तैयार रखी थी। क्या उन्होंने नहीं पढ़ा कि दाऊद ने भूख लगने पर क्या किया? नि:संदेह, उन्होंने इसे पढ़ा था। वे पुराने नियम की कहानियों को हृदय से जानते थे। प्रभु भी ऐसा ही करता था। परन्तु उसने बाइबल में ऐसी बातें देखीं जो उन्होंने कभी नहीं देखीं। वे तुच्छ बातों में इतने व्यस्त थे कि सत्य को नहीं देख पाए, तब भी जब वह उनके सामने था। वे पवित्र वचन को रूपक बनाने, वैध बनाने और उसका विश्लेषण करने, उस पर बहस करने, उसे विकृत करने और अपनी याजकीय परम्पराओं के द्वारा उसका अवमूल्यन करने के बहुत शौकीन थे। वे स्पष्ट को देखने में विफल रहे। उनके लिये, पूर्वजों ने जो कहा था, वह पिता ने जो कहा था, उससे अधिक महत्वपूर्ण था। परन्तु यीशु ने उनकी सभी अंतहीन रब्बी चर्चाओं, उनके सभी पाद-टिप्पणियों और हाशिए की टिप्पणियों, उनकी सभी रब्बी व्याख्याओं और उनकी सभी परम्पराओं और *पूर्व गिरजाघर* कीघोषणाओं को अनदेखा कर दिया। वह पवित्र वचन के हर अध्याय, हर आयत और हर पंक्ति के हृदय तक गया।

*“उसने कैसे अबियातार महायाजक के समय, परमेश्‍वर के भवन में जाकर भेंट की रोटियाँ खाईं, जिसका खाना याजकों को छोड़ और किसी को भी उचित नहीं, और अपने साथियों को भी दीं?” (2:26)*

अच्छे उपाय के लिये, प्रभु ने उन्हें याद दिलाया कि कैसे दाऊद महायाजक अबियातार के दिनों में तम्बू में गया था, और उसने भेंट की रोटी में से हिस्सा लिया था, जो मूसा की व्यवस्था के अनुसार केवल याजकों के लिये आरक्षित थी। इसके अलावा, उसने अपने साथियों को भी उस पवित्र रोटी में से कुछ दिया था। वे भी उतने ही भूखे थे जितना कि वह था (1 शमू. 21:1-6)। यह पद्यांश पवित्रशास्त्र का एक असाधारण रूप से उपयुक्त पद्यांश था, क्योंकि यह उसी बात से सम्बन्धित था जिसके बारे में फरीसी शिकायत कर रहे थे - वह खाना जिसे वे खाना उचित नहीं मानते थे।

पवित्र स्थान में तम्बू में रखी गई रोटी की मेज खड़ी थी। सप्ताह में एक बार, याजक बारह रोटियाँ रखता था, इस्राएल के प्रत्येक गोत्र के लिये एक रोटी। ताजी रोटियों के लिये जगह बनाने के लिये जो रोटी निकाली जाती थी वह पवित्र होती थी और उसे केवल याजक ही खा सकते थे। यह पवित्र रोटी वही थी जो अबियातार ने व्यवस्था के विपरीत, राजा शाऊल से भागते समय दाऊद और उसके पुरुषों को दी थी। स्पष्ट सबक यह है कि परमेश्वर व्यवस्थावादी नहीं है और उसके नियम न केवल बुद्धिमान हैं बल्कि परोपकारी भी हैं।

फरीसी इसे परमेश्वर के विरुद्ध घोर राजद्रोह मानते यदि कोई साधारण व्यक्ति मंदिर में जाने का साहस करता और भूख लगने के कारण पवित्र स्थान की मेज पर रखी रोटियों में से एक खा लेता। परन्तु, सभी उद्देश्यों और मंशाओं के लिये, दाऊद ने यही किया। जब दाऊद ने अपनी माँग रखी तो अबियातार कठिनाई में फँस गया। वह शाऊल से डरता था, दाऊद से डरता था और व्यवस्था तोड़ने से डरता था। परन्तु दाऊद की समझदारी ने जीत हासिल की।

इस प्रकार, परमेश्वर के वचन को अपने हथियार के रूप में उपयोग करते हुए, प्रभु ने सामान्य ज्ञान के लिये तर्क दिया। रब्बियों के द्वारा आविष्कृत सब्त के दिन के प्रतिबंधों ने इस तथ्य को अनदेखा कर दिया कि मानवीय भूख रब्बी के नियमों से कहीं अधिक वास्तविक मुद्दा था।

*तब उसने उनसे कहा, “सब्त का दिन मनुष्य के लिये बनाया गया है, न कि मनुष्य सब्त के दिन के लिये।” (2:27)*

प्रभु के पास अपने आलोचकों के लिये एक अंतिम प्रहार था। उन्होंने कहा, “सब्त का दिन मनुष्य के लिये बनाया गया है, न कि मनुष्य सब्त के दिन के लिये।” एक बुद्धिमान और दयालु स्वर्गीय पिता ने सब्त को अपने लोगों के लिये साप्ताहिक आशीष बनाने की योजना बनाई थी। सात में से एक दिन काम से छुट्टी होनी थी। शरीर को आराम का अपना हिस्सा मिल सकता था, और आत्मा और मन को परमेश्वर की आराधना से बहाल किया जा सकता था।

सब्त के दिन का प्रचलन मूसा की व्यवस्था से लगभग पच्चीस सौ वर्ष पुराना है, जो उत्पत्ति 1 अध्याय की तिथि पर निर्भर करता है। इसकी जड़ें सृष्टि में हैं, क्योंकि स्वयं परमेश्वर ने छह दिनों तक सृजनात्मक कार्य करने के बाद, सातवें दिन विश्राम किया था।

वह जो हमारी संरचना को जानता है और जो याद रखता है कि हम केवल मिट्टी हैं, उसने हमारे भले के लिये सब्त की स्थापना की। सब्त मनुष्य के लिये बनाया गया था। हालाँकि, जब तक रब्बियों ने अपने सभी निषेधों को इसमें जोड़ना समाप्त किया, तब तक यह एक असहनीय बोझ बन गया। उन्हें लगता था कि मनुष्य सब्त के लिये बनाया गया था। प्रभु के सामान्य ज्ञान के एक वचन ने उन सभी अनगिनत छोटे-मोटे नियमों और प्रतिबंधों को उड़ा दिया जो उन्होंने कथित तौर पर इसकी रक्षा के लिये बनाए थे।

*इसलिये मनुष्य का पुत्र सब्त के दिन का भी स्वामी है। (2:28)*

सब्त के प्रभु के रूप में, वह इसके साथ जो चाहे कर सकता था। वास्तव में, वह इसे समाप्त करना चाहता था। सब्त हमेशा सप्ताह के सातवें दिन पड़ता था। हालाँकि, कलवरी के बाद, सप्ताह के पहले दिन घटनाएँ घटित हुईं। यीशु सप्ताह के पहले दिन मरे हुओं में से जी उठा। पिन्तेकुस्त का दिन सप्ताह के पहले दिन पड़ा। पवित्र आत्मा सप्ताह के पहले दिन आया। आरम्भिक कलीसिया सप्ताह के पहले दिन आराधना के लिये एकत्रित होती थी (प्रेरितों 20:7)। अब हमारा विश्राम एक दिन में नहीं बल्कि एक व्यक्ति में है। अब व्यवस्था की जगह प्रभु ने ले ली है। हमारा विश्राम उसी में है। पूरा विषय इब्रानियों 4 अध्याय में लिखा गया है, जहाँ चर्चा *विश्राम के पूरे विषय के आसपास घूमती है* - सृष्टि का विश्राम, कनान का विश्राम और कलवरी का विश्राम।

अतः मनुष्य का पुत्र, जो हमें पूर्णतः समझता है, सब्त के दिन का भी प्रभु है, ठीक वैसे ही जैसे वह अन्य सब वस्तुओं का प्रभु है।

**3. उसकी सेवकाई में दोष ढूँढ़ना (3:1-6)**

*वह आराधनालय में फिर गया; वहाँ एक मनुष्य था जिसका हाथ सूख गया था। (3:1)*

फिर से हम सब्त के दिन आराधनालय में वापस आ गए। और, निश्चित रूप से, वहाँ एक और पीड़ित था, इस बार एक लकवाग्रस्त व्यक्ति था। यीशु के हृदय में विकलांगों के लिये एक विशेष स्थान था; उसका हृदय उनके लिये दु:खी था। शरीर के किसी भी अंग के काम न करने पर शरीर के बाकी हिस्सों पर बोझ पड़ता है। आमतौर पर, विशेष रूप से पुराने समय में, जब लोगों के पास आधुनिक शल्य-चिकित्सा, यांत्रिक अंग, मोटर चालित व्हीलचेयर और आधुनिक चिकित्सा के अन्य सभी आश्चर्यकर्मों तक पहुँच नहीं थी, विकलांग व्यक्ति काम करने में असमर्थ था। उसे सहायता पर निर्भर रहना पड़ता था।

इस पुरुष की कमजोरी यह थी कि उसका हाथ सूख गया था या लकवा मार गया था। वह इससे कुछ नहीं कर सकता था। वह दूसरे हाथ से काम चला सकता था, परन्तु ऐसे सैकड़ों काम थे जो वह नहीं कर सकता था। फिर भी, वह आराधनालय में जा सकता था, और यहीं पर यीशु ने उसे पाया।

यीशु कई बार कफरनहूम के इस आराधनालय में आ चुका था। पिछली बार, जैसा कि मरकुस ने दर्ज किया है, उसने एक दुष्टात्मा से पीड़ित व्यक्ति को चंगा किया था। यह सब्त का दिन था। फिर भी, लोगों की प्रतिक्रिया उत्साहपूर्ण थी (1:21-28)। हालाँकि, अब मनोभाव बदल गया था। एक नयी आलोचनात्मक आत्मा जड़ जमा रही थी। चेलों की सब्त के दिन कुछ मकई की बालियाँ तोड़ने के लिये आलोचना की गई थी। प्रभु ने उनका कुशलतापूर्वक बचाव किया था और आलोचकों को चुप करा दिया था।

*और वे उस पर दोष लगाने के लिये उस की घात में लगे हुए थे कि देखें, वह सब्त के दिन उसे चंगा करता है कि नहीं। (3:2)*

अब वे उस पर आँखें गड़ाए हुए थे। जब उसने सब्त के दिन दुष्टात्मा से पीड़ित व्यक्ति को चंगा किया था, तो उसने उन्हें आश्चर्यचकित कर दिया था। उसने अपने चेलों की निर्दोष रक्षा करके उन्हें आश्चर्यचकित कर दिया था। परन्तु अब से प्रभु के शत्रु उसके लिये तैयार रहेंगे।

तीन बातें यहूदियों को बाकी संसार से अलग करती हैं। ये तीन बातें उन्हें गैर-यहूदियों से अलग रखती हैं और विशुद्ध मानवीय स्तर पर, गैर-यहूदी संसार में सदियों से दूर-दूर तक फैले होने के बावजूद उनकी नस्लीय शुद्धता को बनाए रखने में उनकी सहायता करती हैं। ये तीन विशिष्टताएँ खतना की रस्म, अत्यन्त लेवी आहार नियम और सब्त का साप्ताहिक पालन थीं। मसीह में ये तीनों विशिष्टताएँ समाप्त कर दी गई हैं। हालाँकि, मसीह के दिनों के यहूदी अगुवा नासरत के इस युवा भविष्यद्वक्ता को सब्त के प्रति ढीले रवैये के कारण एक राष्ट्र के रूप में अपने अस्तित्व को खतरे में डालने नहीं देंगे, जो कि आत्मसात के विरुद्ध उनकी एक दीवार है। उन्होंने सदियों से इस विशेष दीवार को मजबूत किया था, जिसमें मूसा की व्यवस्था के सरल, अलंकृत अध्यादेश को दृढ़ करने के लिये अनगिनत सहायक नियम और विधियाँ जोड़ी गई थीं। सब्त के दिन के बारे में कोई भी समझौता (जैसा कि उनके नियमों और विधियों के द्वारा घेरा गया था) संदिग्ध होने के लिये बाध्य था।

इसलिये वे उस पर आँखें गड़ाए हुए थे। वे बस एक और अनियमितता की प्रतीक्षा कर रहे थे, और वे उस पर आरोप लगाएँगे। मूसा की व्यवस्था के अधीन, सब्त के दिन को अपवित्र करना एक मृत्युदंडनीय अपराध था (गिनती 15:30-41)।

*उसने सूखे हाथ वाले मनुष्य से कहा “बीच में खड़ा हो।” (3:3)*

प्रभु भयभीत नहीं था। वह उस व्यक्ति को सुझाव दे सकता था कि वह सेवा समाप्त होने के बाद पतरस के घर आ जाए, या वह अगले दिन चंगाई के लिये आए। परन्तु प्रभु ने ऐसा कुछ नहीं किया। उसने बहुत पहले ही रब्बी के सब्त के दिन के प्रतिबंधों को बकवास मान लिया था, अत: उसने साहसपूर्वक उस व्यक्ति से कहा कि वह आगे आए जहाँ हर कोई उसे देख सके।

*और उनसे कहा, “क्या सब्त के दिन भला करना उचित है या बुरा करना, प्राण को बचाना या मारना?” पर वे चुप रहे। (3:4)*

उत्तर स्पष्ट था - कम से कम यह तो स्पष्ट था कि सब्त के दिन या किसी अन्य दिन बुराई करना या हत्या करना वैध नहीं था। जहाँ तक *बात* थी, सब्त किसी अन्य दिन से अलग नहीं था। यही बात थी। इसके विपरीत, जब बात भलाई करने या किसी की जान बचाने की आती है, तो सब्त का दिन किसी अन्य दिन से समान रूप से भिन्न नहीं था।

क्या एक पुरुष को अपने पड़ोसी के घर को जलते हुए देखना चाहिए और सहायता के लिये हाथ भी नहीं बढ़ाना चाहिए, केवल इसलिये कि आज सब्त का दिन है? क्या परमेश्वर की यही मंशा थी? क्या एक चिकित्सक को एक बच्चे की सहायता करने से मना कर देना चाहिए जो गिर गया है और उसका पैर टूट गया है, केवल इसलिये कि आज सब्त का दिन है? क्या एक मनुष्य को किनारे पर खड़े होकर किसी को डूबते हुए देखना चाहिए, जबकि वह उसे बचा सकता है, केवल इसलिये कि आज सब्त का दिन है?

जैसा कि प्रभु अच्छी तरह जानता था, समस्या सब्त के दिन के नियम के साथ नहीं थी, बल्कि सब्त के *प्रभु* के प्रति उनकी अज्ञानता के साथ थी।

“पर वे चुप रहे।” वे न तो उसकी बात का खंडन कर सकते थे और न ही अपनी गलती स्वीकार कर सकते थे। उन्होंने प्रभु के दृष्टान्त (लूका 15 अध्याय) में बड़े भाई की तरह उत्तर दिया, जो पिता के अभी भी विनती करने और बड़े भाई की हठीली चुप्पी में लिपटे रहने के साथ समाप्त होता है। यह एक वाक्पटु चुप्पी थी। यह अस्वीकृति और अविश्वास की चुप्पी थी।

*उसने उनके मन की कठोरता से उदास होकर, उनको क्रोध से चारों ओर देखा, और उस मनुष्य से कहा, “अपना हाथ बढ़ा।” उसने बढ़ाया, और उसका हाथ अच्छा हो गया। (3:5)*

यीशु क्रोधित और दु:खी था। वहाँ मौजूद किसी भी व्यक्ति में अपंग व्यक्ति के लिये कोई सहानुभूति या भावना नहीं थी। वे अपनी बहुमूल्य धार्मिक परम्पराओं से बहुत अधिक जुड़े हुए थे। उनकी चुप्पी ने कहा कि किसी व्यक्ति के लिये अपना घर खोना, किसी बच्चे के लिये अपना अंग खोना और किसी डूबते हुए व्यक्ति के लिये अपनी जान खोना बेहतर है, बजाय इसके कि कोई रब्बी के नियम को तोड़ दे। कोई आश्चर्य नहीं कि यीशु क्रोधित और दु:खी दोनों था। उनकी कठोरता ने ही उनके अपने हृदय को इतना प्रभावित किया। वह जानता था कि यह कठोरता उन्हें कहाँ ले जाएगी - एक खोए हुए अनन्त काल तक।

फिर, उनके अव्यक्त परन्तु कटु विरोध की खुली अवहेलना करते हुए, उसने उस बेचारे व्यक्ति को चंगा किया जो वहाँ खड़ा था, नि:संदेह, पीड़ा से कराह रहा था, शायद, यह सोचकर कि क्या यीशु उनके नियमों के आगे झुकेगा। प्रभु का हृदय उस आवश्यकता में पड़े व्यक्ति के लिये दु:खी था। जैसा कि मरकुस ने कहानी में बताया है, इस मामले में सारी पहल यीशु के पास थी। वह व्यक्ति बस वहाँ था, मण्डली का एक निष्क्रिय सदस्य। उसने चंगाई के लिये मसीह से अपील नहीं की थी। शायद वह रब्बियों के धार्मिक निषेधों को तोड़कर उनके क्रोध का जोखिम उठाने से बहुत डरता था।

परन्तु अब उसे यह तय करना था कि वह किसकी तरफ है। “अपना हाथ बढ़ा!” यह असम्भव था; यह सूखा हुआ था। यह अविवेकपूर्ण था; इसका अर्थ हो सकता है कि उसे बहिष्कृत कर दिया जाएगा। परन्तु उस आवाज में अविवेक को दबाने का अधिकार था, और उस आवाज में असम्भव को पार करने की सामर्थ्य थी। उस मनुष्य ने प्रतिक्रिया दी और तुरन्त ठीक हो गया - और इसमें कोई संदेह नहीं कि उसने अपना बाकी जीवन इस अद्भुत कहानी को बताने में बिताया।

*तब फरीसी बाहर जाकर तुरन्त हेरोदियों के साथ उसके विरोध में सम्मति करने लगे कि उसे किस प्रकार नष्‍ट करें। (3:6)*निश्चित रूप से, यहाँ मानवीय भाषा में दो सबसे भयानक कथन हैं - “उसके विरोध में”... “उसे नष्ट करें।” *उसे!* वह जो महिमा से आया था। पिता का एकलौता पुत्र, अनुग्रह और सत्य से भरा हुआ! वह जो भलाई करता फिरता था! जिसने उनके बीमारों को चंगा किया, उनके अंधों को दृष्टि दी, उनके कोढ़ियों को शुद्ध किया, उनके मरे हुओं को जीवित किया, और उनकी भूखी भीड़ को भोजन करवाया! वे उसके *विरुद्ध थे।* क्यों? क्योंकि वे उसे अपने धार्मिक ढांचे में ढाल नहीं पाए। झूठा धर्म ऐसा होता है।

इससे भी बुरी बात, वे उसे नष्ट करना चाहते थे। *उसे!* अनन्त, अनिर्मित, ईश्वरत्व का स्वयं-अस्तित्व वाला दूसरा व्यक्ति, सबसे प्राचीन, वह जो अनन्त काल से अनन्त तक था, महिमा के सर्वोच्च स्वर्गदूतों के द्वारा गाया गया, सारापों के गीत का विषय, जगत का सृष्टिकर्ता और पालनहार, सभी पर परमेश्वर, हमेशा के लिये धन्य, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, सर्वव्यापी! वे *उसे* नष्ट करना चाहते थे! उनके पास आकाशगंगा को नष्ट करने का प्रयत्न करने का बेहतर अवसर था। परन्तु झूठा धर्म ऐसा ही है।

और इन छोटे लोगों ने, इन गाँव के “पवित्र लोगों” ने इस विशाल कार्य को कैसे पूरा करने का प्रस्ताव रखा? नि:संदेह, सहयोगियों के साथ। उन्होंने तुरन्त हेरोदियों के बारे में सोचा, छोटे लोगों का एक और समूह जो स्वयं को वास्तव में बहुत बड़ा पुरुष समझता था।

हेरोदी एक धार्मिक दल से अधिक और धार्मिक सम्प्रदाय से कम थे। ऐसा लगता है कि यह समूह हेरोदेस महान की सेवा के लिये संगठित किया गया था। यह राजनीतिक और धार्मिक उपकारों के बदले में रोमी सत्ता को श्रद्धा अर्पित करने के लिये तैयार था। फरीसियों का उनसे बहुत कम लेना-देना था - अब तक। अब वे सहज रूप से इस अवांछित मसीह के विरुद्ध स्वाभाविक सहयोगी के रूप में उनके पास चले गए। इस नये गठबंधन में सभी संयोजनों में से सबसे घातक संयोजन आया - धर्म और राजनीति का मिलन। और यह अस्थिर मिलन मसीह के विरुद्ध था। जब धार्मिक कट्टरपंथी राजनीतिक चरमपंथियों के साथ मिलकर काम करते हैं, तो दूसरों को सावधान रहना चाहिए।

**C. सेवक का कार्य धन्य है (3:7-19)**

**1. सेवक और जयजयकार करने वाली भीड़ (3:7-12)**

सुसमाचार के शत्रुओं ने परमेश्वर के सिद्ध सेवक के कार्य को *तुच्छ समझा,* परन्तु सच्चाई यह रही कि यह *धन्य था।* इस अद्भुत मसीह के लिये भीड़ अभी भी उत्साह से भरी हुई थी।

*यीशु अपने चेलों के साथ झील की ओर चला गया : और गलील से एक बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली; और यहूदिया, और यरूशलेम, और इदूमिया, और यरदन के पार, और सूर और सैदा के आसपास से एक बड़ी भीड़ यह सुनकर कि वह कैसे अचम्भे के काम करता है, उसके पास आई (3:7-8)।*

देश के सभी भागों से भीड़ आई। वे दक्षिण से, इदूमिया से, यहूदिया और मृत सागर के दक्षिण के क्षेत्र से आए। वे यहूदिया और यरूशलेम से, राजधानी से ही आए। वे उत्तर से, गलील के सभी भागों से आए। वे पूर्व से, यरदन के पार से आए। और वे पश्चिम से, भूमध्य सागर के तट के किनारे से आए। फरीसी-हेरोदेस गठबंधन के लिये बहुत कुछ!

यहाँ यरूशलेम की टुकड़ी का उल्लेख शायद यह समझा सकता है कि कफरनहूम के स्थानीय धार्मिक अगुवे इतने परेशान क्यों थे। प्रभु ने न केवल सब्त के दिन को अपवित्र किया था, बल्कि उनके लिये लज्जित होने की बात भी थी। स्थानीय प्रांतीय अगुवे हमेशा यहूदिया और यरूशलेम के अधिक परिष्कृत अगुवों से भयभीत रहते थे।

विवेकपूर्ण तरीके से प्रभु ने स्वयं को इस क्षेत्र से दूर कर लिया, जहाँ उसके जीवन के विरुद्ध षड्यंत्र रचे जा रहे थे। भीड़ उसके पीछे चल पड़ी। उस समय से, कफरनहूम के याजक अराधनालयों के स्वामी थे, परन्तु यीशु के पास भीड़ थी। उसकी ख्याति दूर-दूर तक फैली, और लोग दूर-दूर से झुण्ड में आए। यहाँ तक कि देश की राजधानी भी उसके कारनामों से गूँज रही थी। वे एदोम और यरदन पार से और यहाँ तक कि प्राचीन फीनीके के तटीय नगरों सूर और सैदा से भी आए थे। एक व्यापक आलिंगन में, मरकुस ने समूचे देश को इकट्ठा कर लिया। पूरा देश उत्साह से भर गया।

मसीह के विरुद्ध षड्यंत्र बहुत छोटा और बहुत जल्दी वाला था। इसके सफल होने के लिये यह गलत समय और गलत जगह थी। हालाँकि, जैसे-जैसे आने वाली घटनाएँ उनके सामने अपनी छाया डालती हैं, वैसे-वैसे यह षड्यंत्र आने वाले और भी गम्भीर षड्यंत्रों का अग्रदूत था। इस प्रकार, हालाँकि, प्रभु की सेवकाई के आरम्भ में, गम्भीर विरोध विकसित हुआ - और वह भी उसके अपने दत्तक गृहनगर कफरनहूम में।

*उसने अपने चेलों से कहा, “भीड़ के कारण एक छोटी नाव मेरे लिये तैयार रहे ताकि वे मुझे दबा न सकें।” (3:9)*

झील के किनारे इतनी भीड़ उमड़ पड़ी कि यीशु ने अपने चेलों से एक छोटी नाव खोजने को कहा जिसे वह मंच के रूप में उपयोग कर सके। उसे झील में भीड़ के फँस जाने का खतरा था। समझदारी की बात यह थी कि यदि ऐसा होता तो उसे लेने के लिये एक नाव उपलब्ध होती - और उस मामले में, उसे भी जो भीड़ के द्वारा पानी में धकेला जाता। ऐसा नहीं है कि उसे अपनी सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिये नाव की आवश्यकता थी। परमेश्वर के रूप में, उसका एक वचन, और पानी अलग हो जाता, जिससे उसे दूसरी तरफ जाने के लिये एक चौड़ा मार्ग मिल जाता। या, वह वही कर सकता था जो उसने किसी अन्य अवसर पर किया था - बस पानी पर चलना। परन्तु यह उसका तरीका नहीं था। उसके आश्चर्यकर्मों में एक तरह की उदारता थी, फिर भी वे एक अत्यन्त अर्थव्यवस्था भी प्रदर्शित करते थे। उसने कभी दूसरों के लिये वह नहीं किया जो वे अपने लिये कर सकते थे। उदाहरण के लिये, उसने पाँच हज़ार लोगों को खाना खिलाया परन्तु चेलों से कहा कि वे बाद के लिये बचा हुआ खाना इकट्ठा कर लें। इसके अलावा, उसने कभी अपने लाभ के लिये आश्चर्यकर्म नहीं किया। उसने शैतान के सुझाव को तुरन्त अस्वीकार कर दिया कि वह स्वयं को खिलाने के लिये पत्थरों को रोटी में बदल दे। उसने कभी भी लोगों को प्रभावित करने के लिये आश्चर्यकर्म नहीं किया। इस प्रकार, उसने शैतान के इस सुझाव को अस्वीकार कर दिया कि वे केवल दिखावटी दिखने के लिये मंदिर के कंगूरे से स्वयं को नीचे गिरा दें।

नहीं! इस स्थिति में नाव ही काफी होगी। अत: उसने यही आदेश दिया।

*क्योंकि उसने बहुतों को चंगा किया था, इसलिये जितने लोग रोग–ग्रस्त थे, उसे छूने के लिये उस पर गिरे पड़ते थे। (3:10)*

मरकुस स्पष्ट करता है कि यह आश्चर्यकर्म ही थे जो भीड़ को आकर्षित करते थे। अद्भुत, अद्भुत यीशु! उन्हें बस उसे छूना था, और उनकी बीमारियाँ भाग गईं! कोई आश्चर्य नहीं कि वे उसके पास भीड़ लगा रहे थे। यह आराधनालय में उसकी अस्वीकृति का उसका उत्तर था। वह गुस्से में नहीं चला गया, जैसा कि नामान ने किया था। वह योना की तरह नाराज नहीं हुआ। उसने अधिकारियों के साथ बहस नहीं की या एलिय्याह की तरह उनका अपमान नहीं किया। वह बस झील के किनारे किनारे थोड़ा आगे बढ़ गया और स्वयं को सभी के लिये उपलब्ध करा दिया।

*अशुद्ध आत्माएँ भी, जब उसे देखती थीं, तो उसके आगे गिर पड़ती थीं, और चिल्‍लाकर कहती थीं कि तू परमेश्‍वर का पुत्र है; और उसने उन्हें बहुत चिताया कि मुझे प्रगट न करना। (3:11-12)*

इन दुष्टात्माओं ने उसे छूने का प्रयत्न नहीं किया। उनके लिये, उसका स्पर्श आग के कष्टदायक स्पर्श जैसा होता। उन्हें उसे पहचानने में कोई कठिनाई नहीं हुई, और वे उसके सामने मुँह के बल लेट गईं, और उसके परमेश्वर होने की घोषणा की। इसके अलावा, हमेशा की तरह, प्रभु ने उन्हें चुप करवा दिया। वह उन जैसे लोगों से कोई गवाही नहीं चाहता था और न ही उसे इसकी आवश्यकता थी।

**2. सेवक और उसके चुने हुए लोग (3:13-19)**

*फिर वह पहाड़ पर चढ़ गया, और जिन्हें वह चाहता था उन्हें अपने पास बुलाया; और वे उसके पास आए। (3:13)*

दृश्य बदल गया। आराधनालय में आलोचक और समुद्र तट पर भीड़ गायब हो गई। यीशु पास के पहाड़ पर चला गया, जहाँ उसने आराधनालय में अपनी अस्वीकृति का वास्तविक रूप से सामना किया। शत्रुता बढ़ती गई और अंत में उसकी मृत्यु के साथ समाप्त हो गई। समय आ गया था कि वह मनुष्यों के एक विशेष समूह को नियुक्त करें जो न केवल चेले बन सकते थे बल्कि प्रेरित भी बन सकते थे, जो उसके जाने के बाद भी काम जारी रख सकते थे।

लूका हमें बताता है कि उसने पूरी रात प्रार्थना में बिताई। सुबह तक, वह उन दर्जन भर लोगों को चुनने के लिये तैयार था, जिन्हें वह अंत में संसार के इतिहास में सबसे बड़ा कार्य सौंपेगा। उसने बहुत सावधानी से उन लोगों को चुना जो उसके अनुयायी बन गए थे, उन कुछ लोगों के साथ जिसके साथ वह अगले वर्ष या उससे भी अधिक समय बिताना चाहता था। उसने बुलाया; वे आए। यह संतुलन हमेशा मनुष्यों के साथ परमेश्वर के व्यवहार में मौजूद रहता है। परमेश्वर लुभाएगा, परन्तु वह मोहित नहीं करेगा। वह आमंत्रित करेगा, परन्तु वह आक्रमण नहीं करेगा।

*तब उसने बारह पुरुषों को नियुक्‍त किया कि वे उसके साथ–साथ रहें, और वह उन्हें भेजे कि वे प्रचार करें, और दुष्‍टात्माओं को निकालने का अधिकार रखें। (3:14-15)*

इतिहास में ऐसा युग कभी नहीं रहा। वे वहाँ जा रहे हैं! ईश्वरीय शक्ति से सुसज्जित एक दर्जन मनुष्य, उस छोटे से देश में, जो समूचे संसार का एक छोटा सा हिस्सा है, यहाँ-वहाँ पैदलयात्रा कर रहे हैं, ताकि यह संदेश फैला सकें कि परमेश्वर का राज्य निकट है।

ध्यान दें कि उसने उन्हें सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण रूप से प्रचार करने के लिये भेजा; चंगाई दूसरे स्थान पर थी। शारीरिक चंगाई नि:संदेह महत्वपूर्ण है। चिकित्सा का पूरा संसार – इतना विशाल, जटिल, महंगा और आवश्यक - एक पीड़ित व्यक्ति के स्वस्थ होने की स्वाभाविक इच्छा को श्रद्धा अर्पित करता है। परन्तु शरीर की चंगाई को आत्माओं को बचाने के बाद दूसरे स्थान पर रखा जाना चाहिए। लोगों को अस्पतालों से दूर रखना उतना महत्वपूर्ण नहीं है जितना कि उन्हें नरक से बाहर रखना। दुष्टात्माओं को बाहर निकालना भी एक दूसरी प्राथमिकता थी। नि:संदेह, आज संसार में बहुत सारी दुष्टात्मा वाली गतिविधियाँ होती हैं। दुष्टात्मा असली शत्रु हैं और उनसे लड़ना चाहिए। फिर भी, हमें सर्वात्मवाद में नहीं गिरना चाहिए, जो हर झाड़ी के नीचे और हर पेड़ में एक दुष्टात्मा को देखता है, कलीसिया की इमारतों को सताता है और बपतिस्मा में छिपा हुआ है। प्रचार करना पहले आना चाहिए।

*वे ये हैं: शमौन जिसका नाम उसने पतरस रखा। (3:16)*

अब मरकुस हमें प्रेरितों की सूची देता है, जिसके आरम्भ उसके नायक पतरस से होती है। यह पद्यांश प्रेरितों की कई सूचियों में से एक है। पतरस सभी सूचियों में पहले स्थान पर आता है। ऐसा लगता है कि वह जन्मजात अगुवा था - आवेगशील, मुखर, स्नेही और मसीह के प्रति समर्पित।

मरकुस ने पतरस के बारे में बहुत सोचा। मरकुस रचित सुसमाचार में वह सार है जो मरकुस ने पतरस को अक्सर उपदेश देते हुए सुना था। मरकुस पतरस को लम्बे समय से जानता था। प्रारम्भिक यरूशलेम की कलीसिया की पहली सभा मरकुस की माता के घर में हुई थी। नि:संदेह, मरकुस ने पतरस के साथ कई लम्बी बातचीत की थी। पौलुस के साथ अपने झगड़े के बाद (प्रेरितों 13:13), मरकुस ने अपने चाचा बरनबास के साथ कुछ समय के लिये यात्रा की, परन्तु बाद में वह स्वयं को पतरस से जोड़ लेता है। उसने शायद पाया कि पतरस पौलुस की तुलना में बहुत कम माँग करता है। पतरस आरम्भ से ही आंदोलन में शामिल था। पिन्तेकुस्त के दिन (प्रेरितों 2 अध्याय) से, प्रेरित के रूप में पतरस की प्रतिष्ठा पूरे पलिश्तीन में अच्छी तरह से स्थापित हो गई थी। यहूदी कलीसिया आम तौर पर उसका सम्मान करती थी; उसकी प्रतिष्ठा के परिणामस्वरूप, गैर-यहूदी कलीसिया भी उसका सम्मान करती थी। वह एक “जीवित पत्री” था, मसीह के ज्ञान का चलता-फिरता विश्वकोश। गैर-यहूदी कलीसियाओं में पतरस के लिये बहुत सद्भावना थी, और वे उसे बहुत सम्मान देते थे।

परन्तु यह सारा सम्मान भविष्य में था। प्रार्थना की एक रात के बाद, प्रभु ने अपने प्रेरितों की सूची में सबसे ऊपर पतरस का नाम रखा। इस नाम का अर्थ है “एक पत्थर”, शाब्दिक रूप से एक कंकड़ (मत्ती 16:13-20), और यह शमौन को मसीह के महान अंगीकार के बाद दिया गया था। परन्तु वह भी भविष्य में था।

*और जब्दी का पुत्र याकूब और याकूब का भाई यूहन्ना, जिनका नाम उसने बुअनरगिस अर्थात् ‘गर्जन के पुत्र’ रखा। (3:17)*

पतरस, याकूब और यूहन्ना ने एक तिकड़ी बनाई, जो प्रेरितों के बीच एक तरह का आंतरिक चक्र था। प्रभु ने उन्हें कई अवसरों पर मसीह की विशेष झलक पाने के लिये चुना जो अन्य प्रेरितों को नहीं दिखाई गई थी। प्रभु ने इन तीनों मनुष्यों को वर्णनात्मक नाम दिए। याकूब और यूहन्ना भाई थे और सम्भवत: प्रभु के चचेरे भाई थे। एक अवसर पर, यह जोड़ी सामरियों पर आग बरसाना चाहती थी ताकि वे अपमान का बदला ले सकें, और प्रभु को उन्हें फटकारना पड़ा (लूका 9:54-55)। उसने उन्हें “गर्जन के पुत्र” कहा! वे शहीद होने के योग्य थे। याकूब मरने वाले प्रेरितों में से पहला था, जिसे हेरोदेस अग्रिप्पा I (प्रेरितों 12:1-2) ने शहीद कर दिया, शायद इसलिये क्योंकि वह बहुत मुखर था। यूहन्ना मरने वाले प्रेरितों में से अंतिम था, परन्तु उसने मार्गों में सताव, बंधुआई और बंदीगृह का अनुभव किया। उसने हमें एक सुसमाचार, तीन पत्रियाँ या ज्ञापन और महाविनाश दिया। वह कुछ सीमा तक रहस्यवादी था। समय के साथ उसमें काफी नरमी आई और उसकी रचनाओं में प्रेम की भावना झलकती है।

*और अन्द्रियास, और फिलिप्पुस, और बरतुल्मै, और मत्ती, और थोमा, और हलफई का पुत्र याकूब, और तद्दै, और शमौन कनानी। (3:18)*

यहाँ हमारे पास आठ नामों की एक श्रृंखला है जिसमें अधिकांश प्रेरितों को सूचीबद्ध किया गया है। इनमें से कुछ प्रमुखता प्राप्त करते हैं, परन्तु कुछ कभी भी छाया से बाहर नहीं निकलते। ऐसा ही संसार और कलीसिया दोनों में मनुष्यों और देशों के साथ हमेशा होता रहा है। उन दृढ़ पारिवारिक सम्बन्धों पर ध्यान दें जिन्होंने प्रभु के कई चेलों को एक-दूसरे से और स्वयं से जोड़ा। नि:संदेह, यीशु इनमें से कुछ लोगों को बचपन से जानता था और कई वर्षों तक उनका अवलोकन किया था।

सूची में पहले चार (पतरस, याकूब, यूहन्ना और फिलिप्पुस) सभी यरदन के पास गलील की झील पर बेतसैदा के मछली पकड़ने वाले गाँव से आए थे। पतरस और अन्द्रियास भाई थे और जब्दी और सलोमी के पुत्रों याकूब और यूहन्ना के साथ व्यापार भागीदार थे। थोमा और मत्ती (जिसे कभी-कभी लेवी कहा जाता है) को अक्सर सुसमाचार में एक साथ जोड़ा जाता है। *थोमा* (या दीदेमुस) नाम का अर्थ है “एक जुड़वाँ।” फिर छोटा याकूब (या छोटा याकूब, जैसा कि उसे कभी-कभी कहा जाता है, शायद उसके छोटे कद के कारण)। प्रेरित यहूदा या तो हलफई का याकूब का भाई या पुत्र था। (यहाँ यहूदा को तद्दै कहा जाता है, और उसे अन्य जगहों पर लबियुस भी कहा जाता है।) यहूदा इस्करियोति के दलबदल के बाद, यहूदा या यहूदी नाम ने इतनी बुरी गंध ले ली कि यह आश्चर्य की बात नहीं है कि सुसमाचार प्रचार को विश्वासयोग्य यहूदा को अविश्वासी यहूदी से अलग करने का हर सम्भव प्रयास किया।

सूची पर एक दृष्टि डालने से पता चलता है कि ऐसा लगता है कि आधे चेले किसी न किसी तरह से प्रभु से सम्बन्धित थे। इसके अलावा यह तथ्य भी है कि फिलिप्पुस बेतसैदा में बड़ा हुआ था और सम्भवत: जब्दी भाइयों और उनके साथियों का अच्छा मित्र था। बरतुल्मै (या नतनएल, जैसा कि यूहन्ना उसे बुलाता है) फिलिप्पुस का करीबी मित्र था, जिसने उसे मसीह से मिलवाया।

इससे हम शमौन कनानी (शमौन जलोतेस) के पास पहुँचते हैं। उसके बारे में केवल इतना ही पता है कि वह यहूदी देशभक्त दल का सदस्य था।

*और यहूदा इस्करियोती, जिसने उसे पकड़वा भी दिया। (3:19)*

अंतिम नाम विश्वासघाती का था, यहूदा इस्करियोती। उसका नाम हमेशा अंतिम नाम पर आता है, और हमेशा कारण भी बताया जाता है। वह एकमात्र यहूदी था, और वह विश्वासघाती था। वह एकमात्र प्रेरित था जिसने उस समूह के कोषाध्यक्ष के रूप में पद सम्भाला था, और वह विश्वासघाती था। वह अंतिम स्थान पर आता है, हालाँकि नि:संदेह वह प्रथम होने की आकांक्षा रखता था। उसने शायद स्वयं को मसीही राज्य में शक्ति और वैभव से सुसज्जित देखा था। उसने कल्पना की थी कि धन और सम्मान उसका होगा। शायद उसने यहूदा के शाही गोत्र, प्रमुख गोत्र पर शासन करने का सपना देखा था। इस्राएल के गोत्र संसार पर राज करेंगे, परन्तु यहूदा, जिसका मुखिया यहूदा होगा, उन सभी पर शासन करेगा। हम अच्छी तरह से मान सकते हैं कि उसके विचार ऐसे ही थे। इसकी अपेक्षित चमक और आकर्षण जल्द ही धूल और राख में बदल गया। यहूदा के लिये, यीशु एक निराशा था।

यहूदा को तब आश्चर्य हुआ होगा जब प्रभु ने भीड़ के द्वारा उसे राजा बनाने के प्रस्ताव को स्वीकार करने से मना कर दिया था। जब प्रभु ने नये जन्म और दूसरा गाल आगे करने जैसी बातों के बारे में बात की होगी तो वह अवश्य ही भयभीत हुआ होगा। जब यीशु ने शक्तिशाली धार्मिक प्रतिष्ठान को नाराज किया होगा तो वह भी भयभीत हुआ होगा। जब यीशु ने वैश्विक साम्राज्य की नहीं, बल्कि एक कलीसिया की, एक ऐसे राज्य की बात की जो इस संसार का नहीं था, और जब उसने मुकुट की नहीं बल्कि एक क्रूस की बात की, तो वह इसका कोई अर्थ नहीं समझ पाया।

यहूदा जल्द ही उस कार्य के स्वभाव से पूरी तरह से निराश हो गया, जिसमें उसने काम आरम्भ किया था। ठीक है! वह अपने सपनों के मलबे से जो कुछ भी बचा सकता था, उसे बचा लेगा। उसने थैले से पैसे चुराए और भविष्य के लिये एक छोटा सा घोंसला तैयार किया। फिर, जब उसे इकट्ठी रकम पाने का अवसर मिला, तो उसने सब कुछ बेच दिया। अत: जो पहले बनना चाहता था, वह अंतिम बन गया। और उसने इस सौदे में अपनी आत्मा खो दी।

बारह का चयन पूरा हो गया, और यीशु एक घर में चला गया। यह कितना सामान्य काम था! वह आराम करना और विश्राम करना चाहता था, भोजन करना चाहता था, और शायद एक घंटे या उससे भी अधिक समय के लिये अकेला रहना चाहता था। कुछ लोगों ने आशा की होगी कि प्रभु ने यहूदा को यरूशलेम भेजा होगा ताकि वह नये मसीही मिशन के लिये अस्थायी मुख्यालय के रूप में उपयुक्त भवन की खोज कर सके। दूसरों ने आशा की होगी कि वह अपने चेलों को पुराने गोत्रीय क्षेत्रों पर अधिकार प्रदान करेगा और उन्हें राजा के लिये कुलों को तैयार करने के लिये सामर्थ्य और आश्चर्यकर्म से सुसज्जित करके भेजेगा। परन्तु नहीं! वह एक घर में चला गया। हम उसे लगभग देख सकते हैं कि उसने बाहरी संसार के लिये दरवाजा बंद कर दिया, अपने जूते उतार दिए, अपनी बेल्ट ढीली कर ली, कुछ खाया और बिस्तर पर चला गया। उसके पास कलीसिया का केंद्र था। उसने अगले दो हज़ार वर्षों के लिये इतिहास बदलने की प्रारम्भिक तैयारी कर ली थी। अत:—वह एक घर में चला गया। इसके बारे में सोचें, तो कलीसिया ने अपने प्रारम्भिक दिनों में यही बहुत अच्छा किया था। विश्वासी बस घर-घर जाते थे। और कलीसिया बढ़ती गयी और फैलती गयी।

**D. सेवक के काम की निन्दा (3:20-35)**

**1. उसके मित्रों से विरोध (3:20-21)**

प्रभु यीशु के प्रति विरोध अब और भी अधिक उग्र और गम्भीर रूप ले चुका था। यह विरोध मित्रों, शत्रुओं और परिवार के सदस्यों की ओर से समान रूप से आ रहा था।

*तब वह घर में आया: और ऐसी भीड़ इकट्ठी हो गई कि वे रोटी भी न खा सके। (3:20)*

यदि भीड़ किसी उपदेशक की सफलता का पैमाना है, तो यह सफलता थी। नि:संदेह, चेलों ने ऐसा ही सोचा होगा। यहूदा अवश्य प्रसन्न हुआ होगा। शायद ज्वार आ रहा था। यहाँ एक जन आंदोलन का आरम्भ था; यह फैल जाएगा, और जल्द ही यहूदिया जलमग्न हो जाएगा। अंत में, संसार अपने राजा को अपना लेगा।

इस बीच, वह भीड़ एक उपद्रवी थी। यह हमेशा वहाँ थी, ध्यान आकर्षित करने के लिये शोर मचाती रहती थी। इतने सारे बीमार लोग, इतने सारे कोढ़ी और दुष्टात्मा से ग्रसित लोग क्यों थे? वे चेलों को अपना खाना खाने के लिये कुछ मिनट की शान्ति क्यों नहीं दे सकते थे? वह भीड़ हानिकारक थी। नि:संदेह, प्रभु ने अभी-अभी इस तथ्य को प्रदर्शित किया था। उसने जन आंदोलन में पैदलयात्रा करने के लिये लोगों की टुकड़ियाँ नहीं जुटाई थीं; उसने केवल एक दर्जन व्यक्तियों को बुलाया था। उनका जन-आग्रह पर एक राज्य स्थापित करने की कोई मंशा नहीं थी।

*जब उसके कुटुम्बियों ने यह सुना, तो उसे पकड़ने के लिये निकले; क्योंकि कहते थे कि उसका चित्त ठिकाने नहीं है। (3:21)*

उन्हें लगा कि वह (सचमुच) अपने होश खो चुका है - केवल इसलिये कि वह खाने के लिये बहुत व्यस्त था। उसके परिवार और मित्र उसे कभी समझ नहीं पाए। शायद, उन्हें भी लगा कि व्यवस्था से परेशानी आ रही है। जितना भी महासभा रोम से नाराज थी, उसके सदस्य नहीं चाहते थे कि कोई जन आंदोलन, जिस पर उसका कोई नियंत्रण नहीं था, नाव को हिला दे। जब उभरते विद्रोहों को दबाने की बात आई तो रोमी निर्दयी थे।

परन्तु यीशु अपने होश से बाहर नहीं था। यह आरोप उसके मित्रों की ओर से आया, जो उसकी भलाई के बारे में चिन्तित थे। वह अब तक का सबसे समझदार व्यक्ति था। जो लोग किसी उद्देश्य या परमेश्वर के लिये समर्पित होते हैं, उन्हें अक्सर उनके समकालीन लोग कट्टरपंथी मानते हैं।

जब मैं पहली बार मूडी बाइबल इंस्टिट्यूट के कर्मचारियों में शामिल हुआ, तो परिसर में एक युवा छात्र ऐसा ही था। वह लोगों को मसीह की ओर आकर्षित करने के जुनून से भरा हुआ था। एक दिन मैंने उसे अपनी कार में कहीं ले जाने के लिये बैठा लिया। सड़क एक व्यस्त सड़क थी, जिसमें हर कुछ सौ गज पर एक चौराहा और एक यातायात की बत्ती थी। देरी से परेशान होकर, जब भी मैं कारों की पंक्ति में, यातायात की बत्तियों की वजह से रुक जाता, तो वह कार से बाहर कूद जाता, लाइन के सबसे आगे भागता, और वापस वहीं पहुँच जाता जहाँ मैं था। वह कार की खिड़कियों को खटखटाता और जब चौंके हुए मोटर चालक अपनी खिड़कियाँ नीचे करते, तो उनमें से सुसमाचार का पर्चा डाल देता! कुछ लोगों को लगा कि वह एक कट्टरपंथी है। वह बस परमेश्वर के लिये जल रहा था।

**2. उसके शत्रुओं से विरोध (3:22-30)**

**क. मसीह का स्पष्ट रूप से अस्वीकार (3:22)**

*शास्त्री भी जो यरूशलेम से आए थे, यह कहते थे, “उसमें शैतान है,” और “वह दुष्‍टात्माओं के सरदार की सहायता से दुष्‍टात्माओं को निकालता है।” (3:22)*

यह आरोप राजधानी के परिष्कृत यहूदियों की ठंडी, तीखी आलोचना थी। उन्होंने इस तथ्य को स्वीकार करने से इन्कार कर दिया कि वह परमेश्वर था और उसने परमेश्वर की सामर्थ्य से दुष्टात्माओं को बाहर निकाला। उस वास्तविकता के निहितार्थ उससे कहीं अधिक थे जिसका वे सामना करने को तैयार थे। इसका अर्थ था कि परमेश्वर ने इतिहास पर आक्रमण किया था और सब कुछ बदलना चाहिए। जिस व्यवस्था के वे प्रमुख सदस्य थे, उसे बदलना होगा। उन्हें स्वयं को बदलना होगा।

अरे नहीं! यीशु के उल्लेखनीय आश्चर्यकर्मों को समझाना और उनके पाप रहित जीवन के प्रमाण को अनदेखा करना या नकारना आसान था। कोई भी इस बात से इन्कार नहीं कर सकता था कि आश्चर्यकर्म करने की प्रभु की क्षमता में अलौकिकता शामिल थी। केवल एक ही व्याख्या सम्भव थी: वह शैतानी शक्तियों के साथ गठबंधन में था। वे इससे बड़ा अपमान नहीं सोच सकते थे। उस पर पतित लूसीफर के प्रभाव में होने का आरोप लगाने से संतुष्ट नहीं हुए, उन्होंने उस पर मक्खियों के स्वामी, गंदगी के स्वामी, बालजबूल के साथ गठबंधन करने का आरोप लगाया। यह कहना एक गंदी और दुष्ट बात थी, उनके दुष्ट हृदयों के उबलते ज्वालामुखी से गड्ढे के गर्म लावा का निकलना।

**ख. मसीह के द्वारा तीखा खंडन (3:23-30)**

पवित्र आत्मा *अपनी निर्विवाद बुद्धि को दर्ज करता है* (3:23-27):

*इसलिये वह उन्हें पास बुलाकर उनसे दृष्‍टान्तों में कहने लगा, “शैतान कैसे शैतान को निकाल सकता है?” (3:23)*

उसने न तो अपनी भावनाओं से उत्तर दिया और न ही क्रोध, व्यंग्य या तिरस्कार से प्रतिक्रिया व्यक्त की। उसने शान्तिपूर्वक उनके सामान्य ज्ञान की अपील की। ये लोग शास्त्री थे, देश के बुद्धिजीवी थे, व्यवस्था और धार्मिक परम्परा के जानकार लोग थे। उनमें से कुछ बहुत चतुर थे। इसके अलावा, वे प्रांतीय लोग नहीं थे, बल्कि कुलीन यरूशलेम धार्मिक प्रतिष्ठान के सदस्य, प्रभावशाली लोग, शिक्षित लोग थे। उन्होंने जो कुछ कहा था, वह उनकी बुद्धि से नहीं बल्कि उनके अंधेरे हृदयों से आया था। उनका अविश्वास जानबूझकर था। उनके पास इसके लिये कोई बहाना नहीं था, उनके अनगिनत, अद्भुत और निर्विवाद आश्चर्यकर्मों को देखते हुए। उन्होंने जो कुछ कहा वह मतलबी और दुर्भावनापूर्ण हृदय वाले लोगों से आया था।

उसने उन्हें अपने पास बुलाया। वे उसके सामने खड़े थे, अपनी आत्म-धार्मिकता में लिपटे हुए। वे इस “मसीह” को एक तिरस्कृत प्रांत और उससे भी अधिक तिरस्कृत नगर से उदास होकर देख रहे थे। उनके शरीर पर घृणा और शत्रुता साफ झलक रही थी। वचन हमारा ध्यान *उनकी* और *मसीह की ओर खींचता है;* दोनों के बीच का अंतर इससे बड़ा नहीं हो सकता। वह घर में बुने हुए कपड़े पहने हुए था, जबकि वे महंगे कपड़े पहने हुए थे। वह युवा था; वे बूढ़े थे। वह उनकी पाठशालाओं और सेमिनरी का उत्पाद नहीं था, जबकि वे मौखिक व्यवस्था और रब्बियों की परम्पराओं में डूबे हुए थे। वह उनसे प्रेम करता था, हालाँकि वे उससे घृणा करते थे। इसलिये, वे आमने-सामने खड़े थे।

उसने उनसे बस एक प्रश्न पूछा और उसके बाद तीन और प्रश्न पूछे। उसने पूछा, “शैतान कैसे शैतान को निकाल सकता है?” उसने उनके तर्क से अपील की। उसने “क्या” (अर्थात्, कि उन्होंने उस पर एक बुरे मित्र के साथ साँठगाँठ करने का आरोप लगाया था) को अनदेखा किया और “कैसे” पर ध्यान केंद्रित किया। उन्होंने एक गम्भीर आरोप लगाया था, अत: उसने उनसे इसे साबित करने के लिये कहा। उसने पूछा, “शैतान कैसे शैतान को निकाल सकता है?” फिर उसने उनके दावे की मूर्खता को प्रदर्शित किया।

*और यदि किसी राज्य में फूट पड़े, तो वह राज्य कैसे स्थिर रह सकता है? (3:24)*

*धर्मनिरपेक्ष संसार* से एक उदाहरण दिया। किसी राष्ट्र के लिये इससे बुरी कोई त्रासदी नहीं हो सकती कि वह गृहयुद्ध में फँस जाए, भाई-भाई के बीच लड़ाई हो। जब उथल-पुथल समाप्त हो जाती है, तब भी पुरानी नाराजगी सुलगती रहती है। और हर समय राष्ट्र की निर्बल स्थिति विदेशी शक्ति के हस्तक्षेप को आमंत्रित करती है।

*और यदि किसी घर में फूट पड़े, तो वह घर कैसे स्थिर रह सकेगा? (3:25)*

*सामाजिक संसार* से एक उदाहरण दिया। जिस घर में माता-पिता हमेशा एक-दूसरे से झगड़ते रहते हैं, वहाँ बच्चों के पास क्या अवसर है? यदि बच्चे माता-पिता के विद्रोही हैं, तो उनके बुढ़ापे में सहारे और सुरक्षा की क्या आशा है? यदि भाई-भाई से बैर करता है, तो आपसी सहायता और प्रोत्साहन के लिये कौन-सा बंधन बचता है? ऐसा परिवार जल्द ही अव्यवस्था में डूब जाता है। बाइबल में इसके लिये बहुत सारे उदाहरण दिए गए हैं। उदाहरण के लिये, याकूब के परिवार और दाऊद के परिवार में परिस्थितियाँ दिखाती हैं कि जब पारिवारिक सम्बन्ध टूट जाते हैं, तो क्या होता है। इसके विपरीत, मूर्तिपूजक संसार ने जल्द ही जान लिया कि लूत पर आक्रमण अब्राहम पर भी आक्रमण था, क्योंकि अब्राहम के परिवार में रिश्ते मजबूत थे (उत्पत्ति 14 अध्याय)।

*इसलिये यदि शैतान अपना ही विरोधी होकर अपने में फूट डाले, तो वह कैसे बना रह सकता है? उसका तो अन्त ही हो जाता। (3:26)*

*आत्मिक संसार* से एक उदाहरण दिया - और वह शैतान और उसके क्षेत्र के बारे में अपने आलोचकों से कहीं अधिक जानता था। शैतान को कभी लूसीफर के नाम से जाना जाता था, जो सभी सृजित प्राणियों में सबसे ऊँचा और सबसे सुंदर, शक्तिशाली और प्रतिभाशाली था। उसके विद्रोह में स्वर्गीय सेना का एक तिहाई हिस्सा उसके साथ था। शैतान ने उन पतित स्वर्गदूतों को हमारे विजित ग्रह पर शासन करने में सहायता करने के लिये संगठित किया। आत्मिक संसार में पद और पदानुक्रम हैं: प्रधानताएँ और शक्तियाँ, सिंहासन और प्रभुत्व, इस संसार के अंधकार के शासक, और उच्च स्थानों पर दुष्टात्माएँ, साथ ही दुष्टात्माओं की अनगिनत सेनाएँ। पाप संसार में एक विभाजनकारी शक्ति है। शैतान इस तथ्य का पूरा उपयोग करता है, परन्तु यदि वह इसे अपने अधिकार और शक्ति को निर्बल करने देता है तो उसे बहुत बुरा लगेगा! वह अपने सभी कौशल और प्रतिभा का उपयोग पाप की विभाजनकारी शक्ति को अपने साम्राज्य को तोड़ने से रोकने के लिये करता है। वह जानता है कि यदि उसने एक बार अपने साथी षड्यंत्रकारियों पर नियंत्रण खो दिया, तो उसका अंत नजदीक होगा।

*परन्तु कोई मनुष्य किसी बलवन्त के घर में घुसकर उसका माल नहीं लूट सकता, जब तक कि वह पहले उस बलवन्त को बाँध न ले; और तब उसके घर को लूट लेगा। (3:27)*

यह सब नग्न शक्ति के प्रश्न पर निर्भर करता है। शैतान शक्तिशाली है। उसने अपने “घर” को संगठित और बनाए रखा है, वह क्षेत्र जहाँ वह अपनी सारी शक्ति, संगठन, प्रभाव और शैतानी प्रतिभा को सामने रखता है। और यह कितना विशाल “घर” है। यह अदृश्य संसार के बहुत से हिस्सों को अपने में समाहित करता है; विशाल शक्ति, विशाल और घातक बुद्धि और अकल्पनीय दुष्टता वाले प्राणी उसके प्रभुत्व में हैं। संसार उसके घर का हिस्सा है, और यह दुष्ट की गोद में लेटा है।

अत: वह अपना “माल” सुरक्षित रखता है। साधारण मनुष्य उसके विरुद्ध शक्तिहीन हैं। चेले, स्वयं उसके विरुद्ध शक्तिहीन थे (मत्ती 17:21)। वे तभी विजयी हुए जब प्रभु ने स्वयं उन्हें आदेश दिया और सशक्त बनाया।

इसके विपरीत, यीशु ने अपनी इच्छा से बलवान के घर को लूटा। यहाँ तक कि सबसे क्रूर दुष्टात्माएँ भी उसके वचन पर भाग गईं। इसका अर्थ केवल यह हो सकता है कि वह शैतान और उसकी अनगिनत लाखों दुष्टात्माओं से अधिक शक्तिशाली था। उसने बलवान को बाँध दिया था। शैतान, चाहे कितना भी शक्तिशाली क्यों न हो, जीवित परमेश्वर के देहधारी पुत्र के सामने कुछ भी नहीं था - और वह यह जानता था।

पवित्र आत्मा ने भी *अपनी स्पष्ट चेतावनी दर्ज की है* (3:28-30):

*“मैं तुम से सच कहता हूँ कि मनुष्यों की सन्तान के सब पाप और निन्दा जो वे करते हैं, क्षमा की जाएगी, परन्तु जो कोई पवित्र आत्मा के विरुद्ध निन्दा करे, वह कभी भी क्षमा न किया जाएगा: वरन् वह अनन्त पाप का अपराधी ठहरता है।” क्योंकि वे यह कहते थे कि उस में अशुद्ध आत्मा है। (3:28-30)*

प्रभु ने पवित्र आत्मा की निन्दा करने के विरुद्ध एक भयानक चेतावनी के साथ समापन किया - जो एक अक्षम्य पाप है।

परमेश्वर न केवल जीवित परमेश्वर है, बल्कि क्षमा करने वाला परमेश्वर भी है। वह जानता है कि पाप ने हमारी आत्माओं में कितनी भयंकर तबाही मचाई है। जब लोग उसे पेड़ पर लटका रहे थे, तब भी वह प्रार्थना करता था, “हे पिता, उन्हें क्षमा कर क्योंकि वे नहीं जानते कि वे क्या कर रहे हैं।” पाप का बहुत बड़ा हिस्सा हमारी अज्ञानता में निहित है और बाकी का बहुत हिस्सा हमारी नपुंसकता में है। मानवीय दुष्टता का बहुत बड़ा हिस्सा मानवीय निर्बलता से उत्पन्न होता है। प्रभु को हम पर दया आती है। वह हमें माफ करता है, हमें क्षमा करता है, और हमारे लिये उद्धार प्रदान करता है। चाहे हमने कुछ भी किया हो या कहा हो, कलवरी सब कुछ ढाँप देती है। नि:संदेह, यही कारण था कि वह पहली बार पृथ्वी पर आया था।

हालाँकि, पवित्र आत्मा के विरुद्ध ईशनिन्दा कुछ और है। आज कोई भी ऐसा पाप नहीं कर सकता। यह उन लोगों के लिये एक पाप था जो उस समय रहते थे जब वह जीवित था और जिन्होंने स्वयं उसके अद्भुत उपदेश सुने थे। यह उन लोगों के लिये एक पाप था जिन्होंने उसके कई अतुलनीय आश्चर्यकर्म देखे थे, जिन्होंने उसकी आँखों में देखा था, उसके अनुग्रह का अनुभव किया था, और उसकी सामर्थ्य को महसूस किया था। यह उन लोगों का पाप था जिन्होंने तब—सरासर द्वेष, ईर्ष्या, घृणा और दृढ़ दुष्टता के कारण—उस पर दुष्ट के साथ षड्यंत्र करने का आरोप लगाया था। इस तरह के पाप ने आत्मा की ऐसी स्थिति को प्रकट किया जो छुटकारे की सम्भावना से परे थी, अत: यह अक्षम्य था।

इस तरह कैफा और उसके साथियों ने यीशु के विरुद्ध षड्यंत्र रचा। उन्होंने यहूदा को खरीदा और फिर परमेश्वर के पुत्र को न्याय सिंहासन के सामने लाया। उन्होंने उसका मजाक उड़ाया, उसे गाली दी और उस पर झूठा आरोप लगाया। उन्होंने उसकी शिक्षाओं को विकृत करने के लिये झूठी गवाही देने वालों को काम पर रखा। उन्होंने उसे मृत्युदण्ड सुनाया क्योंकि उसने दावा किया कि वह वही है जो वह था। उन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ाने के लिये रोमियों को सौंप दिया। फिर कैफा और उसके साथियों ने उसकी कब्र पर छाप लगा दी – कि बस कुछ गड़बड़ न हो। इससे भी बुरी बात, जब उसके पुनरुत्थान का सामना किया गया, तो उन्होंने उस ऐतिहासिक घटना के बारे में झूठ बोलने के लिये पहरेदारों को घूस दी और उसके चेलों को इस सच्चाई का प्रचार करने के लिये सताया कि यीशु मरे हुओं में से जीवित है और बचाने के लिये शक्तिशाली है।

पवित्र आत्मा के विरुद्ध ईशनिन्दा का पाप ऐसा ही था।

**3. उसके परिवार से विरोध (3:31-35)**

*तब उसकी माता और उसके भाई आए, और बाहर खड़े होकर उसे बुलवा भेजा। (3:31)*

मरकुस हमें उसकी माता के बारे में अधिक नहीं बताता। प्रभु की माता और उसके जन्म की परिस्थितियों के बारे में जानकारी के लिये हमें मत्ती और लूका के पास जाना होगा। हालाँकि मरकुस ने प्रभु की माता के बारे में बहुत कम लिखा है, परन्तु नि:संदेह वह उससे मिला था।

सुसमाचारों से हमें मरियम की जो तस्वीर मिलती है, वह एक शुद्ध-मन वाली, आत्मिक रूप से संवेदनशील और गहन रूप से अभ्यास करने वाली स्त्री को दर्शाती है। वह प्रभु के लिये निरंतर आनन्द का स्रोत थी। इस ग्रह पर सभी लोगों में से केवल वह ही उसके जन्म की पूरी और अद्भुत कहानी जानती थी; उसकी सबसे प्रारम्भिक और सबसे प्यारी यादें उसकी माता से जुड़ी हुई थीं। परन्तु वह भी सिद्ध नहीं थी। एक बार, उसकी सेवकाई के आरम्भ में, उसने उसे सलाह देने का साहस किया और उसे धीरे से परन्तु दृढ़ता से नकार दिया गया (यूह. 2 अध्याय)। अब हम सीखते हैं कि “मित्रों” (आयत 21), जिन्होंने सोचा था कि वह “आपे से बाहर” थी, में उसका परिवार भी शामिल था। अपनी माता को उस समूह में खड़ा पाकर उसे कितना दु:ख हुआ होगा।

उसके भाई! उसने बहुत पहले ही अपने सौतेले भाइयों का माप ले लिया था। वे बुरे मनुष्य नहीं थे; वे बस उसे नहीं समझते थे या अभी तक उस पर विश्वास नहीं करते थे। उनके अविश्वास ने उसे पीड़ा दी होगी। निश्चित रूप से वे उसके जन्म की परिस्थितियों को जानते थे - जब तक कि यह उन बातों में से एक न हो जिसे मरियम ने अपने हृदय में छिपाया था (लूका 2:51)। किसी भी मामले में, उनके पास उसके बिलकुल पापहीन जीवन का सबूत था। उन्होंने शायद उसके विरुद्ध उसी तरह प्रतिक्रिया की जिस तरह यूसुफ के भाइयों ने उसकी अच्छाई के विरुद्ध प्रतिक्रिया की थी। सच्ची भलाई के बारे में कुछ ऐसा है जो पापी व्यक्ति को या तो आकर्षित करता है या पीछे हटाता है। प्रभु की निष्कलंक भलाई उसके अनन्त अनुग्रह से मेल खाती थी - जिसने नि:संदेह उसके चरित्र में बहुत अधिक आकर्षण जोड़ा होगा। इन सबके बावजूद, वे पूरी तरह से मनुष्य थे। शायद उसके भाइयों को यह नहीं पता था कि उसके बारे में क्या सोचना है। याकूब, एक के लिये, शायद आधिकारिक, तालमूद वाले यहूदी धर्म और प्राचीनों की परम्पराओं के प्रति प्रभु के रवैये से नाराज था।

वैसे, वे वहाँ बाहर थे, और उसे पुकारते थे। मरकुस याद करता है कि वे “बाहर खड़े थे।” वे बाहर थे। कई वर्षों से वे भीतर थे। उन्होंने उसे देखा था और उसे ऐसे जाना था जैसे संसार में कोई और उसे नहीं जानता था। उनके पास उसकी यादें थीं जो पुस्तकों में भरी जा सकती थीं। अब उसके और उनके बीच एक दूरी थी। पवित्र बातों से परिचित होना हमेशा खतरनाक होता है क्योंकि इससे अवमानना उत्पन्न होती है। परन्तु जिस बात ने उसे सबसे अधिक दु:खी किया होगा वह यह था कि उसकी माता वहाँ थी, उसके भाइयों के साथ खड़ी थी। अत:, दु:ख की बात है और क्षण भर के लिये, उसके और उसके बीच भी उतनी ही दूरी थी।

*भीड़ उसके आसपास बैठी थी, और उन्होंने उससे कहा, “देख, तेरी माता और तेरे भाई बाहर तुझे ढूँढ़ते हैं।” (3:32)*

भीड़ उसके अपने परिवार से भी अधिक उसके करीब थी। वे भी यह देख सकते थे। वे “उसके आसपास बैठे थे।” उसका परिवार “बाहर” था। इसके अलावा, वह बहुत स्पष्ट रूप से अपनी माता और अपने भाइयों की अनदेखी कर रहा था। भीड़ इसे समझ नहीं पाई। उन दिनों परिवार पहले आता था। हालाँकि, प्रभु जानता था कि वह क्या कर रहा था। वह माता और भाई दोनों को उनकी जगह पर रख रहा था। वह जानता था कि वे क्यों आए थे; उन्हें लगा कि वह “आपे से बाहर” हो गया है। वे उसे घर ले जाने आए थे। सबसे भली मंशाओं के साथ, वे उसे सम्भालने आए थे। उन्हें लगा कि वह बहुत आगे जा रहा था। इसके अलावा, वह स्वयं को (और उन्हें) खतरे में डाल रहा था, या ऐसा उन्हें लगा। दु:ख की बात है कि वे उससे और उसके काम से दूर थे। कम से कम मरियम को तो यह बेहतर पता होना चाहिए था। वर्षों पहले, बूढ़े शमौन ने भविष्यद्वाणी की थी कि उसके पुत्र पर आक्रमण होगा और वह भी पीड़ा की मार महसूस करेगी (लूका 2:34-35)।

*उसने उन्हें उत्तर दिया, “ मेरी माता और मेरे भाई कौन हैं?” (3:33)*

अब उसने अपने और अपने प्राकृतिक परिवार के बीच अनन्त काल की दूरी बना ली है। यह दूरी हमेशा से ही थी, नि:संदेह, उसके जन्म की असाधारण परिस्थितियों को देखते हुए, यह देखते हुए कि वह कौन था और उसका पिता कौन था, और यह तथ्य देखते हुए कि, यद्यपि वह वास्तव में मनुष्य था, वह उसी समय परमेश्वर भी था। उसके प्राकृतिक परिवार ने अब उसे मात्र पारिवारिक सम्बन्ध को समाप्त करने का अवसर दिया था।

*और उन पर जो उसके आसपास बैठे थे, दृष्टि करके कहा, “देखो, मेरी माता और मेरे भाई ये हैं।” (3:34)*

यह एक रहस्यमय कथन था। उसने उन लोगों को अपने पास लिया जो उसके आसपास बैठे थे, उसके वचनों को पी रहे थे, उसके कार्यों से विस्मित थे, और अधिक जानने के लिये उत्सुक थे, और उसने कहा, “देखो, मेरी माता और मेरे भाई ये हैं।” उस पल, उसने उन लोगों के करीब महसूस किया जो कम से कम उसे सुनने के लिये तैयार थे, न कि उन लोगों के जो केवल जन्म के प्राकृतिक सम्बन्धों से उसके साथ जुड़े थे।

हालाँकि, उसने इसे यहीं नहीं छोड़ा। उसने सभी के लिये अवसरों का एक अद्भुत द्वार खोल दिया। प्राकृतिक परिवार की जगह नये परिवार ने ले ली।

*क्योंकि जो कोई परमेश्वर की इच्छा पर चले, वही मेरा भाई, और बहन, और माता है। (3:35)*

कोई भी व्यक्ति उसके साथ पारिवारिक बंधन में बंध सकता था जो प्राकृतिक जन्म से बने बंधन से कहीं अधिक निकट और प्रिय था। प्राकृतिक सम्बन्ध आत्मिक बंधनों में समाहित हो जाते थे। अब से, वह उन सभी को नये परिवार का सदस्य मानेगा जिनका उसके पिता के साथ वैसा ही सम्बन्ध था जैसा उसका था। पिता के साथ उसका सम्बन्ध, जब वह पृथ्वी पर मनुष्यों के बीच मनुष्य के रूप में था, आज्ञाकारिता का था (इब्रा. 10:7)। जो कोई भी आज्ञाकारिता का जूआ स्वीकार करने को तैयार था, वह उसका सम्बन्धी होगा!

स्वाभाविक जन्म से, हम “अनाज्ञाकारिता की सन्तान” हैं। हम आदम की सन्तान हैं, जिसके बारे में लिखा है कि एक व्यक्ति की अनाज्ञाकारिता से पाप आया और पाप से मृत्यु आई। इसके बजाय, आज्ञाकारिता की सन्तान बनने के लिये एक नये जन्म, एक आत्मिक जन्म (यूह. 1:11-13) की आवश्यकता होती है, जैसा कि प्रभु ने नीकुदेमुस को समझाया था (यूह. 3:3)। प्रभु ने अपने श्रोताओं को “कैसे” के बारे में विस्तार से नहीं बताया, बल्कि “क्या” के बारे में बताया। आज्ञाकारिता का सिद्धांत, जो नये परिवार और उसके सम्बन्धों की विशेषता है, जिसे तरसुस के शाऊल के हृदय परिवर्तन में दर्शाया गया है। जिस क्षण उसकी आँखें खुली, उसने यीशु को प्रभु के रूप में सिंहासन पर बैठाया। उसने कहा, “हे प्रभु, तू क्या चाहता है कि मैं करूँ?” (प्रेरितों 9:6)।

**खंड 2—रूपरेखा**

**खंड 2: सेवक के वचन (4:1-5:43)**

1. वे अपने उद्देश्य में सटीक थे (4:1-34)
   1. दृष्टान्तात्मक रहस्य (4:1-20)
      1. सन्देश (4:1-9)
         1. स्थिति (4:1)
            1. असंख्य लोग (4:1a)
            2. अभिनव मंच (4:1b)
         2. कहानी (4:2-9)
            1. बीज बोने वाला (4:3)
            2. भूमि (4:4-8)

खराब भूमि (4:4-7)

निराशाजनक भूमि (4:4)

पाखंडी भूमि (4:5-6)

विकलांग भूमि (4:8)

उपजाऊ मिट्टी (4:8)

* + - * 1. अगला भाग (4:9)
    1. अर्थ (4:10-20)
       1. प्रोत्साहन का एक वचन (4:10-13)
          1. एक प्रश्न (4:10)
          2. एक उद्धरण (4:11-13)

एक दु:खद स्थिति (4:11)

पवित्रशास्त्रीय पुष्टि (4:12)

एक गम्भीर विचार (4:13)

* + - 1. स्पष्टीकरण का एक वचन (4:14-20)
         1. बीज (4:14)
         2. भूमि (4:15-20)

वचन के प्रति निराशाजनक प्रतिक्रिया (4:15-19)

वचन और नारकीय शत्रु (4:15)

आरम्भ में दिया गया वचन (4:15a)

तुरन्त ग्रहण किया गया वचन (4:15b)

वचन और आंतरिक शत्रु (4:16-17)

कोई जड़ नहीं (4:16-17a)

कोई फल नहीं (4:17b-c)

गम्भीर बातें उठ खड़ी होती हैं (4:17b)

दूसरे विचार उठते हैं (4:17c)

वचन और अपरिहार्य शत्रु (4:18-19)

सांसारिकता वचन को दबा देती है (4:18-19b)

कंगाली से उत्पन्न (4:18-19a)

समृद्धि से उत्पन्न (4:19b)

भटकाव वचन को दबा देता है (4:19c)

वचन के प्रति विशिष्ट प्रतिक्रिया (4:20)

* 1. दृष्टान्तात्मक तरीका (4:21-34)
     1. तरीके के उदाहरण (4:21-32)
        1. चमकता हुआ (4:21-23)
           1. एक दीपक (4:21)

इसके उद्देश्य को विफल करना (4:21a)

एक पैमाने के नीचे - जिससे प्रकाश लुप्त हो जाएगा (4:21a)

खाट के नीचे - इससे खाट में आग लग जाएगी (4:21b)

अपना उद्देश्य पूरा करना (4:21c)

* + - * 1. एक टिप्पणी (4:22-23)

प्रतिज्ञा किया गया ज्ञानोदय (4:22)

वर्तमान ज्ञानोदय (4:23)

* + - 1. दिखा रहा है (4:24-25)
         1. एक सावधानी (4:24)

जो कुछ तुम सुनते हो उस पर ध्यान दो (4:24a)

सावधान रहें कि आप किसे चोट पहुँचाते हैं या किसकी सहायता करते हैं (4:24b)

* + - * 1. एक सिद्धांत (4:25)

भविष्य के लाभ के लिये निवेश (4:25a)

भविष्य की पीड़ा के लिये निवेश (4:25b)

* + - 1. बीज बोना (4:26-29)
         1. किसानों की आशा (4:26-28)

वह क्या बोता है (4:26)

वह क्या जानता है (4:27-28)

वह विकास प्रक्रिया को बाध्य नहीं कर सकता (4:27a)

वह विकास प्रक्रिया को समझ नहीं सकता (4:27b-28)

इसका रहस्य (4:27b)

इसका आश्चर्यकर्म (4:28)

* + - * 1. किसान की फसल (4:29)

वह क्या समझता है (4:29a)

वह क्या करता है (4:29b)

* + - 1. बढ़ना (4:30-32)
         1. एक प्रश्न पूछा गया (4:30)
         2. एक प्रश्न का उत्तर (4:31-32)

राई (सरसों) का पौधा (4:31-32b)

इसका बीज (4:31)

इसका आकार (4:32a-b)

इसकी वृद्धि (4:32a)

इसकी महानता (4:32b)

यह राई का पौधा (4:32c-d)

शाखाएँ (4:32c)

पक्षी (4:32d)

* + 1. इस पद्धति की सीमा (4:33-34)
       1. उसने अक्सर दृष्टान्तों का प्रयोग किया (4:33-34a)
          1. विस्तृत रूप से (4:33)
          2. विशेष रूप से (4:34a)
       2. उसने दृष्टान्तों की पूरी व्याख्या की (4:34b-c)
          1. व्यक्तिगत् रूप से (4:34b)
          2. निजी रूप से (4:34c)

1. वे कार्यकारी शक्ति वाले थे (4:35-5:43)
   1. विपत्ति पर विजय (4:35-41)
      1. समय (4:35a)
      2. यात्रा (4:35b-36)
         1. प्रस्ताव (4:35b)
         2. तैयारी (4:36a-b)
            1. भीड़ (4:36a)
            2. मसीह (4:36b)
         3. उपसंहार (4:36c)
      3. परीक्षा आना (4:37-38)
         1. भयानक तूफान (4:37)
         2. शान्त उद्धारकर्ता (4:38)
      4. परिवर्तन (4:39-40)
         1. उग्र तूफान को डांटा गया (4:39)
         2. भयभीत नाविकों ने डांटा (4:40)
      5. भय (4:41)
         1. उनके भय की वास्तविकता (4:41a)
         2. उनके भय का कारण (4:41b)
   2. दुष्टात्माओं पर विजय (5:1-20)
      1. आमना-सामना (5:1-5)
         1. स्वामी का आगमन (5:1-2a)
         2. पागल मनुष्य का आगमन (5:2b-5)
            1. उसका निवास (5:2b-3a)
            2. उसकी अनाज्ञाकारिता (5:3b-4)

उसकी शैतानी शक्ति (5:3b-4a)

उसकी शैतानी बर्बरता (5:4b)

* + - * 1. उसका संकट (5:5)

वह बेघर था (5:5a)

वह आशाहीन था (5:5b-c)

उसकी भयानक चीखें (5:5b)

उसके भयानक घाव (5:5c)

* + 1. विरोधाभास (5:6-8)
       1. उसका आगमन (5:6)
          1. शीघ्रता से (5:6a)
          2. आदर सहित (5:6b)
       2. उसकी पुकार (5:7-8)
          1. उसने जो घोषणा की (5:7)

यीशु के प्रति उसकी गवाही (5:7a)

यीशु के प्रति उसका भय (5:7b)

* + - * 1. वह किस से डरता था (5:8)
    1. अंगीकार (5:9)
       1. दुष्टात्माओं का नाम (5:9a)
       2. दुष्टात्मा की संख्या (5:9b)
    2. घबराहट (5:10-12)
       1. दुष्टात्माओं से भरी हुई आवाज (5:10)
          1. उसकी विनती का आग्रहपूर्ण स्वभाव (5:10a)
          2. उसकी दुर्दशा की कपटी स्वभाव (5:10b)
       2. दुष्टात्माओं की आवाज (5:11-12)
          1. जो कुछ उन्होंने देखा (5:11)
          2. जो उन्होंने प्रार्थना की (5:12)
    3. निन्दा (5:13)
       1. अशुद्ध आत्माओं में क्या था (5:13a)
       2. अशुद्ध सूअरों को क्या पसंद था (5:13b)
    4. सलाह (5:14-17)
       1. प्रतिवेदन (5:14-16)
          1. जो जानकारी दी गई (5:14a)
          2. जो जाँच की गई (5:15b-16)

प्रतिवेदन की दृश्यमान पुष्टि (5:14b-15)

प्रतिवेदन की मौखिक पुष्टि (5:16)

* + - 1. प्रतिक्रिया (5:17)
    1. अलगाव (5:18-20)
       1. चंगे हुए व्यक्ति की भावुक विनती (5:18)
       2. चंगे हुए व्यक्ति की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी (5:19)
          1. वह विनती जिसे अस्वीकार कर दिया गया (5:19a)
          2. जो योजना बताई गई थी (5:19b-c)

जहाँ उसे गवाही देनी चाहिए (5:19b)

उसे क्या गवाही देनी चाहिए (5:19c)

* + - 1. चंगे हुए व्यक्ति की तत्काल प्रतिक्रिया (5:20)
         1. उसकी सेवकाई का दायरा (5:20a)
         2. उसकी सेवकाई की सफलता (5:20b)
  1. बीमारी पर विजय (5:21-34)
     1. याईर और उसका परिचय (5:21-24)
        1. शासक (5:21-23)
           1. उसका दृष्टिकोण (5:21-22)

यह कितना सार्वजनिक था (5:21-22a)

यह कितना जोशीला था (5:22b)

* + - * 1. उसकी अपील (5:23)

उसका उत्साह (5:23a)

उसका विश्वास (5:23b)

* + - 1. प्रतिक्रिया (5:24)
         1. यह तत्काल हुआ (5:24a)
         2. इसमें बाधा उत्पन्न की गई (5:24b)
    1. यीशु और बाधा (5:25-34)
       1. वह स्त्री जो खोजती थी (5:25-28)
          1. उसकी दशा (5:25-26)

इसकी अवधि (5:25)

इसकी तबाही (5:26a-b)

अब सभी चिकित्सा सिफारिशें विफल हो चुकी थीं (5:26a)

अब सभी भौतिक संसाधन समाप्त हो चुके थे (5:26)

इसका पतन (5:26c)

* + - * 1. उसका आगमन (5:27)

उसने यीशु के बारे में सुना (5:27a)

वह जल्दी से यीशु के पास गयी (5:27b-c)

उसका दृढ़ संकल्प (5:27b)

उसका कार्य (5:27c)

* + - * 1. उसका आत्मविश्वास (5:28)
      1. उसने जो आश्चर्यकर्म किया (5:29-34)
         1. उसने उसके शरीर को कैसे चंगा किया (5:29-32)

उसकी तुरन्त चंगाई (5:29)

यह पूर्णतः चंगाई था (5:29a)

यह सचेत चंगाई था (5:29b)

उसका तात्कालिक भय (5:30-32)

यीशु ने क्या कहा (5:30-31)

प्रभु की माँग (5:30)

उसने पूछा, “क्यों?” (5:30a)

उसने पूछा, “क्या?” (5:30b)

प्रभु के चेले (5:31)

और भीड़ (5:31a)

और उनके विचार (5:31b)

यीशु ने किसको खोजा (5:32)

* + - * 1. कैसे उसने उसके विश्वास पसर छाप लगाई (5:33-34)

उसका सार्वजनिक अंगीकार (5:33)

उसकी व्यक्तिगत् पुष्टि (5:34)

एक अद्भुत नया सम्बन्ध (5:34a)

एक अद्भुत नया आश्वासन (5:34b)

* 1. मृत्यु पर विजय (5:35-43)
     1. याईर के लिये समाचार (5:35)
        1. दुःखद वचन (5:35a)
        2. संदेहपूर्ण वचन (5:35b)
     2. यीशु की कोमलता (5:36-43)
        1. शान्ति का एक वचन (5:36)
        2. धारणा का वचन (5:37-40)
           1. एक विकल्प (चुनाव) (5:37)
           2. एक चुनौती (5:38-39)

जो उसने देखा (5:38)

जो उसने कहा (5:39)

* + - * 1. एक आरोप (5:40)

उनकी निन्दा की आवाज (5:40a)

उनकी निन्दा नकार दी गई (5:40b)

* + - 1. सामर्थ्य का वचन (5:41-42)
         1. उसकी कोमलता (5:41)

एक कोमल स्पर्श (5:41a)

कोमल स्वर (5:41b)

* + - * 1. उसकी विजय (5:42)
      1. सावधानी का एक वचन (5:43)
         1. प्रस्तावित मौन (शान्त) (5:43a)
         2. एक व्यावहारिक सुझाव (5:43b)

**खंड 2: सेवक के वचन (4:1-5:43)**

**क. वे अपने उद्देश्य में सटीक थे (4:1-34)**

**1. दृष्टांतात्मक रहस्य (4:1-20)**

**क. सन्देश (4:1-9)**

अब मरकुस का जोर उद्धारकर्ता के *कार्यों से हटकर* उसके *वचनों* पर है*,* ऐसे वचन जो *उसके उद्देश्य में सटीक* और *अपनी शक्ति में कार्यकारी दोनों हैं।* वह हमें याद दिलाता है कि “किसी मनुष्य ने कभी ऐसी बातें नहीं कीं” (यूह. 7:46)।

सबसे पहले हम *परिस्थिति पर ध्यान देते हैं:*

*वह फिर झील के किनारे उपदेश देने लगा: और ऐसी बड़ी भीड़ उसके पास इकट्ठी हो गई कि वह झील में एक नाव पर चढ़कर बैठ गया, और सारी भीड़ भूमि पर झील के किनारे खड़ी रही। (4:1)*

स्पष्ट है, जब प्रभु की माता और भाई वहाँ पहुँचे, तो वह किसी के घर में था। अब, उन्हें उनके स्थान पर बैठाकर, वह घर से बाहर निकला और झील के किनारे चला गया। उसने एक नाव उधार ली और उसे अपना मंच बना लिया।

हम कल्पना कर सकते हैं कि वह उस छोटी सी नाव में किनारे की ओर मुँह करके बैठा हुआ है। उसके सामने पहाड़ी पर फैली भीड़ उसके वचनों को सुनने के लिये उत्सुक है।

कई वर्ष पहले, जब मैं पलिश्तीन में ब्रिटिश सेना में एक सिपाही था, मैं पासबान के द्वारा संचालित गलील के दौरे पर गया था। मुझे याद है कि पासबान ने हम सभी को झील के ऊपर ढलान पर बैठने के लिये कहा था। हम सभी काफी लोग थे, और हम झील से कम से कम पचास गज की दूरी पर बैठे थे।

पासबान ने एक जेब में रखा जाने वाला छोटा बाइबल का नया नियम निकाला और उसे खोलकर इस अध्याय को निकाला। उसने मुझे यह दिया और मुझे झील के किनारे जाने, पानी के किनारे मुड़ने, बैठे सैनिकों का सामना करने और पहले नौ पदों को जोर से पढ़ने के लिये कहा। उसने मुझे बातचीत के लहजे में पढ़ने और अपनी आवाज बिलकुल भी ऊँची न करने के लिये कहा। मैंने वैसा ही किया जैसा मुझे निर्देश दिया गया था। मेरे पीछे झील का शान्त पानी एक आवाज वाले पटल की तरह काम कर रहा था। हर वचन को पकड़ लिया गया और पहाड़ी पर बैठे लोगों के द्वारा स्पष्ट रूप से सुना गया। पूरा क्षेत्र एक प्राकृतिक रंगभूमि बन गया, और ध्वनिकी उल्लेखनीय थी। किसी माइक्रोफोन की आवश्यकता नहीं थी। झील अपने आप में एक एम्पलीफायर थी। परमेश्वर को क्षेत्र के ध्वनिक गुणों के बारे में सब पता था और उसने बड़ी भीड़ को आसानी से सम्बोधित करने के लिये उनका लाभ उठाया।

क्या उसकी माता और भाई रुके थे? हम निश्चित रूप से आशा कर सकते हैं कि वे वहाँ रहे होंगे। यह कल्पना करना सुखद होगा कि वे अन्य सभी लोगों के साथ वहाँ बैठे थे, उस रंगीन तमाशे का हिस्सा, नाव पर की जा रही व्यवस्थाओं को देखने में रूचि रखने वाले दर्शक। क्या उसके भाइयों ने अपने पड़ोसियों को स्वाभाविक टिप्पणी दी—”वह हमारा भाई है, आप जानते हैं?” या क्या उन्होंने उसके दु:खों के कटोरे में इतनी बढ़ोतरी की कि, उसके वचनों से दु:खी होकर, उन्होंने अपने अपमानित सम्मान को लपेटकर घर वापस चले गए?

अब हम *इस कहानी पर ध्यान लगाते हैं* (4:2-9):

*और वह उन्हें दृष्टान्तों में बहुत सी बातें सिखाने लगा, और अपने उपदेश में उनसे कहा। (4:2)*

प्रभु ने अब लोगों को दृष्टान्तों में शिक्षा दी। यीशु के दृष्टान्त केवल सांसारिक कहानियाँ थीं, जिनमें से प्रत्येक का एक स्वर्गीय अर्थ था। प्रभु को इन घरेलू दृष्टान्तों का उपयोग करना पसंद था, और उसने उन्हें जीवन की प्रतिदिन की घटनाओं से लिया। उनमें से अधिकांश लोगों के बारे में थे, वे कैसे थे, और उन्होंने क्या किया और क्या कहा। उन्होंने महान सत्य व्यक्त किए। उन्होंने उसके सिद्धांत को अमर कर दिया। हालाँकि हम में से कई लोग उनसे परिचित हैं और उन्हें लगभग स्वाभाविक रूप से पढ़ते हैं, बिना किसी आश्चर्य के, वे बहुत गहन कथन हैं। न ही उन्हें हमेशा व्याख्या करना आसान होता है, विशेष रूप से “रहस्य” दृष्टान्त और राज्य के दृष्टान्त।

जब हम प्रभु के दृष्टान्तों का अध्ययन करते हैं, तो हमें सत्य के तीन पहलुओं को अपने मन में उलझने से बचाना चाहिए: उद्धार का सत्य, कलीसिया का सत्य और राज्य का सत्य। इन भिन्न सत्यों के बीच अंतर को समझने में विफलता त्रुटि की ओर ले जाती है। आज प्रचलित कई गलत शिक्षाएँ दृष्टान्त की गलत व्याख्या पर आधारित या उससे प्रेरित हैं। कभी-कभी किसी दृष्टान्त में उस सत्य को दर्शाने के लिये एक निश्चित मात्रा में “ऊपरी दिखावट” होती है जिसे वह व्यक्त करना चाहता है। दृष्टान्त में प्रत्येक वस्तु पर एक अर्थ थोपने का प्रयत्न करने से बहुत सी मूर्खतापूर्ण व्याख्याएँ हुई हैं। आमतौर पर, एक दृष्टान्त में एक केंद्रीय सत्य होता है। किसी दृष्टान्त की कोई भी व्याख्या बाइबल में कहीं और सिखाई गई बातों के अनुरूप होनी चाहिए। इसके अलावा, यदि किसी को प्रभु की दृष्टांतात्मक शिक्षा को ठीक से समझना है, तो बाइबल के समय में प्रतिदिन के जीवन के ज्ञान के साथ-साथ मानवजाति के साथ परमेश्वर के व्यवस्थागत् व्यवहार और पवित्र आत्मा के द्वारा प्रतीकात्मक भाषा के उपयोग से परिचित होना अक्सर आवश्यक होता है।[1]

*सुनो! एक बोनेवाला बीज बोने निकला! (4:3)*

प्रभु ने बोने वाले, बीज और भूमि के दृष्टान्त से आरम्भ किया। पूरी सम्भावना है कि बैठे हुए लोगों को वास्तव में जहाँ वे बैठे थे उससे कुछ ही दूरी पर एक जुता हुआ खेत दिखाई दे रहा होगा। यह एक जाना-पहचाना दृश्य था। एक बैल या दो गधे आदिम हल से जुड़े हुए थे। किसान को रोपण की तैयारी में मिट्टी (भूमि) को तोड़ते हुए देखा जा सकता था। या, शायद, बोने वाले को देखा जा सकता था, जो अपने काम के लबादे के एक कोने को जेब बनाने के लिये इकट्ठा कर रहा था। वे उसे बीज में अपना हाथ डालते और उसे अपने चारों ओर बिखेरते हुए देख सकते थे, जैसे वह हल से नीचे की ओर जा रहा हो।

पहल हमेशा बोने वाले के पास थी। कुछ सीमा तक बर्बादी तो होनी ही थी, परन्तु वह उसके लिये तैयार था। सौ पीढ़ियों के अनुभव ने उसे सिखाया कि उसे उदारता से बोना चाहिए। बोए गए सभी बीज फसल नहीं लौटाएँगे। यदि बोने वाला अपने निवेश पर पूर्ण वापसी के आश्वासन की प्रतीक्षा करता, तो वह हमेशा के लिये प्रतीक्षा करता; पतन ने उसे समाप्त कर दिया (उत्प. 3:17-19)।

*बोते समय कुछ मार्ग के किनारे गिरा और पक्षियों ने आकर उसे चुग लिया। (4:4)*

भीड़ मुस्कुराती और सिर हिलाती। उन्होंने यह सब होते देखा था। शायद यह सब उनकी आँखों के सामने हो रहा था, जबकि यीशु बोल रहा था। वे वहाँ थे, पक्षियों के झुण्ड, यहाँ-वहाँ से, हर जगह से, बोने वाले के पीछे शोर मचाते हुए उड़ते हुए और बादलों से नीचे उतरते हुए, लालच से बीज को खाते हुए, इससे पहले कि वह मिट्टी में समा जाए। वे किसान के जीवन का अभिशाप थे। कभी-कभी वह मुड़कर उन पर मुट्ठी हिलाता या उन्हें भगाने का प्रयत्न करता। यह निराशाजनक था। जैसे ही वह वापस अपनी बुवाई के लिये मुड़ता, वे फिर से नीचे आ जाते। कड़वे अनुभव ने बोने वाले को सिखाया कि पक्षियों को आशा करनी चाहिए कि वे उसके बहुमूल्य बीज का आधा नहीं तो एक तिहाई हिस्सा पाएँगे। यह जीवन का एक तथ्य था। उसका एकमात्र सहारा भरपूर मात्रा में बोना था।

*कुछ पथरीली भूमि पर गिरा जहाँ उसको बहुत मिट्टी न मिली, और गहरी मिट्टी न मिलने के कारण जल्द उग आया, और जब सूर्य निकला तो जल गया, और जड़ न पकड़ने के कारण सूख गया। (4:5-6)*

इसके बाद, प्रभु ने पथरीली भूमि के बारे में बात की। फिर से, लोग समझदार दिखेंगे। उन्होंने यह भी देखा था। जहाँ तक किसान का प्रश्न है, वह अपने खेत के उस हिस्से के बारे में सब कुछ जानता था। उसके हल ने उस पर बहुत परिश्रम किया था। वहाँ एक पथरीली चट्टान थी जो केवल कुछ इंच मिट्टी से ढकी हुई थी। पिछले अनुभव ने उसे सिखाया था कि उस क्षेत्र से अधिक आशा नहीं करनी चाहिए।

यह भूमि सड़क के किनारे की भूमि से भी बुरी थी। सड़क के किनारे की मिट्टी लोगों के आने-जाने से कुचल कर दब गई थी और जम गई थी, परन्तु पथरीली भूमि स्वभाव से ही कठोर थी। यह भ्रामक भी थी, क्योंकि नीचे की चट्टान मिट्टी से ढकी हुई थी। इसी कारण से यह और भी निराशाजनक था। बीज प्रारम्भिक आशा के साथ उग आया। पिछले मौकों पर, बोने वाले ने खेत के उस हिस्से से धूप में सूख चुके गेहूँ के अंकुरों का निरीक्षण किया था। वहाँ की भूमि की गहराई बीज को जड़ जमाने के लिये पर्याप्त नहीं थी। बीज अंकुरित हो गया, अत: बीज में कुछ भी गलत नहीं था, परन्तु भूमि असंगत थी। यह नीचे की चट्टान की तरह अत्यन्त थी।

*कुछ झाड़ियों में गिरा, और झाड़ियों ने बढ़कर उसे दबा लिया, और वह फल न लाया। (4:7)*

इसके बाद झाड़ियों से भरी भूमि आई, जो दम घोंटने वाले काँटों से भरी थी। फिर से लोग सहमत हुए। भूमि पर एक अभिशाप था। मकई की फसल उत्पन्न करने के लिये जुताई और रोपण, खाद डालना और खेती करना पड़ता था, परन्तु झाड़ियाँ कहीं भी उग आती थीं! वे कठोर, साहसी, बेकार और उग्र थे। लोगों ने अक्सर अपने घर के बगीचों में उगने वाली झाड़ियों को कोसा था, विशेष रूप से उन काँटों को जो हाथ और कपड़े फाड़कर लड़ते थे। एक बार काँटों ने नियंत्रण कर लिया तो अच्छे बीज के लिये कोई अवसर नहीं था। काँटे भूमि के हर इंच के लिये प्रतिस्पर्धा करते थे।

*परन्तु कुछ अच्छी भूमि पर गिरा, और वह उगा, और बढ़कर फलवन्त हुआ; और कोई तीस गुणा, कोई साठ गुणा और कोई सौ गुणा फल लाया। (4:8)*

अंत में, अच्छी भूमि थी, परन्तु यह भी पूरी फसल देने में विफल रही। लोग फिर से सहमत होंगे। उन्होंने यही देखा था। अच्छी, प्रतिक्रियाशील भूमि भी अलग-अलग फसल उत्पन्न करती है। यहाँ तक कि वह भूमि जो पैदल यात्रियों के पैरों से कुचली हुई नहीं थी और जो चट्टानों या खरपतवारों से बाधित नहीं थी, वह भी अलग-अलग स्तर पर प्रतिक्रिया करती थी। फसल कभी एक समान नहीं होती थी। सबसे अच्छी स्थिति में, जो बोया गया था उसका केवल एक प्रतिशत ही कटनी के समय उच्चतम क्षमता तक पहुँच पाया।

*तब उसने कहा, “जिसके पास सुनने के लिये कान हों, वह सुन ले।” (4:9)*

उसने दृष्टान्त की व्याख्या उन पर छोड़ दी। उन्होंने कहानी का आनन्द लिया था। अब उन्हें इसका अर्थ समझने दो।

मत्ती के सुसमाचार में, यह दृष्टान्त उन श्रृंखलाओं (मत्ती 13 अध्याय) में पहला है जिन्हें हम “रहस्यमयी” दृष्टान्त कहते हैं। इस तरह का दृष्टान्त प्रभु की शिक्षा पद्धति में एक नयी तकनीक थी। उसे आधिकारिक तौर पर अस्वीकार कर दिया गया था। शत्रु, परिवार और मित्र सभी उसके जीवन के स्पष्ट तथ्यों पर प्रतिक्रिया करने में विफल रहे थे। अब वह एक नये प्रकार के दृष्टान्तों में शिक्षा देगा - ऐसे दृष्टान्त जो कहानी के हिस्से के रूप में स्पष्ट रूप से स्पष्ट थे परन्तु उनके महत्व के रूप में रहस्यमयी और छिपे हुए थे। लोग उनका अर्थ नहीं समझ पाएँगे, और यहाँ तक कि उसके चेलों को भी उनकी व्याख्या करने के लिये प्रशिक्षण की आवश्यकता होगी। ये दृष्टान्त, जैसा कि हम मत्ती के संग्रह का अध्ययन करने से सीखते हैं, स्वर्ग के राज्य के दृष्टान्त थे। इस पूरी बात में, विफलता स्पष्ट है। फिर भी, परमेश्वर सभी प्रतीत होने वाली बाधाओं और रुकावटों के बावजूद, अपने राज्य के उद्देश्य को, उत्कृष्टतापूर्वक और सम्प्रभुता से आगे बढ़ाता है।

**ख. अर्थ (4:10-20)**

सबसे पहले, *प्रोत्साहन का एक वचन* आता है(4:10-13):

*जब वह अकेला रह गया, तो उसके साथियों ने उन बारह समेत उससे इन दृष्टान्तों के विषय में पूछा। (4:10)*

प्रभु के चेले भी इन दृष्टान्तों से उतने ही चकित थे जितने दूर बैठे लोग। यह एक अच्छी कहानी थी - या, बल्कि, यह देखने योग्य कृषि तथ्यों का एक उत्कृष्ट सारांश था। परन्तु, तो क्या? हर कोई बोने वाले, और बीज और भूमि के बारे में जानता था। इसमें उससे कहीं अधिक कुछ होना चाहिए था! उन्होंने उससे स्पष्टीकरण माँगा।

*उसने उनसे कहा, “तुम को तो परमेश्‍वर के राज्य के भेद की समझ दी गई है, परन्तु बाहरवालों के लिये सब बातें दृष्‍टान्तों में होती हैं।” (4:11)*

उसने उन्हें बताया कि उसने जानबूझकर शिक्षण की एक ऐसी पद्धति अपनाई थी, जो एक ही समय में प्रकट करने और छिपाने के लिये तैयार की गई थी। यह परमेश्वर की शिक्षा की प्रतिभा का हिस्सा था कि वे इतनी सरल, प्रतिदिन की बातों का उपयोग करके इतने गहन और जटिल लक्ष्य को पूरा कर सकते थे। केवल आधा दर्जन मूल दृष्टान्तों का आविष्कार करने का प्रयत्न करने से ही कोई व्यक्ति जल्द ही परमेश्वर की प्रतिभा के बारे में आश्वस्त हो जाएगा। यह सम्भव नहीं है कि उसने ये दृष्टान्त क्षण भर में दिए हों। सम्भवत: वह इन बातों के बारे में तीस वर्ष से सोच रहा था।

मत्ती हमें “रहस्यमयी” दृष्टान्तों (13 अध्याय) का पूरा विवरण देता है। वे सभी विफलता और अच्छे और बुरे का मिश्रण दर्ज करते हैं। उन सभी को मसीह के अब स्पष्ट यहूदी अस्वीकृति से निपटने के लिये तैयार किया गया था। राष्ट्र विफल हो गया था। अब इस ग्रह पर एक राज्य स्थापित करने की परमेश्वर की अनन्त योजना का क्या होगा? वैसे, उस उद्देश्य को अब अनिर्दिष्ट अवधि के लिये स्थगित किया जाना था। इस्राएल को अस्थायी रूप से अलग रखा जाएगा, और परमेश्वर इस ग्रह पर कुछ पूरी तरह से नया पेश करेगा – जो कि कलीसिया है। कलीसिया परमेश्वर के व्यापक उद्देश्यों को तब तक आगे बढ़ाएगी जब तक कि वे उद्देश्य पूरे नहीं हो जाते और परमेश्वर इस्राएल राष्ट्र के साथ अपना व्यवहार फिर से आरम्भ नहीं कर देता। जब वह समय आएगा, तो अग्रदूतों (संदेशवाहकों) की एक नयी पीढ़ी एक बार फिर घोषणा करेगी कि परमेश्वर का राज्य निकट है (मत्ती 24:14; प्रका. 11)। लम्बे समय से प्रतीक्षा किया गया सहस्राब्दी युग आखिरकार आ जाएगा।

इस बीच, परमेश्वर के राज्य के उद्देश्यों में बदलाव आया। एक नया चरण आरम्भ हुआ - “रहस्यमयी” चरण, जिसकी घोषणा “रहस्यमयी” दृष्टान्तों (मत्ती 13 अध्याय) के द्वारा की गई। यह सब प्रभु के द्वारा प्रकट किया जाने वाला था। उसके अपने लोग यह सब समझ जाएँगे; उद्धार नहीं पाए लोग कभी नहीं समझ पाएँगे।

अनुग्रह का वर्तमान युग (कलीसिया युग) राज्य के स्थगन और राज्य के उद्घाटन के बीच की अवधि को भरता है। कलीसिया राज्य की प्रतीक्षा करती है और प्रार्थना करती है, “तेरा राज्य आए, तेरी इच्छा जैसे स्वर्ग में पूरी होती है, वैसे पृथ्वी पर भी हो।”

मरकुस सभी विवरणों में नहीं जाता है। वे यहूदी श्रोताओं (जैसे कि मत्ती के मन में था) के लिये रोमी श्रोताओं (जिसे मरकुस ने ध्यान में रखा) की तुलना में अधिक रोचक होंगे। हालाँकि, मरकुस रहस्य के रूप में प्रभु की शिक्षा का यह एक नमूना देता है। प्रभु ने अब बीज बोने वाले के दृष्टान्त की व्याख्या की।

*इसलिये कि “वे देखते हुए देखें और उन्हें सुझाई न पड़े और सुनते हुए सुनें भी और न समझें; ऐसा न हो कि वे फिरें, और क्षमा किए जाएँ।” (4:12)*

यह यशायाह 6:9-10 से एक उद्धरण है। प्रभु ने पुराने नियम के इस प्रसिद्ध पद्यांश को यह समझाने के लिये उद्धृत किया कि वह अब रहस्यों में क्यों शिक्षा दे रहा था। यशायाह के वचनों का पुराने नियम का संदर्भ महत्वपूर्ण है। यशायाह भविष्यद्वक्ता को पाप बोधित किया गया और शुद्ध किया गया और फिर उसे सेवकाई के लिये बुलाया गया (यशा. 6:1-8)। आरम्भ से ही, उसे चेतावनी दी गई थी कि उसके उपदेश से कोई स्थायी परिणाम नहीं निकलेगा। इस्राएल राष्ट्र इतना धर्मत्यागी था कि न्याय के अलावा कुछ नहीं बचा था। यहूदा राष्ट्र भी इससे बेहतर नहीं था। यशायाह के दिनों में इस्राएल का धर्मत्याग इतना गम्भीर था कि परमेश्वर ने इस्राएल राष्ट्र को निर्वासित करने की मंशा की। न्यायिक अंधापन धर्मत्यागी लोगों को जकड़ लेगा, और वे यशायाह और उसके द्वारा सिखाए गए सत्य के प्रति बहरे और अंधे हो जाएँगे।

मसीह को अस्वीकार करने वाले इस्राएल और उसके अगुवों के अक्षम्य धर्मत्याग के कारण अब और भी अधिक और लम्बे समय तक बंधुआई होने वाली थी। पहले की तरह, न्यायिक अंधापन आने वाले न्याय की घोषणा करेगा (रोमि. 11:25); इस कारण, रहस्य दृष्टान्त और प्रभु के द्वारा यहाँ यशायाह 6:9-10 का उपयोग किया गया है।

बाद में पौलुस ने इसी भविष्यद्वाणी को उद्धृत किया (प्रेरितों 28:25-27) जब यह स्पष्ट हो गया कि मातृभूमि और प्रवासी दोनों के यहूदियों ने न केवल *परमेश्वर के पुत्र को* बल्कि *परमेश्वर के आत्मा को भी* अस्वीकार कर दिया था(इब्रा. 10:26-31)। यहूदी राष्ट्र के दण्ड में अब और देरी नहीं की जा सकती थी।

आमतौर पर, परमेश्वर समझ में आने के लिये बोलता है। हालाँकि, कभी-कभी, वह केवल अंधेपन पर छाप लगाने, बहरेपन को गहरा करने और उन लोगों की कठोरता की पुष्टि करने के लिये बोलता है, जिन्हें संदेश भेजा जाता है। यह न्याय के लिये मंच तैयार करने का पहला कदम है। इस प्रकार, नूह ने उपदेश दिया - व्यर्थ में - उस दिन तक जब तक वह जहाज में प्रवेश नहीं कर गया। इस प्रकार, सदोम के लोग अंधेपन से पीड़ित थे, जबकि उनका विनाश आसमान से गिरने वाला था। प्रभु के दिन के लोगों ने आश्चर्यकर्मों का सबसे अद्भुत और अनगिनत प्रदर्शन *देखा* था। उन्होंने अब तक दी गई सबसे अनुग्रहपूर्ण और शानदार शिक्षा *सुनी* थी। फिर भी, उन्होंने मसीह को अस्वीकार कर दिया था। इस्राएल के राष्ट्र ने कलीसिया को अस्वीकार करके मसीह को अस्वीकार करने की पुष्टि की। कठोरता की प्रक्रिया आरम्भ हुई। पवित्र आत्मा की उनकी निन्दा ने उन्हें एक अलग श्रेणी में डाल दिया था। ऐसे लोगों के लिये कोई चंगाई नहीं था, केवल कठोरता, कोई उद्धार नहीं, केवल न्याय था। संसार हमारे अपने दिनों में बढ़ते धर्मत्याग के एक समान चरण में प्रवेश कर रहा है, विशेष रूप से उन देशों में जिन्हें सुसमाचार के द्वारा विशेष रूप से आशीष दी गयी है।

*फिर उसने उनसे कहा, “क्या तुम यह दृष्‍टान्त नहीं समझते? तो फिर और सब दृष्‍टान्तों को कैसे समझोगे?” (4:13)*

ये वचन चेलों को सम्बोधित थे, जो सामान्य अंधेपन से पीड़ित नहीं थे। उन्हें बीज बोने वाले के दृष्टान्त को समझने में सक्षम होना चाहिए था। यह सभी रहस्यमय दृष्टान्तों में सबसे सरल था। परन्तु वे अभी भी सीखने वाले थे और कई बातों को समझने में विफल रहे। उदाहरण के लिये, यह तथ्य कि प्रभु को क्रूस पर चढ़कर मरना होगा और उसे दफनाया जाएगा और फिर से जीवित होगा, उन दिनों उनकी समझ से परे था। जब प्रभु ने पहली बार घोषणा की वह वे क्रूस पर चढ़ने जा रहा हैं, तो पतरस भयभीत हो गया, और उसने कड़ी आपत्ति जताई (मत्ती 16:21-23)। उसने ऐसा करने वाले किसी मसीह की कल्पना नहीं की थी, विशेष रूप से ऐसे व्यक्ति की नहीं जो प्रकृति की शक्तियों को नियंत्रित कर सके! बाद में, प्रभु ने उनकी समझ की आँखें खोलीं ताकि वे उसकी सभी शिक्षाओं को समझ सकें (लूका 24:44-45; यूह. 20:9, 22)। हालाँकि, उनकी आत्मिक शिक्षा के इस बिंदु पर, बीज बोने वाले के दृष्टान्त का गहरा अर्थ उनसे छूट गया। अत: प्रभु ने उन्हें समझाया।

तो फिर, *स्पष्टीकरण के वचन* पर ध्यान दें(4:14-20)। सबसे पहले, उसने *बीज* का उल्लेख किया(4:14):

*बोने वाला वचन बोता है।* (4:14)

उसने एक सरल कथन दिया, और बाकी सब स्पष्ट था। बीज परमेश्वर के वचन का प्रतीक था। बोने वाला, पहले उदाहरण में, परमेश्वर का पुत्र था। इसके बाद, परमेश्वर के सेवक बोने वाले बन गए। सुसमाचार को आगे बताया जाता है, सुसमाचार सभी प्रकार के लोगों की सुनवाई के भीतर दूर-दूर तक फैला हुआ है। हम बीज का निर्माण नहीं करते हैं; परमेश्वर इसे प्रदान करता है। इसमें जीवन का रहस्य निहित है, और यह अपनी तरह से पुनरुत्पादित होता है। परमेश्वर स्वयं को रहस्यमय और जटिल प्रक्रिया के लिये जिम्मेदार बनाता है जिसके के द्वारा एक बीज भूमि में अंकुरित होता है और बढ़ता है और जिस तरह से परमेश्वर का वचन एक मानवीय हृदय में अंकुरित होता है। हमारी जिम्मेदारी बीज बोना है।

फिर प्रभु *भूमि* की ओरमुड़ा(4:15-20):

*जो मार्ग के किनारे के हैं जहाँ वचन बोया जाता है, ये वे हैं कि जब उन्होंने सुना, तो शैतान तुरन्त आकर वचन को जो उनमें बोया गया था, उठा ले जाता है। (4:15)*

शैतान समय बर्बाद नहीं करता। यहाँ मुख्य शब्द है *तुरन्त।* वह, या (क्योंकि वह सर्वव्यापी नहीं है, बल्कि एक सीमित प्राणी है) उसका एक प्रतिनिधि, हर बार सुसमाचार की घोषणा के समय वहाँ मौजूद होता है। वह बीज को अंकुरित होने से पहले ही चुरा लेने के लिये वहाँ मौजूद होता है। यदि वह इसे बोने से नहीं रोक सकता, तो वह इसे बोने के बाद छीनने का पूरा-पूरा प्रयत्न करेगा। हम इसे हर सेवा में होते हुए देखते हैं। जिस क्षण आशीष की प्रार्थना की जाती है, बातचीत की चर्चा आरम्भ हो जाती है, और उपदेश में जो कहा गया था, उसे भुला दिया जाता है। जब तक हम कार तक पहुँचते हैं, बातचीत दोपहर के भोजन या श्रीमती बाल्डी की टोपी के आकार या सैर पर जाने के बारे में हो जाती है। किसी भी मामले में, बीज समाप्त चुका है।

शब्द *'मार्ग के किनारे'* भी एक संकेत देता है। मार्ग का किनारा वह जगह है जहाँ लोग आते-जाते हैं, जहाँ लगातार आवाजाही होती रहती है। हर समय वहाँ से यातायात गुजरता रहता है। व्यापार या मौज-मस्ती में लगे लोगों की भीड़ का आना-जाना भूमि को कठोर और भरा हुआ रखता है ताकि शत्रु बीज को छीन सके। शैतान और उसके साथी “आकाश की शक्तियों” को ऐसी जगहों पर बड़ी सफलता मिलती है।

*वैसे ही जो पथरीली भूमि पर बोए जाते हैं, ये वे हैं जो वचन को सुनकर तुरन्त आनन्द से ग्रहण कर लेते हैं। परन्तु अपने भीतर जड़ न रखने के कारण वे थोड़े ही दिनों के लिये रहते हैं; इसके बाद जब वचन के कारण उन पर क्लेश या उपद्रव होता है, तो वे तुरन्त ठोकर खाते हैं। (4:16-17)*

पथरीली भूमि के साथ प्रारम्भिक प्रतिक्रिया उत्साहजनक थी। बीज अंकुरित हुआ और उम्मीदें जगाईं। फिर से, बीज में कुछ भी गलत नहीं था; हमेशा भूमि ही समस्या थी। इस बार, भूमि भ्रामक थी। यह उथली थी क्योंकि भूमि की पतली परत के ठीक नीचे चट्टान का एक छिपा हुआ किनारा था। प्रतिज्ञा करने के लिये पर्याप्त भूमि थी परन्तु प्रदर्शन देने के लिये पर्याप्त नहीं थी।

यहाँ हमारे लिये जो दर्शाया गया है वह मसीह के सच्चे अधिकार के बजाय केवल विश्वास का अंगीकार है। जो लोग सुसमाचार के प्रति इस तरह की प्रतिक्रिया प्रदर्शित करते हैं, उनमें अक्सर किसी प्रकार का केवल भावनात्मक अनुभव होता है। कभी-कभी लोग सत्य को केवल बौद्धिक स्वीकृति देते हैं। किसी भी मामले में आत्मा की सतही हलचल से अधिक कुछ नहीं होता है।

वर्णित स्थिति को ओर्पा के मामले में दर्शाया गया है। रूत और ओर्पा दोनों ने आरम्भ में नाओमी की गवाही पर प्रतिक्रिया व्यक्त की। हालाँकि, जैसे ही ओर्पा को इसमें शामिल कठोर तथ्यों का सामना करना पड़ा, वह अपने पेशे पर वापस लौट गई और मोआब लौट गई। रूत ने पूरी तरह से काम किया। “दो लोग गलियारे में चले गए,” ऐसा कहा जाता है, “परन्तु केवल एक ही विवाह सम्पन्न हुआ।”

पथरीली मिट्टी पर बोया गया बीज उन लोगों को दर्शाता है जो पहले तो अच्छा करते दिखते हैं, परन्तु फिर उन्हें सताया जाता है। उनका सामना करने वाला विरोध ठोस, वास्तविक, अडिग और बिना त्याग का होता है। वे तुरन्त ही अपने विश्वास के अंगीकार को त्याग देते हैं, जिससे यह साबित होता है कि यह बेकार था। इसके अलावा, विरोध विशेष रूप से उस वचन के प्रति निर्देशित होता है जिस पर वे विश्वास करने का दावा करते हैं। संसार जल्द ही स्वयं को परमेश्वर के वचन का शत्रु साबित करता है। विश्वास का अंगीकार करने के तुरन्त बाद ही परीक्षा हमेशा आती है।

*जो झाड़ियों में बोए गए ये वे हैं जिन्होंने वचन सुना, और संसार की चिन्ता, और धन का धोखा, और अन्य वस्तुओं का लोभ उनमें समाकर वचन को दबा देता है और वह निष्फल रह जाता है। (4:18-19)*

इस बार कई तरह की समस्याएँ आती हैं। परमेश्वर तीन आम बाधाओं की ओर संकेत करते हैं- चिन्ता, धन और इच्छाएँ। प्रत्येक बाधा आने वाले संसार को छोड़कर इस संसार पर ध्यान केंद्रित करती है।

फिर से समस्या भूमि के साथ थी। इस बार मिट्टी काफी गहरी और उपजाऊ थी, परन्तु यह काँटों से भी भरी हुई थी। काँटे शाप के प्रतीक हैं (उत्प. 3:17-18)। उन्हें खेती की आवश्यकता नहीं है, उन्हें भूमि पसंद है, वे कठोर विकास वाले पौधे हैं, और वे अच्छे बीजों को दबा देते हैं।

आदम की प्रकृति झाड़ियों की एक प्रचुर, बारहमासी फसल उत्पन्न करती है, ऐसी चीजें जो सुसमाचार को फल देने से रोकती हैं, भले ही यह हृदय में अंकुरित हो और प्रारम्भिक प्रतिज्ञा दिखाती हो। प्रभु ने इनमें से तीन झाड़ियों का संकेत दिया।

पहले को वह “इस संसार की चिन्ताएँ” कहता है, जो कि निर्धनता की साधारण पीड़ा है - इस संसार में अधिकांश लोगों की आम स्थिति। प्रभु को इसके बारे में सब पता था क्योंकि वह स्वयं निर्धन था। वह मजदूर वर्ग से आया था। निर्धनों के मन में हज़ारों चिन्ताएँ होती हैं। चिन्ता उनके जीवन का एक दैनिक घटक है। शैतान इस संसार पर हमारा ध्यान केंद्रित करने के लिये चिन्ता का उपयोग करता है। सुसमाचार, जो अगले संसार पर ध्यान केंद्रित करता है, अक्सर जीवन के दबावों में व्यस्तता के कारण, “अत्यंत महान और बहुमूल्य प्रतिज्ञाओं” के बावजूद, भीड़ से बाहर हो जाता है।

दूसरी झाड़ी वह है जिसे प्रभु “धन का धोखा” कहता है। चिन्ता की तरह, धन भी इस संसार पर ध्यान केंद्रित करता है। इस बार वचन को दबाने वाली झाड़ी निर्धनता नहीं, बल्कि बहुतायत है। धनवान लोग स्वतंत्र और आत्मनिर्भर होते हैं। धन उन्हें जीवन की अधिकांश कठोर वास्तविकताओं से बचाता है, अत: उन्हें सुसमाचार की आवश्यकता महसूस नहीं होती। वे अपना ध्यान स्वयं रख सकते हैं। बलिदान और हार्दिक उदारता की बुलाहट के साथ सुसमाचार उन्हें आकर्षित नहीं करता - जैसा कि धनी युवा शासक की कहानी स्पष्ट करती है (10:17-24)।

तीसरी तरह की झाड़ी को प्रभु “अन्य बातों की लालसा” कहता है। अधिकतर लोगों के पास “चाहत” की एक लम्बी सूची होती है। जैसे ही वे इसे प्राप्त करते हैं, वे वह चाहते हैं। सुलैमान ने कहा कि घोड़े की जोंक की दो बेटियाँ थीं। ये बेटियाँ अतृप्त भूख और अतृप्त अभिलाषा का प्रतिनिधित्व करती थीं। उनकी एक ही निरंतर और लगातार की पुकार थी: “दे दो! दे दो!” प्रभु इसे “अन्य बातों की लालसा” कहता है, सभी प्रकार की चीजें, कामुक बातों से लेकर वैध बातों तक।

मानवीय हृदय में वचन के विकास में आने वाली तीनों बाधाएँ सांसारिकता के पहलू हैं, जो हमारा ध्यान आने वाले संसार की अपेक्षा इस संसार पर केन्द्रित करती हैं।

*और जो अच्छी भूमि में बोए गए, ये वे हैं जो वचन सुनकर ग्रहण करते और फल लाते हैं: कोई तीस गुणा, कोई साठ गुणा और कोई सौ गुणा। (4:20)*

जो बीज अच्छी भूमि पर गिरता है, उसमें फसल उत्पन्न करने की सबसे अच्छी सम्भावना होती है। यहाँ एक आत्मा है जो सुसमाचार के प्रति ग्रहणशील है। यह सुनती है। यह ध्यान देती है, वचन को हृदय में रखती है, और विश्वास के साथ मिलकर अंकुरित होती है। यह जड़ पकड़ लेती है, और शैतान इसे छीन नहीं सकता। कोई भी मानवीय गतिविधि इसे रौंद नहीं सकती, कोई भी चट्टानी किनारा इसे बाधित नहीं कर सकता, किसी भी शत्रुता को हावी होने की अनुमति नहीं है, और किसी भी शारीरिक या सांसारिक लालसा को मसीह के ज्ञान में आत्मा में स्थिर विकास को रोकने की अनुमति नहीं है। वचन प्रबल होता है और फल के उत्पादन के द्वारा अपनी उपस्थिति साबित करता है। मसीह को विश्वासी के जीवन में देखा जाना चाहिए - कुछ में दूसरों की तुलना में अधिक, परन्तु मसीह को *देखा* जाता है।

**2. दृष्टान्तात्मक तरीका (विधि) (4:21-34)**

**क. तरीके (विधि) के उदाहरण (4:21-32)**

*चमकता हुआ* (4:21-23):

*उसने उनसे कहा, “क्या दीये को इसलिये लाते हैं कि पैमाने या खाट के नीचे रखा जाए? क्या इसलिये नहीं कि दीवट पर रखा जाए?” (4:21)*

*जीवन* के बारे में दृष्टान्त के बाद अब *ज्योति* के बारे में दृष्टान्त आता है। दीया एक अद्भुत आविष्कार है। यह अंधकार को दूर करने का एक सरल साधन है। अंधकार, अपनी सारी शक्ति के साथ डराने और भ्रमित करने के लिये, ज्योति से प्रतियोगिता नहीं कर सकता। हल्की सी चमक भी अंधकार को दूर कर देगी। दीया का काम अंधकार को दूर करने वाली ज्योति प्रदान करना है। दीया स्वयं का बहुत अधिक दाम चुकाकर ऐसा करता है। उसे स्वयं को लौ के हवाले करना पड़ता है और जलकर भस्म हो जाना पड़ता है। सूर्य और तारों का प्रकाश भी इसी सिद्धांत पर प्रदान किया जाता है।

आत्मिक क्षेत्र में, प्रभु यीशु अंधकार को दूर करने वाली ज्योति है। वह जो ज्योति लाता है, वह अनन्त दाम चुकाकर उपलब्ध करवाया गई है। जब हम उसके पास आते हैं, तो वह हमारे भीतर वह ज्योति जलाता है - जो हमें उसके दृष्टान्त के बिंदु पर ले आता है। तथ्य यह है कि अब हम ज्योति ले जाने वाले हैं, इसका अर्थ है कि हमें भी चमकने का दाम चुकाना होगा। हमारी ज्योति छिपायी नहीं जानी चाहिए। इसे ऐसी जगह रखा जाना चाहिए जहाँ यह लोगों को दिखाई दे। बहुत से लोग ज्योति से घृणा करते हैं और नाराज होते हैं और इसे बुझाने का प्रयत्न करेंगे। दूसरी ओर, बहुत से अन्य लोग इसकी ओर आकर्षित होंगे। ज्योति ही आश्चर्यकर्म है; हम केवल दीया हैं।

*क्योंकि कोई वस्तु छिपी नहीं, परन्तु इसलिये है कि प्रगट हो जाए; और न कुछ गुप्‍त है, पर इसलिये है कि प्रगट हो जाए। (4:22)*

फिर, हर छिपी हुई बात भी उजागर हो जाएगी। परमेश्वर हमारे बारे में सब कुछ जानता है। पौलुस पुष्टि करता है कि परमेश्वर “मनुष्यों की गुप्‍त बातों का न्याय करेगा” (रोमि. 2:16)। संसार अंधकार से प्रेम करता है। मनुष्य अपने पापों से प्रेम करते हैं, जिनमें से बहुत से पाप अंधकार की आड़ में किए जाते हैं। महान श्वेत सिंहासन (पापियों के लिये) और मसीह के न्याय आसन (पवित्र लोगों के लिये) पर, सभी छिपी हुई बातें उजागर हो जाएँगी - जैसा कि रूबेन (उत्प. 49:3-4), आकान (यहो. 7:1-26), तथा हनन्याह और सफीरा (प्रेरितों 5:1-11) ने पाया।

*यदि किसी के सुनने के कान हों, तो वह सुन ले। (4:23)*

फिर से प्रभु की चुनौती गूँजती है। उसने पहले भी इन्हीं वचनों का उपयोग किया है (4:9)। यह एक ऐसा वाक्यांश है जिसे अक्सर दोहराया जाता है। आसिया की सात कलीसियाओं को महिमा से लिखते हुए, प्रभु ने इस अभिव्यक्ति का बार-बार उपयोग किया है (प्रका. 2-3 अध्याय)। शेक्सपियर ने इस अभिव्यक्ति को उधार लेकर इसे कैसर के अंतिम संस्कार में भाग लेने वाले रोमियों के लिए मार्क एंथनी के भाषण को याद करते हुए एक अलग रूप में उपयोग किया: “मित्रों, रोमियों और देशवासियों, मुझे अपने कान उधार दो।” ये शब्द हमारे लिये एक चुनौती हैं कि हम जो कहा जा रहा है उस पर ध्यान दें। किसी भी संचार को सुनते समय यह महत्वपूर्ण है। जब वक्ता परमेश्वर होता है, तो यह और महत्वपूर्ण है।

*दिखा रहा है!* (4:24-25):

*फिर उसने उनसे कहा, “चौकस रहो कि क्या सुनते हो। जिस नाप से तुम नापते हो उसी से तुम्हारे लिये भी नापा जाएगा, और तुम को अधिक दिया जाएगा।” (4:24)*

पहला*, सावधानी बरतने* की बात है। हमें जो कुछ भी सुनना है, उस पर ध्यान देना चाहिए। हमें जो कुछ भी सुनना है, उसके बारे में सावधान रहना चाहिए। बहुत सी आवाजें हैं। हम झूठे वचन, मूर्खतापूर्ण वचन और गंदे वचन सुनते हैं। काल्पनिक वचन और शैतानी वचन हैं। कुछ वचन चापलूसी करते हैं। कुछ भयंकर होते हैं। हमें जो पुस्तकें पढ़ते हैं, जो कार्यक्रम देखते हैं और जो आवाजें सुनते हैं, उन पर रोकथाम लगानी चाहिए।

*सलाह* का एक शब्द है। हमें को अपने मार्गों में आने वाले दूसरों के अच्छे वचनों को मापना चाहिए। हम विशेष रूप से ईश्वरीय सत्य को आगे बढ़ाने के लिये जिम्मेदार हैं। इसमें कुछ पारस्परिकता है। जितना अधिक हम दूसरों को देते हैं, उतना ही अधिक हम स्वयं को दे रहे हैं।

*स्पष्टीकरण* का एक शब्द है। जो लोग सुनते हैं कि परमेश्वर क्या कहना चाहता है, वे और अधिक सुनना चाहेंगे। कुएँ पर स्त्री के साथ प्रभु की मुलाकात में, हम मसीह के ज्ञान में एक आत्मा की तीव्र वृद्धि देखते हैं। सबसे पहले, उसने उसे “एक यहूदी” कहा। फिर उसने कहा, “गुरु।” फिर उसने उसे “एक भविष्यद्वक्ता” कहा। अंत में, उसने उसे मसीह और “मसीह” के रूप में स्वीकार किया (यूह. 4:7-29)।

*“क्योंकि जिसके पास है, उसको दिया जाएगा; और जिसके पास नहीं है, उससे वह भी जो उसके पास है, ले लिया जाएगा।” (4:25)*

अर्थशास्त्र का यह एक बुनियादी नियम है: जिस व्यक्ति के पास पैसा है, वह अधिक से अधिक पैसा बनाने की स्थिति में है। वह इसमें निवेश कर सकता है और उसमें खरीददारी कर सकता है। वह अपनी पूंजी बढ़ा सकता है और अपनी नियति को बढ़ा सकता है। जो व्यक्ति कर्ज में है, उसे लगता है कि उसका कर्ज बढ़ता जा रहा है। उसे कम से कम के लिये अधिक से अधिक भुगतान करना पड़ता है। वह अपना घर गिरवी रख देता है। वह अपनी कार खो देता है। पुराने दिनों में, कर्जदारों का बन्दीगृह उसकी प्रतीक्षा करता था; आजकल यह दिवालियापन की अदालत है।

यह आत्मिक क्षेत्र का भी नियम है। एक व्यक्ति अनुग्रह में बढ़ता है और परमेश्वर के ज्ञान में भी बढ़ता है। दूसरा व्यक्ति परमेश्वर की बातों की उपेक्षा करता है, सिकुड़ जाता है, और एक सांसारिक, शारीरिक मसीही, एक आत्मिक कंगाल बन जाता है। प्रभु का तोड़ों का दृष्टान्त (मत्ती 25 अध्याय) हमें लगभग यही बात बताता है। रुपयों वाला दृष्टान्त भी यही कहता है। हमें जो दिया जाता है, हम उसका या तो *उपयोग* करते हैंया उसे *खो* देते हैं*।*

*बीज बोना!* (4:26-29):

*फिर उसने कहा, “परमेश्‍वर का राज्य ऐसा है, जैसे कोई मनुष्य भूमि पर बीज छींटे।” (4:26)*

अब परमेश्वर आत्मिक विकास की आवश्यकता से हटकर आत्मिक विकास के रहस्य की ओर मुड़ता हैं। आत्मिक विकास दो भागों में विभाजित है - हमारा भाग और परमेश्वर का भाग। हम बहुत कुछ नहीं कर सकते। हम बस इतना कर सकते हैं कि बीज लें और उसे बो दें। कोई भी ऐसा कर सकता है। मुट्ठी भर बीज लेकर उसे मिट्टी में डालने के लिये किसी को कृषि में प्रमाण-पत्र की आवश्यकता नहीं है। हालाँकि, इसके बाद जो कुछ भी होता है, उसका आश्चर्य और विस्मय हमें हमेशा आश्चर्यचकित करता है।

*और रात को सोए और दिन को जागे, और वह बीज ऐसे उगे और बढ़े कि वह न जाने। (4:27)*

बीज बोने के बाद किसान प्रतीक्षा करता है। वह और क्या कर सकता है? वह भूमि को पानी और खाद दे सकता है, परन्तु वह बीज को अंकुरित या विकसित नहीं कर सकता। अब सब कुछ परमेश्वर पर निर्भर है। जीवन का अंतिम रहस्य केवल उसके पास है। जीवविज्ञानी बीज को विच्छेदित कर सकता है और उसके विभिन्न भागों को उजागर और नाम दे सकता है। आनुवंशिकीविद् बातों की संरचना में और भी गहराई तक जा सकता है और बीज के आनुवंशिक भेद को परिभाषित कर सकता है। वह समान पौधों की नकल बना सकता है और उन्हें उत्पन्न कर सकता है। वह संकर पौधों का प्रजनन और उत्पादन कर सकता है। परन्तु यदि कोई जीवन नहीं है, तो यह सब व्यर्थ है। जैवजनन का नियम कहता है, “पूर्ववर्ती जीवन के बिना कोई जीवन नहीं हो सकता।” अंत में, सारा जीवन परमेश्वर से आता है। सबसे उत्साही विश्वासी किसी आत्मा को उतना ही परिवर्तित नहीं कर सकता जितना वह एक तारा बना सकता है। जीवन, विशेष रूप से आत्मिक जीवन, एक रहस्य बना हुआ है।

*पृथ्वी आप से आप फल लाती है, पहले अंकुर, तब बाल, और तब बालों में तैयार दाना। (4:28)*

समय बीतने के बाद, किसान, जो अपने दूसरे कामों में व्यस्त था, अपने खेत को देखने के लिये वापस आता है। आश्चर्यकर्म हो चुका है। खेत में हरियाली दिख रही है। मकई के छोटे-छोटे पत्ते भूमि से बाहर निकल रहे हैं। अब वह अक्सर विकास के आश्चर्यकर्म को देखने के लिये वापस आता है। पौधा बड़ा हो जाता है। वह परिपक्व हो जाता है। बालियाँ दिखाई देती हैं और फिर, सबसे बड़ा आश्चर्य, भुट्टा, मकई के दानों से भरा हुआ, आने वाली और फसलों का प्रतिज्ञा करता है।

परन्तु यह सब कैसे होता है? किसान को नहीं पता। उसे केवल इतना पता है कि ऐसा होता है। यह लगभग एक आम घटना है, जिसे वह अक्सर हल्के में लेता है, परन्तु सच्चाई यही है कि यह एक आश्चर्यकर्म है। किसान के खेत में उगने वाला हर डंठल एक आश्चर्यकर्म है। किसान का सारा श्रेय परमेश्वर को जाता है। वह एक चतुर और बुद्धिमान किसान हो सकता है; परन्तु, परमेश्वर के बिना, वह कुछ भी उत्पन्न नहीं कर सकता।

*परन्तु जब दाना पक जाता है, तब वह तुरन्त हँसिया लगाता है, क्योंकि कटनी आ पहुँची है। (4:29)*

अब यह फिर से किसान पर निर्भर है। परमेश्वर फसल उत्पन्न करने का आश्चर्यकर्म करता हैं, परन्तु अब फसल काटना और उसे बचाना किसान की जिम्मेदारी है। परमेश्वर हमारे लिये वह नहीं करता जो हम अपने लिये कर सकते हैं।

आत्मिक क्षेत्र में वृद्धि का नियम काम करता है। हम पवित्रशास्त्र के बीज बो सकते हैं, परन्तु उसके बाद, यह परमेश्वर के आत्मा पर निर्भर करता है। वह बीज को अंकुरित होने का कारण बनता है। वह इसके विकास के विभिन्न चरणों का निरीक्षण करता है। हम इसे अपने आँसुओं और प्रार्थनाओं से सींच सकते हैं, परन्तु हम आत्मिक विकास को उतना ही विवश कर सकते हैं जितना हम एक पौधे को बढ़ने के लिये व्यवस्थित कर सकते हैं। परन्तु हम फसल काट सकते हैं जब प्रक्रिया पूरी हो जाती है और बातों के बोने और काटने दोनों में अपना छोटा सा हिस्सा निभाने के लिये मसीह के न्याय-आसन से पुरस्कार की आशा कर सकते हैं।

*बढ़ना!* (4:30-32):

*फिर उसने कहा, “हम परमेश्‍वर के राज्य की उपमा किससे दें, और किस दृष्‍टान्त से उसका वर्णन करें?” (4:30)*

मत्ती ने इस अगले दृष्टान्त (राई के बीज का) और अन्य दृष्टान्तों को भी दर्ज किया है जिनका उल्लेख मरकुस ने नहीं किया है (मत्ती 13 अध्याय)। मत्ती के “राज्य” दृष्टान्तों और अन्य समकालिक सुसमाचारों में समान दृष्टान्तों में एक अलग जोर है। यूहन्ना उनमें से किसी का भी उल्लेख नहीं करता है। मत्ती में, *स्वर्ग के राज्य* पर जोर दिया गया है*,* और व्याख्या *व्यवस्थागत् है।* अन्य सुसमाचारों में परमेश्वर के राज्य पर जोर दिया गया है, और व्याख्या *भक्तिपूर्ण है।*

यहाँ हम देखते हैं कि प्रभु अपने मन में एक उदाहरण के लिये सोच रहा हैं। वह परमेश्वर के राज्य की तुलना किससे कर सकता है? यह सांसारिक राज्यों से बिलकुल अलग राज्य है, जहाँ अक्सर दुष्ट लोग सत्ता के आसन पर बैठते हैं, अपने पड़ोसियों के साथ युद्ध करते हैं, और अपने ही लोगों पर अत्याचार करते हैं। पुराने नियम में एक आदर्श राजा के लिये सबसे बढ़िया दृष्टिकोण दाऊद का था, परन्तु हम जानते हैं कि उसने कितना बुरा पाप किया और अपने अपराध को छिपाने के लिये उसने कितनी मनमाने ढंग से अपनी शक्ति का दुरुपयोग किया। एक आदर्श राज्य के लिये सबसे निकटतम दृष्टिकोण सुलैमान का था। इसने शिबा की रानी और सैदा के राजा हीराम दोनों की प्रशंसा जीती। यह शान्ति, समृद्धि और शक्ति से चिन्हित था। परन्तु सुलैमान बुरी तरह विफल रहा, और उसकी मृत्यु के बाद उसका राज्य बिखर गया।

इन सबका स्वरूप काफी स्पष्ट है। जब प्रभु वापस आएगा, तो वह उसी तरह शासन करेगा, जैसे दाऊद ने किया था और अपने सभी शत्रुओं को परास्त किया था। फिर वह उसी तरह शासन करेगा, जैसे सुलैमान ने समृद्धि और शान्ति से शासन किया था। हालाँकि, प्रभु अपने दृष्टान्त के लिये न तो दाऊद को और न ही सुलैमान को देखता है। वह इस्राएल के दो सबसे शानदार शासकों के राज्यों से कहीं अधिक आत्मिक बात चाहता था। दाऊद के अद्भुत गीत या सुलैमान की बुद्धिमानी भरी बातें भी उनकी असफलताओं की भरपाई करने के लिये पर्याप्त नहीं थीं। अत; प्रभु ने राष्ट्रीय क्षेत्र से प्राकृतिक क्षेत्र की ओर रुख किया और प्रकृति के संसार से एक और दृष्टान्त दिया।

*वह राई के दाने के समान है: जब भूमि में बोया जाता है तो भूमि के सब बीजों से छोटा होता है। (4:31)*कल्पना कीजिए कि चेलों को कितना आश्चर्य हुआ होगा जब उन्होंने यह सुना! प्रभु परमेश्वर के राज्य का वर्णन करने वाला था। उन्हें एक वैश्विक साम्राज्य के दर्शन हुए। उन्होंने नि:संदेह एक हाथीदांत महल, एक राजसी सिंहासन, एक चमचमाता दरबार, पृथ्वी के सुदूर क्षेत्रों से आए राजदूतों को दर्शकों के लिये लम्बी कतारों में प्रतीक्षा करते हुए, और एक शक्तिशाली, शानदार राजा के आदेश पर एक अजेय सेना की कल्पना की। वे उत्सुकता से प्रभु के द्वारा ऐसे राज्य के वर्णन की प्रतीक्षा कर रहे थे, जिसमें वे राज्य के उच्च सेवक होंगे। फिर उन्हें झटका लगा।

उसने कहा, “परमेश्वर का राज्य, राई के दाने के समान है।” वे आश्चर्य से उसे घूरते रहे होंगे। राई का दाना? अरे, वह तो कुछ भी नहीं था! आप उसे कठिनाई से देख सकते थे; वह इतना छोटा और महत्वहीन था।

आह! परन्तु इसमें जीवन था! यह बढ़ेगा! दृष्टान्त का सार बीज के आकार और पौधे के आकार के बीच के अंतर में निहित है जब इसे बोया जाता है। और जब यह बढ़ जाता है प्रत्येक मामले में, प्रभु ने जोर देने के लिये अतिशयोक्ति का उपयोग किया। परमेश्वर का राज्य मनुष्यों की दृष्टि में छोटा और महत्वहीन लगता है। प्रभु के दिन में, लोगों की इसके प्रति इतनी घृणा थी कि उन्होंने इसके राजा की हत्या कर दी। परन्तु जब यह पूरी तरह से विकसित हो जाएगा, जब यह अपनी पूरी क्षमता तक पहुँच जाएगा, तब वे इससे विस्मित हो जाएँगे!

*परन्तु जब बोया गया, तो उगकर सब सागपात से बड़ा हो जाता है, और उसकी ऐसी बड़ी डालियाँ निकलती हैं कि आकाश के पक्षी उसकी छाया में बसेरा कर सकते हैं। (4:32)*

लोगों को राय इस संसार में परमेश्वर के कार्य के बारे में खराब है, परन्तु यह वास्तव में बहुत बड़ा है। यह कई देशों तक फैला हुआ है। अकेले पिन्तेकुस्त के दिन, उस राज्य में तीन हज़ार आत्माएँ उत्पन्न हुईं। कौन बता सकता है कि उस दिन से हर दिन कितने लोगों को बचाया गया है? पवित्र आत्मा स्वयं काम का निरीक्षण करता है, और वह असफल नहीं हो सकता, चाहे लोग कुछ भी सोचें। हमारे समय में पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य का प्रतिनिधित्व कलीसिया, मसीह की देह के द्वारा किया जाता है (1 कुरिं. 12:12-13)।

जहाँ भी परमेश्वर का राज्य गया है, वह अपने साथ अस्पताल और पाठशालाएँ लेकर आया है; सत्य, नैतिकता और आचार-विचार; शालीनता और तरस; और सबसे बढ़कर, उद्धार। जहाँ भी सुसमाचार गया है, उसने नरभक्षण, बालक बलि, विधवाओं का बलिदान, बहुविवाह, दुष्टात्माओं की प्रथा, दासता और ऐसी ही हज़ारों अन्य बुराइयों को समाप्त कर दिया है। इसने अनाथालय और शरण-स्थल बनाए हैं, बीमारों की देखभाल की है, शोक संतप्त लोगों को सांत्वना दी है और बीमारों की सहायता की है। कई देशों में, यहाँ तक कि धर्मनिरपेक्ष सरकारों ने भी इसके पंथों से रंग लिया है। यहाँ तक कि असंरक्षित लोगों ने भी इसकी शाखाओं के नीचे आश्रय पाया है और इसकी छाया में आराम और बेहतर जीवनशैली पाई है।

**ख. इस पद्धति की सीमा (4:33-34)**

*वह उन्हें इस प्रकार के बहुत से दृष्‍टान्त दे देकर उनकी समझ के अनुसार वचन सुनाता था। (4:33)*

दृष्टान्त! वे उसकी शिक्षा का कितना अभिन्न अंग थे! उसने कहानियाँ सुनाईं; रूपकों का उपयोग किया; और खेतों, आकाश, समुद्र, रसोई, बाड़ और बाजार से समानताएँ खींचीं। उन्होंने कहा, “इस मनुष्य की तरह कभी कोई मनुष्य नहीं बोला।” फिर भी, उसे उनकी गति से आगे बढ़ना पड़ा।

पाप ने हमारे मनों को इतना अंधा कर दिया है, हमारे हृदयों को भ्रष्ट कर दिया है, और हमारी इच्छाशक्ति को इतना दुर्बल कर दिया है कि हम एक बार में सच्चाई का केवल थोड़ा सा ही हिस्सा ग्रहण कर पाते हैं। अक्सर, सुसमाचार को पूर्वाग्रह, पूर्वकल्पित विचारों, जड़ जमाए परम्पराओं, झूठे दर्शन और शत्रुतापूर्ण धर्मों का सामना करना पड़ता है। जिस तरह एक बच्चे को गिनना सीखना पड़ता है, फिर सरल अंकगणित करना सीखना पड़ता है, और फिर बीजगणित और कलन और त्रिकोणमिति पर जाने से पहले अंशों और लम्बे भाग की ओर बढ़ना पड़ता है, उसी तरह प्रभु को बहुत ही बुनियादी आत्मिक सत्यों से आरम्भ करना पड़ा, और यहाँ तक कि उसके चेलों को भी इन्हें समझना कठिन लगा।

*और बिना दृष्‍टान्त कहे वह उनसे कुछ भी नहीं कहता था; परन्तु एकान्त में वह अपने निज चेलों को सब बातों का अर्थ बताता था। (4:34)*

प्रभु ने अनगिनत आश्चर्यकर्म किए, परन्तु उनमें से केवल तीन दर्जन ही सुसमाचारों में दर्ज हैं। इसी तरह, उसने अनगिनत दृष्टान्त बताए, परन्तु हम निश्चित रूप से कह सकते हैं कि उनमें से सभी सुरक्षित नहीं हैं। फिर भी, उनमें से बहुत से दर्ज किए गए हैं ताकि हम उसकी बुद्धि और उसके वचनों पर आश्चर्यचकित हो सकें। वह एक विपुल प्रवक्ता था। मरकुस कहता हैं कि उसने कभी भी दृष्टान्तों का उपयोग किए बिना बात नहीं की। इससे संतुष्ट न होकर, वह अक्सर अपने चेलों को निजी तौर पर अधिक विस्तार से अपनी शिक्षाएँ समझाता था। यीशु की कुछ गहरी और अधिक गहन शिक्षाएँ प्रेरित यूहन्ना के लेखन में दर्ज हैं। यूहन्ना ने तीसरी पीढ़ी के लिये उस समय लिखा जब कलीसिया अच्छी तरह से स्थापित थी और उसके अधिकांश सिद्धांत पत्रियों में लिखे गए थे। यूहन्ना के द्वारा सिखाए गए अधिक परिपक्व सत्यों को समझने के लिये अधिक परिपक्व आयु लग गई।

**ख. वे कार्यकारी शक्ति वाले थे (4:35-5:43)**

**1. विपत्ति पर विजय (4:35-41)**

*उसी दिन जब साँझ हुई, तो उसने चेलों से कहा, “आओ, हम पार चलें।” (4:35)*

यह कैसा दिन था! उसने एक भयंकर दुष्टात्मा से पीड़ित व्यक्ति का सामना किया और उसे चंगा किया (मत्ती 12:22)। उसने अपने मित्रों (3:20-21) और अपने शत्रुओं (मत्ती 12:24) दोनों के विरोध का सामना किया था। उसने प्रचार किया था। वह थक गया था।

“पार” लगभग छह मील पानी के दूसरी तरफ था। कई चेले अनुभवी नाविक थे जिन्होंने वर्षों से इस झील में मछलियाँ पकड़ी थीं। वे इसके किनारों पर पले-बढ़े थे, इसका किनारा उनके बचपन का खेल का मैदान था, और वे इसके हर मोड़, धारा और भाव को जानते थे। ये लोग पतवार और पाल के साथ कुशल थे। जब प्रभु उस नाव पर चढ़ा तो वह सुरक्षित हाथों में था। बल्कि, जब *वह* नाव पर चढ़ा तो वे सुरक्षित हाथों में थे। फिर भी, उन्होंने सोचा कि यह उनका क्षेत्र है। वह नाव चलाना उन पर छोड़ सकता था।

*और वे भीड़ को छोड़कर जैसा वह था, वैसा ही उसे नाव पर साथ ले चले; और उसके साथ और भी नावें थीं। (4:36)*

यह लोगों की भीड़ के साथ एक व्यस्त दिन था, और उसने हर पल का आनन्द लिया, ठीक वैसे ही जैसे वह हर एक व्यक्ति से प्रेम करता था। परन्तु दिन समाप्त हो गया था, और आराम करने के लिये घर जाने का समय आ गया था। यहाँ तक कि सबसे उत्साही और भीड़ की सराहना करने वाले सबसे लोकप्रिय प्रचारक के लिये भी वह क्षण आता है जब भीड़ को विदा करना होता है।

आखिरकार भीड़भाड़ वाले लोग चले गए, नाव तैयार थी, और सहायक नावें किनारे से दूर जा रही थीं। अत; वह नाव पर चढ़ गया - “जैसा वह था,” मरकुस कहता है।

यही यीशु हमारी छोटी नावों पर भी आने को तैयार है। परन्तु हमें उसे वैसे ही स्वीकार करना चाहिए *जैसा वह है।* वह बदलने वाला नहीं है, परन्तु वह हमें बदल देगा। वह ऐसा ही है। वह प्रेमपूर्ण, बुद्धिमान, सामर्थी और पवित्र है। हम स्वार्थी, मूर्ख, दुर्बल और पापी हैं। वह जो है और हम जो हैं, दोनों एक साथ नहीं रह सकते। हममें से किसी एक को बदलना होगा। वह बदलने वाला नहीं है। वह “कल, आज और युगानुयुग एक जैसा है” (इब्रा. 13:8)। हम उसे वैसे ही स्वीकार करते हैं *जैसा वह है।* जब हम सुसमाचार का प्रचार करते हैं, तो हमें लोगों को यह बताने में अधिक सावधानी बरतनी चाहिए। जक्कई ने उसे वैसे ही स्वीकार किया जैसे वह था, और जक्कई बदल गया। पतरस ने उसे वैसे ही स्वीकार किया जैसा वह था, और पतरस बदल गया। कुछ लोगों के साथ, परिवर्तन अचानक, तेज और निश्चित होता है। अन्य लोगों के साथ इसमें अधिक समय लगता है। हालाँकि, हम उसे अपने जीवन में वैसे ही स्वीकार करते हैं, जैसा वह है क्योंकि वह हमें वैसा ही बनाना चाहता है जैसा वह है (1 यूह. 1:1-7)।

*तब बड़ी आँधी आई, और लहरें नाव पर यहाँ तक लगीं कि वह पानी से भरी जाती थी। (4:37)*

नाव पर मसीह की उपस्थिति एक सहज मार्ग का आश्वासन नहीं देती है। इसके विपरीत, शत्रु तूफान को भड़काने का पूरा प्रयत्न करेगा। कुछ प्रचारक जो कहते हैं उसे “समृद्धि का सुसमाचार” कहते हैं: मसीह को स्वीकार करें और धन, स्वास्थ्य और प्रसन्नता से पुरस्कृत हों। यह एक झूठा सुसमाचार है। धन्य वचन, जो पहाड़ी उपदेश के आरम्भ करते हैं, हमें उस तथ्य के बारे में आश्वस्त करना चाहिए (मत्ती 5:1-12)। विश्वासियों को बीमारी, कंगाली, प्राकृतिक आपदाओं, शोक, मृत्यु और जीवन की विभिन्न बीमारियों से छूट नहीं है। वह जो प्रतिज्ञा करता है वह तूफान *से* उसकी सुरक्षा नहीं हैबल्कितूफान *में* उसकी उपस्थिति है।

गलील की झील अपने अचानक और भयंकर तूफानों के लिये कुख्यात है जो आसपास की पहाड़ियों से आते हैं और पानी को उन्माद में बदल देते हैं। यह उस नाव पर काफी बुरा था जहाँ यीशु था। अन्य “छोटी नावों” पर क्या हुआ होगा, जिनमें वह सवार नहीं था! जीवन की अचानक आपदाएँ परमेश्वर के अपने लोगों को भी हिला देती हैं। उद्धारकर्ता के बिना जीवन की आपदाओं में से एक में फँसना कैसा होगा?

लहरें नाव से टकराने लगीं और, जल्द ही नाव भर गई। कोई भी दूसरी नाव डूब जाती। परन्तु वह नहीं! जैसा कि मैरी ए. बेकर के पुराने भजन “मास्टर द टेम्पेस्ट इज रेजिंग” में कहा गया है,

कोई भी समुद्र उस जहाज को नहीं निगल सकता,

जिसमें महासागर, पृथ्वी और आकाश का स्वामी लेटा हो।

*पर वह आप पिछले भाग में गद्दी पर सो रहा था। तब उन्होंने उसे जगाकर उससे कहा, “हे गुरु, क्या तुझे चिन्ता नहीं कि हम नष्‍ट हुए जाते हैं?” (4:38)*

चेलों ने उसके लिये नाव के पिछले हिस्से में एक जगह ढूँढ़ ली थी जहाँ वह सो सकता था। उन्होंने उसे एक तकिया भी दिया। जल्द ही वह गहरी नींद में सो गया। यह सब बहुत स्वाभाविक है, बहुत मानवीय है। हालाँकि यीशु वचन के पूर्ण अर्थ में परमेश्वर था, वह वास्तव में मनुष्य भी था। वह जानता था कि भूख और प्यास लगना, अपनी यात्रा से थक जाना और सो जाना कैसा होता है।

शाम की परछाई रात में गहरी होती गई। लहरें नाव से टकरा रही थीं। हवा शान्त और ठंडी थी। लोग कुशलता से नाव की पतवार खींच रहे थे। लहरों की गति और हवा की लोरी ने यीशु को धीरे से हिला दिया। सब ठीक था। महिमा का प्रभु सो गया। संयोग से, यह एकमात्र अवसर है जब हम यीशु के सोने के बारे में पढ़ते हैं। पूरा दृश्य उसकी मानवता को रेखांकित करता है।

अचानक, उन पर तूफान आ गया क्योंकि शैतान को अपना अवसर मिल गया था। प्रभु सो रहा था! वह निर्बल था! शैतान को बस इतना ही करना था कि उस नाव को डुबो दे! हवा गरज रही थी, लहरें उठ रही थीं, और नाव तूफान से हिल रही थी। चेले पूरी तरह भीग चुके थे और तेज हवा की दया पर आश्रित थे।

फिर उन्हें यीशु का ध्यान आया। उन्होंने उसे जगाया। उन्होंने पूछा, “क्या तुझे चिन्ता नहीं कि हम नष्‍ट हुए जाते हैं?” कैसी ढिठाई! हम उनकी असभ्यता के लिये उन्हें क्षमा कर सकते हैं क्योंकि वे घबरा गए थे। परन्तु कम से कम उन्हें पता था कि कहाँ मुड़ना है। उन्हें आश्चर्य हुआ होगा कि यीशु ऐसे आने वाले खतरे में भी, पूरी तरह से चिन्ताहीन होकर सो सकता था, जबकि उनका संसार टूट रहा था। वह मनुष्य था, और थकावट उसके लिये उचित थी। इसके अलावा, वह अपने पिता की देखभाल में था, और वह अच्छी तरह जानता था कि यह उसके पिता की इच्छा नहीं थी कि वह डूब जाए। इसके अलावा, उसके मरने का समय नहीं था। अत: वह सो गया। तूफान से उसे कोई डर नहीं था। तूफान की भयानक आवाज के पीछे शैतान की आवाज थी, परन्तु वह आवाज भी, अपनी सारी घृणा और द्वेष के साथ हवा और लहरों को उकसाते हुए, उसे परेशान नहीं कर सकती थी। वह शैतान या तूफान से भी बड़ा था। अत: वह सो गया।

*तब उसने उठकर आँधी को डाँटा, और पानी से कहा, “शान्त रह, थम जा!” और आँधी थम गई और बड़ा चैन हो गया। (4:39)*

हवा से उसने जो कहा और समुद्र से उसने जो कहा, उसके बीच के अंतर पर ध्यान दें। उसने हवा को डाँटा क्योंकि हवा ही लहरों को हिला रही थी, परन्तु उसने लहरों से “शान्त रहने” की बात की। स्पष्ट है, इसमें उससे कहीं अधिक था। हवा अक्सर दूसरी शक्तियों की दया पर निर्भर होती है - उच्च दबाव और निम्न दबाव, उच्च तापमान और निम्न तापमान का पूरा परिसर - जो उन शक्तियों का निर्माण करता है जो तूफान, बवंडर, चक्रवात और हवाओं को जन्म देती हैं, ऐसी शक्तियाँ जिन्हें हम केवल आंशिक रूप से ही समझ पाते हैं। वह उन सभी को जानता था। उसने उन्हें बनाया। उसके द्वारा एक वचन, और वे उसकी इच्छा पूरी करेंगे।

हालाँकि, इसमें और भी बहुत कुछ था। शायद हमेशा ऐसा ही होता है। बाइबल संकेत देती है कि जब तूफान संसार पर कहर बरपाते हैं तो कभी-कभी शैतानी शक्तियाँ शामिल होती हैं (प्रका. 7:1-3; 8:1-6)। लहरों के पीछे हवा थी, परन्तु हवा के पीछे स्वयं शैतान था, जो “आकाश के अधिकार का हाकिम” था (इफि. 2:2); इस कारण, उसे फटकार पड़ी। हवा को फटकारने के बाद, प्रभु ने लहरों से बात की। उसने कहा, “शान्त रह, थम जा।” बस इतना ही था। एक बार, हवा शान्त हो गई, और लहरें शान्त हो गईं। चीखती, चिल्लाती हवा और अशान्त, उछलती लहरों की जगह पूरी तरह से, तुरन्त शान्ति आ गई।

*और उनसे कहा, “तुम क्यों डरते हो? क्या तुम्हें अब तक विश्‍वास नहीं?” (4:40)*

विश्वास और भय एक दूसरे को समाप्त कर देते हैं। यदि हममें भय है, तो हममें विश्वास नहीं है; यदि हममें विश्वास है, तो हममें भय नहीं है। उनके भय ने उनके भरोसे की कमी को साबित कर दिया।

विश्वास! परन्तु अमूर्त में विश्वास नहीं, शून्य में विश्वास नहीं। विश्वास हमेशा एक वस्तु होता है। यह किसी बात या किसी व्यक्ति से जुड़ा होता है। जब हम विमान में चढ़ते हैं तो हम विमान चालक पर विश्वास करते हैं। जब हम अपनी जमा राशि सौंपते हैं तो हमें बैंक में विश्वास होता है। प्रभु ने अपने चेलों से पूछा कि उन्हें *उस* पर विश्वास क्यों नहीं है।

डी.एल. मूडी एक बार एक ऐसे व्यक्ति से मिले जिसने उनसे कहा कि वह भरोसा नहीं कर सकता। श्रीमान मूडी उसके साथ बहुत ही स्पष्ट थे। उन्होंने कहा, “हे जवान, तुम *किस पर* भरोसा नहीं कर सकते?” किसी से यह कहना अपमान की बात है कि हम उस पर भरोसा नहीं कर सकते। तो यह कहना कितना अधिक गम्भीर है कि हम परमेश्वर पर भरोसा नहीं कर सकते।

अत: यीशु ने उन्हें चुनौती दी। “तुम क्यों डरते हो? तुम में विश्वास क्यों नहीं है? तुम मुझ पर *भरोसा* क्यों नहीं कर सकते?” वह हम सभी से यही प्रश्न पूछता है।

*वे बहुत ही डर गए और आपस में बोले, “यह कौन है कि आँधी और पानी भी उसकी आज्ञा मानते हैं?” (4:41)*

अब उन्होंने अपना भय तूफान से हटाकर उद्धारकर्ता पर डाल दिया। वे उसके प्रश्न पर चुप हो गए, “तुम क्यों डरते हो?” अचानक, वे *उससे* डर गए*।* उन्होंने सैकड़ों आश्चर्यकर्म देखे थे, परन्तु वे सभी इस एक के सामने महत्वहीन हो गए। अचानक, उन्हें एहसास हुआ कि नासरत का यह यीशु, उनका बुद्धिमान शिक्षक, उनका अद्भुत मित्र, उनसे उतना ही दूर था जितना कि सबसे दूर का तारा।

उन्होंने पूछा, “यह कौन है?” वे उत्तर जानते थे; इसी कारण वे बहुत डर गए। वह स्वयं सृष्टिकर्ता था। ऐसा ही उन सैनिकों के साथ भी हुआ जिन्होंने मसीह को क्रूस पर चढ़ाया था। मत्ती याद करता हैं कि जब उन्होंने भूकंप और अन्य आश्चर्यकर्म देखे तो “वे बहुत डर गए” (मत्ती 27:54)।

**2. दुष्टात्माओं पर विजय (5:1-20)**

सबसे पहले, हमारे पास *आमना-सामना* है(5:1-5):

*वे झील के पार गिरासेनियों के देश में पहुँचे। (5:1)*

गिरासेनियों का देश झील के पूर्वी तट पर था, मगदला के सामने और उस जगह से पाँच मील की दूरी पर जहाँ यरदन नदी गलील की झील में गिरती थी। नगर से थोड़ी दूर दक्षिण में एक जगह थी जहाँ खड़ी पहाड़ियाँ पानी के करीब आती थीं।

यह एक जंगली और तूफानी रात थी। अब एक जंगली और तूफानी सुबह होने वाली थी। यीशु ने अभी-अभी खराब मौसम का सामना किया था। अब उसका सामना घोर दुष्टता से होता है।

इस अध्याय में प्रभु यीशु ने दुष्टात्माओं, बीमारी और मृत्यु से निपटा - जो मानवजाति के तीन सबसे बड़े भय हैं। उसने एक पुरुष, एक स्त्री और एक बच्चे को क्रमशः छुटकारा दिलाया। कितना अद्भुत उद्धारकर्ता है!

*जब वह नाव पर से उतरा तो तुरन्त एक मनुष्य जिसमें अशुद्ध आत्मा थी, कब्रों से निकलकर उसे मिला। वह कब्रों में रहा करता था और कोई उसे साँकलों से भी न बाँध सकता था। (5:2-3)*

वह मनुष्य आस-पड़ोस के लिये भय का कारण था। शैतान ने अभी-अभी प्रभु को डुबाने का प्रयत्न किया था; अब, उसने इस क्रूर दुष्टात्माओं के द्वारा उन्हें मरवाने का प्रयत्न किया। जब यह भयानक बर्बर प्रकट हुआ तो चेलों ने क्या सोचा, यह हमें नहीं बताया गया है। कम से कम इतना तो कहा ही जा सकता है कि वे डरे हुए होंगे। यह दुष्टात्मा से ग्रसित व्यक्ति केवल अनियंत्रित जुनून और क्रोध की जकड़ में नहीं था। न ही वह किसी अपराधी पागल के भ्रम का शिकार था। न ही वह कोई साधारण बुरी आत्मा थी, जो दुष्टात्मा से ग्रस्त था। यह शैतान का पुरस्कार प्रदर्शनी थी, एक ऐसा व्यक्ति जो बहुत सारी भयानक दुष्टात्माओं के द्वारा सताया और संचालित किया जा रहा था।

इस क्षेत्र में रहने वाले लोगों ने स्वयं को इस डरावने मनुष्य से बचाने का प्रयत्न किया। उन्होंने उसे जंजीरों में जकड़ दिया था। उन्होंने उसे जंगल में खदेड़ दिया था। अब वह पास की कब्रों में मरे हुओं के साथ रहता था - एक निर्धन, खोया हुआ, अकेला मनुष्य जिससे सभी घृणा करते थे, उसे त्यागते थे और जिससे सभी डरते थे।

हम नहीं जानते कि वह इस स्थिति में कैसे पहुँचा। दुष्टात्मा का नियंत्रण एक रहस्यमय परन्तु बहुत वास्तविक स्थिति है, जैसा कि मूर्तिपूजक देशों या अन्यजाति जनजातियों में काम करने वाला कोई भी मिशनरी गवाही दे सकता है। मूर्तिपूजा और दुष्टात्मा का नियंत्रण अक्सर जुड़वाँ होते हैं। जादू-टोने से छेड़छाड़, नशीली दवाओं में शामिल होना, घोर अनैतिकता और पंथीय शाकाहार ये सभी ऐसे तरीके हैं जिनसे दुष्टात्माएँ लोगों को पकड़ती हैं, उनके शरीर पर आक्रमण करती हैं और उनकी आत्माओं को नियंत्रित करती हैं। यीशु ने एक पागल और खतरनाक व्यक्ति के भयानक मलबे से परे देखा। उसने, सभी संघर्ष और भ्रम के नीचे, एक खोया हुआ और हताश व्यक्ति देखा।

*क्योंकि वह बार बार बेड़ियों और साँकलों से बाँधा गया था, पर उसने साँकलों को तोड़ दिया और बेड़ियों के टुकड़े टुकड़े कर दिए थे, और कोई उसे वश में नहीं कर सकता था। (5:4)*

समाज के द्वारा लगाए गए साधारण या कठोरतम प्रतिबंध भी विफल हो गए थे। उसे बंद करके रखना बेकार था। उसमें शैतानी शक्ति थी और कोई भी बन्दीगृह उसे नहीं रोक सकता था। आजकल लोग उस पर मनोविज्ञान आजमाते, परन्तु कोई भी विश्लेषण और सुधारात्मक चिकित्सा उसे थोड़ा सा भी लाभ नहीं पहुँचा पाती। कोई भी व्यक्ति उसे नियंत्रण में नहीं कर सकता था। यह मानसिक विकृति या साधारण पागलपन का मामला नहीं था; यह सीधे रूप से दुष्टात्मा के नियंत्रण का मामला था। और मनोविज्ञान, चाहे वह आदिम प्रकार का पुराना समय हो या आधुनिक समय का परिष्कृत प्रकार, दुष्टात्मा के नियंत्रण का इलाज नहीं कर सकता।

अत: उस मनुष्य को कब्रिस्तान में भटकने के लिये छोड़ दिया गया, और समझदार लोगों ने उसे अकेला छोड़ दिया और उससे दूरी बना ली।

*वह लगातार रात–दिन कब्रों और पहाड़ों में चिल्‍लाता, और अपने को पत्थरों से घायल करता था। (5:5)*

कम से कम लोगों को पता था कि वह कहाँ है; वे उसे सुन सकते थे। वह भेड़िये की तरह आसपास की पहाड़ियों में चिल्ला रहा था। बहुत पहले, उसकी करुण पुकारें परमेश्वर के हृदय तक पहुँच चुकी थीं और मसीह के हृदय को छू चुकी थीं। जैसे एक बार “उसे सामरिया से होकर जाना अवश्य था”, वैसे ही अब वह गदरेनियों की ओर जानबूझकर गया। वह इस निराशाजनक त्यागे हुए से मिलने आया था, ठीक उसी तरह जैसे वह कुएँ पर स्त्री से मिलने गया था।

इसके बाद *विरोधाभास* आता है(5:6-8):

*वह यीशु को दूर ही से देखकर दौड़ा, और उसे प्रणाम किया। (5:6)*

क्या बढ़िया बात है! वह कैसा दृश्य रहा होगा। उसका शरीर स्वयं के द्वारा लगाए गए घावों और पुराने निशानों से ढका हुआ था, उसके बाल और दाढ़ी लम्बे और उलझे हुए थे, और उसकी आँखें जल रही थीं। वह बिना नहाए था और या तो नंगा था या फटे-पुराने कपड़ों में लिपटा हुआ था।

जब कोई भी कब्रों के पास जाने वाले मार्गों से आता था, तो दुष्टात्मा से ग्रस्त व्यक्ति उसे हानि पहुँचाने के लिये उस पर हिंसक रूप से टूट पड़ता था। परन्तु जब यीशु आया, तो वह उसके सामने गिर पड़ा और उसकी आराधना की।

*और ऊँचे शब्द से चिल्‍लाकर कहा, “हे यीशु, परमप्रधान परमेश्‍वर के पुत्र, मुझे तुझ से क्या काम? मैं तुझे परमेश्‍वर की शपथ देता हूँ कि मुझे पीड़ा न दे।” (5:7)*

अब यह दुष्टात्मा बोल रही थी। दुष्टात्मा की आवाज आसानी से पहचानी जा सकती थी। उसने मसीह को परमेश्वर का पुत्र स्वीकार किया और फिर तुरन्त उसकी निन्दा की और उस पर अत्याचारी होने का आरोप लगाया।

सुसमाचार की कहानियों में, हम लगातार दुष्टात्माओं को प्रभु यीशु को तुरन्त पहचानते और उनके ईश्वरत्व को स्वीकार करते हुए देखते हैं और साथ ही स्वयं को उसकी आज्ञा मानने के लिये बाध्य मानते हैं। प्रभु ने आदत के अनुसार उन्हें चुप रहने का आदेश दिया और उनसे गवाही लेने से इन्कार कर दिया। आज तक, दुष्टात्माएँ, पवित्र आत्मा के रूप में दिखावा करते हुए, यह स्वीकार नहीं कर सकती हैं कि यीशु मसीह देहधारी होकर आया है – इसके परिणामस्वरूप, यह मानदंड एक दुष्टात्मा की उपस्थिति के लिये पवित्र आत्मा की अपनी आवश्यक परीक्षा बन गया है (1 यूह. 4:1-3)।

इस दु:खी व्यक्ति के शरीर में रहने वाली दुष्टात्माओं ने मसीह के ईश्वरत्व को श्रद्धा अर्पित की। वे उसका नाम भी जानते थे - यीशु - और उसे इस नाम से ही सम्बोधित करते थे, हालाँकि वे उस नाम से घृणा करते थे और उससे डरते थे और उसके ईश्वरत्व के समान ही उसकी मानवता से भी डरते थे। यीशु ने अपने चेलों से कहा, “तुम मुझे गुरु और प्रभु कहते हो, और ठीक कहते हो; क्योंकि मैं वही हूँ” (यूह. 13:13)। उसके पास जाते समय सम्बोधन का एक उचित रूप उपयोग किया जाना चाहिए। हमें उसे उसकी उपाधियाँ देनी चाहिए। नये नियम में, केवल दुष्टात्माओं ने ही उसे यीशु के नाम से सम्बोधित किया। हमें “उसका नाम व्यर्थ नहीं लेना चाहिए।”

*क्योंकि उसने उससे कहा था, “हे अशुद्ध आत्मा, इस मनुष्य में से निकल आ!” (5:8)*

शायद इसी तरह से इस बेचारे को सताने वाली दुष्टात्माओं को पता था कि कौन घटनास्थल पर आया है - आदेश में ईश्वरीय अधिकार की झलक से। अब दुष्टात्मा स्वयं भी डर गई और कुछ पलों के लिये रुक गई। हालाँकि, वे अच्छी तरह से जानते थे कि वे उस आदेश का विरोध नहीं कर सकते थे, जैसे बर्फ का एक टुकड़ा आग का विरोध नहीं कर सकता।

“इस मनुष्य में से निकल आ!” वे हड़पने वाली थीं। इस मनुष्य के शरीर और आत्मा पर उनका थोड़ा सा भी अधिकार नहीं था। वे उस पर हजारों की संख्या में चिपक गई थीं, जैसे बैक्टीरिया एक व्यक्ति पर चिपक जाते हैं। परन्तु वे घुसपैठिए और आक्रमणकारी थीं। जिस घर में वे किराए पर रहती थीं, उस पर उनका कोई वैध अधिकार नहीं था। वे यह जानती थीं, और यीशु भी इसे जानता था। वे स्थानीय लोगों के द्वारा इस मनुष्य को “वश में” करने के घटिया प्रयासों का उपहास कर सकती थीं, परन्तु वे मसीह का उपहास नहीं कर सकती थीं। हथियारबंद बलवान व्यक्ति अपनी चोरी की हुई वस्तुओं को सुरक्षिच रख सकता था, परन्तु अब वह व्यक्ति जो उससे अधिक शक्तिशाली था, आ गया था, और उनका समय समाप्त हो गया था।

फिर हमारे पास *अंगीकार हैं:*

*उसने उससे पूछा, “तेरा क्या नाम है?” उसने उससे कहा, “मेरा नाम सेना है; क्योंकि हम बहुत हैं।” (5:9)*

यहाँ हम पागलों की पहचान के भ्रम का एक चरम मामला देखते हैं। विभाजित व्यक्तित्व बिलकुल भी असामान्य नहीं हैं। *द थ्री फेसेस ऑफ ईव (The Three Faces of Eve)* नामक पुस्तक में*,* एक युवा स्त्री ने तीन पूरी तरह से अलग पहचान प्रदर्शित की, जिनमें से प्रत्येक स्वयं में निहित थी। पहेली यह तय करना था कि तीनों में से कौन असली स्त्री थी। उसके सलाहकारों ने एक मनोवैज्ञानिक स्पष्टीकरण खोजने का प्रयत्न किया। बाइबल आत्मिक निदान देगी और दुष्टात्मा के नियंत्रण की ओर संकेत करेगी।

गिरासेनियों के मामले में, उस व्यक्ति पर दुष्टात्माओं की एक सेना थी, जो हज़ारों की संख्या में थी। अपने नाम और पहचान के बारे में प्रभु के प्रश्न का उस व्यक्ति का उत्तर बहुत कुछ बताता है: *उसने* उससे कहा*,* “मेरा नाम सेना है; क्योंकि *हम* बहुत हैं।”प्रभु की उपस्थिति ने उसे अपने अस्तित्व की कुछ उलझन को सुलझाने में पहले ही सहायता कर दी थी। यह वह व्यक्ति ही था जिसने “सेना” कहा; सम्भवत: दुष्टात्माओं ने ही जोड़ा था “क्योंकि हम बहुत हैं।”

इसके बाद, हम *घबराहट देखते हैं* (5:10-12):

*और उसने उससे बहुत विनती की, “हमें इस देश से बाहर न भेज।” (5:10)*

स्पष्ट है, अब वह मनुष्य सभी दुष्टात्माओं का प्रवक्ता बन गया। यदि ऐसा है, तो इसका अर्थ है कि वह इन दुष्टात्माओं की संगति का इतना आदी हो गया था कि वह उनके बिना जीवन की कल्पना नहीं कर सकता। या तो ऐसा था या फिर उन्होंने उसकी आवाज पर पूरा नियंत्रण कर लिया और स्वयं ही प्रभु के प्रश्नों का उत्तर दिया था।

हमें आश्चर्य है कि वे देश से बाहर क्यों नहीं जाना चाहते थे। हम दानिय्येल की पुस्तक से सीखते हैं कि पतित स्वर्गदूत पतित मनुष्यों के मामलों पर शासन करते हैं। आत्मिक संसार में शैतान के प्रतिनिधि निर्दिष्ट क्षेत्रों पर शासन करते हैं। इस प्रकार, जिब्राईल ने दानिय्येल को फारस और यूनान के राजकुमारों (शैतानी प्राणियों) के बारे में बताया और उसे बताया कि प्रधान स्वर्गदूत मीकाएल परमेश्वर के द्वारा नियुक्त स्वर्गदूत था जो इब्रानी लोगों के मामलों की अध्यक्षता करता था (दानि. 10:11-21)। ये कुछ “प्रधानताएँ” हैं जिनके बारे में पौलुस बोलता है। वह “शक्तियों” और “इस संसार के अंधकार के हाकिमों” और “उस दुष्‍टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में हैं” (इफि. 6:12) का भी उल्लेख करता है। शैतान के अदृश्य साम्राज्य के संगठन में सम्भवत: दुष्टात्माएँ शामिल हैं, और उन्हें भी, संचालन करने के लिये क्षेत्रीय क्षेत्र दिए गए हैं। यदि ऐसा है, तो ये दुष्टात्माएँ, किसी कारण से, “देश” से निकाले जाने से भयभीत थे जहाँ वे छिपे हुए थे। हम नहीं जानते कि वे शैतान के साम्राज्य में अपने अधिपतियों से भयभीत थे, या शायद उन्हें मसीह के द्वारा सीधे नरक भेजे जाने का डर था।

*वहाँ पहाड़ पर सूअरों का एक बड़ा झुण्ड चर रहा था। उन्होंने उससे विनती करके कहा, “हमें उन सूअरों में भेज दे कि हम उनके भीतर जाएँ।” (5:11-12)*

टी.एच. हक्सले ने परमेश्वर के वचन के प्रति अपनी घोर अवमानना में, जो कुछ हुआ उसे “गिरासेनी सूअर का मामला” कहा। वह इसके बारे में बहुत कुछ जानता था! इस बार यह दुष्टात्माएँ थी जिन्होंने अपनी आवाजों की सेना को दुष्टात्माओं की आवाज में मिलाते हुए बात की। दुष्टात्माएँ, फिर से शरीर से अलग होने के डर से, पूरी तरह से शरीर से अलग होने के बजाय कुछ सूअरों के शरीर में प्रवेश करने की अनुमति चाहती थी। हालाँकि, उस निवास को लेने के लिये भी, उन्हें मसीह की अनुमति की आवश्यकता थी।

इसके बाद आती है *निन्दा:*

*अत: उसने उन्हें आज्ञा दी और अशुद्ध आत्मा निकलकर सूअरों के भीतर पैठ गईं और झुण्ड, जो कोई दो हज़ार का था, कड़ाड़े पर से झपटकर झील में जा पड़ा और डूब मरा। (5:13)*

अत: दुष्टात्माओं को जल्दी से जल्दी शरीर से निकाल दिया गया। सूअरों ने दुष्टात्माओं के नियंत्रण से अधिक मृत्यु को प्राथमिकता दी। रोमी सेना में, एक सेना में छह हज़ार पुरुष होते थे। इसका अर्थ यह होगा कि “लगभग दो हज़ार” सूअरों में से प्रत्येक को तीन दुष्टात्माओं ने जकड़ लिया था। उनके लिये यह पर्याप्त था। वे स्वयं को खड़ी ढलानों से नीचे झील में फेंक देते थे, जहाँ वे डूब जाते थे।

फिर हमारे पास *सलाह हैं* (5:14-17):

*उनके चरवाहों ने भागकर नगर और गाँवों में समाचार सुनाया, और जो हुआ था, लोग उसे देखने आए। (5:14)*

मूसा की व्यवस्था के तहत सूअर को अशुद्ध पशु माना जाता था। ये लोग, तब, एक अशुद्ध और अवैध व्यवसाय में लगे हुए थे। प्रभु की आलोचना दूसरों की सम्पत्ति को नष्ट करने के लिये की गई है। उसने ऐसा कुछ नहीं किया। वह देश का असली राजा था और उसे अपनी इच्छानुसार इसे साफ करने का पूरा अधिकार था। दो अवसरों पर, उसने मंदिर के आँगनों को अपवित्र व्यापार से मुक्त करने के लिये रस्सियों का कोड़ा लिया। क्या हम शिकायत करते हैं जब पुलिस कोकीन के भंडार को जब्त करके जला देती है?

हालाँकि, जब सूअरों ने उनका पीछा करना आरम्भ किया, तो सूअर चराने वाले भाग खड़े हुए! वे नगर में जाकर सूअरों के मालिकों को यह बताने लगे कि दुष्टात्मा से ग्रसित मनुष्य और सूअर दोनों के साथ क्या हुआ था। जल्द ही घटनास्थल पर भीड़ जमा हो गई, जो पहले झील और फिर प्रभु को देख रही थी। झील के किनारे दूर-दूर तक मृत पशुओं की लाशों से अटे पड़े थे। जहाँ तक भूतपूर्व दुष्टात्मा से ग्रसित मनुष्य का प्रश्न है, वह शान्त बैठा हुआ था। वे एक-दूसरे को घूर रहे थे। फिर उन्होंने यीशु की ओर देखा।

*यीशु के पास आकर वे उसको जिसमें दुष्‍टात्माएँ थीं, अर्थात् जिसमें सेना समाई थी, कपड़े पहिने और सचेत बैठे देखकर डर गए। (5:15)*

क्या आश्चर्यजनक बात है! वे डरे हुए थे! वे उस दुष्टात्मा से ग्रसित मनुष्य से तब डरते थे जब वह एक पागल से भी अधिक बुरा था। अब वे उसे देखकर डरे हुए थे, परन्तु अब एक बदला हुआ मनुष्य यीशु के पाँवों के पास बैठा हुआ था। यहाँ उनकी समझ से परे शक्ति थी। इसने उन्हें विस्मय और भय से भर दिया। वे पारदर्शी, विस्मयकारी अच्छाई, त्रुटिहीन पवित्रता, अलौकिक शक्ति और अजेय प्रेम के विरुद्ध थे। और उन्हें यह पसंद नहीं था। वे इससे पीछे हट गए। वे इससे डरते थे। शायद भूतपूर्व दुष्टात्मा से ग्रसित मनुष्य के जीवन में आए परिवर्तन ने उन्हें उसी नये जन्म की अपनी आवश्यकता के बारे में सोचने पर विवश कर दिया। उनमें से कुछ नि:संदेह अपने व्यवसाय के विध्वंस और अपनी अचल सम्पत्तियों की हानि से नाराज थे। उन्होंने उन सूअरों में बहुत पैसा लगाया था। परन्तु डर प्रमुख भावना थी।

*देखनेवालों ने उसका, जिसमें दुष्‍टात्माएँ थीं, और सूअरों का पूरा हाल उनको कह सुनाया। (5:16)*

नि:संदेह, ये प्रत्यक्षदर्शी सूअरपालक थे। या शायद यह नगर के लोगों का एक और समूह था जो उस पुरुष को एक बार फिर से बाँधने का प्रयत्न कर रहा था। किसी भी मामले में, चेले वहाँ थे, और उनकी गवाही नि:संदेह सुनी जाएगी।

*तब वे उससे विनती कर के कहने लगे कि हमारी सीमा से चला जा। (5:17)*

उन्होंने उससे चले जाने को कहा। ऐसा ही होता है मानवीय हृदय। एक ओर महिमा के प्रभु और एक परिवर्तित जीवन के प्रमाण का सामना करते हुए और दूसरी ओर अपने स्वयं के जीवन की चुनौती और सूअरों के झुण्ड की हानि का सामना करते हुए, उनका निर्णय यही था - “कृपया चले जाओ।” कितना दु:खद है, परन्तु कितनी बार दोहराया गया।

अन्त में, हमारे पास *अलगाव है* (5:18-20):

*जब वह नाव पर चढ़ने लगा तो वह जिसमें पहले दुष्‍टात्माएँ थीं, उससे विनती करने लगा, “मुझे अपने साथ रहने दे।” (5:18)*

प्रभु ने उनकी दयनीय प्रार्थना स्वीकार कर ली और जाने को तैयार हो गया। परन्तु स्वतंत्र हुआ दुष्टात्मा से ग्रसित मनुष्य नाव की ओर दौड़ा और प्रार्थना की कि उसे भी उसके साथ जाने की अनुमति दी जाए।

यह एक अलग तरह की प्रार्थना थी, एक कृतज्ञ हृदय की प्रार्थना। परिवर्तित व्यक्ति यीशु के साथ रहना चाहता था, उसका एक चेला बनना चाहता था, उसके साथ रहना चाहता था, अब से उसके चरणों में बैठना चाहता था। अत: उस दिन गिरासेनी का एक व्यक्ति आश्चर्य और कृतज्ञता से भरा हुआ था।

जहाँ तक प्रभु का प्रश्न है, नि:संदेह वह अपने प्रयासों के प्रति विरल प्रतिक्रिया का आदी था। उसने पहले ही इस तथ्य की घोषणा कर दी थी कि स्वर्ग का द्वार सकरा है, और जीवन की ओर ले जाने वाला मार्ग भी सकरा है, और कुछ ही लोग इसे पाएँगे - इसके विपरीत जो लोग चौड़े द्वार से प्रवेश करते हैं और विनाश के लिये चौड़े मार्ग पर चलते हैं (मत्ती 7:13-14)। प्रभु के राज्य के दृष्टान्त (मत्ती 13 अध्याय) ने भी यही कहानी बताई, और जब उसने दस कोढ़ियों को शुद्ध किया, तो केवल एक ही धन्यवाद देने के लिये लौटा (लूका 17:17)।

*परन्तु उसने उसे आज्ञा न दी, और उससे कहा, “अपने घर जाकर अपने लोगों को बता कि तुझ पर दया करके प्रभु ने तेरे लिये कैसे बड़े काम किए हैं।” (5:19)*

प्रभु ने उस व्यक्ति की विनती अस्वीकार कर दी। उसे अपने परिवार, अपने पड़ोसियों और अपने मित्रों के लिये एक गृह मिशनरी बनना था। वह जो सबके लिये भय का कारण था, अब सभी के सामने अपनी गवाही देने वाला था: एक बार वह शरीर और आत्मा से बंधा हुआ था, परन्तु अब वह स्वतंत्र था। यह सब इसलिये हुआ क्योंकि वह प्रभु यीशु मसीह से मिला था! प्रभु को चले जाने के लिये कहा गया था, परन्तु लोग इस व्यक्ति से ऐसा शायद ही कह सकते थे, जो अपना पूरा जीवन वहीं रहा था। उसे उनके बीच मसीह को जीना था, ताकि जब यीशु उस मार्गों से वापस आए, जैसा कि वह आया था, तो वे उसका स्वागत करने के लिये तैयार हों।

*वह जाकर दिकापुलिस में इस बात का प्रचार करने लगा कि यीशु ने मेरे लिये कैसे बड़े काम किए; और सब लोग अचम्भा करते थे। (5:20)*

दिकापुलिस मुख्य राजमार्ग पर दस नगरों का एक ढीला-ढाला समूह था जो मरुस्थल के किनारे दमिश्क से अरब तक जाता था और तीन सड़कों के साथ जो उस मुख्य मार्ग को एस्ड्रेलोन से जोड़ती थीं। गिरासेनी उन दस नगरों में से एक था। आबादी में भारी संख्या में यूनानी भाषा के लोग थे, यूनानी भाषा के लोग सिकंदर की विजय के बाद बहुत पहले यहाँ आए थे।

परिवर्तित व्यक्ति ने अपनी गवाही को अपने गृहनगर तक सीमित नहीं रखा, बल्कि पूरे क्षेत्र में सुसमाचार को फैलाया। प्रभु ने उसके लिये महान कार्य किए थे। उसके शरीर पर निशान थे जो उन दिनों की गवाही देते थे जब उसने अपने उन्माद में स्वयं को विकृत कर लिया था और जब उसे जंजीरों से बांध दिया गया था। वह मसीह के प्रेम और परमेश्वर की सामर्थ्य की एक जीवित पत्री था। उसे बहुत क्षमा किया गया था, और उसने बहुत प्रेम किया था। और लोग आश्चर्यचकित थे। इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता था कि उसके जीवन में एक महान आश्चर्यकर्म हुआ था।

**3. बीमारी पर विजय (5:21-34)**

**क. याईर और उसका परिचय (5:21-24)**

सबसे पहले हम *शासक पर ध्यान देते हैं* (5:21-23):

*जब यीशु फिर नाव से पार गया, तो एक बड़ी भीड़ उसके पास इकट्ठी हो गई। वह झील के किनारे ही था कि (5:21)*

प्रभु वहाँ नहीं रुका जहाँ उसे नहीं बुलाया गया था। वह झील के पश्चिमी किनारे पर वापस लौटा और कफरनहूम वापस चला गया, जहाँ उसने अपना घर बनाया। जल्द ही उसके पास फिर से भीड़ आ गई। मरकुस ने लिखा, “वह झील के पास था।” सम्भवत: लोगों ने नाव को आते देखा और संदेश फैलाया। उन्हें उसकी शिक्षाएँ पसंद आईं, जो इतनी सरल और इतनी उत्कृष्ट थीं। उन्हें उसके आश्चर्यकर्म और भी अधिक पसंद आए। उन्हें वह अधिकार भी पसंद आया जिसके साथ उसने बात की और अपने आलोचकों को फटकार लगाई। वह उस समय के सबसे लोकप्रिय उपदेशक था।

*याईर नामक आराधनालय के सरदारों में से एक आया, और उसे देखकर उसके पाँवों पर गिरा। (5:22)*

अब याईर आया जो आराधनालय के शासकों में से एक था। आराधनालय का शासक एक ऐसा व्यक्ति था जिसका यहूदी सम्मान करते थे। यह बिलकुल भी असम्भव नहीं है कि यह व्यक्ति उस यहूदी प्रतिनिधिमण्डल का सदस्य रहा हो जिसने रोमी सेनापति के पक्ष में पैरवी की थी जिसने कफरनहूम आराधनालय का निर्माण किया था और जिसके सेवक को यीशु ने आश्चर्यकर्म के रूप में चंगा किया था। अत: उस शासक को प्रभु की उद्धार करने की सामर्थ्य का प्रत्यक्ष ज्ञान था। जब आराधनालय का शासक यीशु के पास पहुँचा, तो वह सहज रूप से अपने आप को पूरी तरह से अपमानित महसूस करते हुए यीशु के पाँवों पर गिर पड़ा। वह एक ऐसी आवश्यकता के प्रति सचेत था, जो शब्दों से परे थी, एक ऐसी आवश्यकता जिसे केवल यीशु ही पूरा कर सकता था।

*और यह कहकर उससे बहुत विनती की, “मेरी छोटी बेटी मरने पर है : तू आकर उस पर हाथ रख कि वह चंगी होकर जीवित रहे।” (5:23)*

उसे इस बात में कोई संदेह नहीं था कि यीशु में चंगा करने की सामर्थ्य थी क्योंकि उसने उसे दूसरों को चंगा करते देखा था। किसी तरह उसने यह धारणा बना ली थी कि चंगा करने के लिये यीशु का उपस्थित होना आवश्यक है।

जिन लोगों ने किसी लाडली बच्ची को बहुत बीमार पड़ते, चिकित्सकों की सारी कुशलता का विरोध करते, और निर्बल होते हुए देखा है, जब तक कि मृत्यु की छाया उस प्यारे से चेहरे पर न आ जाए, वे इस पिता की पीड़ा को जानते हैं। नि:संदेह, यीशु, जो कई बार कफरनहूम के आराधनालय में गया था, इस छोटी लड़की को जानता था। वह बारह वर्ष की थी (आयत 42)।

आगे, *प्रत्युत्तर (प्रतिक्रिया)* पर ध्यान दें(5:24):

*तब वह उसके साथ चला; और बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली, यहाँ तक कि लोग उस पर गिरे पड़ते थे। (5:24)*

प्रभु यीशु ने बिना कोई टिप्पणी किए तुरन्त उत्तर दिया और याईर के घर की ओर चल पड़ा। आश्चर्यकर्मों के लिये अच्छी तरह से विकसित भूख के साथ भीड़, धक्का-मुक्की करते हुए आगे बढ़ी, हर कोई सबसे अच्छा दृश्य पाने के लिये करीब आने के लिये उत्सुक था। हर कोई याईर और उसकी छोटी लड़की को जानता था - कम से कम कफरनहूम में हर कोई और आराधनालय में जाने वाले सभी लोग।

**ख. यीशु और बाधा (5:25-34)**

**(1) वह स्त्री जो खोजती है (5:25-28)**

हम उसकी दशा पर ध्यान देते हैं (5:25-26):

*एक स्त्री थी, जिसको बारह वर्ष से लहू बहने का रोग था। (5:25)*

हालाँकि, एक रुकावट आने वाली थी, जो बेचारे याईर को विचलित कर देगी। फिर भी, रुकावट उत्पन्न करने वाली स्त्री भी हताश थी। याईर ने बारह वर्ष तक प्रसन्नता का आनन्द लिया था; इस बेचारी स्त्री ने बारह वर्ष तक निराशा को सहन किया था। यदि वह वास्तव में बहिष्कृत नहीं थी (लैव्य. 12:4-8; 15:19-33), मूसा की व्यवस्था के तहत, उसके दु:ख ने उसे अछूत बना दिया। उसकी बीमारी अपवित्र और दुर्बल करने वाली थी। इसने उसे समाज और पवित्र स्थान से अलग कर दिया। और यह बारह वर्ष तक चली थी।

*उसने बहुत वैद्यों से बड़ा दु:ख उठाया, और अपना सब माल व्यय करने पर भी उसे कुछ लाभ न हुआ था, परन्तु और भी रोगी हो गई थी। (5:26)*

उसे शर्मिंदगी, पीड़ा, निराशा और आर्थिक बर्बादी का सामना करना पड़ा था। चिकित्सक उसकी बीमारी का पता नहीं लगा पाए और न ही उसका इलाज कर पाए। उन्होंने बेकार के नुस्खे लिखे, अपना शुल्क लिया और फिर जब उससे और पैसे नहीं मिल पाए तो उन्होंने उसे छोड़ दिया। सब कुछ होने के बावजूद उसकी हालत और खराब होती गई।

यह वास्तव में आशाहीन निराशा की एक दु:खद कहानी थी। अब, लहू से लथपथ, टूटी हुई और दिवालिया होकर, वह यीशु की ओर मुड़ी।

*उसके आगमन (आने)* परभी ध्यान देते हैं:

*वह यीशु की चर्चा सुनकर भीड़ में उसके पीछे से आई और उसके वस्त्र को छू लिया। (5:27)*

किसी ने उसे यीशु के बारे में शुभ समाचार सुनाया। उसने सुना और वह आई। यही तरीका है। हालाँकि, कुलीन नीकुदेमुस की तरह, उसने गुप्त रूप से यीशु के पास आने का निर्णय किया। उसके मामले में, वह चिकित्सकों के द्वारा छोड़े जाने और उकसाए जाने से थक गई थी, उस अवांछित प्रचार से थक गई थी जो उसके साथ चिपक गया था और उसे अस्वीकार का पात्र बना दिया था। कोई भी उसे दोष नहीं दे सकता। किसी भी मामले में, वह आई।

इसके अलावा, हम *उसके आत्मविश्वास* पर भी ध्यान देते हैं*:*

*क्योंकि वह कहती थी, “यदि मैं उसके वस्त्र ही को छू लूँगी, तो चंगी हो जाऊँगी।” (5:28)*

मसीह में उसका आत्मविश्वास (भरोसा) इतना था। उसने सोचा कि उसके वस्त्र भी सामर्थ्य से भरपूर हैं। परन्तु वह बहुत गलत नहीं थी। रूपांतरण के पर्वत पर उसके वस्त्र सफेद और चमकदार हो गए। वे उसकी महिमा में भागीदार थे। उन्हें उसकी शक्ति में भागीदार क्यों नहीं होना चाहिए? आखिरकार, हमारे वस्त्र हमारी बीमारियों में भागीदार हैं। कौन कोढ़ी का वस्त्र धारण करना चाहेगा? अत: इस स्त्री का विश्वास बहुत बढ़ गया। वह मसीह में अपने पूर्ण विश्वास की अभिव्यक्ति में अकेली खड़ी है।

**(2) उसने जो आश्चर्यकर्म किया (5:29-34)**

ध्यान दें *कि उसने उसके शरीर को कैसे चंगा किया* (5:29-32):

*और तुरन्त उसका लहू बहना बन्द हो गया, और उसने अपनी देह में जान लिया कि मैं उस बीमारी से अच्छी हो गई हूँ। (5:29)*

उसका विश्वास गलत नहीं था। उसका तर्क बिलकुल सही था। उसका इलाज तुरन्त और पूरा हो गया था। उसने *सच्चाई से* आरम्भ किया था। प्रभु की सामर्थ्य इतनी अचूक थी, वह बचाने में इतना शक्तिशाली था कि एक स्पर्श ही पर्याप्त था, यहाँ तक कि उसके वस्त्र का एक स्पर्श, यहाँ तक कि उसके वस्त्र के छोर का एक स्पर्श। सच्चाई का अनुसरण *विश्वास* द्वारा किया गया था। वह आई! उसने छुआ! यह काम कर गया! यह विश्वास था, मसीह में उसका व्यक्तिगत् विश्वास, जिसने उसे उन सभी से अलग किया जो उसके पास आए थे। उन्होंने भी उसे छुआ, परन्तु उन्हें कुछ नहीं हुआ। आज भी, कई लोग उसके सम्पर्क में आते हैं, परन्तु वे वैसे ही चले जाते हैं जैसे वे आए थे। अंत में, उसके पास *भावनाएँ* थीं।कई लोग चाहते हैं कि भावनाएँ पहले आएँ। हालाँकि, उद्धार भावनाओं पर आधारित नहीं है। भावनाएँ एक परिवर्तित जीवन का परिणाम हैं। वह जानती थी, अपने भीतर गहराई से, कि उसके साथ कुछ अद्भुत हुआ है। उसने इसे अपने शरीर में महसूस किया। वह फिर कभी वैसी नहीं हो पाएगी।

*यीशु ने तुरन्त अपने में जान लिया कि मुझ में से सामर्थ्य निकली है, और भीड़ में पीछे फिरकर पूछा, “मेरा वस्त्र किसने छुआ?” (5:30)*

वह तुरन्त जान गया कि सामर्थ्य उससे निकल चुकी है। वह जानता था कि उसके वस्त्र को विश्वास के हाथ ने छुआ है। वह जानता था कि किसके के द्वारा छुआ गया है! परन्तु अब वह उस स्त्री की भलाई के लिये सार्वजनिक अंगीकार चाहता था। अन्यथा, वह अपने साथ यह डर लेकर चल सकती थी कि उसकी आशीष, जो एक तरह से चोरी करके प्राप्त की गयी थी, शायद टिक न पाए। प्रभु नहीं चाहता था कि वह एक पीड़ित शरीर को एक पीड़ित मन से बदले।

अत: वह रुक गया और पीछे मुड़ा, और भीड़ रुक गई और लोग अभी भी उसके पीछे दब रहे थे। उसने पूछा, “मेरा वस्त्र किसने छुआ?” उस भीड़ में से केवल एक व्यक्ति को पता था कि उसने ऐसा क्यों पूछा, और वह वहीं रुक गई। उसका हृदय रुक गया।

*उसके चेलों ने उससे कहा, “तू देखता है कि भीड़ तुझ पर गिरी पड़ती है, और तू कहता है कि किसने मुझे छुआ?” (5:31)*

उसके चेले चकित थे। भीड़ के कारण प्रभु बेचारे याईर के घर की ओर कठिनाई से चल पा रहा था! यह कैसा प्रश्न था? हालाँकि, प्रभु उनसे बात नहीं कर रहा था। हालाँकि, उसके और उनके अर्थात् चेलों के बीच, एक बहुत बड़ी खाई रखी गई थी। ऐसा ही तब भी हुआ था जब उसने कुएँ पर स्त्री से बात की थी, जब उसने धनी युवा शासक की निराश आशाओं पर टिप्पणी की थी, जब माताएँ अपने बच्चों को उसके पास लेकर आई थीं, जब उसने स्वर्ग की रोटी के बारे में बात की थी, और जब वे कलवरी के कुछ ही घंटे पहले आपस में झगड़ रहे थे कि कौन सबसे बड़ा होगा। ऐसा ही तब भी हुआ जब उसने उनसे कहा कि, मुकुट पहनाए जाने की बात तो दूर, उसे क्रूस पर चढ़ाया जाएगा। वास्तव में, ऐसा लगता है कि उन्होंने बहुत कम ही समझा है। हमारे साथ भी ऐसा ही है; हम हर समय उसके तरीकों पर प्रश्न उठाते हैं।

इस बात पर भी ध्यान दें कि उसने उस स्त्री के विश्वास पर कैसे छाप लगाई थी (5:33-34):

*तब उसने उसे देखने के लिये जिसने यह काम किया था, चारों ओर दृष्‍टि की। (5:32)*

उसका प्रश्न बेकार नहीं था। वह उस स्त्री को खोजने के लिये इधर-उधर देखने लगा। जब वह देख रहा था, तब भी वह अपना मन बना रही थी। उसके पास आने के लिये पर्याप्त विश्वास था, परन्तु क्या उसके पास अंगीकार करने के लिये पर्याप्त साहस होगा? गुप्त चेले निर्बल चेले होते हैं। हमें “अपने मुँह से प्रभु यीशु को अंगीकार करना है” और साथ ही “अपने हृदय में विश्वास करना है कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया है” (रोमि. 10:9)।

*तब वह स्त्री यह जानकर कि मेरी कैसी भलाई हुई है, डरती और काँपती हुई आई, और उसके पाँवों पर गिरकर उससे सब हाल सच–सच कह दिया। (5:33)*

यीशु उस पूरी कहानी को पहले से ही जानता था, परन्तु वह उसके मुँह से सुनना चाहता था। कई वर्ष पहले, याकूब ने एक आशीष चुराने का प्रयत्न किया था। इससे उसे बंधुआई और संघर्ष के वर्षों के अलावा कुछ नहीं मिला था। प्रभु इस स्त्री को याकूब की गलती नहीं करने देगा।

जहाँ तक उस स्त्री की बात है, विश्वास और भावनाओं ने अब भय को जन्म दे दिया था। वह किस बात से इतनी डरी हुई थी? क्या उसे लगता था कि प्रभु उसे दण्डित करने जा रहा है? निश्चित रूप से वह प्रभु को इससे बेहतर जानती थी! क्या उसे लोगों की अफवाहों से डर लगता था, नि:संदेह, जिनमें से कुछ उसके पड़ोसी भी थे? वह चाहे जिस बात से डरती थी, वह यीशु के पास आई और अपने हृदय की सारी बातें उसके सामने रख दीं। उसने यीशु को पूरी दु:खद कहानी सुनाई। बारह वर्ष की पीड़ा! आशाहीन चिकित्सक! उसका सारा पैसा समाप्त हो गया! उसकी हालत - इतनी गंदी, इतनी दुर्बल करने वाली, इतनी लज्जाजनक और इतनी सामाजिक रूप से निंदनीय - केवल बदतर होती जा रही थी। उसने बताया कि उसने प्रभु को कैसे सुना और काम करते हुए देखा था। उसकी नयी आशा! उसकी छोटी सी योजना! और अब वह पूरी तरह से ठीक हो गई थी! परन्तु अब उसे नये डर सता रहे थे कि कहीं उसका इलाज चुराकर उससे छीन न लिया जाए।

*उसने उससे कहा, “पुत्री, तेरे विश्‍वास ने तुझे चंगा किया है: कुशल से जा, और अपनी इस बीमारी से बची रह।” (5:34)*

कोई दोष नहीं! केवल आनन्द! उसने कहा, “पुत्री!” जैसे ही उसने उसे अपने परिवार में शामिल किया और *उसके* विश्वास पर *छाप लगाई,* “तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है। कुशल से जा!” उसने *उसके डर को शान्त किया।* “, और अपनी इस बीमारी से बची रह!” उसने कहा और *उसका भविष्य सुरक्षित कर दिया।* केवल डेढ़ दर्जन शब्द, परन्तु उन्होंने उसकी आत्मा में आनन्द की घंटियाँ बजा दीं।

इस बीच, याईर इस विलम्ब के कारण बेचैनी से खड़ा था। उसकी बेटी मर रही थी। यह स्त्री आधे घंटे और क्यों नहीं रुक सकती थी? यीशु को इतना समय क्यों लग रहा था?

**4. मृत्यु पर विजय (5:35-43)**

**क. याईर के लिये समाचार (5:35)**

*वह यह कह ही रहा था कि आराधनालय के सरदार के घर से लोगों ने आकर कहा, “तेरी बेटी तो मर गई, अब गुरु को क्यों दु:ख देता है?” (5:35)*

अब याईर के लिये कड़वा समाचार आया। उसकी बेटी मर चुकी थी। वास्तव में यह बुरा समाचार था, जो बेबाकी से बताया गया था। यह समाचार उन लोगों ने बताया जो प्रभु को कम जानते थे। उन्होंने पूछा, “अब तू गुरु को क्यों दु:ख देता है?” कि मानो कोई भी आवश्यकता में पड़ा व्यक्ति उसके लिये परेशानी का मुद्दा बन सकता है! कि मानो, जबकि वह नि:संदेह चंगाई का आश्चर्यकर्म कर सकता था, कोई भी, यहाँ तक कि वह भी, मरे हुओं के बारे में कुछ नहीं कर सकता था। याईर स्वयं निराशा में डूब गया। उसकी एक आशा - यीशु को समय पर अपनी बेटी के पास लाने की - टूट गई।

अरे क्यों, अरे क्यों, यीशु झील के उस पार चला गया, जहाँ आवश्यकता के इस समय में उस तक कोई नहीं पहुँच सकता था? वह स्त्री ठीक उसी समय क्यों आई? जब यीशु का अपना मामला इतना गम्भीर था, तो क्यों उसने रुककर उसके साथ इतना समय बिताया? और अब बहुत देर हो चुकी थी। उसकी प्यारी बच्ची मर चुकी थी।

**ख. यीशु की कोमलता (5:36-43)**

सबसे पहले *शान्ति का शब्द आता है:*

*जो बात वे कह रहे थे, उस को यीशु ने अनसुनी करके, आराधनालय के सरदार से कहा, “मत डर; केवल विश्‍वास रख।” (5:36)*

विश्वास और भय अलग-अलग दिशाओं में खींचते हैं। प्रभु ने याईर के चेहरे पर घोर निराशा और हताशा देखी। उसकी छोटी लड़की मर चुकी थी! सब कुछ समाप्त हो चुका था! जो कुछ बचा था वह था अंतिम संस्कार और मेज पर खाली कुर्सी, कोने में खाली बिस्तर, खाली घर और खाली हृदय।

कोई भी मरे हुओं को जीवित नहीं कर सकता था। याईर बहुत से अंतिम संस्कारों में जा चुका था। जब तक जीवन था, तब तक आशा थी। अब कुछ भी नहीं था। मरे हुओं के बारे में कौन कुछ कर सकता था? नि:संदेह, बाइबल में एलिय्याह और एलीशा के द्वारा मरे हुओं को जीवित करने की कहानियाँ थीं, ठीक वैसे ही जैसे मूसा के द्वारा मिस्र देश के पानी को लहू में बदलने और सिंहों की माँद में दानिय्येल के बारे में कहानियाँ थीं। परन्तु यह बाइबल के समय की बात है। यह बहुत समय पहले की बात है। यह अब नहीं हो सकता।

परन्तु क्यों नहीं? क्या यीशु ने इसी क्षण एक ऐसी स्त्री को चंगा नहीं किया था जो बारह वर्षों से एक लाइलाज बीमारी से पीड़ित थी? बारह वर्ष! जिस समय उसकी छोटी बेटी का जन्म हुआ, उसी समय उसे रक्तस्राव आरम्भ हो गया था। उस स्त्री के लिये बारह वर्ष भयावह थे, और याईर के लिये बारह वर्ष प्रसन्नता के। और यीशु ने उसे चंगा कर दिया था। निश्चित रूप से *इस* तथ्य ने उसे प्रभावित किया होगा। परन्तु नहीं! अब यीशु भी कुछ नहीं कर सकता था। याईर की छोटी बेटी मर चुकी थी।

यीशु ने उस मनुष्य के चेहरे पर पूरे संघर्ष को पढ़ा और निराशा को जीतते देखा। “डर मत,” उसने कहा, “केवल विश्वास रख।” उसने अभी-अभी उस पाठ पर उपदेश दिया था। उसने कहा था,“तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है।” “अब तो, हे याईर, तेरे पास आने के लिये पर्याप्त विश्वास था। मेरे मित्र, उस पर फिर से पकड़ बना। विश्वास कर! *मेरी ओर देख* और विश्वास कर। यहाँ मूसा, एलिय्याह, एलीशा या दानिय्येल से भी महान उपस्थित है।”

फिर *एक धारणा का वचन आता है* (5:37-40):

*और उसने पतरस और याकूब और याकूब के भाई यूहन्ना को छोड़, अन्य किसी को अपने साथ आने न दिया। (5:37)*

प्रभु, अब अपना सबसे महान आश्चर्यकर्म करने वाला था, वहअपने तीन करीबी चेलों को अपने साथ मृत्यु कक्ष में ले गया, जहाँ वह छोटी सी लोथ पड़ी थी।

यह एक पारिवारिक मामला था। यीशु कोई मंच वाला जादूगर नहीं था, न ही कोई आधुनिक “विश्वास चंगाईकर्ता” जो दर्शकों के लिये नाटक कर रहा हो। यह आश्चर्यकर्म, जो कि उसका सबसे बड़ा आश्चर्यकर्म था, निजी रूप से किया जाना था। यह याईर और उसके निजी दु:ख के लिये चिन्ता का विषय था, जितना कि किसी और बात के लिये। फिर भी, मृत्यु की भयानक शक्ति को चुनौती दी जाने वाली थी। कुछ ऐसा होने वाला था जो आदम और हव्वा को मृत्युदंड सुनाए जाने के बाद से शायद ही कभी हुआ था, अत: गवाह आवश्यक थे। सभी बारह चेले बहुत अधिक होंगे। पहले से ही पेशेवर शोक मनाने वाले याईर के घर में भीड़ लगा रहे थे। क्योंकि व्यवस्था के अनुसार सत्य को स्थापित करने के लिये “दो या तीन गवाहों” की उपस्थिति आवश्यक थी, इसलिये यीशु ने अपने तीन सबसे करीबी मित्रों को चुना, जो आरम्भ से ही उसके साथ थे।

*आराधनालय के सरदार के घर में पहुँचकर, उसने लोगों को बहुत रोते और चिल्‍लाते देखा। (5:38)*

यह पहली बार नहीं था कि उसने वास्तविक हृदय विदारक भावना को किराए के शोक मनाने वालों के पेशेवर विलाप के साथ मिला हुआ देखा था। यह बात हमें विचित्र लगती है कि लोग अंतिम संस्कार में आकर रोने के लिये दूसरों को पैसे देते हैं। विवाह के रीति-रिवाजों और जन्म और युवावस्था समारोहों की तरह अंतिम संस्कार की प्रथाएँ संसार भर में व्यापक रूप से भिन्न हैं और हर युग में अलग-अलग रही हैं। हालाँकि, प्रभु ने रीति-रिवाज के लिये रीति-रिवाजों का पालन नहीं किया। उसने जल्द ही उन लोगों के बीच अंतर किया जो असली आँसू बहाते थे और जो पैसे के लिये विलाप करते थे।

*तब उसने भीतर जाकर उनसे कहा, “तुम क्यों हल्‍ला मचाते और रोते हो? लड़की मरी नहीं, परन्तु सो रही है।” (5:39)*

जब उसने सुना कि उसका मित्र लाजर मर चुका है, तो उसने भी लगभग यही बात कही (यूह. 11:11-13)। यहाँ नींद का अर्थ आत्मा से नहीं है, जो कभी नहीं सोती; इसका अर्थ शरीर से है। इस प्रकार, प्रभु ने एक बच्चे और एक विश्वासी की मृत्यु को नींद से अधिक भयानक या अस्वाभाविक नहीं माना। नींद से कौन डरता है? हम नींद का स्वागत करते हैं। भजनकार कहता है, “वह अपने प्रियों को योंही नींद प्रदान करता है” (\_\_भजन\_\_127:2)।

नींद आना एक विचित्र घटना है। हम थक जाते हैं, उबासी लेने लगते हैं, अपने बिस्तर की खोज करते हैं और सो जाते हैं। कभी-कभी नींद आसानी से आ जाती है; कभी-कभी, हम इसके आने से पहले करवटें बदलते हैं। कई बार ऐसा भी होता है जब हम इससे लड़ते हैं। हम सो जाते हैं; आखिरकार, और निरीक्षक शरीर को देखता है, उसकी आँखें बंद हैं, बिस्तर पर पड़ा हुआ है “संसार के लिये मृत।” परन्तु यह मरा नहीं है। कायाकल्प की एक रहस्यमय प्रक्रिया चल रही है क्योंकि शरीर एक नये दिन के लिये स्वयं को फिर से नया करता है।

हालाँकि, प्रभु ने नींद और मृत्यु के बीच समानता देखी। नींद एक चित्रण है, जो परमेश्वर के हाथ से बनाया गया है, जो हमें हमारी नश्वरता और एक शानदार सुबह की निश्चितता की याद दिलाता है जो अभी भी आने वाली है और एक नये, अनन्त दिन के लिये एक अद्भुत जागृति की याद दिलाता है।

*वे उसकी हँसी करने लगे, परन्तु उसने सब को निकाल कर लड़की के माता–पिता और अपने साथियों के साथ भीतर, जहाँ लड़की पड़ी थी, गया। (5:40)*

वे उसका मजाक उड़ा रहे थे। वे कितने मूर्ख थे! उसने तुरन्त कार्यभार सम्भाल लिया। कुछ लोगों को बाहर निकाल दिया गया; अन्य लोगों को लाया गया। हमेशा ऐसा ही होता है। उपहास करने वालों को कम महत्व दिया गया; वे बाहर चले गए। यह आत्मा की एक अंधकारमय और भयावह स्थिति होगी जो किसी को परमेश्वर के पुत्र का उपहास करने के लिये प्रेरित करेगी। ठीक है, ऐसे लोगों का अपना दिन होता है, फिर वे बाहर चले जाते हैं। रोने से लेकर अश्लील हँसी में उनका परिवर्तन कितना अचानक हुआ! उनका निष्कासन कितना पूर्ण और सम्पूर्ण था। आने वाले दिन, उपहास करने से लेकर रोने, विलाप करने और दाँत पीसने तक का कितना तेज परिवर्तन होगा!

मेरे पुस्तकालय में *द पिलग्रिम्स प्रोग्रेस* कीएक सचित्र प्रति है। एक पूर्ण-रंगीन थाली में नास्तिक को दर्शाया गया है। वह एक अच्छी तरह से तैयार, समृद्ध, बूढ़ा मनुष्य है जो एक खाई के किनारे खड़ा है। वह नहीं देख रहा है कि वह कहाँ जा रहा है। असल में, उसके हाथ में जो छड़ी है और जिस पर वह अपना वजन डालने वाला है, वह खाड़ी के ऊपर खड़ी है। उसके चेहरे पर एक व्यंग्यात्मक, मजाक वाला भाव है। उसका पूरा व्यवहार तिरस्कार से भरा हुआ है। वह इस बात से अनजान है कि वह मृत्यु से बस एक हृदय की धड़कन दूर है।

अत:, याईर के घर पर कुछ लोगों को बाहर निकाल दिया गया, और कुछ लोगों को भीतर ले जाया गया। कोई आश्चर्य नहीं कि परमेश्वर नास्तिक को मूर्ख कहता है (भजन 14:1)! केवल पाँच लोगों ने देखा कि आगे क्या हुआ - बच्चे के माता-पिता और प्रभु के तीन सबसे प्यारे सांसारिक मित्र।

अब *सामर्थ्य* का वचन आता है (5:41-42):

*और लड़की का हाथ पकड़कर उससे कहा, “तलीता कूमी!” जिसका अर्थ है, “हे लड़की, मैं तुझ से कहता हूँ, उठ!” (5:41)*

उसने मृत बच्ची को उसकी मूल अरामी भाषा में सम्बोधित किया। *तली शब्द* शरीर के लिये है; *तलीता शब्द* लड़की के लिये है। *कूमी शब्द* का अर्थ है “उठ!” उसे बस इतना ही करना था और कहना था - उसका हाथ थाम लो और उसे उठने के लिये कहना! दो शब्द और आत्मा उस बूढ़े सिंह, मृत्यु के मुँह से छीन ली गई। बच्ची के पीले गाल नये जीवन से लाल हो गए। उसकी पलकें फड़क उठीं। उसने अपनी आँखें खोलीं, यीशु को देखा, और उठ बैठी! बस ऐसे ही! यह नये नियम की चंगाई शैली है!

*और लड़की तुरन्त उठकर चलने फिरने लगी; क्योंकि वह बारह वर्ष की थी। इस पर लोग बहुत चकित हो गए। (5:42)*

वह जल्दी ही बिस्तर से उठ गई! एक पल में, वह उठकर चलने लगी। कमरे में मौजूद सात लोगों में से पाँच लोग उसे घूरते रहे। जल्द ही वह छोटी लड़की एक से दूसरे के पास भागती हुई जाने लगी, वह स्वास्थ्य और शक्ति की एक बेहतरीन तस्वीर थी। यहाँ कोई धीरे-धीरे होने वाला सुधार नहीं था! यहाँ कोई लम्बा स्वास्थ्य लाभ नहीं था! यहाँ एक बच्ची थी जो एक पल में बिलकुल मृत थी, और अगले ही पल बिलकुल जीवित। न ही उसे फिर से बीमारी होने का कोई खतरा था। यहाँ वास्तव में ईश्वरीय चंगाई थी! कोई सामूहिक बैठकें नहीं, कोई दिखावा नहीं, कोई चाल या नौटंकी नहीं, कोई प्रचार या शोर नहीं, कोई दान नहीं, और कोई विफलता शामिल नहीं थी।

मरकुस ने रोचक बात यह भी कही कि वह लड़की बारह वर्ष की थी। उसे देखते हुए यीशु को नि:संदेह याद होगा कि वह स्वयं बारह वर्ष का था। यही वह आयु थी जब उसे ठीक से पता था कि वह कौन है, उसका पिता कौन है और उसका काम क्या है। उस बारह वर्ष की लड़की का पालन-पोषण करना उसके पिता के काम का हिस्सा था।

और अंत में, *सावधानी का एक वचन है:*

*फिर उसने उन्हें चिताकर आज्ञा दी कि यह बात कोई जानने न पाए और कहा, “इसे कुछ खाने को दो।” (5:43)*

पहले ही काफी हंगामा हो चुका था। अंतिम बात जो छोटी लड़की चाहती थी, वह थी उसकी निजता पर सनसनी फैलाने वाली भीड़ का आक्रमण। पैसे लेकर शोक मनाने वाले और द्वार पर भीड़ लगाने वाले लोग - उन सभी को वहीं रहने दो। यदि उन्हें एक बार पता चल जाए कि क्या हुआ है, तो वे भीतर जाने के लिये शोर मचा देंगे। वे हज़ारों प्रश्न पूछना चाहेंगे और अद्भुत बच्ची को छूना चाहेंगे। नहीं! उन्हें बाहर ही रहने दो। इसके बजाय, बच्ची को कुछ खाने को दो। आखिरकार, उसकी बीमारी ने उसके भंडार को समाप्त कर दिया था। अब जीवन को सामान्य रूप से चलने दो। बच्चे के खाने के लिये मेज पर कुछ रखो! कितना व्यावहारिक सामान्य ज्ञान! इसने जीवन को सामान्य रूप से चलने के लिये मंच तैयार किया, हालाँकि यह पहले जैसा कभी नहीं हो सकता था।

उसने नाश्ते में क्या खाया? क्या यीशु ने रोटी को आशीष दी और तोड़ा? शायद नहीं। नि:संदेह, वह और उसके मित्र चले गए, और फिर से मिले परिवार को उनके आश्चर्यकर्म का आनन्द लेने के लिये छोड़ दिया। नि:संदेह, कई उत्सुक आँखें उन्हें जाते हुए देख रही थीं। नि:संदेह, कई लोग यह भी जानना चाहते थे कि क्या हुआ था। वे आश्चर्यचकित रह गए। यीशु बस चला गया।

**खंड 3—रूपरेखा**

**खंड 3: सेवकों के तरीके (6:1-8:26)**

1. परमेश्‍वर के सेवक के प्रति दूसरों का रवैया (6:1-29)
   1. घर पर रवैया (6:1-13)
      1. गृहनगर मण्डली के द्वारा व्यक्त अस्वीकृति (6:1-6)
         1. स्थिति (6:1)
         2. आराधनालय (6:2a)
         3. उपहास (6:2b-3)
            1. एक आलोचनात्मक समीक्षा (6:2b-3a)

वे उसकी प्रसिद्धि को जानते थे (6:2b-c)

उसकी बुद्धि की ख्याति (6:2b)

उसके कार्यों की महिमा (6:2c)

वे उसके परिवार को जानते थे (6:3a)

* + - * 1. एक महत्वपूर्ण अस्वीकृति (6:3b)
      1. उद्धारकर्ता (6:4-6)
         1. उसकी पहली प्रतिक्रिया (6:4-5)

उसने एक संदेश दिया (6:4)

उसने अपनी सेवकाई को छोटा कर दिया (6:5)

* + - * 1. उसकी आगे की प्रतिक्रिया (6:6)

वह आश्चर्यचकित हुआ (6:6a)

वह चला गया (6:6b)

* + 1. गृहनगर में अस्वीकृति की आशा (6:7-13)
       1. आदेश (6:7)
          1. उनकी भर्ती (7:7a-b)

बारह (6:7a)

दो-दो करके (6:7b)

* + - * 1. उनकी सक्षमता (6:7c)
      1. आज्ञाएँ (6:8-11)
         1. जो उन्हें ग्रहण करेंगे (6:8-10)

विश्वास से जीवन बिताना (6:8-9)

परिवारों के साथ रहना (6:10)

* + - * 1. जो लोग उनका इन्कार करेंगे (6:11)

एक प्रतीकात्मक कार्य (6:11a)

भयंकर विनाश (6:11b)

* + - 1. अभियान (6:12-13)
         1. सन्देश (6:12)
         2. आश्चर्यकर्म (6:13)

दुष्टात्माओं को निकालना (6:13a)

बीमारों को चंगा करना (6:13b)

* 1. हेरोदेस का रवैया (6:14-29)
     1. हेरोदेस का विवेक (6:14-16)
        1. वह भूत जो उसे सताता था (6:14-15)
           1. यीशु के बारे में उसका व्यक्तिगत् दृष्टिकोण (6:14)

उसने जो सुना (6:14a)

उसके पास क्या था (6:14b)

* + - * 1. यीशु के बारे में उसके लोगों का दृष्टिकोण (6:15)
      1. अपराध बोध उसे सताता रहा (6:16)
         1. वह हत्या जिसने उसे पीड़ा पहुँचाई (6:16a)
         2. वह व्यक्ति जिसने उसे भयभीत कर दिया (6:16b)
    1. हेरोदेस का अपराध (6:17-29)
       1. यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले की गिरफ़्तारी (6:17-20)
          1. हेरोदेस के तर्क (6:17-18)

निर्बल इच्छाशक्ति (6:17a)

एक दुष्ट स्त्री (6:17b)

एक चेतावनी वचन (6:18)

* + - * 1. हेरोदेस की प्रतिक्रियाएँ (6:19-20)

जहाँ उसने रेखा खींची (6:19)

उसने रेखा क्यों खींची (6:20)

* + - 1. यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले की हत्या (6:21-29)
         1. दिन (6:21)
         2. नृत्य (6:22-23)

प्रदर्शन (6:22)

प्रतिज्ञा (6:23)

* + - * 1. माँग (6:24-25)

उसने किससे माँगा (6:24)

उसने क्या माँगा (6:25)

* + - * 1. निराशा (6:26)
        2. कार्य (6:27)
        3. भोजन (6:28)
        4. चेले (6:29)

**खंड 3: सेवकों के तरीके (6:1-8:26)**

**क. परमेश्वर के सेवक के प्रति दूसरों का रवैया (6:1-29) 1. घर पर रवैया (6:1-13)**

**क. गृहनगर मण्डली के द्वारा व्यक्त अस्वीकृति (6:1-6)**

*वहाँ से निकल कर वह अपने देश में आया, और उसके चेले भी उसके पीछे गए। (6:1)*

वह सेवकाई के एक शानदार और सफल दौरे के बाद घर लौट रहा था। कुछ समय से प्रभु ने कफरनहूम को अपना मुख्यालय बना रखा था, परन्तु इस अवसर पर वह अपने परिवार और अपने बचपन और युवावस्था के मित्रों से मिलने के लिये नासरत वापस जा रहा था। एक नियम के रूप में, किसी व्यक्ति के मन में घर जाने की उत्सुकता होती है, विशेष रूप से उस जगह पर जहाँ उसका बचपन खुशहाल रहा हो। घर एक ऐसी जगह है जहाँ उसे प्रेम किया जाता है, जाना जाता है, और जहाँ उसे उसके वास्तविक रूप में स्वीकार किया जाता है, एक ऐसी जगह जहाँ कोई अपने जूते उतार सकता है और खाने के लिये कुछ ढूँढ़ सकता है। घर हज़ारों यादों का स्थान है। घर वह जगह है जहाँ कोई सड़क पर चलता है और पुरानी जानी-पहचानी जगहों को देखता है और हर मोड़ पर पड़ोसियों और परिचितों का अभिवादन करता है। वहाँ दूधवाला है! और वहाँ गाँव का पकाने हारा है! और वहाँ बढ़ई की दुकान है! यह सब कितना छोटा हो गया लगता है!

*सब्त के दिन वह आराधनालय में उपदेश करने लगा, और बहुत से लोग सुनकर चकित हुए और कहने लगे, “इस को ये बातें कहाँ से आ गईं? यह कौन सा ज्ञान है जो उसको दिया गया है? कैसे सामर्थ्य के काम इसके हाथों से प्रगट होते हैं? (6:2)*

सब्त के दिन वह आराधनालय में अपने सामान्य आसन पर बैठा था और उसे शिक्षा देने के लिये आमंत्रित किया गया था। नि:संदेह, उसकी प्रसिद्धि उससे पहले ही हो चुकी थी। फिर भी, लोगों ने जो सुना उसके लिये वे तैयार नहीं थे। वे मुँह खोले बैठे थे - उसके भाई और उसकी बहनें, शायद सभी बड़े हो गए हैं और अब विवाहित हैं और सम्भवत: उनके अपने बच्चे भी हैं, और वहाँ दूधवाला, स्थानीय कसाई, लोहार और कुछ स्थानीय किसान भी थे।

उन्होंने प्रभु यीशु की बात ऐसे सुनी जैसे उन्होंने पहले कभी नहीं सुनी थी। धीरे-धीरे उन्हें एहसास हुआ कि वह प्रसिद्ध था। इसके अलावा, उसने अंतर्दृष्टि और अधिकार के साथ शिक्षा दी। उसने पुराने सत्यों को एक नयी ज्योति में प्रस्तुत किया और उन सभी परम्पराओं को हटा दिया जो रब्बियों को बहुत पसंद थीं। उसकी शिक्षाएँ प्रतिदिन के जीवन से लिये गए उदाहरणों से भरी थीं। यह हृदय, मन, इच्छा और विवेक को आकर्षित करती थी। उन्होंने पहले कभी ऐसी शिक्षा नहीं सुनी थी।

परन्तु, उनके लिये, वह अभी भी एक स्थानीय लड़का ही था। वे उस छोटे से गाँव की पाठशाला को जानते थे जहाँ वह गया था। वे उस स्थानीय रब्बी को जानते थे जिसने उसे इब्रानी भाषा और पवित्रशास्त्र की मूल बातें सिखाई थीं। उसने निश्चित रूप से अपना ज्ञान, समझ और बुद्धि *उससे* नहीं प्राप्त की थी।तो यह बुद्धि और सामर्थ्य कहाँ से आई? वह इतना कुछ कैसे जानता था? उसने इस तरह बोलना कहाँ से सीखा? और, गलील में उसके बारे में प्रचलित कहानियों को देखते हुए, वह, जो पहले गाँव का बढ़ई था, इन आश्चर्यकर्मों को करने में कैसे सक्षम था?

*क्या यह वही बढ़ई नहीं, जो मरियम का पुत्र, और याकूब, योसेस, यहूदा, और शमौन का भाई है? क्या उसकी बहनें यहाँ हमारे बीच में नहीं रहतीं?” इसलिये उन्होंने उसके विषय में ठोकर खाई। (6:3)*

वे उसे “बढ़ई” कहकर पुकारते थे। एक गाँव के बढ़ई को उपदेशक बनने का क्या अधिकार था? उसे ऐसा क्यों लगा कि वह अपने भाई-बहनों से बेहतर है? उन्होंने उसके भाई-बहनों के नाम कंठस्थ कर लिये थे।

मानवीय रूप से कहें तो, प्रभु के कम से कम चार छोटे भाई और दो छोटी बहनें थीं। उनमें से कोई भी असाधारण नहीं था। वह इतना अलग कैसे हो गया? इससे उनके अभिमान को ठेस पहुँची और उनकी ईर्ष्या और नाराजगी भड़क उठी कि वह इतना अलग था। उसे जीवन में अपने पद से ऊपर उठने का क्या अधिकार था? एक बार बढ़ई, तो हमेशा बढ़ई! यही उनका दर्शन था। वे उस पर छोटी सोच के साथ नाराज होते थे।

उन्होंने उसके पिता का उल्लेख नहीं किया। हालाँकि, उन्होंने उसकी माता का उल्लेख किया। मरकुस हमें यह नहीं बताता कि वे उसके जन्म की परिस्थितियों के बारे में क्या सोचते थे, परन्तु यही पूरी बात का अंतिम स्पष्टीकरण था। उसकी माता, मरियम, राजसी वंश की गाँव की लड़कियों में से एक थी, परन्तु फिर भी एक किसान थी - और उसका कोई मानवीय पिता नहीं था।

वह परमेश्वर का पुत्र था। *यही* उनके प्रश्न का उत्तर था। यही उसके अद्भुत वचनों और शक्तिशाली कार्यों का स्रोत था। निश्चित रूप से यह स्पष्ट होना चाहिए था।

“उन्होंने उसके विषय में ठोकर खाई।” क्यों? उसने अच्छाई के अलावा और क्या किया था? उसने सत्य के अलावा और क्या कहा था? उनकी राय में, यह केवल इतना था कि वह केवल गाँव का लड़का था जिसे वे जानते थे, उनमें से कुछ लोग तीस वर्ष से जानते थे। उनकी राय में, उसे एक ग्रामीण ही रहना चाहिए था और स्थानीय बढ़ई बनकर संतुष्ट रहना चाहिए था।

*यीशु ने उनसे कहा, “भविष्यद्वक्‍ता का अपने देश, और अपने कुटुम्ब, और अपने घर को छोड़ और कहीं भी निरादर नहीं होता।” (6:4)*

परमेश्वर के पुत्र के गृहस्थ जीवन का यह कितना बड़ा प्रकाशन है! उसके अपने जन्मजात भाई-बहन यह स्पष्ट नहीं देख पाए कि वह उनसे अलग था। उसने कभी झगड़ा नहीं किया, कभी अपना आपा नहीं खोया, कभी झूठ नहीं बोला, और कभी स्वार्थी तरीके से काम नहीं किया। वह कभी अनाज्ञाकारी नहीं था, कभी अशिष्ट नहीं था, और कभी भी चिड़चिड़ा नहीं था। वे उसकी पूर्ण अच्छाई और उसकी अद्भुत विनीतता के इतने आदी थे कि वे इसे देख ही नहीं पाए।

जहाँ तक गाँव की बात है, यह किसी भी अन्य गाँव की तरह ही था, जिसमें सभी प्रकार के लोग थे, जिसमें संकीर्ण सोच वाले और स्थानीय चरित्र भी शामिल थे। स्थानीय लड़का जो बाहर जाता है और व्यवसाय, शैक्षणिक, राजनीतिक या धार्मिक संसार पर जबरदस्त प्रभाव डालता है, उसे अक्सर स्थानीय लोगों के बीच उतना ही नापसंद किया जाता है जितना कि उसकी प्रशंसा की जाती है जहाँ वह उत्पन्न हुआ और पला-बढ़ा। नासरत के नगरवासियों की संकीर्ण सोच के लिये प्रभु का उत्तर उन्हें एक कहावत उद्धृत करना था, जिसका अंग्रेजी भाषा का समकक्ष होगा, “परिचितता अवमानना को जन्म देती है।”

*वह वहाँ कोई सामर्थ्य का काम न कर सका, केवल थोड़े–से बीमारों पर हाथ रखकर उन्हें चंगा किया। (6:5)*

उनके अविश्वास ने नासरत में उसके द्वारा किए जाने वाले हर काम में बाधा उत्पन्न की। उसने कुछ बीमार लोगों को चंगा किया, बस इतना ही। वे कौन थे? हम सोचते हैं। और केवल वे कुछ ही क्यों और कोई नहीं? यह संदेहियों को चुप कराने के लिये पर्याप्त था। हो सकता है कि जिन लोगों को उसने चंगा किया, वे उनकी आयु, उनके परिवारों पर पड़ने वाले बोझ या सम्भवत: इस कारण उसकी दया के पात्र थे क्योंकि वे नियम के अपवाद थे और उन्होंने उसमें वह देखा जो दूसरे नहीं देख पाए।

*और उसे उनके अविश्‍वास पर आश्‍चर्य हुआ, और वह चारों ओर के गाँवों में उपदेश करता फिरा। (6:6)*

ऐसी बहुत सी बातें नहीं थीं जिन पर वह आश्चर्यचकित हो सकता था। सितारों में उसके लिये आश्चर्यचकित होने के लिये कुछ भी नहीं था, चाहे वे कितने भी भयानक क्यों न हों। वह उन सभी को संख्या से जानता था (भजन 147:4) और नाम से (यशा. 40:26)। भजनकार को जिस बात ने विस्मित किया, वह थी हमारी शारीरिक संरचना की अद्भुत जटिलता (भजन 139:14-16)। उसने हमें स्वयं बनाया था और कोशिका की प्रकृति और आनुवंशिक भेद के रहस्यों को पूरी तरह से समझा था। सामान्य मानवीय आत्मिक अंधेपन में उसके लिये आश्चर्यचकित होने के लिये कुछ भी नहीं था। वह पतन की सम्पूर्णता को किसी से भी बेहतर जानता था। वह आदम को उसके पतन से पहले और बाद में जानता था।

जिस बात ने उसे अचम्भित किया वह था *उनका* अविश्वास। वह तीस वर्ष तक उनके बीच रहा था। उसने उनके सामने अपनी सम्पूर्ण मानवता का प्रदर्शन किया था। उन्होंने गलील के सभी हिस्सों से उसके ईश्वरत्व और आश्चर्यकर्म के बाद आश्चर्यकर्म में अलौकिक सामर्थ्य के प्रकट होने की कहानियाँ सुनी थीं। उनमें से कई ने इनमें से कुछ आश्चर्यकर्मों को स्वयं देखा था। फिर भी, जब वह उनके सामने खड़ा था, कई शक्तिशाली कार्यों में अपने ईश्वरत्व को प्रदर्शित करने के लिये तैयार और इच्छुक था, तो उन्होंने उसे ठंडे, आलोचनात्मक और कटु अविश्वास में घूर कर देखा। वह इस तथ्य पर, अपने ही गृहनगर की शत्रुता पर आश्चर्यचकित था।

**ख. गृहनगर में अस्वीकृति की आशा (6:7-13)**

अत: वह कहीं और चला गया - छोटे, पिछड़े गाँवों में - और उसने शिक्षण पर ध्यान केंद्रित किया, जो आश्चर्यकर्म करने से कहीं अधिक स्थायी और लाभदायक कार्य था। इस *आदेश* पर ध्यान दें:

*उसने बारहों को अपने पास बुलाया और उन्हें दो दो करके भेजने लगा; और उन्हें अशुद्ध आत्माओं पर अधिकार दिया। (6:7)*

यदि नासरत में उसका कोई भाग नहीं होता, तो भी पूरे देश तक पहुँचना बाकी था। नासरत को अपनी दुष्टता को सहने दो। वह सामर्थ्य और आश्चर्यकर्म से सुसज्जित बारहों को भेजकर स्वयं को बढ़ाएगा, ताकि पूरे देश में सुसमाचार की शुभ संदेश फैल जाए।

चेलों को जोड़े में भेजना एक अच्छी और बुद्धिमानी भरी योजना थी। पुराने समय के बुद्धिमान व्यक्ति ने कहा, “एक से दो अच्छे हैं” (सभो. 4:9-12), और वे वैसे ही हैं। वे एक दूसरे को प्रोत्साहित कर सकते हैं, एक दूसरे की गवाही का समर्थन कर सकते हैं (व्यव. 17:6), और परमेश्वर में एक दूसरे का हाथ मजबूत कर सकते हैं। यह जानना रोचक होगा कि उसने किसके साथ किसको जाने के लिये चुना! उदाहरण के लिये, उसने शमौन जेलोतेस के साथ किसे भेजा? और यहूदा के साथ कौन गया? यदि हम जोड़ों का चयन कर रहे होते, तो हम किसको साथ में जोड़ते? और क्यों? क्या *हम जिन लोगों को* जोड़े के रूप में चुनते, वे वही लोग होते जिन्हें *उसने* चुना? निश्चित रूप से उसने उन्हें उनकी शक्ति और कमजोरियों और उनके सापेक्ष स्वभाव, योग्यता और विश्वास के अनुसार जोड़ा। किसी भी मामले में, उसने कोई गलती नहीं की, हम इस बात को लेकर आश्वस्त हो सकते हैं।

उसने उन्हें अशुद्ध आत्माओं पर अधिकार दिया। यही वह विशेष तथ्य था जिसने मरकुस की रुचि को आकर्षित किया। ऐसा लगता है कि उस समय देश में दुष्टात्माओं का एक बड़ा आक्रमण हुआ था, क्योंकि शैतान ने अपने सभी प्रतिनिधियों को प्रभु यीशु के द्वारा अपने राज्य के लिये उत्पन्न खतरे से लड़ने के लिये एक साथ इकट्ठा किया था। चेलों को उसकी सर्वशक्तिमान सामर्थ्य के साथ शत्रु की सभी शक्तियों का सामना करने के लिये सशक्त बनाया गया था। और उन्होंने ऐसा ही किया।

*इन आदेशों* पर भी ध्यान दें (6:8-11):

*उसने उन्हें आज्ञा दी, “मार्ग के लिये लाठी छोड़ और कुछ न लो; न तो रोटी, न झोली, न बटुए में पैसे, परन्तु जूतियाँ पहनो और दो दो कुरते न पहनो।” (6:8-9)*

वे वहाँ थे, अपने प्रतिदिन के कपड़ों में उसके चारों ओर खड़े थे, बिलकुल भी तैयार नहीं थे क्योंकि उन्हें तुरन्त ही देशव्यापी मिशन पर भेजा जाना था। “तुम जाओ!” उसने उन्हें जोड़े में बैठाते हुए कहा, “ठीक वैसे ही जैसे तुम हो।”

यह एक चौंका देने वाला क्षण रहा होगा! बाद में, जब राष्ट्र उसके विरुद्ध हो गया और उसने वैश्विक मिशन की तैयारी आरम्भ कर दी, तो उसने यह सब बदल दिया (लूका 22:35-38)। परन्तु उस समय और उस स्थान पर, ये पैदलयात्रा के मूल आदेश उचित थे। उनके लिये असंख्य घर खोले जाएँगे, और सैकड़ों लोग उनकी भौतिक आवश्यकताओं को पूरा करने में योगदान देंगे। उन्हें बस शत्रु पर अधिकार की आवश्यकता थी - और उसने उन्हें पूरी सामर्थ्य दी।

*और उसने उनसे कहा, “जहाँ कहीं तुम किसी घर में उतरो, तो जब तक वहाँ से विदा न हो तब तक उसी घर में ठहरे रहो। (6:10)*

हर जगह कोई न कोई - धनी या निर्धन, कारीगर या कुलीन - उनकी प्रतीक्षा कर रहा होगा, उन्हें आतिथ्य देने के अवसर पर प्रसन्न होगा। उन्हें अपना आवास नहीं बदलना था, भले ही उन्हें लगे कि वे किसी पर बोझ बन रहे हैं या कोई अधिक सम्पन्न या प्रभावशाली नागरिक उन्हें अधिक आरामदायक आवास प्रदान करता है।

एलिय्याह और एलीशा दोनों को उनकी सेवकाई के विभिन्न समयों में इस तरह से समायोजित किया गया था। प्रभु स्वयं अपने यात्रा के वर्षों के दौरान इस तरह से जीवन बिताने से संतुष्ट था। यह एक ऐसी व्यवस्था थी जिसने चेलों को अपना विश्वास विकसित करने का अवसर दिया और दूसरों को प्रभु के सेवकों के साथ व्यावहारिक संगति करने का अवसर दिया। यह दोनों समूहों के लोगों के लिये एक समृद्ध अनुभव होना था।

*जिस स्थान के लोग तुम्हें ग्रहण न करें और तुम्हारी न सुनें, वहाँ से चलते ही अपने तलवों की धूल झाड़ डालो कि उन पर गवाही हो। (6:11)*

हर कोई उन्हें खुले हृदय से स्वीकार नहीं करेगा। प्रतिक्रियावादी शक्तियाँ पहले से ही काम कर रही थीं। यहूदी धार्मिक प्रतिष्ठान ने उनके विरुद्ध अपना मन बना लिया था। आज तक, हर कोई सुसमाचार सुनकर प्रसन्न नहीं होता या उसके सेवकों की सराहना नहीं करता।

हालाँकि, प्रभु के दूतों को अस्वीकार करना एक गम्भीर मामला है, वास्तव में, यह परमेश्वर की दृष्टि में सदोम के जघन्य पापों से भी अधिक गम्भीर है। अपने तैयार बागे और अपने मामूली कुरते में संदेशवाहक, सांसारिक-ज्ञानी लोगों के लिये महत्वपूर्ण नहीं लग सकता है, परन्तु वह स्वर्ग का दूत है। जो लोग उसे अस्वीकार करते हैं और उसका अपमान करते हैं, उनके लिये धिक्कार है; न्याय का दिन आ रहा है। फिरौन ने यह गलती तब की जब मूसा और हारून ने उसका सामना किया। वे उसे घृणित चरवाहों की जोड़ी लगे। सदोम के लोगों ने यह गलती तब की जब दो “पुरुष” उनके द्वार से होकर गुजरे और उन्होंने उनका अपमान करने का प्रयत्न किया। जलप्रलय से पहले के लोगों ने यह गलती तब की जब उन्होंने हनोक और नूह की गवाही को अनदेखा कर दिया।

*अभियान पर* भी ध्यान दें (6:12-13):

*तब उन्होंने जाकर प्रचार किया कि मन फिराओ। (6:12)*

यह तथ्य हमेशा पहले आना चाहिए। मनुष्य के हृदय में पवित्र आत्मा का पहला महान कार्य पाप के प्रति बोध उत्पन्न करना है। जैसा कि यीशु ने कहा, एक व्यक्ति को चिकित्सक के पास जाने से पहले यह जानना चाहिए कि वह बीमार है। यह पाप के प्रति बोध, अपराध बोध और लज्जा की भावना है जो मन फिराव की ओर ले जाती है। एक व्यक्ति सौ शारीरिक बीमारियों से ठीक हो सकता है, परन्तु अंत में इससे क्या लाभ होगा? अंत में, वह मर जाता है। परन्तु, यदि वह मन फिराता है और मसीह की ओर मुड़ता है, तो वह हमेशा के लिये जीवित रहेगा। अत:, जबकि प्रभु ने अपने चेलों को सामर्थ्य और आश्चर्यकर्म से सुसज्जित किया, उसने उन्हें मुख्य रूप से यह प्रचार करने के लिये भेजा कि लोगों को मन फिराना चाहिए।

*और बहुत सी दुष्‍टात्माओं को निकाला, और बहुत से बीमारों पर तेल मलकर उन्हें चंगा किया। (6:13)*

उनके मिशन के परिणामस्वरूप असाधारण सफलता मिली। उन्होंने पाया कि प्रभु की शक्तिशाली सामर्थ्य उनके साथ थी। उन्होंने शैतान के राज्य पर तीन गुना सीधा आक्रमण किया: *अंधकार को* बाहर निकाला गया, और लोगों ने मन फिराया; *दुष्टात्माओं* को बाहर निकाला गया, और लोगों को दुःस्वप्न के बंधन से मुक्त किया गया; और *बीमारी का* उन्मूलन किया गया, और लोगों ने, यहाँ तक कि शारीरिक स्तर पर भी, जीवन की नवीनता का अनुभव किया। बहुत से लोग क्रम को उलटना चाहेंगे; कई प्रार्थना अनुरोध शारीरिक चंगाई के लिये हैं, परन्तु बहुत कम उद्धार और पवित्रता के लिये हैं।

**2. हेरोदेस का रवैया (6:14-29)**

**क. हेरोदेस का विवेक (6:14-16)**

सबसे पहले, *उस भूत पर ध्यान दें जो उसे सताता था* (6:14-15):

*हेरोदेस राजा ने भी उसकी चर्चा सुनी, क्योंकि उसका नाम फैल गया था, और उसने कहा, “यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला मरे हुओं में से जी उठा है, इसी लिये उससे ये सामर्थ्य के काम प्रगट होते हैं।” (6:14)*

हेरोदेस अन्तिपास ने यीशु की प्रसिद्धि के बारे में सुना। उसके पास अपना स्पष्टीकरण था: उसने कहा कि यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला मरे हुओं में से वापस आ गया था। यह उसका दोषी विवेक बोल रहा था। हेरोदेस अन्तिपास हेरोदेस महान का पुत्र था। वह 4 ई.पू. पूर्व से लेकर 39 ईस्वी में निर्वासित होने तक गलील और पिरिया का चौथाई राजा था। सभी हेरोदेस की तरह, वह एक पूरी तरह से दुष्ट व्यक्ति था।

शेक्सपियर कहते हैं कि विवेक हम सभी को कायर बनाता है। विवेक अक्सर सुप्त अवस्था में पड़ा रहता है, ऐसा लगता है कि वह गहरी नींद में सो रहा है। फिर, अचानक, किसी विशेष चेहरे को देखना, किसी विशेष आवाज की ध्वनि, किसी विशेष नाम का उल्लेख, किसी विशेष जगह की यात्रा, और अचानक विवेक पूरी तरह जाग जाता है, स्मृति के द्वार पर चिल्लाता है, या किसी ऐसे काम पर गुस्से से गुर्राता है, जो बहुत पहले मर चुका था और गाड़ा जा चुका था, परन्तु अब भयानक रूप से जीवित हो गया है और बदला लेने के लिये चिल्ला रहा है।

यीशु का नाम लिया गया - किसी ने, शायद किसी पत्नी या दरबारी, या किसी परिचित या मित्र ने - और हेरोदेस को किसी और की याद आ गई - यूहन्ना! यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला एक ऐसा व्यक्ति था जिसकी याद हेरोदेस कई महीनों से भूलने का प्रयत्न कर रहा था। उसने मौज-मस्ती करके, यात्रा करके, व्यस्त रहकर, और देर से सोने और जल्दी उठने के द्वारा यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की भयावह याद को भूलने का प्रयत्न किया। “यीशु?” हेरोदेस ने पूछा। “शायद अब वे उसे इसी नाम से बुलाते हैं। *परन्तु* मैं जानता हूँ कि वह वास्तव में कौन है। वह यूहन्ना है, मर चुका है और गाड़ दिया गया है, उसका सिर कटा हुआ है और उसकी लोथ कब्र में सड़ रही है। इस पुरुष को यीशु नहीं कहा जाता; वह यूहन्ना है - मरे हुओं में से जीवित यूहन्ना। उसने पहले कोई आश्चर्यकर्म नहीं किया था, परन्तु वह अब उन्हें करने के लिये वापस आ गया है।” और हेरोदेस अपने सिंहासन पर काँप उठा, उसका क्रोधित विवेक गुर्रा रहा था; उसकी स्मृति भयावह, दोषी चित्र बना रही थी; और उसका चेहरा कभी डर से सफेद हो गया या लज्जा से लाल हो गया।

*अन्य लोगों ने कहा, “यह एलिय्याह है।” परन्तु कुछ अन्य ने कहा, “भविष्यद्वक्‍ता या भविष्यद्वक्‍ताओं में से किसी एक के समान है।” (6:15)*

यीशु के बारे में अज्ञानी मानवीय विचार बेकार हैं। बहुत से लोग मसीह की मानवता की दिखावटी सेवा करने के लिये तैयार हैं। वे उसे एक महान व्यक्ति, एक अच्छा व्यक्ति या एक उत्कृष्ट शिक्षक कहेंगे, जिसका उदाहरण हमें अपनाना चाहिए। वे उसे एक आदर्श और एक शहीद के रूप में देखेंगे, परन्तु वे उसे परमेश्वर के पुत्र के रूप में स्वीकार नहीं करेंगे। यहूदी उसे अपने संसार के महान लोगों के बराबर रखने को तैयार थे। वे उसे एक भविष्यद्वक्ता के रूप में स्वीकार करेंगे, यहाँ तक कि एक बीते युग से वापस आए भविष्यद्वक्ता के रूप में, यहाँ तक कि एलिय्याह, जो प्राचीन काल का अद्भुत भविष्यद्वक्ता था। आज, लोग उसे कन्फ्यूशियस, बुद्ध और मोहम्मद के बराबर मानेंगे, और ऐसा करके, अपने अविश्वास को उजागर करेंगे क्योंकि उसके और आदम की बर्बाद जाति के सबसे महान लोगों के बीच एक बड़ी खाई है। वे मनुष्य थे; वह परमेश्वर है। *उस अपराध बोध पर भी* ध्यान दे *जिसने उसे परेशान किया:*

*हेरोदेस ने यह सुन कर कहा, “जिस यूहन्ना का सिर मैं ने कटवाया था, वही जी उठा है!” (6:16)*

हेरोदेस अपने समय की किसी भी प्रचलित अटकल से संतुष्ट नहीं था। उसके पास अपनी अटकलें थीं। इसने बाकी सभी अटकलों को दबा दिया। जहाँ भी वह देखता, उसे यूहन्ना का कठोर चेहरा दिखाई देता। जहाँ भी वह जाता, उसे यूहन्ना की आरोप लगाने वाली आवाज सुनाई देती। वह प्रेतबाधित था; वह एक भूत के साथ रहता था। वह दोषी था। वह एक आरोप लगाने वाले विवेक के साथ रहता था। “यह यूहन्ना है,” उसने कहा, “जिस यूहन्ना का सिर मैं ने कटवाया था।”

**ख. हेरोदेस का अपराध (6:17-29)**

**(1) यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले की गिरफ़्तारी (6:17-20)**

*हेरोदेस ने अपने भाई फिलिप्पुस की पत्नी हेरोदियास के कारण, जिससे उसने विवाह कर लिया था, लोगों को भेजकर यूहन्ना को पकड़वाकर बन्दीगृह में डाल दिया था। (6:17)*

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने हेरोदेस अन्तिपास की उसके अनैतिक व्यवहार के लिये खुलेआम निन्दा की थी। हेरोदेस ने अपने भाई हेरोदेस फिलिप्पुस की पत्नी हेरोदियास के लिये दोषी जुनून उत्पन्न किया था। एक वास्तविक नये नियम की इज़ेबेल, हेरोदियास से विवाह करने के लिये, हेरोदेस अन्तिपास ने अपनी कानूनी पत्नी, अरब के अरेतुस की बेटी को तलाक दे दिया। फिर उसने अपने भाई की पत्नी को चुरा लिया और उससे विवाह कर लिया। उसने एक बुरी पत्नी को अपनाया था! हेरोदियास ने जल्द ही अन्तिपास को एक के बाद एक दुष्टता के कार्य करने के लिये उकसाया, ठीक वैसे ही जैसे ईज़ेबेल ने अहाब को दुष्ट कार्य करने के लिये उकसाया था। हेरोदियास महत्वाकांक्षी थी। उसके भाई अग्रिप्पा को *राजा बनाने* से उसे ईर्ष्या हुई। उसने अन्तिपास को अपने साथ रोम जाने के लिये राजी किया ताकि वह मुकुट माँग सके। कैलीगुला ने उसे मुकुट देने से इन्कार कर दिया और बेकार चौथाई राजा को निर्वासित कर दिया। हेरोदियास की महत्वाकांक्षा के लिये इतना कुछ! हेरोदेस की चुराई हुई पत्नी के लिये इतना कुछ! वह एक ऐसी स्त्री थी जो यूहन्ना के विरुद्ध नाराजगी रखती थी।

*क्योंकि यूहन्ना ने हेरोदेस से कहा था, “अपने भाई की पत्नी को रखना तुझे उचित नहीं।” (6:18)*

पुराने नियम के भविष्यद्वक्ता के पूरे हियाव के साथ, यूहन्ना ने हेरोदेस के वैवाहिक जीवन में हेरोदेस की चालबाजी की निन्दा की थी। उस हियाव की वजह से यूहन्ना को अपना प्राण गँवाना पड़ा। हेरोदियास क्रोधित हो गई, उसने उसे कभी क्षमा नहीं किया, अपने समय की प्रतीक्षा की और अपने क्रोध की आग को भड़काया। हेरोदेस यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले से उतना नाराज नहीं था जितना हेरोदियास थी क्योंकि वह आधे रूप से उस व्यक्ति की प्रशंसा करता था और आधे रूप से उससे डरता था। किसी भी मामले में, लोग यूहन्ना को एक भविष्यद्वक्ता के रूप में लोकप्रिय मानते थे; इस कारण, वह भारी भीड़ को नियंत्रित करने में सक्षम था। इसके अलावा, हेरोदेस ने अपने पूर्व ससुर, अरेतुस को एक कठोर शत्रु बना लिया था, जो अब उसके विरुद्ध युद्ध के लिये अपनी सेना जुटा रहा था। इन खतरनाक परिस्थितियों में यूहन्ना के मित्रों और अनुयायियों को क्रोधित करना पागलपन होगा। अत: हेरोदेस ने टालमटोल किया और हेरोदियास ने षड्यंत्र रचा।

*इसलिये हेरोदियास उससे बैर रखती थी और यह चाहती थी कि उसे मरवा डाले; परन्तु ऐसा न हो सका। (6:19)*

कम से कम कुछ समय के लिये, यद्यपि वह हेरोदियास के प्रति मूढ़ था, अन्तिपास ने उसकी उग्र माँग को टालने में सफलता प्राप्त की कि यूहन्ना को तुरन्त मार दिया जाए। उसने समझौता कर लिया। उसने यूहन्ना को गिरफ्तार करने और बन्दीगृह में डालने का आदेश दिया, परन्तु वह उसे नहीं मारेगा। इसके अलावा, हेरोदेस अप्रत्याशित रूप से दृढ़ रहा, और हेरोदियास ने गुस्से में आकर बदला लेने की इच्छा को पोषित किया। बदला मीठा होगा।

*क्योंकि हेरोदेस यूहन्ना को धर्मी और पवित्र पुरुष जानकर उससे डरता था, और उसे बचाए रखता था, और उसकी बातें सुनकर बहुत घबराता था, पर आनन्द से सुनता था। (6:20)*

यूहन्ना हेरोदेस अन्तिपास से कहीं अधिक शक्तिशाली व्यक्ति था। पौलुस के साथ राजा अग्रिप्पा की तरह हेरोदेस भी यूहन्ना पर मोहित था। यूहन्ना ने उसे ऐसे खींचा जैसे दीया पतंगे को खींचता है, और पतंगे की तरह हेरोदेस यूहन्ना के चारों ओर नाचता था। वह उससे डरता भी था। हालाँकि, दु:ख की बात है कि वह उससे आधे रूप से भी कम डरता था। फिर भी, उसने यूहन्ना की बातें सुनने का हर अवसर लिया। शायद उसे आशा थी कि यूहन्ना शायद उसे मना ले, हेरोदियास से क्षमा माँगे और क्षमादान की याचना करे। हालाँकि, जब पाप की बात आई तो यूहन्ना ने कोई समझौता नहीं किया। हेरोदेस ने यूहन्ना की पवित्रता से प्रभावित होकर अपने जीवन के कुछ परिधीय क्षेत्रों को साफ किया। परन्तु यदि वह यूहन्ना से डरता था और उससे मोहित था, तो वह हेरोदियास से और भी अधिक मोहित था और उससे और भी अधिक डरता था। सुधार नया जन्म नहीं है। मन फिराव में पूरी तरह से नहीं जाना बल्कि अधूरे रूप में जाना केवल अपराधबोध को बढ़ाता है।

**(2) यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले की हत्या (6:21-29)**

*ठीक अवसर आया जब हेरोदेस ने अपने जन्म दिन में अपने प्रधानों, और सेनापतियों, और गलील के बड़े लोगों के लिये भोज किया। (6:21)*

फिर वह दिन आया जिसे मरकुस ने “ठीक अवसर” दिन कहा है - जिसे शेक्सपियर ने “हमारे के द्वारा अदृश्य रूप से खींची गई एक रेखा कहा है जो हर मार्ग को पार करती है; परमेश्वर की दया और उसके क्रोध के बीच छिपी सीमा।” हेरोदेस उस दिन नहीं मरा, परन्तु उसने उद्धार की अपनी अंतिम आशा खो दी।

यह सब एक भोज से आरम्भ हुआ था। भोज खतरनाक होते हैं। एक ऐसा भोज भी था जिसमें क्षयर्ष ने अपनी पत्नी वशती को नीचा दिखाने का प्रयत्न किया और उसे तलाक देने का निर्णय लिया। यह एक भोज था जिसमें बेलशस्सर के विनाश की कहानी उसे पढ़कर सुनाई गई थी। कई लोगों ने भोज में अपनी आत्मा खो दी है, जब दाखरस बह रहा होता है, अश्लील चुटकुले उड़ रहे होते हैं, भावनाएँ भड़क रही होती हैं, नैतिकता कम हो जाती है और संयम हटा दिए जाते हैं।

*तो हेरोदियास की बेटी भीतर आई, और नाचकर हेरोदेस को और उसके साथ बैठनेवालों को प्रसन्न किया। तब राजा ने लड़की से कहा, “तू जो चाहे मुझ से माँग मैं तुझे दूँगा।” (6:22)*

फिर सलोमी का उत्तेजक नृत्य आया, एक ऐसा नृत्य जिसने भावनाओं को भड़का दिया। अब सब भूल गए, दाखरस में डूब गए और आखिरकार अभिलाषा में दब गए, यूहन्ना के बारे में सब कुछ सोच में था। सलोमी ने जो कामुक नृत्य किया, उससे सभी पुरुष अभिलाषा से भर गए और तालियाँ बजाने लगे। हेरोदेस स्वयं भी इस प्रदर्शन से मंत्रमुग्ध हो गया। जब उसके अतिथि तालियाँ बजा रहे थे और जयकार कर रहे थे और मेज पर अपने दाखरस के गिलास पटकते हुए और दाखरस माँग रहे थे, तब हेरोदेस बोला। “आधा राज्य भी,” उसने कहा, “जो कुछ भी तू चाहती है, सलोमी। बस माँग ले!” अब यूहन्ना कहाँ था? अपने कठोर, एकाकी बन्दीगृह में, अपनी नियति पर विचार कर रहा था और अच्छी तरह से समाप्त होने के लिये अनुग्रह के लिये प्रार्थना कर रहा था।

*और उससे शपथ खाई, “मैं अपने आधे राज्य तक जो कुछ तू मुझ से माँगेगी मैं तुझे दूँगा।” (6:23)*

इससे मूर्खतापूर्ण, नशे में चूर प्रतिज्ञा की पुष्टि हुई। यह यिप्तह की प्रतिज्ञा (न्या. 11:30-40) की तरह ही मूर्खतापूर्ण प्रतिज्ञा था, जिसका परिणाम भी उतना ही दु:खद था - किसी और के लिये। प्रतिज्ञाएँ बहुत अच्छी होती हैं, हालाँकि हमें उनमें से सबसे अच्छी प्रतिज्ञा भी संयम से लेनी चाहिए, और मूर्खतापूर्ण प्रतिज्ञाएँ बंद कर देनी चाहिए। जब बेबीलोन के यहूदी जकर्याह के पास आए और पूछा कि क्या उन्हें उन उपवासों को रखना चाहिए जिन्हें रखने की उन्होंने प्रतिज्ञा की थी, तो जकर्याह ने उन्हें तुरन्त रद्द कर दिया। परमेश्वर ने उन प्रतिज्ञाओं की आज्ञा नहीं दी थी; बल्कि, यहूदियों ने बंधुआई के दौरान उन्हें अपने ऊपर ले लिया था ताकि वे अपने हाल के दु:खद इतिहास को अपनी यादों में ताजा रख सकें। जकर्याह ने तुरन्त इन बोझिल उपवासों और स्वयं-लगाए गए उपवासों को रद्द कर दिया और उन्हें सच्ची आत्मिकता का पाठ पढ़ाया।

हेरोदेस अब अपनी शपथ के कारण फँस गया था, और जल्द ही उसका फंदा कसने वाला था।

*उसने बाहर जाकर अपनी माता से पूछा, “मैं क्या माँगूँ?” वह बोली, “यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले का सिर।” (6:24)*

हेरोदियास हेरोदेस की इज़ेबेल थी। वह सत्य से उसी तरह बैर रखती थी जिस तरह इज़ेबेल उससे बैर रखती थी और यूहन्ना के प्रति द्वेष रखती थी जिस तरह इज़ेबेल एलिय्याह के प्रति रखती थी। केवल अंतर यह था कि हेरोदेस ने अपनी पत्नी के सामने झुककर यूहन्ना को बन्दीगृह में डाल दिया था, जबकि इज़ेबेल कभी भी अहाब को एलिय्याह पर हाथ रखने के लिये विवश नहीं कर सकी। इसके अलावा, एलिय्याह सामर्थ्य और आश्चर्यकर्म से सुसज्जित था, जबकि यूहन्ना ने कोई आश्चर्यकर्म नहीं किया।

सलोमी को सलाह के लिये हेरोदियास की तरह ब्लैक विडो स्पाइडर (काली विधवा मकड़ी) के पास जाना चाहिए था! सलोमी को अपनी माता की बहुत याद आई होगी, नहीं तो वह अपनी माता के भयानक उत्तर से डर कर सिकुड़ जाती। “मैं क्या माँगूँ?” तुरन्त उत्तर आया: “यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का सिर।”

*वह तुरन्त राजा के पास भीतर आई और उससे विनती की, “मैं चाहती हूँ कि तू अभी यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले का सिर एक थाल में मुझे मँगवा दे।” (6:25)*

“तुरन्त!” “जल्दी से!” “एक ही बार में!” हम इन शब्दों के पीछे हेरोदियास की तत्काल प्रेरणा को देखते हैं। “जल्दी कर, लड़की। प्रतीक्षा मत कर। वह अपना मन बदल लेगा। भाग!” इस प्रकार यह युवती, जो अपने अस्तित्व के मूल में एक हेरोदेस थी, अपने मार्गों पर चल पड़ी। यह एक भयानक माँग थी जो उसने इस तथ्य के अलावा की कि यूहन्ना “एक भविष्यद्वक्ता और भविष्यद्वक्ता से भी बढ़कर” था, और, जैसा कि यीशु ने कहा, “एक स्त्री से उत्पन्न हुआ सबसे महान व्यक्ति।” इस तथ्य ने सलोमी के पाप को और बढ़ा दिया। वह लज्जाहीन थी, जैसा कि उसके अश्लील नृत्य ने अभी-अभी पुष्टि की थी। वह विवेकहीन थी, जैसा कि उसका इस तरह के काम पर जल्दबाजी करना और अपनी माँग को इतने दृढ़ संकल्प और इतने विस्तार से प्रस्तुत करना प्रमाणित करता है। परन्तु फिर, हेरोदेस ने अपने विवेक की हत्या करने में विशेषज्ञता हासिल की।

*तब राजा बहुत उदास हुआ, परन्तु अपनी शपथ के कारण और साथ बैठनेवालों के कारण उसे टालना न चाहा। (6:26)*

राजा पकड़ा गया था, और वह यह जानता था। उसे या तो अपने सभी उत्तम अतिथियों के सामने अपना चेहरा खोना होगा या एक ऐसे व्यक्ति को मारना होगा जिसका वह सम्मान करता था और जिससे वह डरता भी था। उसे अपना मन बनाने में अधिक समय नहीं लगा। वह झूठी गवाही देने वाले की बजाय हत्यारा बनना पसंद करेगा। “उसे मार डालो,” उसने एक सैनिक से कहा। “फिर उसका सिर यहाँ एक थाल में रखकर लाओ।” अब शायद हेरोदियास चुप हो जाती। शायद उसने हेरोदियास को चुप कर दिया था। उसने निश्चित रूप से परमेश्वर को चुप कर दिया था। परमेश्वर ने उससे फिर कभी बात नहीं की (लूका 23:8-11)। परन्तु उसका हत्यारा विवेक मरे हुओं में से उठ खड़ा हुआ और उसके सपनों को सताने लगा। इस प्रकार जब उसने यीशु के बारे में सुना, तो उसके विवेक ने उसे बताया कि यह यूहन्ना है, जो मरे हुओं में से जी उठा है। जब, आखिरकार, यीशु उसके सामने खड़ा हुआ, तो उसने उससे बात करने से इन्कार कर दिया। हेरोदेस ने उसका मजाक उड़ाते हुए उत्तर दिया। इस प्रकार, पहले यूहन्ना की हत्या करने के बाद, हेरोदेस ने यीशु का मजाक उड़ाया।

“मैं खेदित हूँ!” क्या मरकुस यही कहता है? नहीं, वह कहता है, “मैं *बहुत अधिक* खेदित हूँ!” जो केवल यही साबित करता है कि पछतावा होना मन फिराव नहीं है। हम खेद जता सकते हैं और फिर और भी बुरा कर सकते हैं। कहावत कहती है, “खेद करना वैसा ही है जैसा फिर वही करना है।” हेरोदेस को इस बात का खेद था कि उसकी पियक्कड़ जीभ ने उसे ऐसी विचित्र स्थिति में डाल दिया था। परन्तु वह इतना भी खेदित नहीं था कि वह सही काम करे। उसे अपने पाप के लिये खेद नहीं था; वह और भी बुरे काम करता चला गया। उसे केवल इस बात का खेद था कि उसने जो कहा था, वह कह दिया था और उसके पास अपनी दुर्दशा से बाहर निकलने का कोई मार्ग नहीं था, सिवाय इसके कि वह स्वयं को गलत मान ले। परन्तु अपने अतिथियों की उत्सुक आँखों, अपने विचारों में हेरोदियास की अडिग आँखें और उसे चुनौती देने वाली सलोमी की मजाक उड़ाने वाली आँखों के कारण, वह परमेश्वर की सर्वज्ञ दृष्टि के बारे में सब कुछ भूल गया।

*अत: राजा ने तुरन्त एक सिपाही को आज्ञा देकर भेजा कि उसका सिर काट लाए। (6:27)*

हेरोदेस को अपना मन बनाने में देर नहीं लगी। जल्लाद को संकेत किया और भयानक काम हो गया। भयानक कालकोठरी की गहराई में यूहन्ना ने पैरों की आहट सुनी। क्या मसीह ने आखिरकार कदम उठाया? क्या हेरोदेस ने उसे छोड़ने और जाने देने का निर्णय किया? चाबी ताले में घुस गई। एक पहरेदार के द्वारा ऊपर उठाई गई ज्योति, हाथ में कुल्हाड़ी लिये खड़े जल्लाद के भयानक रूप पर पड़ी। और, एक पल में, सब कुछ समाप्त हो गया। यूहन्ना मर चुका था और हेरोदेस शापित हो गया था। यूहन्ना ने हाबिल, यशायाह, जकर्याह और असंख्य अन्य लोगों के साथ विश्वास के शहीदों की श्रेणी में अपना स्थान ग्रहण किया। वह एक साथ पुराने नियम के युग में मरने वाला अंतिम भविष्यद्वक्ता और नये नियम के युग में मरने वाला पहला भविष्यद्वक्ता था। “वह सबसे महान था।” यह यूहन्ना के बारे में प्रभु का अपना आकलन था। यह वह व्यक्ति था जिसकी हेरोदेस ने अपनी कामुक पत्नी की जीभ को शान्त करने के लिये हत्या कर दी थी।

*उसने जेलखाने में जाकर उसका सिर काटा, और एक थाल में रखकर लाया और लड़की को दिया, और लड़की ने अपनी माँ को दिया। (6:28)*

जल्लाद के अपने काम पर जाने के दौरान एक भयानक विराम आया। फिर लौटते हुए कदमों की आवाज आई और, आह! उस भयानक निशानी की पहली झलक। हमें आश्चर्य है कि इस युवती ने किस डर के साथ पेश किए गए पकवान को स्वीकार किया होगा? क्या निडर भविष्यद्वक्ता की आँखें खुली थीं, जो थाल से उसे घूर रही थीं? क्या उसने कभी स्वयं को उस सिर के दृश्य से स्वतंत्र किया था?

यूजीन सू ने अपनी पुस्तक *द वांडरिंग ज्यू में* हेरोदियास की बेटी की कल्पना की है, जिसे सभी मानवजाति से निकाल दिया गया है, उसे संसार भर में भटकने के लिये अभिशप्त किया गया है, युगों-युगों तक, मसीह के फिर से आने तक अपने कर्म के लिये अंतहीन पछतावा करते हुए। यह एक काल्पनिक धारणा है, परन्तु यह युवती के पाप की गम्भीरता को दर्शाता है। उसके लिये कोई बहाना हो सकता है। शायद उसने अवसर की उत्तेजना में और उस शैतानी स्त्री, उसकी माता के द्वारा उकसाए जाने पर यह अनुरोध किया हो। फिर, वह भी एक हेरोदेस थी, “सभी पापों” की उत्तराधिकारी, उस दुष्ट सन्तान की अराजकता से और भी बढ़ गई।

परन्तु न तो हेरोदेस और न ही हेरोदियास के पास कोई बहाना था। लड़की ने अपनी माता को अपना भयानक पुरस्कार सौंपने में कोई समय बर्बाद नहीं किया। शायद हेरोदियास भी उस लहू से सने सिर को देखकर डर गई होगी और उसने उसे हटाने का आदेश दिया होगा। शायद, उसके बाद से, उसके सपने दुःस्वप्न बन गए और उसकी रातें उसके अपराध की यादों से घिर गईं। या शायद नहीं। शायद उसका विवेक पहले ही गर्म लोहे से झुलस चुका था।

*यह सुनकर यूहन्ना के चेले आए, और उसके शव को ले गए और कब्र में रखा। (6:29)*

इस प्रकार हमारे पाप-शापित ग्रह पर परमेश्वर के आक्रमण की कहानी का एक महान अध्याय समाप्त हो गया। यह वह अंत नहीं था जिसकी यूहन्ना या उसके चेलों ने अपेक्षा की थी। इसके विपरीत, ऐसा लग रहा था कि शैतान ने एक और विजय प्राप्त कर ली है। अधिकांश लोगों को पता नहीं था कि एक भयंकर युद्ध चल रहा था, और शैतान हार मानने वाला नहीं था। वह अपनी शक्ति में सभी हथियारों का उपयोग करते हुए लड़ता रहेगा। न ही वह तब तक आराम करेगा जब तक कि वह कलवरी नामक स्थान पर और भी बड़ी विजय प्राप्त नहीं कर लेता और प्रभु के चेले *उसके* निष्प्राण शरीर को उठाकर उसे कब्र में नहीं रख देते।

शैतान के लिये यह बहुत अच्छा हो सकता है! शैतान की विजय खोखली विजय हैं। नेपोलियन ने एक बार ब्रिटेन के बारे में कहा था, “ब्रिटेन अंतिम लड़ाई को छोड़कर हर लड़ाई हार जाता है।” शैतान अब चल रहे “पवित्र युद्ध” में एक के बाद एक सामरिक विजय प्राप्त कर सकता है, परन्तु वह पहले ही रणनीतिक लड़ाई हार चुका है। कलवरी उसकी सबसे बड़ी भूल थी क्योंकि कलवरी का मनुष्य अब ऊँचे स्थान पर वैभव में बैठा है, “अब से प्रतीक्षा कर रहा है कि उसके शत्रु उसके पाँवों की चौकी बन जाएँ” (इब्रा. 10:13)।

1. परमेश्वर के सेवक का दूसरों के प्रति रवैया (6:30-8:26)
   1. क्या किया गया (6:30-56)
      1. उसने भूखे लोगों की आवश्यकताएँ पूरी कीं (6:30-44)
         1. कार्यवाही (6:30-31)
            1. चेले (6:30)

उनकी वापसी (6:30a)

उनका प्रतिवेदन (6:30b)

* + - * 1. मरुस्थल (6:31)

प्रस्ताव (6:31a)

दबाव (6:31b)

* + - 1. भीड़ (6:32-33)
         1. उनका निष्कर्ष (6:32-33a)
         2. उनका दृढ़ संकल्प (6:33b)
      2. गुरु (6:34)
         1. उसका आगमन (6:34a)
         2. उसका तरस ([6:34b-c](file:///Z:\Finished%20CROSS%20Goods\SOURCE\PhillipsCmty\ExpMark\source\%25server%25ref=Mark%206:34))

उनके खोए होने की मान्यता पहचान (6:34b)

उनके खो जाने पर उसकी प्रतिक्रिया (6:34c)

* + - 1. लोग (6:35-38)
         1. एक अनावश्यक अवलोकन (6:35)
         2. एक स्वाभाविक दायित्व (6:36-38)

एक प्रकट विस्मयादिबोधक (6:36a)

एक तैयार बहाना (6:36b-38)

इसे कैसे व्यक्त किया गया (6:36b)

इसका खुलासा कैसे हुआ (6:37-38)

दो! (6:37)

जाओ! (6:38)

* + - 1. आश्चर्यकर्म (6:39-44)
         1. एक साधारण सावधानी (6:39-40)
         2. एक अलौकिक प्रबन्ध (6:41-44)

इसका स्रोत (6:41a)

इसका दायरा (6:41b-44)

एक आश्चर्यजनक उपलब्धि (6:41b-43)

एक सांख्यिकीय तथ्य (6:44)

* + 1. उसने असहाय लोगों की आवश्यकताएँ पूरी कीं (6:45-52)
       1. एक बड़ी इच्छा (6:45-46)
          1. एकांत के लिये (6:45-46a)

उसने अपने साथियों को विदा किया (6:45)

उसने भीड़ को विदा किया (6:46a)

* + - * 1. प्रार्थना के लिये (6:46b)
        2. मौन के लिये (6:47)
      1. बहुत निराशा (6:48-50a)
         1. कोमल उद्धारकर्ता ने क्या देखा (6:48)

उनकी गम्भीर स्थिति (6:48a)

उसका सरल समाधान ([6:48b-c](file:///Z:\Finished%20CROSS%20Goods\SOURCE\PhillipsCmty\ExpMark\source\%25server%25ref=Mark%206:48))

उसने क्या संकेत किया (6:48b)

उसने जो बताया (6:48c)

* + - * 1. भयभीत नाविकों ने क्या देखा (6:49-50a)

एक निकटवर्ती रूप (6:49)

एक डरावना भय (6:50a)

* + - 1. एक महान खोज (6:50b-51)
         1. प्रभु की सांत्वनादायक उपस्थिति (6:50b)
         2. प्रभु की विवश करने वाली सामर्थ्य (6:51a)
      2. एक बड़ी निराशा (6:51b-52)
         1. उनका आश्चर्य प्रकट हुआ (6:51b)
         2. उनका आश्चर्य स्पष्ट हुआ (6:52)
    1. उसने दुःखी लोगों की आवश्यकताएँ पूरी कीं (6:53-56)
       1. वह कहाँ गया (6:53)
       2. वह कौन था (6:54)
       3. वे क्या चाहते थे (6:55)
       4. जो कुछ उसने किया (6:56)
  1. क्या सिखाया गया (7:1-23)
     1. संकट (7:1-4)
        1. एक प्रतिनिधिमण्डल (7:1-2)
           1. यह एक आधिकारिक प्रतिनिधिमण्डल था (7:1)
           2. यह एक औपचारिक प्रतिनिधिमण्डल था (7:2)
        2. विवरण (7:3-4)
           1. उनका स्वास्थ्य-सम्बन्धी कार्य (7:3)
           2. स्वच्छता के प्रति उनका जुनून (7:4)
     2. आलोचना (7:5-13)
        1. आलोचकों के प्रश्न (7:5)
           1. व्यवस्था की माँगों के प्रति उनका दृष्टिकोण (7:5a)
           2. प्रभु के चेलों के प्रति उनका दृष्टिकोण (7:5b)
        2. मसीह के के द्वारा उद्धृत (7:6-13)
           1. पहला उद्धरण (7:6-8)

पवित्रशास्त्र से अपील (7:6-7)

यशायाह ने जिन कपटियों की निन्दा की (7:6a)

यशायाह ने जिस कपट की निन्दा की (7:6b-7)

पवित्रशास्त्र का अनुप्रयोग (7:8)

कपटियों ने क्या अस्वीकार किया (7:8a)

कपटियों ने क्या सम्मान किया (7:8b)

* + - * 1. आगे का उद्धरण (7:9-13)

पवित्रशास्त्र से अपील (7:9-10)

उनका पहला प्रेम (7:9)

उनकी त्यागी हुई व्यवस्था (7:10)

महान भविष्यद्वक्ता (7:10a)

महान उपदेश (7:10b; निर्गमन 20:12)

पवित्रशास्त्र का अनुप्रयोग (7:11-13)

उनकी टालमटोल की रणनीति का वर्णन (7:11-12)

उनकी टालमटोल वाली रणनीति की निन्दा (7:13)

* + 1. टीका (7:14-23)
       1. भीड़ के लिये व्यक्त (7:14-16)
          1. सुनने के लिये बुलाहट (7:14-15)

बुलावा (7:14)

सारांश (7:15)

अशुद्धता के बारे में गलत दृष्टिकोण (7:15a)

अशुद्धता का वास्तविक दृष्टिकोण (7:15b)

* + - * 1. सुनने के लिये बुलाहट (7:16)
      1. अपने लोगों को समझाया (7:17-23)
         1. अनुरोध (7:17)
         2. फटकार (7:18)
         3. कारण (7:19-22)

जीवन का भौतिक पक्ष (7:19)

जीवन का नैतिक पक्ष (7:20-22)

अशुद्धता का स्रोत (7:20-21a)

अशुद्धता का तत्व (7:21b-22)

* + - * 1. पुनरावलोकन (7:23)
  1. क्या सोचा गया था (7:24-37)
     1. अपमान (7:24-30)
        1. स्थल (7:24a)
        2. रहस्य (7:24b)
        3. याचक (7:25-26)
           1. वह कौन थी (7:25)
           2. वह क्या चाहती थी (7:26)
        4. उद्धारकर्ता (7:27-30)
           1. उसने उसे कैसे ठुकराया (7:27-28)

उनकी नकारात्मक प्रतिक्रिया (7:27)

उनका महान उत्तर (7:28)

* + - * 1. उसने उसे कैसे प्रतिफल दिया (7:29-30)

आज्ञा (7:29)

छुटकारा (7:30)

* + 1. आश्चर्य (7:31-37)
       1. कार्यवाही (7:31)
       2. पुरुष (7:32)
       3. आश्चर्यकर्म (7:33-35)
          1. सम्पर्क (7:33)
          2. आदेश (7:34)
          3. इलाज (7:35)
       4. आदेश (7:36a)
       5. भीड़ (7:36b-37)
          1. लोगों का आश्चर्य (7:36b)
          2. लोगों का आकलन (7:37)
  1. जो कुछ भी नहीं था (8:1-9)
     1. वहाँ भीड़ के लिये कुछ भी नहीं था (8:1-3)
        1. यीशु ने क्या समझा (8:1)
        2. यीशु ने क्या घोषणा की (8:2)
        3. यीशु ने किस बात की निन्दा की (8:3)
     2. स्वामी के लिये जो कुछ भी नहीं था (8:4-9)
        1. समस्या का आकार (8:4-5)
           1. आवश्यकता का मूल्यांकन (8:4)
           2. मूल्यांकित संसाधन (8:5)
        2. समस्या का समाधान (8:6-9)
           1. आज्ञा (8:6a)
           2. मसीह (8:6b-7)

पहला आश्चर्यकर्म (8:6b)

आगे का आश्चर्यकर्म (8:7)

* + - * 1. टिप्पणी (8:8-9)

बहुतायत की आपूर्ति (8:8)

बहुतायत का आश्चर्य (8:9)

* 1. क्या खोजा गया था (8:10-12)
     1. स्थल (8:10)
     2. चिह्न (8:11-12)
        1. चिह्न की माँग (8:11)
           1. पूछताछ (8:11a)
           2. उकसावा (8:11b)
        2. चिह्न का इन्कार (8:12)
           1. प्रभु का भावनात्मक प्रत्युत्तर (8:12a)
           2. प्रभु का बौद्धिक प्रत्युत्तर (8:12b)
           3. प्रभु का स्वेच्छापूर्ण प्रत्युत्तर (8:12c)
  2. क्या लड़ा गया (8:13-21)
     1. चेले और उनका भय (8:13-14)
        1. प्रस्थान (8:13)
        2. खोज (8:14)
     2. चेले और उनकी उलझन (8:15-21)
        1. एक तीखी टिप्पणी (8:15)
           1. उन लोगों से सावधान रहो जो धर्म को दिखावा बनाते हैं (8:15a)
           2. उन लोगों से सावधान रहो जो धर्म को राजनीति का विषय बनाते हैं (8:15b)
        2. एक हैरान कर देने वाला उत्तर (8:16)
        3. बाइबल आधारित प्रतिक्रिया (8:17-21)
           1. प्रश्न (8:17)
           2. उद्धरण (8:18-20)

भविष्यद्वाणी के वचन की अपील (8:18a)

भविष्यद्वाणी के वचन का अनुप्रयोग (8:18b-20)

उनकी छोटी यादें (8:18a)

उसके महान आश्चर्यकर्म (8:19-20)

उसकी आपूर्ति का पहला आश्चर्यकर्म (8:19)

उसकी आपूर्ति का आगे का आश्चर्यकर्म (8:20)

* + - * 1. शान्त (8:21)
  1. क्या लाया गया (8:22-26)
     1. अंधे मनुष्य की परिस्थिति (8:22)
        1. स्थान (8:22a)
        2. अनुरोध (8:22b)
     2. अंधे मनुष्य का इलाज (8:23-26अ)
        1. आंशिक चंगाई (8:23-24)
           1. यीशु उसे कहाँ ले गया (8:23a)
           2. जहाँ यीशु ने उसे छुआ (8:23b-24)

एक असामान्य कार्य (8:23b)

एक असामान्य तथ्य (8:24)

* + - 1. उत्तम इलाज (8:25-26a)
    1. अंधे मनुष्य की आज्ञाएँ (8:26b-c)
       1. उसे कहाँ जाना था (8:26b)
       2. उसे क्या करना था (8:26c)

**ख. परमेश्वर के सेवक का दूसरों के प्रति रवैया (6:30-8:26)**

**1. क्या किया गया (6:30-56)**

**क. उसने भूखे लोगों की आवश्यकताएँ पूरी कीं (6:30-44)**

सबसे पहले, *इस कार्यवाही पर ध्यान दें* (6:30-31):

*प्रेरितों ने यीशु के पास इकट्ठे होकर, जो कुछ उन्होंने किया और सिखाया था, सब उसको बताया। (6:30)*

मरकुस ने अचानक यूहन्ना की कहानी को छोड़कर यीशु की कहानी जारी रखी। वह इसे उस बिंदु से आरम्भ करता है जहाँ चेले अपने प्रचार दौरे से विजयी होकर वापस आए (6:7-13)। शत्रु की सारी शक्ति पर विजय के बाद विजय की कितनी कहानियाँ उन्हें बतानी थीं! शैतान को यूहन्ना पर अपनी छोटी सी दुष्ट विजय की अनुमति दी गई थी, परन्तु अब उसे यीशु से प्रतियोगिता करनी थी, और वह यीशु से प्रतियोगिता नहीं कर सकता था।

*उसने उनसे कहा, “तुम आप अलग किसी एकान्त स्थान में चलकर थोड़ा विश्राम करो।” क्योंकि बहुत लोग आते जाते थे, और उन्हें खाने का अवसर भी नहीं मिलता था। (6:31)*

प्रभु के प्रति लोगों का उत्साह अब चरम पर पहुँच गया था। दबाव को भाँपते हुए प्रभु ने अपने चेलों को सुझाव दिया कि वे छुट्टी ले लें। यह एक समझदारी भरा सुझाव था। प्रभु “हमारी स्थिति को जानता हैं” (भजन 103:14)। हम प्रभु के काम में भी बहुत व्यस्त हो सकते हैं। हालाँकि, परमेश्वर कभी भी जल्दबाजी में नहीं रहता; न ही वह हमसे लगातार भागते रहने की अपेक्षा करता है। छह दिनों की रचनात्मक गतिविधि में अपनी ऊर्जा डालने के बाद, उसने सातवें दिन “विश्राम” किया – स्पष्ट है, इसलिये नहीं कि वह थका हुआ था। एक परमेश्वर जो एक नगर को नष्ट करने के लिये एक परमाणु में पर्याप्त ऊर्जा बंद कर सकता है और जो सौ अरब आकाशगंगाओं में सौ अरब सितारों को सामर्थ्य प्रदान कर सकता है, वह स्पष्ट रूप से ऐसा परमेश्वर नहीं है जो थक जाता है। उसने अपनी गतिविधि बंद कर दी क्योंकि उसने जो करने का लक्ष्य रखा था वह पूरा कर लिया था और क्योंकि वह अपने परिश्रम के फल का आनन्द लेना चाहता था। साप्ताहिक सब्त, वर्षों का सब्त और सब्तों का सब्त के इब्रानी विचार सृष्टि के उत्पत्ति की पुस्तक के विवरण में निहित हैं। हालाँकि, यह समय विभाजन नहीं है, जिसे हम *अवलोकन* के माध्यम से जगत के स्वभाव से प्राप्त करते हैं। हमारे दिन, महीने और वर्ष पृथ्वी, चंद्रमा और सूर्य की गति से प्राप्त होते हैं। सब्त के साथ एक *सप्ताह का विचार,* अनुमान से नहीं बल्कि प्रकाशन से लिया गया है। यह *बाइबल ही है* जो हमारे दिनों को सप्ताहों में विभाजित करती है, प्रत्येक सप्ताह में काम के लिये छह दिन और विश्राम के लिये एक दिन होता है। यह एक प्रेमी परमेश्वर का बुद्धिमान प्रावधान है, जो जानता है कि हम कैसे बने हैं और जो हमारे लिये न केवल प्रत्येक दिन के बीच बल्कि सात में से एक दिन आराम करने का प्रावधान करता है।

जब एलिय्याह इज़ेबेल से भाग रहा था तो उसके अत्यधिक परेशान होने का एक कारण यह था कि वह बहुत थक गया था। स्वर्गदूत ने थके हुए भविष्यद्वक्ताओं की शारीरिक और भावनात्मक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये कहा, “तुझे बहुत लम्बी यात्रा करनी है” (1 राजा 19:4-8)।

अत:, जब चेले उत्साह से भरे हुए, विजयी मिशनरी दौरे से वापस आए, तो प्रभु ने उनसे कहा कि उन्हें विश्राम की आवश्यकता है।

*भीड़* परभी ध्यान दें (6:32-33):

*इसलिये वे नाव पर चढ़कर, सुनसान जगह में अलग चले गए। (6:32)*

अत:, वे नाव से झील पार थोड़ी छुट्टी मनाने के लिये चले गए। यीशु कितना मानवीय था! मरकुस हमें दिखाता है कि प्रभु यीशु, परमेश्वर के सेवक के रूप में, सुबह से रात तक व्यस्त रहता था। वह हमें यह भी बताता है कि उसने कैसे छुट्टी मनाई।

छुट्टियाँ लेना एक बढ़िया विचार है। हम उनकी कितनी उत्सुकता से प्रतीक्षा करते हैं! हमारी कुछ सबसे सुखद यादें हमारी छुट्टियों से जुड़ी हैं। छुट्टियाँ आमतौर पर स्थान परिवर्तन और व्यवसाय परिवर्तन से जुड़ी होती हैं।

परमेश्वर छुट्टियों में बहुत विश्वास करता है। जब उसने सृष्टि का कार्य पूरा कर लिया, तो उसने अपने परिश्रम के फल का आनन्द लेने के लिये स्वयं एक छुट्टी ली। मूसा की व्यवस्था में, उसने अपने लोगों के लाभ और आशीष के लिये विभिन्न पर्व और सब्त की स्थापना की। उनमें से कई पर्व यरूशलेम की आनन्दमय तीर्थयात्रा के लिये रखे गए थे। अत:, हमें यह जानकर आश्चर्य नहीं हुआ कि यीशु और चेले छुट्टी मनाने चले गए।

*बहुतों ने उन्हें जाते देखकर पहचान लिया, और सब नगरों से इकट्ठे होकर वहाँ पैदल दौड़े और उनसे पहले जा पहुँचे। (6:33)*

यह वास्तव में बहुत छोटी छुट्टी साबित हुई! यह समाचार कि यीशु और उसके चेले झील के उस पार जा रहे हैं, जंगल में आग की तरह फैल गया। उस पूरे क्षेत्र के लोग अपने गाँवों से निकल आए, अपनी पूरी शक्ति से उस जगह की ओर दौड़े जहाँ उन्हें नाव के लंगर पड़ने की अपेक्षा थी, और वे वहाँ पहुँच गए! वे इस अद्भुत काम करने वाले मसीह को एक दिन के लिये भी अपनी दृष्टि से ओझल नहीं होने देंगे।

हम *गुरु*  पर भी ध्यान देते हैं*:*

*उसने उतर कर बड़ी भीड़ देखी, और उन पर तरस खाया, क्योंकि वे उन भेड़ों के समान थे, जिनका कोई रखवाला न हो; और वह उन्हें बहुत सी बातें सिखाने लगा। (6:34)*

उनके कई धार्मिक अगुवे झूठे चरवाहे थे। बाकी अधिकांश भेड़ों से बेहतर नहीं थे। चरवाहे के बिना भेड़ें जल्द ही झुण्ड नहीं रह जातीं। वे सभी दिशाओं में भटक जाती हैं और शिकारियों के लिये आसान शिकार बन जाती हैं। यही बात चुने हुए लोगों के साथ भी हुई थी। वे संसार के सभी हिस्सों में तितर-बितर हो गए और फैल गए, सभी तरह के धार्मिक दलों और दर्शनशास्त्रों के शिकार बन गए। उनमें से कई जो उनके चरवाहे होने का दावा करते थे, वे भ्रमित लोग थे, जो ईश्वरीय सत्य की तुलना में धार्मिक परम्पराओं के बारे में अधिक चिन्तित थे। प्रभु का हृदय इस्राएल के घराने की इन खोई हुई भेड़ों और इस यहूदी झुण्ड की अन्य भेड़ों के लिये दुःखी था (यूहन्ना 10:16)। वह उनका चरवाहा होगा। अत: मरकुस ने कहा कि उसने उन्हें “बहुत सी बातें” सिखाईं।

फिर हम *लोगों* पर ध्यान देते हैं(6:35-38):

*जब दिन बहुत ढल गया, तो उसके चेले उसके पास आकर कहने लगे, “यह सुनसान जगह है, और दिन बहुत ढल गया है। (6:35)*

परन्तु अब देर हो रही थी। चेलों ने प्रभु को समय और जगह की अंधकारमय प्रकृति की याद दिलाई। नि:संदेह, इस मामले की सच्चाई यह थी कि वे स्वयं थके हुए और भूखे थे। उनकी छुट्टियाँ बर्बाद हो गई थीं। जहाँ तक शिक्षा का प्रश्न है, वे पहले ही यह सब सुन चुके थे। अब, वे भी भीड़ की माँग से हृदय से ऊब चुके होंगे। शाम की छाया लम्बी होती जा रही थी। उनके पास खाने-पीने की कोई जगह नहीं थी। इनमें से कई लोगों को लम्बा यात्रा करनी थी; इसके अलावा, उनमें कई स्त्रियाँ और बच्चे भी थे। यह सब उनसे छुटकारा पाने के लिये एक अच्छा बहाना बन गया। इस तरह, कम से कम, चेले प्रभु के साथ एक शान्त शाम और एक अच्छी रात की नींद की अपेक्षा कर सकते थे।

*उन्हें विदा कर कि चारों ओर के गाँवों और बस्तियों में जाकर, अपने लिये कुछ खाने को मोल लें।” (6:36)*

अत: उन्होंने प्रभु को सुझाव दिया कि वह भीड़ को आसपास के गाँवों में कुछ खाने के लिये भेज दें। यह सीधी-सादी और व्यावहारिक सलाह है – कि मानो प्रभु स्वयं इसे समझ नहीं पाया। हर कोई थका हुआ और भूखा था। उनमें से कुछ लोग झील के आधे हिस्से तक दौड़कर आ गए थे। प्रभु स्वयं पूरे दिन शिक्षा देता रहा। वह पूरी रात कठिनाई से ही सिखा पाता। अत:, क्यों न अभी ही सिखाना छोड़ दिया जाए, जब लोगों के घर जाने के लिये पर्याप्त दिन का उजियाला बचा हुआ था?

यह सब बहुत समझदारी भरा लग रहा था। परन्तु परमेश्वर के पास इससे भी बेहतर विचार था।

*उसने उत्तर दिया, “तुम ही उन्हें खाने को दो।” उन्होंने उससे कहा, “क्या हम सौ दीनार की रोटियाँ मोल लें, और उन्हें खिलाएँ?” (6:37)*

यह एक रूढ़िवादी अनुमान था। उन दिनों एक व्यक्ति एक दमड़ी के लिये पूरे दिन काम करता था। चेलों में से जो व्यापारी थे उन्होंने कुछ मानसिक गणित किया था। उन्होंने अपने मन से यह विचार निकाल दिया कि वे किसी तरह की सहायता कर सकते हैं। वे दस हजार डॉलर जितना कहाँ से जुटाएँगे (जो आज के समय के बराबर है)? यह तो बिलकुल असम्भव था।

*उसने उनसे कहा, “जाकर देखो तुम्हारे पास कितनी रोटियाँ हैं?” उन्होंने मालूम करके कहा, “पाँच और दो मछली भी।” (6:38)*

कुल उपलब्ध आपूर्ति एक छोटे लड़के के दोपहर के भोजन की थी - पाँच छोटी “रोटियाँ” (जो शायद जेब में रखे जाने वाली रोटी के टुकड़े थे) और कुछ छोटी मछलियाँ - जो छोटे लड़के की माता ने सोच-समझकर उसके लिये उपलब्ध करवाई थीं।

*माँग* को देखकर, जिसे चेलों ने अपमानजनक माना, चेलों ने *आपूर्ति को देखा,* जो उन्हें बहुत ही हास्यास्पद लगा। भूखा लड़का कुछ ही मिनटों में पूरा खाना खा जाता। हालाँकि, प्रभु आपूर्ति और माँग के नियम के संदर्भ में नहीं सोच रहा था। जो उसके मन में था, वह गणित नहीं, बल्कि एक आश्चर्यकर्म था!

अंत में हम *आश्चर्यकर्म* पर पहुँचते हैं(6:39-44):

*तब उसने उन्हें आज्ञा दी कि सब को हरी घास पर पाँति–पाँति से बैठा दो। वे सौ सौ और पचास पचास करके पाँति–पाँति बैठ गए। (6:39-40)*

भोजन उपलब्ध होने के बाद कोई धक्का-मुक्की, हाथापाई या झगड़ा नहीं होना था। तैयारी में, प्रभु ने सभी को व्यवस्थित तरीके से, समूहों में बैठाया, और उन समूहों के बीच इतनी जगह थी कि चेले आगे-पीछे चल सकें। नि:संदेह लोगों में प्रसन्नता की लहर दौड़ गई, जब उन्होंने स्वयं को व्यवस्थित करके प्रभु की ओर देखा।

*उसने उन पाँच रोटियों को और दो मछलियों को लिया, और स्वर्ग की ओर देखकर धन्यवाद किया, और रोटियाँ तोड़–तोड़ कर चेलों को देता गया कि वे लोगों को परोसें, और वे दो मछलियाँ भी उन सब में बाँट दीं। (6:41)*

इसके बाद प्रभु के सबसे बड़े आश्चर्यकर्मों में से एक हुआ और यह एकमात्र ऐसा आश्चर्यकर्म था जो चारों सुसमाचारों में दर्ज है। यहाँ तक कि यूहन्ना ने भी इस आश्चर्यकर्म को शामिल किया, जिसने प्रवृत्ति के अनुसार अपने सुसमाचार में वह नहीं लिखा था जो दूसरों ने अपने सुसमाचार में लिखा था ।

“उसने... स्वर्ग की ओर देखकर।” आरम्भ से ही, प्रभु इस संसार के आपूर्ति स्रोतों से परे देख रहा था। संसार जल्द ही वह सब कुछ समाप्त कर देता है जो वह प्रदान कर सकता है। प्रभु ने अपना पूरा जीवन, पालने से लेकर कब्र तक, स्वर्ग पर अपनी दृष्टि रखते हुए बिताया।

भाग देकर गुणा करने और घटाकर जोड़ने का आश्चर्यकर्म आरम्भ हुआ। परमाणु का परमेश्वर, आनुवंशिक भेद के सृष्टिकर्ता ने बस उन सभी सामान्य तरीकों को हटा दिया जिससे रोटियाँ और मछलियाँ बनाई जाती हैं और मानवीय रूप से असम्भव काम करने लगा। रोटियाँ और मछलियाँ उनके हाथों में उतनी ही आसानी से बढ़ती हैं जितनी आसानी से पानी उसकी दृष्टि में दाखरस में बदल जाता है। एक सर्वशक्तिमान परमेश्वर को देखते हुए, जो सब कुछ बनाने में सक्षम है - कुछ भी नहीं से - उप-परमाणु के कणों से लेकर विशाल आकाशगंगाओं तक यह आश्चर्यकर्म अविश्वसनीय है। यह बिलकुल वैसा ही है जैसा कि कोई अपेक्षा करेगा यदि परमेश्वर मौजूद हो, अर्थात् देह में प्रकट हो।

*सब खाकर तृप्त हो गए। (6:42)*

वे भूखे थे! तो मछली सैंडविच बना दिए! जितनी जल्दी वे बनते थे उतनी ही जल्दी गायब हो जाते थे, और फिर भी वहाँ अधिक था उनसे प्रोटीन और कार्बोहाइड्रेट की ऊर्जा से भरपूर की कभी न समाप्त होने वाली आपूर्ति होती थी।

यह शाकाहारी बने रहने के लिये बहुत अधिक था! महिमा का प्रभु, सृष्टि का रचयिता, जिसके पास परमेश्वर के सभी संसाधन हैं, जो आसानी से फलों और सब्जियों की टोकरियाँ बना सकता था, रोटी और मछली प्रदान करता है। प्रभु जानता है कि हमारे लिये सबसे अच्छा क्या है। वह शाकाहारी नहीं था। उसने मांस खाया। जब वह अब्राहम से मिलने गया तो उसने अपने देहधारण से पहले वाले रूप में इसे खाया (उत्पत्ति 18:1-8)। उसने इसे फसह के समय खाया। उसने इसे ऊपरौठी कोठरी में अपने पुनरुत्थान वाले शरीर में खाया। जलप्रलय के बाद हमारी जाति के लिये मांसाहार को ईश्वरीय रूप से निर्धारित किया गया था (उत्पत्ति 9:3-5) और इसे मूसा की व्यवस्था की आहार संहिता के द्वारा समर्थन दिया गया था। इसे शमौन पतरस को दिए गए दर्शन के द्वारा भी समर्थन दिया गया था (प्रेरितों 10:9-16)। पतरस इसलिये शर्मिंदा नहीं हुआ क्योंकि उस चादर में पशु थे, बल्कि इसलिये शर्मिंदा हुआ क्योंकि उनमें से कुछ को लैव्यव्यवस्था के द्वारा “अशुद्ध” के रूप में वर्गीकृत किया गया था, और उसे *उन्हें* खाने के लिये भी कहा गया था। पतरस *मांस* खाने के विचार से शर्मिंदा नहीं था। अपने पुनरुत्थान के बाद प्रभु ने झील के किनारे अपने चेलों के एक समूह के लिये नाश्ते का प्रबंध किया था। उस भोजन में मछली शामिल थी। फिर तो स्पष्ट है कि बाइबल शाकाहारी भोजन का समर्थन नहीं करती है।

*और उन्होंने टुकड़ों से बारह टोकरियाँ भर कर उठाईं, और कुछ मछलियों से भी। जिन्होंने रोटियाँ खाईं, वे पाँच हज़ार पुरुष थे। (6:43-44)*

मरकुस ने पाँच हज़ार पुरुषों का आंकड़ा दिया है। मत्ती ने यह भी कहा है कि वहाँ स्त्रियाँ और बच्चे भी थे (मत्ती 14:21)। यह एक उल्लेखनीय आश्चर्यकर्म था। तथाकथित “उदारवादी” ईश-वैज्ञानिक (हालाँकि ऐसे लगातार संकीर्ण सोच वाले भौतिकवादियों को “उदारवादी” क्यों कहा जाना चाहिए, यह कहना कठिन बात है) इस बात से इन्कार करते हैं कि यह आश्चर्यकर्म कभी हुआ था।

अज्ञेयवादी ईश-वैज्ञानिकों के आधारहीन अनुमानों के बावजूद, चारों सुसमाचार प्रचारक इस बात पर सहमत हैं कि प्रभु यीशु ने अद्भुत ढंग से वह भोजन तैयार किया था। वह सभी के लिये पर्याप्त भोजन था, और इसके अलावा भी बहुत कुछ बचा हुआ था। यूहन्ना और मत्ती, सुसमाचार प्रचारक, दोनों ही उस समय वहाँ मौजूद थे, और इसलिये उनका विवरण एक विश्वसनीय प्रत्यक्षदर्शी विवरण है - जो संदेहवादी ईश-वैज्ञानिकों की अटकलों से कहीं बेहतर है।

प्रभु *ने* अब भीड़ को विदा करने का प्रस्ताव रखा। हवा में मसीही उत्साह का एक बड़ा हिस्सा था। अच्छी तरह से खिलाए गए लोगों की भीड़ गति को बढ़ाने, उसे राजा घोषित करने, गलील को संगठित करने और यरूशलेम पर चढ़ाई करने के लिये तैयार थी। वे चाहते थे कि रोटी और आश्चर्यकर्म एक स्थायी वस्तु बन जाए।

प्रभु ने पहले चेलों को विदा किया, ताकि वे बढ़ते शोर में शामिल न हो जाएँ। उसकी न तो उस तरह का राज्य स्थापित करने की मंशा थी जैसा भीड़ के मन में था और न ही उसे जनता की माँग के कारण राजगद्दी स्वीकार करने के लिये विवश होना था। रोमियों की एक कहावत थी, *वोक्स पॉपुली, वोक्स देई: “लोगों* की आवाज परमेश्वर की आवाज है।” यीशु ऐसा नहीं सोचता था। हर पल *परमेश्वर* की आवाज सुनी। उसने शोरगुल भरे बहुमत में परमेश्वर की शान्त, धीमी आवाज को नहीं पहचाना।

**ख. उसने असहाय लोगों की आवश्यकताएँ पूरी कीं (6:45-52)**

पाँच हज़ार लोगों को भोजन करवाने के कुछ ही समय बाद एक और भी बड़ा आश्चर्यकर्म घटित हुआ।

प्रथम, हमारी *एक बड़ी इच्छा है* (6:45-46):

*तब उसने तुरन्त अपने चेलों को नाव पर चढ़ने के लिये विवश किया कि वे उससे पहले उस पार बैतसैदा को चले जाएँ, जब तक कि वह लोगों को विदा करे। उन्हें विदा करके वह पहाड़ पर प्रार्थना करने को गया। (6:45-46)*

पहाड़ और झील पर रात छा गई, और अंतिम आवाज भी समाप्त हो गई। आखिरकार, वह स्वर्ग में अपने पिता के साथ अकेला था। उनके पास बात करने के लिये बहुत कुछ था, और हालाँकि प्रभु यीशु इतने कठिन दिन के बाद थक गया था, उसने इसे परमेश्वर के साथ अकेले अपने आवश्यक शान्त समय में बाधा नहीं बनने दिया।

उसे अपने पिता के साथ मिलकर भीड़ के बढ़ते उत्साह की समीक्षा करने की आवश्यकता थी, जिनके लिये वह एक चरवाहे के रूप में तरसता था। आत्मिक सत्य को समझने में उसके चेलों की सुस्ती भी थी। इसके अलावा, चेलों का वर्तमान स्थान झील के बीच में था और तूफान आने वाला था। इन सबसे परे, प्रतिष्ठान की ओर से बढ़ते विरोध की वजह से भी उसे अपनी व्यक्तिगत्, मानवीय आवश्यकताओं की समीक्षा करने की आवश्यकता थी। उसने रात भर प्रार्थना की।

फिर *बहुत निराशा हुई* (6:48-50a):

*जब साँझ हुई, तो नाव झील के बीच में थी, और वह अकेला भूमि पर था। (6:47)*

यह दृश्य अचानक चेलों की ओर मुड़ जाता है। वह यहाँ था; वे वहाँ थे। वह उनके बढ़ते खतरे को अच्छी तरह जानता था। दूरी से उसे कोई फर्क नहीं पड़ता था। अक्सर ऐसा लगता है कि हम यहाँ हैं और वह वहाँ है - बहुत दूर, हमसे दूर और हमारी आवश्यकताओं से अनजान। परन्तु न तो दुष्टात्माओं, न बीमारी, न ही मृत्यु से उसे कोई फर्क पड़ता था। न ही दूरी से, और न ही आपदा से। वह प्रभु है!

*जब उसने देखा कि वे खेते खेते घबरा गए हैं, क्योंकि हवा उनके विरुद्ध थी, तो रात के चौथे पहर के निकट वह झील पर चलते हुए उनके पास आया; और उनसे आगे निकल जाना चाहता था। (6:48)*

रात का चौथा पहर रात तीन बजे से सुबह छह बजे तक था। अत: वे इस रात का आनन्द ले रहे थे। “उसने देखा।” अंधकार उन्हें उससे उतना ही छिपा नहीं सकता था जितना दूरी छिपा सकती थी। उसने देखा! वह हमेशा देखता है! “अत्ताएलरोई - ऐसा परमेश्वर जो देखता है,” यह वह सबक था जो बेचारी हाज़िरा ने तब सीखा जब पुराने नियम में पहली बार यहोवा का दूत (“प्रभु का दूत”) एक मनुष्य के सामने प्रकट हुआ (उत्पत्ति 16:13)। इस सत्य की पहचान ने उसके जीवन को बदल दिया।

सुसमाचार प्रचारक सबसे आश्चर्यजनक आश्चर्यकर्मों को एक बेपरवाह, तथ्यात्मक तरीके से दर्ज करते हैं। वे केवल तथ्यों को दर्ज करते हैं और उसे वहीं छोड़ देते हैं। वे कोई अतिशयोक्ति नहीं करते और सनसनी फैलाने का कोई प्रयत्न नहीं करते; जो कुछ हुआ वे केवल उसका एक संक्षिप्त अभिलेख प्रस्तुत करते हैं।

मरकुस कहता हैं कि वह “उनसे आगे निकल जाना चाहता था।” यीशु कभी भी हस्तक्षेप नहीं करता। “नासरत का यीशु पास से होकर गया है” यह वह वचन था जिसने अंधे व्यक्ति को जगाया (लूका 18:37)। लूका इम्माऊस के मार्ग के अनुभव को दर्ज करते हुए कहता हैं, “उसके ढंग से ऐसा जान पड़ा कि वह आगे बढ़ना चाहता है।” प्रभु ने उनके घर में प्रवेश करने से पहले इन दोनों से निमंत्रण की प्रतीक्षा की थी (लूका 24:28)। “तुम ने मुझे अपने अपने घर में नहीं ठहराया” न्याय के दिन अभियोग का हिस्सा होगा (मत्ती 25:43)।

अत:, वह लहरों पर ऐसे चलता हुआ वहाँ गया कि मानो वे उसके पैरों के नीचे ठोस फुटपाथ हों! उसका मार्ग उसे तूफान से परेशान चेलों के ठीक सामने ले जाता। ईश्वरत्व के सभी संसाधन उसके नियंत्रण में थे, परन्तु इससे उन्हें कोई लाभ होने से पहले उनकी ओर से कोई प्रतिक्रिया होनी चाहिए थी। चेलों के लिये यह देखना भयावह था कि वह वहाँ उछलते समुद्र पर चल रहा था। यह और भी दुःखद था कि वह “उनसे आगे निकल जाना चाहता था।” हमें ऐसा कभी नहीं होने देना चाहिए।

*परन्तु उन्होंने उसे झील पर चलते देखकर समझा कि भूत है, और चिल्‍ला उठे; क्योंकि सब उसे देखकर घबरा गए थे। (6:49-50a)*

उनके तूफान के डर को और भी बड़े डर ने निगल लिया। उन्हें लगा कि वे कोई भूत देख रहे हैं। कोई भी नश्वर मनुष्य लहरों पर नहीं चल सकता। वे अच्छी तरह जानते थे कि छोटी सी झील, अपनी सारी सुंदरता और प्रचुरता के बावजूद, अचानक आने वाले तूफानों के लिये दी गई थी, जैसे कि उस समय उन्हें अपनी चपेट में ले लिया था। इसके अलावा, यह एक दुष्टात्मा-ग्रस्त स्थान था। इसी झील के किनारे पर उसने गिरासेनी मनुष्य में से दुष्टात्माओं की एक सेना को बाहर निकाला था। वे कहाँ गए? गिरासेनी मनुष्य पर कब्जा करने वाली दुष्टात्माओं की सेना ने सूअरों के शरीर में प्रवेश किया था, जिन्होंने शैतानी व्यवहार के बजाय मृत्यु को प्राथमिकता दी थी, और स्वयं को इसी झील में फेंक दिया था। कफरनहूम में भी, इसी झील के किनारे, प्रभु ने कई दुष्टात्माओं को बाहर निकाला था। इस कारण, यह आश्चर्य की बात नहीं है कि चेलों ने कल्पना की होगी कि यह एक भूत था जिसे उन्होंने क्रोधित गहरे पानी पर भयावह रूप से चलते देखा था।

परन्तु फिर *एक महान खोज* सामने आती है(6:50b-51):

*पर उसने तुरन्त उनसे बातें कीं और कहा, “ढाढ़स बाँधो : मैं हूँ; डरो मत!” (6:50b)*

अब उसने उनका ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लिया था। भूतिया दृश्य ने उन्हें भयभीत कर दिया क्योंकि यह सभी अनुभवों के विपरीत था और सभी मानवीय व्याख्याओं से परे था। आवाज ने उन्हें चुप करवा दिया। उनका डर तुरन्त गायब हो गया। यह प्रभु था! सब ठीक था! यदि यह प्रभु था, जो तूफान के बीच से आ रहा था, तो डर को विदा करो। यह उसकी आवाज की ध्वनि - और प्रसन्न वचन था जिसने ऐसा किया, जिसमें छह सरल एक सारणी वाले शब्द थे: “ढाढ़स बाँधो!” - उनकी *भावनाओं* के लिये एक शब्द*;* “मैं हूँ!” - उनके *मनों* के लिये एक शब्द*;* “डरो मत!” - उनकी *इच्छाओं* के लिये एक शब्द।हियाव रखने का आदेश दिया जा सकता है। भय पर नियंत्रण पाया जा सकता है। उसकी निकटता से फर्क पड़ता है।

*तब वह उनके पास नाव पर आया, और हवा थम गई : और वे बहुत ही आश्‍चर्य करने लगे। (6:51)*

नि:संदेह, मरकुस पतरस के प्रभाव को दर्शाता है, और पतरस की भावनाओं को ठेस नहीं पहुँचाना चाहता, इस कारण वह पतरस के साहसिक कार्य की कहानी नहीं बताता (मत्ती 14:22-32; यूहन्ना 6:15-21)। वह सीधे तूफान के शान्त होने और चेलों पर इस आश्चर्यकर्म के प्रभाव की ओर बढ़ता है।

तूफ़ान थम गया! पूर्ण अराजकता के बदले पूर्ण शान्ति आ गई। और वहाँ, उनके साथ नाव में, वह व्यक्ति था जिसने यह बदलाव किया था। वह न केवल उफनती लहरों पर सवार हो सकता था और तेज हवाओं का सामना कर सकता था, बल्कि प्रकृति की शक्तियों को भी तुरन्त सुला सकता था। कोई आश्चर्य नहीं कि चेले “बहुत ही आश्चर्य करने लगे” या वे विस्मय में थे! उनका आश्चर्य “नापतोल से परे” था! वे आश्चर्य से स्तब्ध हो गए थे।

इसके बाद एक *बड़ी निराशा* होतीहै(6:51b-52):

*वे उन रोटियों के विषय में न समझे थे, क्योंकि उनके मन कठोर हो गए थे। (6:52)*

उन्हें आश्चर्यचकित नहीं होना चाहिए था। वास्तव में, उनका आश्चर्य अब उनका अभियोग बन गया है। क्या उन्होंने उसे एक घंटे पहले फसल के प्रभु के रूप में, एक लड़के के पिकनिक वाले भोजन को दस हज़ार लोगों के भोज में बदलते हुए नहीं देखा था? उन्हें क्यों आश्चर्यचकित होना चाहिए क्योंकि आँधी और लहरें उसकी आज्ञा मानती हैं? पवित्र आत्मा उस आश्चर्य को पुराने अविश्वास के कारण मानता हैं। “कठोर” शब्द से पता चलता है कि वे “कठोर”, “सुस्त”, “समझ से रहित” हो गए थे। हम कभी-कभी उन लोगों के बारे में बात करते हैं जो सुसमाचार की आवाज के अधीन बड़े हुए हैं, और फिर भी अपने पापों में बने हुए हैं, “सुसमाचार के प्रति कठोर” के रूप में। चेले *महिमा* के प्रति कठोर हो गए थे। वे आश्चर्यकर्म देखने के इतने आदी हो गए थे कि वे अब उन्हें नहीं देखते थे; और जब उन्होंने उन्हें अपनी बाहरी आँखों से देखा, तब भी वे उनके महत्व को समझने में विफल रहे। मरकुस का जोर दुःखद तथ्य पर है (और नि:संदेह पतरस ने उसे यह बताया) कि उनकी सुस्ती मन की एक स्थिर स्थिति बन गई थी। उन्हें यह जानना और अनुमान लगाना चाहिए था कि प्रभु ने उन्हें उनके मार्ग पर भेजा है, तथा चाहे कुछ भी हो जाए, वह उनका साथ देगा।

**ग. उसने दुःखी लोगों की आवश्यकताएँ पूरी कीं (6:53-56)**

*वे पार उतरकर गन्नेसरत में पहुँचे, और नाव घाट पर लगाई। जब वे नाव पर से उतरे, तो लोग तुरन्त उसको पहचान* गए। *(6:53-54)*

जैसे ही उन्होंने झील के उत्तर-पश्चिमी किनारे पर गन्नेसरत में नाव को किनारे पर खींचा, लोगों को उसे पहचानने में बस एक या दो पल लगे। यीशु आ गया! आसपास के समुदायों में उत्साह और प्रत्याशा की एक लहर दौड़ गई। आज के समय में प्रचारक लोग सभी तरह के अग्रिम विज्ञापन और तैयारी के साथ नगर में आ सकते हैं। वे भीड़ को जुटा सकते हैं, बैठकें कर सकते हैं और सेवाएँ संचालित कर सकते हैं। कभी-कभी आशीष की थोड़ी हलचल होती है, परन्तु, आमतौर पर, कुछ भी असामान्य नहीं होता। प्रचारक अपनी विदाई की घोषणा करके नगर से चला जाता है। उस स्थान पर मौजूद अधिकांश लोग इससे विचलित नहीं होते। उनमें से अधिकांश को तो यह भी पता नहीं कि वह आया और चला गया। जब यीशु आया तो ऐसा नहीं था! जब वह आया, तो घटनाएँ घटित हुईं।

*आसपास के सारे देश में दौड़े, और बीमारों को खाटों पर डालकर, जहाँ–जहाँ समाचार पाया कि वह है, वहाँ–वहाँ लिये फिरे। आसपास के सारे देश में दोड़े, और बीमारों को खाटों पर डालकर, जहाँ जहाँ समाचार पाया कि वह है, वहाँ वहाँ लिये फिरे। (6:55)*

मरकुस ने व्यापक हलचल का चित्रण किया है, जब लोग अपने बीमार लोगों को इकट्ठा करके, जहाँ कहीं भी यीशु था, वहाँ ले जा रहे थे। यह एक ऐसा अवसर था जिसे खोना नहीं चाहिए था। यीशु नगर में था!

*और जहाँ कहीं वह गाँवों, नगरों, या बस्तियों में जाता था, लोग बीमारों को बाजारों में रखकर उससे विनती करते थे कि वह उन्हें अपने वस्त्र के आँचल ही को छू लेने दे : और जितने उसे छूते थे, सब चंगे हो जाते थे। (6:56)*

इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था कि वह किसी बड़े नगर में, किसी छोटे से गाँव में, या किसी ग्रामीण क्षेत्र में दिखाई देता थे, तुरन्त ही वह स्थान जहाँ वह होता था, बीमार लोगों से भर जाता था, जो उसके वस्त्र के किनारे को छूने की विनती करते थे – उसकी चंगा करने की अचूक शक्ति पर उसका विश्वास बहुत अधिक था।

यह शायद उसकी लोकप्रियता और प्रशंसा का उच्चतम बिंदु था। यदि ये बातें - भारी भीड़, लोकप्रिय तालियाँ, और अचूक परिणाम - पासबान की सफलता की निशानी हैं तो उसके पास यह था। वह अब प्रसिद्ध था, परन्तु यह कितने समय तक चलेगा?

**2. क्या सिखाया गया (7:1-23)**

**क. संकट (7:1-4)**

*तब फरीसी और कुछ शास्त्री जो यरूशलेम से आए थे, उसके पास इकट्ठा हुए। (7:1)*

ऐसा लगता है कि यह धार्मिक प्रतिष्ठान की ओर से जाँच समिति थी। राजधानी में अधिकारी इस गलीली मसीह से लगातार नाराज हो रहे थे। उसकी प्रसिद्धि पहले से ही पूरे देश में हर नगर और गाँव में थी। इसके अलावा, यह एक लोकप्रिय मसीहवादी आंदोलन बन रहा था, और हाल ही में गलील में उसे राजा बनाने के लिये एक पहल के समाचार ने उन्हें चिन्तित कर दिया। ऐसा कुछ भी नहीं होने दिया जाना चाहिए जो रोम का ध्यान आकर्षित कर सके, और निश्चित रूप से ऐसा कोई आंदोलन नहीं जिसमें महासभा को अग्रणी भूमिका से वंचित किया जाए।

अत: यरूशलेम से कुछ फरीसी और शास्त्री यह देखने आए कि आखिर इतनी उत्सुकता किस बात को लेकर थी। नि:संदेह, वे यह भी जानना चाहते थे कि क्या यह नया उत्तरी देश का प्रचारक रब्बी यहूदी धर्म का पक्का समर्थक है और लिखित एवं मौखिक व्यवस्था दोनों का उत्साही समर्थक है।

वैसे भी, ये फरीसी और शास्त्री केवल दर्शक (निरीक्षक) थे। हालाँकि, उनकी विचित्र मानसिकता और प्राचीनों की परम्पराओं के प्रति उनकी भक्ति को देखते हुए, उन्हें आलोचना करने के लिये कुछ खोजने में अधिक समय नहीं लगा। उन्हें जल्द ही वह मिल गया जो वे चाहते थे।

*और उन्होंने उसके कुछ चेलों को अशुद्ध अर्थात् बिना धोए हाथों से रोटी खाते देखा। (7:2)*

राई का पहाड़ बनाना - फरीसियों और शास्त्रियों की यही विशेषता थी। यहाँ एक ऐसा व्यक्ति था जो उग्र गहराई पर चल सकता था, और “उन्होंने दोष ढूँढ़ लिया।” यहाँ एक ऐसा व्यक्ति था जो बिना कुछ लिये हजारों लोगों को खिला सकता था, और “उन्होंने दोष ढूँढ़ लिया।” यहाँ एक ऐसा व्यक्ति था जो “भलाई करता फिरता था”, जिसने पहले कभी किसी व्यक्ति की तरह बात नहीं की, और “उन्होंने दोष ढूँढ़ लिया।” उन्होंने एक छोटी सी बात पर दोष निकाला, उसके कुछ चेलों के द्वारा खाने से पहले हाथ न धोने पर - ऐसा कुछ जो उनकी परम्पराओं और नियमों का उल्लंघन करता था!

*क्योंकि फरीसी और सब यहूदी, पूर्वजों की परम्परा पर चलते हैं और जब तक भली भाँति हाथ नहीं धो लेते तब तक नहीं खाते; और बाजार से आकर, जब तक स्‍नान नहीं कर लेते, तब तक नहीं खाते; और बहुत सी अन्य बातें हैं, जो उनके पास मानने के लिये पहुँचाई गई हैं, जैसे कटोरों, और लोटों, और ताँबे के बरतनों को धोना–माँजना। (7:3-4)*

मरकुस अपने अन्यजाति पाठकों के लिये विस्तार से बताता है। अन्यजाति अक्सर यहूदियों को शारीरिक स्वच्छता के प्रति जुनूनी थे। इसमें कुछ भी गलत नहीं था, न ही वे इसे सीमा हद तक ले गए। जो गलत *था* वह अन्यजातियों के प्रति उनका तिरस्कार था क्योंकि वे अनुष्ठानिक स्वच्छता के प्रति समान रूप से जुनूनी नहीं थे। इसके अलावा, धार्मिक यहूदी केवल शारीरिक स्वच्छता से संतुष्ट थे, आंतरिक स्वच्छता की आवश्यकता को अनदेखा करते थे। विधिवाद अक्सर सच्ची पवित्रता के लिये बाहरी रूपों को प्रतिस्थापित करता है।

**ख. आलोचना (7:5-13)**

सबसे पहले, हमारे पास *आलोचकों* के प्रश्न हैं*:*

*इसलिये उन फरीसियों और शास्त्रियों ने उससे पूछा, “तेरे चेले क्यों पूर्वजों की परम्पराओं पर नहीं चलते, और बिना धोए हाथों से रोटी खाते हैं?” (7:5)*

आखिरकार उनके पास कुछ था! उसने अपने चेलों को गंदे हाथों से खाने की अनुमति दी! और इसके लिये उन्होंने अंत में उसे क्रूस पर चढ़ा दिया। मानवजाति के इतिहास में ऐसा कोई भविष्यद्वक्ता कभी नहीं आया। उसने अधिकार के साथ बात की, उसने सामर्थ्य के साथ काम किया, और उसने उन बातों को पूरा किया जो पवित्रशास्त्र ने भविष्यद्वाणी की थी। उसने ऐसे सिखाया जैसा किसी मनुष्य ने कभी नहीं सिखाया। उसने सैकड़ों चौंकाने वाले, प्रमाणित आश्चर्यकर्म किए। वह सभी अच्छाइयों से बढ़कर अच्छा था। उसके सभी तरीकों में बुद्धि, प्रेम और शक्ति चमकती थी। परन्तु उसने अपने चेलों को दोपहर के भोजन से पहले हाथ धोने के लिये नहीं कहा, इस कारण वह परमेश्वर की ओर से नहीं था!

उन्होंने इस पर उससे झगड़ा किया। यह विधिवाद है। जहाँ तक उनके नियमों और विधिमों का प्रश्न है, वे मनुष्यों के द्वारा बनाए हुए, बोझिल, अंतहीन, अनधिकृत और प्रेरणाहीन थे। वे प्रेरित पवित्रशास्त्र का हिस्सा नहीं थे और इस कारण वे किसी के लिये बाध्यकारी नहीं थे। अक्सर, उनकी परम्पराएँ सामान्य ज्ञान के नियमों से परे चली जाती थीं। वे गलत मुद्दों पर जोर देते थे। उनके पास इतने सारे मनुष्यों के द्वारा बनाए हुए नियम थे कि उन्हें याद रखना असम्भव था, और उनका पालन करना तो दूर की बात थी। वे पवित्रशास्त्र की झूठी व्याख्या पर आधारित थे, और वे तुच्छ बातों में माहिर थे। उन्होंने आंतरिक वास्तविकता के बजाय बाहरी अनुष्ठान को बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत किया। संक्षेप में, “पूर्वजों की परम्परा” बस यही थी - मनुष्यों के द्वारा बनाई हुई परम्परा, ठोस रूप में स्थापित, और फरीसियों और शास्त्रियों के लिये प्रकट सत्य से अधिक महत्वपूर्ण, ऐसा सत्य जो न केवल पवित्रशास्त्र में लिखा गया था बल्कि देहधारी मसीह के रूप में उनके सामने भी खड़ा था।

फिर हमारे पास *मसीह के द्वारा उद्धृत वचन हैं* (7:6-13):

*उसने उनसे कहा, “यशायाह ने तुम कपटियों के विषय में बहुत ठीक भविष्यद्वाणी की; जैसा लिखा है : ‘ये लोग होठों से तो मेरा आदर करते हैं, पर उनका मन मुझ से दूर रहता है। ये व्यर्थ मेरी उपासना करते हैं, क्योंकि मनुष्यों की आज्ञाओं को धर्मोपदेश करके सिखाते हैं।’ (7:6-7)*

प्रभु उनके लिये तैयार था। उसने इस दिन की लम्बे समय से प्रतीक्षा की थी। उसकी तलवार एक झटके में उसके हाथ में थी। उसने यशायाह और बाकी सभी पवित्रशास्त्रों को अपने मन में याद कर लिया था, अपने हृदय के सिंहासन पर विराजमान कर लिया था, और अपने होठों पर तैयार कर लिया था। फरीसी और शास्त्रियों ने अपनी परम्परा की ओर संकेत किया; उसने परमेश्वर की प्रेरित सच्चाई की ओर संकेत किया (यशायाह 29:13)।

न ही उसने उनकी भावनाओं को छोड़ा। वे पाखण्डी थे, वे धार्मिक नाटक करने वाले थे। वे सब बातें करते थे। उनका धर्म दिखावटी था, और उनके हृदय पूरी तरह से परमेश्वर से दूर थे।

यह सभी झूठे धर्मों का सार है। हालाँकि, परमेश्वर की आराधना केवल उसकी शर्तों पर ही की जाएगी। जब प्रभु ने कुएँ पर सामरी स्त्री से बात की, तो उसने लम्बे समय से चले आ रहे विवाद का मुद्दा उठाया। सामरी लोगों के पास कभी गिरिज्जीम पहाड़ पर एक मन्दिर था, परन्तु यहूदियों के द्वारा इसे बहुत पहले नष्ट कर दिया गया था। हालाँकि, यहूदियों का यरूशलेम में अभी भी अपना मन्दिर था। हालाँकि उनका मन्दिर चला गया था, सामरी अभी भी मानते थे कि वह पहाड़ जहाँ वह खड़ा था पवित्र था। कुएँ पर स्त्री ने यीशु से कहा, “हमारे बापदादों ने इसी पहाड़ पर आराधना की, और तुम कहते हो कि वह जगह जहाँ आराधना करनी चाहिए यरूशलेम में है (यूहन्ना 4:20)।

प्रभु ने उसे साफ-साफ बताया कि उद्धार यहूदियों का है और सामरी लोग परमेश्वर को नहीं जानते। हालाँकि, उसने उसके विचारों को उसके मन्दिरों और परम्पराओं वाले धर्म से ऊपर उठाने का प्रयत्न किया। उसने कहा, “मेरी मेरी बात का विश्‍वास कर कि वह समय आता है कि तुम न तो इस पहाड़ पर पिता की आराधना करोगे, न यरूशलेम में... परन्तु वह समय आता है, वरन् अब भी है, जिसमें सच्‍चे भक्‍त पिता की आराधना आत्मा और सच्‍चाई से करेंगे, क्योंकि पिता अपने लिये ऐसे ही आराधकों को ढूँढ़ता है” (यूहन्ना 4:21, 23)।

यहूदी लोग भी सामरियों के समान ही जाल में फँस गए थे, जिन्हें वे तुच्छ समझते थे। उन्होंने अपनी परम्पराओं के लिये परमेश्वर के वचन को एक ओर कर दिया था। परमेश्वर ने उनकी कानूनी शर्तों पर आराधना करवाने से इन्कार कर दिया। उनकी आराधना व्यर्थ थी।

*क्योंकि तुम परमेश्‍वर की आज्ञा को टालकर मनुष्यों की रीतियों को मानते हो।” (7:8)*

यहूदियों ने अपनी परम्पराओं को तोरह से ऊपर रखा। उन्होंने अपनी मौखिक व्यवस्था को, जिसमें छोटी-छोटी बातों पर अंतहीन बहस और बोझिल नियम और विधियाँ थीं, परमेश्वर के वचन के स्थान पर रख दिया। उन्होंने पुराने नियम की शानदार आत्मिक अवधारणाओं को एक ओर कर दिया और लोगों को बर्तनों एवं घड़ों में व्यस्त रहना सिखाया - जैसे, उदाहरण के लिये, बकरी के बच्चे को उसकी माता के दूध में न उबालने के बारे में उनके अंतहीन नियम।

नया जन्म न पाए हुए मनुष्य का हृदय हमेशा एक ही दिशा में झुकता हुआ प्रतीत होता है। रोमी कैथोलिक कलीसिया यहूदियों की तरह ही पासबानों की पारम्परिक शिक्षाओं के प्रति समान प्रेम रखता है। रोमीवाद का सम्बन्ध जेवनारों और उपवासों, तीर्थयात्राओं और तपस्या, वस्त्रों और अनुष्ठानों, तथा प्रतीकों और छवियों से है। परमेश्वर के वचन का सरल सत्य इन सबके नीचे दबा हुआ है। ऐसा नहीं है कि प्रोटेस्टेंट कलीसियाएँ बहुत बेहतर हैं। हम अपने स्वयं के बाहरी रूप और परम्पराएँ विकसित करते हैं। जब तक लोग हमारे छोटे-छोटे अनुष्ठानों का पालन करते हैं, तब तक वे हमारी संगति में बने रह सकते हैं। अक्सर हम उनसे यही अपेक्षा करते हैं। परन्तु मसीही धर्म केवल पैर धोने, सिर ढकने, शिशु बपतिस्मा और ऐसी बातों का मामला नहीं है। जिस उत्साह से उनके समर्थक इन बातों का बचाव करते हैं और उन पर जोर देते हैं, उसे देखते हुए कोई भी सोच सकता है कि मसीही होने के लिये बस इतना ही है।

*उसने उनसे कहा, “तुम अपनी परम्पराओं को मानने के लिये परमेश्‍वर की आज्ञा कैसी अच्छी तरह टाल देते हो! (7:9)*

यहीं पर विधिवाद हमेशा समाप्त होता है। हमारे पंथ परमेश्वर की आज्ञाओं से अधिक महत्वपूर्ण हो जाते हैं। मानवीय चतुराई पर आधारित हमारी व्याख्याएँ पवित्र आत्मा के द्वारा प्रकाशन से अधिक महत्वपूर्ण हैं। परमेश्वर की व्यवस्था एक मानक नहीं रह जाती; यह एक ऐसी व्यवस्था बन जाती है जिसे हम हेरफेर करते हैं और नियंत्रित करते हैं जब तक कि हमारी परम्पराएँ और शिक्षाएँ परमेश्वर के वचन का स्थान नहीं लेतीं।

*क्योंकि मूसा ने कहा है, ‘अपने पिता और अपनी माता का आदर कर,’ और ‘जो कोई पिता वा माता को बुरा कहे, वह अवश्य मार डाला जाए।’ (7:10)*

प्रभु ने एक उदाहरण दिया। उसने उन्हें पाँचवीं आज्ञा का हवाला दिया, जिसका सम्बन्ध माता-पिता का सम्मान करने और लम्बी आयु की आशीष से था (निर्गमन 20:12)। विद्रोही पुत्र के बारे में नियम, जिसे मृत्युदण्ड दिया जाना था, बाद में इस आज्ञा में जोड़ा गया (व्यवस्थाविवरण 21:18-21)। व्यवस्था स्पष्ट और सुव्यवस्थित थी। एक बच्चा इसे पढ़ सकता था और समझ सकता था। एक ओर, माता-पिता का सम्मान किया जाता था; दूसरी ओर, माता-पिता का अपमान किया जाता था। एक ओर, लम्बी आयु की सम्भावना; दूसरी ओर, शीघ्र और अचानक मृत्यु की सम्भावना। उस आज्ञा को समझने के लिये किसी को भी रब्बी की व्याख्या के पन्नों की आवश्यकता नहीं थी। परमेश्वर की नैतिक व्यवस्था सभी को समझने के लिये लिखी गई थी। परन्तु रब्बी इसे यहीं पर छोड़ने से संतुष्ट नहीं थे।

*परन्तु तुम कहते हो कि यदि कोई अपने पिता वा माता से कहे, ‘जो कुछ तुझे मुझ से लाभ पहुँच सकता था, वह कुरबान अर्थात् संकल्प हो चुका।’ तो तुम उसको उसके पिता वा उसकी माता की कुछ सेवा करने नहीं देते। (7:11-12)*

यह एक वकील की चाल थी। एक पुत्र अपने माता-पिता से, जिनका बुढ़ापे में भरण-पोषण करना उसका कर्तव्य था, कह सकता था, “मैंने परमेश्वर को वह समर्पित किया है जो आपकी आवश्यकताओं को पूरा करेगा।” इससे वह अपने माता-पिता के मामले में जितना हो सके बच जाता था। शास्त्रियों और फरीसियों के अनुसार, यह अधिक आवश्यक था कि एक व्यक्ति अपने आवश्यकता में पड़े माता-पिता की सहायता करने की बजाय अपने दशमांश और मन्दिर कर का भुगतान करे। एक व्यक्ति यह भी कह सकता था, “मैंने अपना सब कुछ परमेश्वर को समर्पित कर दिया है,” इस तरह उसे अपने सबसे स्पष्ट और बुनियादी कर्तव्य - अपने बूढ़े माता-पिता की देखभाल करने से बचने के लिये रब्बी का रास्ता मिल जाता था।

*इस प्रकार तुम अपनी परम्पराओं से, जिन्हें तुम ने ठहराया है, परमेश्‍वर का वचन टाल देते हो; और ऐसे ऐसे बहुत से काम करते हो।” (7:13)*

धार्मिक अगुवों ने व्यवस्था के इस तरह के हेरफेर से परमेश्वर के वचन को निरर्थक और अर्थहीन बना दिया। प्रभु ने लिखित व्यवस्था के बीच एक स्पष्ट रेखा खींची – सीनै में मूसा को लिखित रूप में दिया गया व्यवस्था, जिसे वे “परमेश्वर का वचन (लोगोस)” कहते हैं - और “मौखिक व्यवस्था”, जिसे रब्बियों ने कई वर्षों में विकसित किया। प्रभु ने इन टिप्पणियों को स्पष्ट रूप से “तुम्हारी रीतियाँ” कहा। अपने सम्पूर्ण जीवन में उसने रब्बियों को इन रीतियों की व्याख्या करते हुए सुना था। वे तालमूद का आरम्भ थीं। वे एक से दूसरी सदी तक बढ़ती गईं, जब तक कि वे *एनसाइक्लोपीडिया* *ब्रिटानिका जितनी बड़ी नहीं हो गईं।* रब्बियों ने इन मौखिक शिक्षाओं को सदियों तक अपनी अविश्वसनीय रूप से विशाल स्मृतियों में रखा। ये “रीतियों” ठोस रूप से कठोर हो गईं और यहूदियों के लिये बाइबल से भी अधिक महत्वपूर्ण हो गईं। परन्तु प्रभु ने इस सभी पारम्परिक रीतियों की शिक्षा को कूड़े के ढेर में फेंक दिया। अधिकारियों ने उसके अनुसार उनसे घृणा की और उसके विनाश का षड्यंत्र रचा।

**ग. टीका (7:14-23)**

ध्यान दें *कि उसने भीड़ के लिये क्या कहा* (7:14-16):

*तब उसने लोगों को अपने पास बुलाकर उनसे कहा, “तुम सब मेरी सुनो, और समझो। (7:14)*

अब वह शास्त्रियों और फरीसियों से हटकर भीड़ की ओर मुड़ा। धार्मिक प्रतिष्ठान के अगुवों के लिये बहुत कम अपेक्षा थी; वे पहले से ही अपने मार्ग पर चल रहे थे। परन्तु आम लोग इस कानूनी संकीर्णता से इतने बंधे नहीं थे कि वे तर्क से परे हो जाएँ। इस कारण, उसने उन्हें सुनने और समझने के लिये आमंत्रित किया।

*ऐसी कोई वस्तु नहीं जो मनुष्य में बाहर से समाकर उसे अशुद्ध करे; परन्तु जो वस्तुएँ मनुष्य के भीतर से निकलती हैं, वे ही उसे अशुद्ध करती हैं। [यदि किसी के सुनने के कान हों तो सुन ले।]” (7:15-16)*

उन्होंने चेलों पर बिना हाथ धोए खाने का आरोप लगाया था। यह किसी के लिये भी स्पष्ट होना चाहिए था कि शरीर से जो कुछ बाहर निकलता है वह शरीर में प्रवेश करने वाली चीज़ों से अधिक अशुद्ध होता है - शायद कुछ कीटाणु या किसी व्यक्ति के हाथों से मिट्टी और गंदगी के निशान। शरीर की प्राकृतिक सुरक्षा इनमें से अधिकांश का ख्याल रखती है।

“यदि किसी के सुनने के कान हों तो सुन ले” यह अभिव्यक्ति केवल प्रभु की है। उसने इसे पृथ्वी पर रहते हुए सात बार और अपने स्वर्गारोहण के बाद आठ बार उपयोग किया। उसने हमेशा इस अभिव्यक्ति का उपयोग अपनी बातों पर विशेष ध्यान आकर्षित करने के लिये किया। यहाँ दर्ज अभिव्यक्ति ऐसा छठा अवसर है जब प्रभु ने इसका उपयोग किया। वह चाहता था कि उसके श्रोता उसके वचनों पर ध्यान दें।

इस बात पर भी ध्यान दें *कि उसने अपने लोगों को क्या समझाया* (7:17-23):

*जब वह भीड़ के पास से घर में गया, तो उसके चेलों ने इस दृष्‍टान्त के विषय में उस से पूछा। (7:17)*

प्रभु ने अब भीड़ और आलोचकों से मुँह मोड़ लिया और घर में शरण ली। चेलों ने तुरन्त इस विश्राम का लाभ उठाते हुए उससे “इस दृष्टांत” को समझाने के लिये कहा। कम से कम उनमें यह समझ तो थी कि प्रभु के मन में केवल बाहरी और भीतरी शारीरिक अशुद्धता से कहीं अधिक था। फिर भी, वे बात को समझने में असफल रहे।

*उसने उनसे कहा, “क्या तुम भी ऐसे नासमझ हो? क्या तुम नहीं समझते कि जो वस्तु बाहर से मनुष्य के भीतर जाती है, वह उसे अशुद्ध नहीं कर सकती? क्योंकि वह उसके मन में नहीं, परन्तु पेट में जाती है और संडास में निकल जाती है?” यह कहकर उसने सब भोजन वस्तुओं को शुद्ध ठहराया। (7:18-19)*यह सब केवल एक प्राकृतिक शारीरिक क्रिया थी। हम क्या और कैसे खाते हैं, इसका असर हमारी आत्मा पर नहीं पड़ता, केवल हमारे शारीरिक स्वास्थ्य पर पड़ता है। इसके अलावा, शरीर के पास अपने अशुद्ध अपशिष्ट उत्पादों को निपटाने का अपना तरीका होता है। किसी भी मामले में, “स्वच्छ” और “अशुद्ध” मांस के बारे में सभी औपचारिक नियम केवल अस्थायी थे। मरकुस की अभिव्यक्ति “सब भोजन वस्तुओं को शुद्ध ठहराया” (“सब भोजन वस्तुओं को पवित्र करना” - जैसा कि प्रेरितों 10:15 में मिलता है) से पता चलता है कि प्रभु ने पिन्तेकुस्त के परिणामस्वरूप होने वाली व्यवस्थाओं में बदलाव का अनुमान लगाया था। मूसा की व्यवस्था में निहित सम्पूर्ण अनुष्ठान नियम को समाप्त किया जाना था, जिसमें “शुद्ध” और “अशुद्ध” पशुओं को खाने के कठोर नियम शामिल थे। पतरस इस सच्चाई को जानने वाले पहले लोगों में से था (प्रेरितों 10:15), और नि:संदेह उसने अपने मित्र मरकुस को इसके बारे में बताया। किसी भी मामले में, शमौन चमड़े का धंधा करने वाले के घर में पतरस का अनुभव जल्द ही सार्वजनिक ज्ञान बन गया। मरकुस दिखाता है कि प्रभु ने, अपने मन में, इब्रानी भोजन के नियमों को पहले ही आत्मिक जीवन के लिये अप्रासंगिक और कलीसिया युग में सुसमाचार के प्रसार में बाधा मानकर ठुकरा दिया था।

*फिर उसने कहा, “जो मनुष्य में से निकलता है, वही मनुष्य को अशुद्ध करता है। (7:20)*

अब प्रभु ने हृदय पर ध्यान केन्द्रित करके अपने “दृष्टान्त” को विस्तारपूर्वक समझाया।

*क्योंकि भीतर से, अर्थात् मनुष्य के मन से, बुरे बुरे विचार, व्यभिचार, चोरी, हत्या, परस्त्रीगमन, लोभ, दुष्‍टता, छल, लुचपन, कुदृष्‍टि, निन्दा, अभिमान, और मूर्खता निकलती हैं। (7:21-22)*

कितनी भयावह सूची है! और यह सोचना कि हम उन सभी को अपने हृदयों में लेकर चलते हैं। सच में, जैसा कि भविष्यद्वक्ता ने कहा, “मन तो सब वस्तुओं से अधिक धोखा देनेवाला होता है, उस में असाध्य रोग लगा है” (यिर्मयाह 17:9)। इस भयानक सूची में कम से कम तेरह बातें हैं। यूनानी भाषा के पाठ में, पहली सात बातें बहुवचन में हैं; शेष छह बातें एकवचन में हैं। इन सभी तेरह को एक *संयोजक-लोप अलंकार* के रूप में सूचीबद्ध किया गया है*,* जो हमें एक के बाद एक तेजी से अनुक्रम में और वाक्य के चरमोत्कर्ष पर ले जाता है।

प्रभु हर किसी के हृदय में झाँकता है। वह जहाँ भी देखता है, उसे ये भयानक बातें दिखाई देती हैं। हमें उन्हें देखने के लिये बस अपने हृदय के भीतर देखना है। समाज, परिवार, मित्र, विवेक, कलीसिया और पवित्र आत्मा के द्वारा हम पर प्रतिबंध लगाए जाते हैं, परन्तु ये सभी बातें वैसे ही मौजूद हैं। केवल परमेश्वर का अनुग्रह ही हमें उन्हें व्यक्त करने से रोकता है। कोई आश्चर्य नहीं कि यीशु ने नीकुदेमुस से कहा कि हमें नये सिरे से जन्म लेने की आवश्यकता है (यूहन्ना 3:3)।

*ये सब बुरी बातें भीतर ही से निकलती हैं और मनुष्य को अशुद्ध करती हैं।” (7:23)*

यह इस तर्क का चरमोत्कर्ष है। यह वास्तविक अशुद्धता है, ऐसी अशुद्धता जो नाश करती है, यह केवल अनुष्ठानिक अशुद्धता नहीं है। प्रभु ने मामले के मूल में जाकर कहा। और ये बातें कितनी भयानक रूप से अपवित्र हैं! ये वे बातें हैं जो घरों को नष्ट करती हैं और जीवन को बर्बाद करती हैं और युद्ध आरम्भ करती हैं और बीमारी फैलाती हैं। ये वे बातें हैं, जो अपने भयावह और असाध्य योग में, कलवरी में प्रभु यीशु पर डाली जानी थीं और जिसके लिये उसे मरना होगा।

**3. क्या सोचा गया था (7:24-37)**

**क. अपमान (7:24-30)**

*फिर वह वहाँ से उठकर सूर और सैदा के देशों में आया; और एक घर में गया और चाहता था कि कोई न जाने; परन्तु वह छिप न सका। (7:24)*

प्रभु की गलीली सेवकाई अब समाप्ति की ओर थी। मरकुस हमें बताता है कि वह गलील की झील को छोड़कर समुद्र तट पर चला गया, जो कि फीनीकियों के पुराने गढ़ सूर और सैदा के आसपास के क्षेत्र में था, जो कि एक शानदार, यद्यपि मूर्तिपूजक अतीत वाले नगर थे।

ऐसा लगता है कि प्रभु के इस कदम के पीछे दो कारण थे। यरूशलेम के शास्त्रियों और फरीसियों के आने से विरोध बढ़ रहा था। साथ ही, प्रभु को अभी भी भीड़ से दूर रहने की आवश्यकता महसूस हो रही थी जो हर जगह उसके आसपास जमा हो जाती थी। उसने समुद्र के किनारे किसी के घर में एकांत की खोज की।

“वह छिप न सका” यह मरकुस की संक्षिप्त टिप्पणी है! वह कभी नहीं छिप नहीं सकता! मूसा छिप सकता था (निर्गमन 2:1-3), और एलिय्याह छिप सकता था (1 राजाओं 17:2-3), परन्तु यीशु नहीं छिप सकता। उसकी सार्वजनिक सेवकाई के आरम्भ ने उसे सुर्खियों में ला दिया, और वह हमेशा के लिये वहीं रहेगा।

*और तुरन्त एक स्त्री जिसकी छोटी बेटी में अशुद्ध आत्मा थी, उसकी चर्चा सुन कर आई, और उसके पाँवों पर गिरी। (7:25)*

“छोटी बेटी” के लिये शब्द है *ठगाट्रियन।* यह एक छोटा शब्द है, जिसका अर्थ है “एक छोटी बेटी।” दुष्टात्माएँ आयु का सम्मान नहीं करतीं। हम इस माता के हृदय की पीड़ा की कल्पना कर सकते हैं जब उसे अपनी छोटी बेटी के पूरी तरह से गैर-जिम्मेदाराना व्यवहार का सामना करना पड़ा। यह कोई साधारण बुराई नहीं थी, जिसे तर्क या छड़ी से रोका और सुधारा जा सकता है। इस माता को एहसास हुआ कि उसकी छोटी बेटी में दुष्टात्मा थी।

*यह यूनानी और सुरूफिनीकी जाति की थी। उसने उससे विनती की कि मेरी बेटी में से दुष्‍टात्मा निकाल दे। (7:26)*

वह इब्रानी नहीं बल्कि एक अन्यजाति स्त्री थी। हालाँकि, प्रभु की सेवकाई अभी इस समय “इस्राएल के घराने की खोई हुई भेड़ों” तक ही सीमित थी। निकट भविष्य में - इन फीनीके के नगरों से दूर नहीं, समुद्र तट के उसी हिस्से पर, रोमी नगर कैसरिया में - पतरस अन्यजातियों के लिये कलीसिया का द्वार खोलेगा। परन्तु वह समय अभी तक नहीं आया था। इस घटना के समय, इस स्त्री की अन्यजाति पृष्ठभूमि उसके लिये एक बाधा थी।

*उसने उससे कहा, “पहले लड़कों को तृप्‍त होने दे, क्योंकि लड़कों की रोटी लेकर कुत्तों के आगे डालना उचित नहीं है।” (7:27)*

ठीक वैसे ही, इस दुःखी स्त्री की दुर्दशा देखकर प्रभु का हृदय बहुत दुःखी हुआ। उसके प्रति उसकी कठोरता केवल एक परीक्षा थी, और यह बस ऐसा ही था। और वह एक ऐसी स्त्री थी जो इस परीक्षा को पास करने में सक्षम थी - नि:संदेह प्रभु को यह अच्छी तरह से पता था, ठीक वैसे ही जैसे वह उसके बारे में बाकी सब कुछ जानता था।

प्रभु ने उसके अनुरोध को सीधे तौर पर अस्वीकार नहीं किया। उसने केवल औचित्य का प्रश्न उठाया—क्या बच्चों की थाली से खाना लेकर मेज के नीचे कुत्तों को खिलाना उचित था? वास्तव में, और शायद चेलों के आश्चर्य के लिये, उसने इस स्त्री को कुत्ता कहा! यह अन्यजातियों के लिये एक आम यहूदी समाधि-लेख था, परन्तु हम निश्चित रूप से यीशु से इसका उपयोग करने की अपेक्षा नहीं करते। यह परीक्षा का हिस्सा था। स्त्री को टाला नहीं जाना था।

*उसने उसको उत्तर दिया, “सच है प्रभु; तौभी कुत्ते भी तो मेज के नीचे बालकों की रोटी का चूर–चार खा लेते हैं।” (7:28)*

“सच है प्रभु!” उसने कुत्ता कहे जाने पर बुरा मानने से इन्कार कर दिया। उसने अपमानजनक उपाधि स्वीकार कर ली। परन्तु कुत्तों के भी अपने अधिकार होते हैं। उसे बस कुछ टुकड़े चाहिए थे। निश्चित रूप से उन्हें छोड़ा जा सकता था। कुत्तों को वह खाने की अनुमति थी जो बच्चे फेंक देते थे।

प्रभु के वचनों में एक दयालुता थी जिसने इस हताश माता का ध्यान खींचा। प्रभु ने “कुत्तों” के लिये जो शब्द उपयोग किया वह था किनारियन। यह नगर की सड़कों के पराए, मैला ढोने वाले कुत्तों का नहीं था, बल्कि उन छोटे कुत्तों, पिल्लों का था, जिन्हें पालतू पशुओं के रूप में पाला जाता था। स्त्री ने उस प्रयोग को अपनाया, और दावा किया कि यह विश्वास के घराने के भीतर पालतू बनाना है। यदि उसे एक टुकड़ा मिल जाए तो वह प्रसन्न होकर “कुत्ता” बन जाएगी।

*उसने उससे कहा, “इस बात के कारण चली जा; दुष्‍टात्मा तेरी बेटी में से निकल गई है।” (7:29)*

प्रभु ने उसके घर जाकर आश्चर्यकर्म करने का प्रस्ताव नहीं रखा, हालाँकि उसकी आत्मा इस स्त्री के दृढ़ भरोसे से विचलित थी। उसे जाने की आवश्यकता नहीं थी! उसके जैसे दृढ़ विश्वास को केवल उसके वचन की आवश्यकता थी। और उसका वचन इस स्त्री के लिये बहुत था। यदि प्रभु ने कहा कि उसकी बेटी स्वतंत्र हो गई है, तो उसे बस इतना ही सुनना था। हमारे लिये यह बहुत होना चाहिए।

*उसने अपने घर आकर देखा कि लड़की खाट पर पड़ी है, और दुष्‍टात्मा निकल गई है। (7:30)*

स्पष्ट है, एक दुष्टात्मा हिंसक दुष्टात्मा ने उसकी छोटी बेटी को अपने वश में कर लिया था। *लेयड* शब्द का अर्थ है “फेंक दिया गया।” दुष्टात्मा चली गई, क्योंकि उसे जाना ही था। परमेश्वर के पुत्र की आवाज उस तक पहुँच चुकी थी, और उस आवाज को नकारा नहीं जा सकता था। ठीक वैसे ही, जैसा कि अक्सर होता है जब प्रभु के द्वारा दुष्टात्मा को बाहर निकाला जाता है, इस दुष्टात्मा ने अपना द्वेष प्रकट किया। जाते समय उसने बच्ची को ऐंठन में बिस्तर पर फेंक दिया।

**ख. आश्चर्य (7:31-37)**

सबसे पहले, हम *इस कार्यवाही* पर ध्यान देते हैं:

*फिर वह सूर और सैदा के देशों से निकलकर दिकापुलिस से होता हुआ गलील की झील पर पहुँचा। (7:31)*

प्रभु अब फिर से अपने काम के मुख्य स्थल, गलील के तट पर वापस आ गया। दिकापुलिस (दस नगर) झील के पूर्वी किनारे पर स्थित था। इस तरह नामित नगरों में स्कूतापुलिस, हिप्पोस, गेरासा, डायोन, कैनाथा, राफाना और दमिश्क शामिल थे। इनमें से अधिकांश नगरों का निर्माण सिकंदर महान ने किया था, हालाँकि अब वे एक दृढ़ रोमी प्रभाव दिखाते हैं। प्रभु अपने और यहूदी गलील के बीच दूरी बना रहा था। पिछली बार जब वह झील के पूर्वी किनारे पर था, तो गिरासेनी के लोगों ने उससे दूर जाने के लिये कहा था। हालाँकि, उसने शुद्ध किए गए दुष्टात्मा-ग्रस्त मनुष्य को वहाँ छोड़ दिया था, ताकि वह उस बड़े कार्य की गवाही दे सके जो प्रभु ने उसके लिये किया था। इस व्यक्ति ने अपना काम अच्छी तरह से किया था क्योंकि लोग अब प्रभु को अपने बीच में स्वीकार करने के लिये पर्याप्त रूप से इच्छुक थे।

इसके बाद, हम *उस व्यक्ति* पर ध्यान देते हैं(7:32):

*तो लोगों ने एक बहरे को जो हकला भी था, उसके पास लाकर उससे विनती की कि अपना हाथ उस पर रखे। (7:32)*

हमें इस बात का कोई संकेत नहीं मिला कि वह व्यक्ति जन्म से बहरा था। सम्भवतः वह बहरा हो गया होगा, और उसकी बोलने की क्षमता में बाधा उसके बहरेपन का स्वाभाविक परिणाम थी। मरकुस ने जिस यूनानी शब्द का उपयोग किया है वह है मोगिलालोन। यह शब्द बताता है कि वह व्यक्ति इतना हकलाता था कि वह व्यावहारिक रूप से गूंगा था। लोगों को यह समझने में सबसे बड़ी कठिनाई हुई कि वह क्या कहने का प्रयत्न कर रहा था। लोगों को स्वयं इस व्यक्ति के लिये बहुत दुःख हुआ और उन्होंने प्रभु से उसे चंगा करने के लिये कहने की पहल की।

फिर *आश्चर्यकर्म* होता है (7:33-35):

*तब वह उसको भीड़ से अलग ले गया, और अपनी उंगलियाँ उसके कानों में डालीं, और थूककर उसकी जीभ को छूआ। (7:33)*

भीड़ हमेशा उस व्यक्ति और मसीह के बीच में दखलंदाजी करती है। विशेष रूप से, हमारी अपनी भीड़ अक्सर बाधा बन जाती है। यीशु ने उस व्यक्ति को उन लोगों से अलग किया जो आश्चर्यकर्म देखने के लिये उत्सुक होकर इधर-उधर भाग रहे थे।

हम नहीं जानते कि यीशु ने शायद अपने हाथ पर क्यों थूका, और फिर अपनी उंगलियाँ उस व्यक्ति के कानों और मुँह में क्यों डालीं। मरकुस ने जो शब्द उपयोग किया है वह बहुत ही सशक्त है। इसका शाब्दिक अर्थ है “जोर से मारना।” लोगों के जीवन में आश्चर्यकर्म करने के लिये प्रभु के पास कई तरीके हैं। सम्भवतः वह उस व्यक्ति को संकेत दे रहा था, जो न तो ठीक से सुन सकता था और न ही बोल सकता था, कि वह क्या करने वाला था—उसके पीड़ित अंगों को ठीक करना।

थूकना सबसे रोचक बात है। कुछ ही पद पहले, मरकुस ने प्रभु के वचनों को दर्ज किया: “जो वस्तुएँ मनुष्य के भीतर से निकलती हैं, वे ही उसे अशुद्ध करती हैं।” महिमा के प्रभु के साथ ऐसा नहीं था। यहाँ तक कि उसकी लार भी शुद्ध थी और सामर्थ्य से भरी हुई थी। बाद में, लोग उस पर थूकते थे, अपनी घोर घृणा और अवमानना प्रदर्शित करते थे। हालाँकि, जब वह थूकता था, तो यह करुणा से और चंगा करने की मंशा से होता था।

*और स्वर्ग की ओर देखकर आह भरी, और उस से कहा, “इप्फत्तह!” अर्थात् “खुल जा”! (7:34)*

वह “उसकी सामर्थ्य का वचन” था (इब्रानियों 1:3)। उसने आह भरी। शाब्दिक रूप से, “वह कराह उठा।” और उसने स्वर्ग की ओर, अपने पिता की ओर देखा। उनके बीच सबसे गहरी और निकटतम बातचीत हुई। वह हर समय स्वर्ग के सम्पर्क में था। पतन के विनाश के नये प्रमाणों का सामना करते हुए, उसने अपने पिता के साथ अपना बोझ साझा किया। उसे बोलने की आवश्यकता नहीं थी। ऊपर की ओर देखना ही पर्याप्त था।

फिर उसने वचन बोला। यह पहला वचन था जो उस बेचारे पीड़ित ने बहुत समय बाद सुना था। “खुल जा!” उस व्यक्ति के कान और मुँह दोनों किसी अदृश्य शक्ति के द्वारा, शायद शैतानी शक्ति के द्वारा बंद कर दिए गए थे। परन्तु अब और नहीं!

*उसके कान खुल गए, और उस की जीभ की गाँठ भी खुल गई, और वह साफ साफ बोलने लगा। (7:35)*

कुछ तरीकों से, यह मामला उस कुबड़ी स्त्री के मामले जैसा ही था जिसे प्रभु ने सब्त के दिन एक आराधनालय में चंगा किया था। लूका ने उस विशेष मामले का सावधानीपूर्वक वर्णन किया है। स्त्री अठारह वर्षों से दोहरी झुकी हुई थी और “कुबड़ी हो गई थी।” यह एक लम्बे समय से चली आ रही स्थिति थी। वह “किसी रीति से सीधी नहीं हो सकती थी।” लूका ने कहा कि प्रभु ने उसे उसकी दुर्बलता से “मुक्त” किया। जब आराधनालय के शासक ने विरोध किया क्योंकि प्रभु ने उसे सब्त के दिन चंगा किया था, तो प्रभु ने उस व्यक्ति से कहा कि वह एक पाखण्डी है। हालाँकि, उसने स्पष्ट रूप से बताया कि उसने क्या किया था। उसने कहा, “क्या उचित न था कि यह स्त्री जो अब्राहम की बेटी है जिसे शैतान ने अठारह वर्ष से बाँध रखा था, सब्त के दिन इस बन्धन से छुड़ाई जाती?” (लूका 13:10-16)।

ऐसा लगता है कि शैतान ने इस व्यक्ति की जीभ भी बाँध दी थी। यीशु ने उसे खोल दिया। बस एक स्पर्श और एक वचन की आवश्यकता थी, और इस व्यक्ति के जीवन में शैतान की शक्ति टूट गई। इसके बाद, हमें *आदेश* मिलता है(7:36a):

*तब उसने उन्हें चिताया कि किसी से न कहना;*

और हमें *भीड़* मिलती है(7:36b-37):

*परन्तु जितना उसने उन्हें चिताया उतना ही वे और प्रचार करने लगे। (7:36b)*

मानवीय हृदय प्रभु की आज्ञा के विपरीत कार्य करने के लिये बहुत उत्सुक है। सम्भवतः प्रभु उस व्यक्ति को प्रचार के शोरगुल, आवाज़ और उत्तेजना से बचाना चाहता था जिसे उसने चंगा किया था। उसे अपनी कहानी बताने के अनुरोधों से घेर लिया जाएगा। प्रभु ने उसकी गोपनीयता की रक्षा करने का प्रयत्न किया, परन्तु ऐसा नहीं हो सका। जितना अधिक प्रभु ने लोगों से इस आश्चर्यकर्म के बारे में चुप रहने का आग्रह किया, उतना ही उन्होंने इसे बाहर फैलाया। ऐसे अद्भुत आश्चर्यकर्म के बारे में चुप रहना उन्हें बिलकुल भी समझ में नहीं आया।

*वे बहुत ही आश्‍चर्य में होकर कहने लगे, “उसने जो कुछ किया सब अच्छा किया है; वह बहरों को सुनने की, और गूँगों को बोलने की शक्‍ति देता है।” (7:37)*

अत: उसकी लोकप्रियता की लहर फिर से चरम पर पहुँच गई। गलील के पूर्वी तट पर उसकी प्रशंसा गूँज उठी। परन्तु भीड़ की तालियाँ अधिक देर तक नहीं टिकीं। फिर भी, बस थोड़ी देर के लिये, प्रभु मानवीय लोकप्रियता की ज्वारीय लहर पर सवार रहा।

**4. जो कुछ भी नहीं था (8:1-9)**

**क. वहाँ भीड़ के लिये कुछ भी नहीं था (8:1-3)**

*उन दिनों में जब फिर बड़ी भीड़ इकट्ठी हुई, और उनके पास कुछ खाने को न था, तो उसने अपने चेलों को पास बुलाकर उनसे कहा, (8:1)*

सुसमाचारों में प्रभु के केवल छत्तीस आश्चर्यकर्मों का वर्णन है, हालाँकि उसने इससे कहीं अधिक आश्चर्यकर्म किए हैं। कई बार, सुसमाचार प्रचारक कई आश्चर्यकर्मों को एक ही कथन में समेट देते हैं, जैसे कि जब यूहन्ना कहता है, “और भी बहुत से काम हैं, जो यीशु ने किए; यदि वे एक एक करके लिखे जाते, तो मैं समझता हूँ कि पुस्तकें जो लिखी जातीं वे संसार में भी न समातीं” (यूहन्ना 21:25)।

यह आश्चर्यकर्म पाँच हज़ार लोगों को भोजन खिलाने के समान है, जिसे मरकुस ने पहले ही दर्ज कर लिया है। हमें आश्चर्य है कि उसने इस तरह का आश्चर्यकर्म और कितनी बार किया होगा? इस अवसर पर, कम लोग और कम आँकड़े शामिल थे। थोड़ी बड़ी आपूर्ति और कुछ हद तक कम माँग भी शामिल थी। इस कारण, हम इस आश्चर्यकर्म को अनदेखा कर देते हैं। हमें लगता है कि यह दूसरे आश्चर्यकर्म से कमतर था। ऐसे विचारों से दूर रहें! यहाँ एक और शानदार आश्चर्यकर्म था। संसार के इतिहास में यीशु के अलावा और किसने ऐसा किया?

*“मुझे इस भीड़ पर तरस आता है, क्योंकि यह तीन दिन से बराबर मेरे साथ है, और उनके पास कुछ भी खाने को नहीं। (8:2)*

यहाँ वास्तव में एक भूखी भीड़ थी। उन्होंने जो भी सामान खरीदा होगा, वह बहुत पहले ही समाप्त हो चुका होगा। यह भीड़ स्पष्ट रूप से इस आश्चर्यजनक मसीह के द्वारा कही गई या की गई किसी भी बात से वंचित नहीं रहना चाहती थी। वे रहने को तैयार थे, भले ही उनके पास खाने के लिये कुछ भी न हो।

प्रभु ने अपनी शिक्षा को अपने तरस से अलग नहीं किया। उसने यह भी देखा कि लोग अब तक बहुत भूखे हो चुके थे। शायद उसे भी भूख लग रही थी। किसी भी मामले में, उसका मन उन सभी के लिये तरस से भरा था।

*यदि मैं उन्हें भूखा घर भेज दूँ, तो मार्ग में थक कर रह जाएँगे; क्योंकि इनमें से कोई कोई दूर से आए हैं।” (8:3)*

यह बात अपने आप में एक प्रशंसा है कि लोग उसे सुनने के लिये दूर-दूर से आते थे। इसमें कोई संदेह नहीं कि बहुत से लोग प्रभु की सभाओं में आते थे, क्योंकि वे परमेश्वर के वचन को सही तरीके से पढ़ाए जाने के लिये तरसते थे। स्थानीय प्रचारकों के द्वारा परोसे जाने वाले भूसे और मैल से कोई भी संतुष्ट नहीं था।

वैसे, उन्होंने परमेश्वर के वचन का भरपूर आनन्द लिया था; अब वे शारीरिक रूप से भूखे थे। उनमें से कुछ के लिये, घर जाने के लिये बहुत दूर जाना था। प्रभु ने इस तथ्य को पहचाना। वह, स्वयं, जानता था कि भूख, प्यास और थकावट क्या होती है।

**ख. स्वामी के लिये जो कुछ भी नहीं था (8:4-9)**

सबसे पहले *समस्या के आकार* पर ध्यान दें(8:4-5):

*उसके चेलों ने उसको उत्तर दिया, “यहाँ जंगल में इतनी रोटी कोई कहाँ से लाए कि ये तृप्‍त हों?” (8:4)*

कैसी अद्भुत अदूरदर्शिता है और कितना विस्मयकारी अविश्वास है! क्यों उसने पहले ही एक छोटे लड़के के दोपहर के भोजन से ऐसी ही भूखी भीड़ को खाना खिलाया था! और यह उससे भी बड़ी भीड़ थी! हमारा अविश्वास कितना गहरा है! हम सीखने में कितने धीमे हैं! ऐसा ही अब्राहम के साथ हुआ, जिसने फिरौन के सामने सारा को अस्वीकार कर दिया (उत्पत्ति 12:10-20), बाद में पलटकर अबीमेलेक के सामने उसे अस्वीकार कर दिया (उत्पत्ति 20:1-18)। ऐसा ही एलिय्याह के साथ हुआ जब उसने प्रभु से शिकायत की कि वह अकेला विश्वासी बचा है और फिर (1 राजाओं 19:9-10), थोड़ी देर बाद, उसी शब्दों में शिकायत दोहराई, भले ही प्रभु ने उसे पुनर्स्थापित किया था और आश्वस्त किया था (1 राजाओं 19:13-18)। और ये परिपक्व पवित्र लोग थे!

*उसने उनसे पूछा, “तुम्हारे पास कितनी रोटियाँ हैं?” उन्होंने कहा, “सात।” (8:5)*

क्या यह एक कोमल संकेत था? क्या वह उन्हें पाँच हज़ार लोगों को भोजन खिलाने की याद दिला रहा था? यदि ऐसा है, तो यह प्रतीत नहीं होता कि इससे कोई प्रतिक्रिया हुई होगी। अधिक रोटियाँ और कम लोग हाथ में थे, परन्तु चेलों के लिये, यह अभी भी एक छोटी आपूर्ति और एक बहुत बड़ी भीड़ थी। ऐसा लगता है कि वे भूल गए थे कि जो भी माँग उसने उनसे की थी वह अंत में स्वयं से माँग थी, और उससे की गई कोई भी माँग ऐसी नहीं हो सकती जिसे वह पूरा करने में असमर्थ हो। परमेश्वर के सभी अनन्त संसाधन उसके हैं।

*समस्या के समाधान* पर भी ध्यान दें (8:6-9):

*तब उसने लोगों को भूमि पर बैठने की आज्ञा दी, और वे सात रोटियाँ लीं और धन्यवाद करके तोड़ीं, और अपने चेलों को देता गया कि उनके आगे रखें, और उन्होंने लोगों के आगे परोस दिया। उनके पास थोड़ी सी छोटी मछलियाँ भी थीं; उसने धन्यवाद करके उन्हें भी लोगों के आगे रखने की आज्ञा दी। (8:6-7)*

ध्यान दें कि उसने स्थिति को सुलझाने के लिये किस तरह *से व्यवस्थित* तरीका अपनाया। उसे पता था कि भीड़ को कैसे नियंत्रित किया जाए। उसने सबसे पहले लोगों को बैठाकर भगदड़ को रोका।

इस बात पर भी ध्यान दें कि उसने *अद्भुत* तरीके से रोटियों और मछलियों को हज़ारों लोगों के भोज में बदल दिया। ऐसा केवल वही कर सकता था।

इसके अलावा, ध्यान दें कि उसने लोगों तक भोजन पहुँचाने के लिये *किस तरह की* *सेवकाई* की। उसने लोगों के लिये रोटियाँ और मछलियाँ ले जाकर सेवा करने के लिये चेलों को काम पर लगाया। यह कुछ ऐसा काम था जो वे कर सकते थे। प्रभु हमारे लिये कभी वह नहीं करता जो हम अपने लिये कर सकते हैं। चेले रोटियाँ और मछलियाँ नहीं बढ़ा सकते थे, परन्तु वे भूखे लोगों की सेवा कर सकते थे। हम आत्माओं को नहीं बचा सकते जैसे हम सितारों को नहीं बना सकते, परन्तु हम अपने आसपास के लोगों तक सुसमाचार पहुँचा सकते हैं। उसने मेल-मिलाप की सेवकाई हमें सौंपी है।

*वे खाकर तृप्‍त हो गए और चेलों ने शेष टुकड़ों के सात टोकरे भरकर उठाए। (8:8)*

पिछली बार जितने लोग नहीं थे, परन्तु फिर भी, “रोटी पर्याप्त थी और बच गई थी”, जो चेलों और भीड़ दोनों के लिये एक भरपूर भोज थी। यह भी ध्यान दें कि जब प्रभु ने पाँच हज़ार लोगों को भोजन खिलाया था, तो “टोकरियों” के लिये उपयोग किया गया शब्द कोफिनोस था, जो छोटी विकर टोकरियों को दर्शाता है। हालाँकि, यहाँ उपयोग किया गया शब्द स्पुरिस है, जिसका अर्थ है एक बड़ी टोकरी।

यह कहानी ईश्वरीय उत्कृष्टता को दर्शाती है। हमारा परमेश्वर कंजूस परमेश्वर नहीं है। याबेस ने केवल यह प्रार्थना नहीं की कि प्रभु उसे आशीष दे, बल्कि यह भी कि प्रभु *सचमुच* उसे आशीष दे(1 इतिहास 4:10)। जब मूसा ने समुद्र के किनारे पर उद्धार के लिये गीत गाया, तो उसने केवल यह नहीं कहा, “यहोवा प्रतापी ठहरा है!” उसने गाया, “यहोवा महाप्रतापी ठहरा है” (निर्गमन 15:1)। प्रभु ने हमसे केवल स्वतंत्र करने की प्रतिज्ञा नहीं की। उसने कहा, “तुम *सचमुच* स्वतंत्र हो जाओगे।” सृष्टि के वृत्तांत में, हम केवल यह नहीं पढ़ते कि “जल... भर जाए,” बल्कि हम पढ़ते हैं कि जल *“बहुत ही”* भर जाए(उत्पत्ति 1:20)। हम इस ईश्वरीय उदारता को पूरी प्रकृति में देखते हैं। हम इसे सभी छुटकारे में देखते हैं। प्रभु हमें दया नहीं, बल्कि *कोमल* दया प्रदान करता है (भजन 69:16); जो केवल दया नहीं, बल्कि *प्रेमपूर्ण* दया है (भजन 25:6)। प्रभु यीशु केवल चुने हुए लोगों के पापों के लिये नहीं मरा, बल्कि “*सारे जगत* के पापों” के लिये मरा (1 यूहन्ना 2:2)। परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह का लहू हमें केवल *कुछ* पापों से ही शुद्ध नहीं करता; यह हमें *“सारे* पापों से” शुद्ध करता है (1 यूहन्ना 1:7)।

अत: मरकुस कहता है, “वे खाकर *तृप्त* हो गए।” नि:संदेह, वे खाकर तृप्त हो गए। देखो भोज का प्रबंध किसने किया था!

*और लोग चार हज़ार के लगभग थे; तब उसने उनको विदा किया। (8:9)*

और निश्चित रूप से उसने उन्हें सभी दिशाओं में जाते हुए देखा। वे उन सभी बातों से विचार के लिये भोजन से भरे हुए थे जो उसने उन्हें सिखाई थीं। वे अच्छे भोजन से भी भरे हुए थे, और उसके आश्चर्यकर्म से चकित थे। निश्चित रूप से उसका हृदय भी भरा हुआ था। जैसा कि उसने चेलों से कहा, जब उसने सामरी स्त्री का विश्वास जीता था, जब चेलों ने उसे कुछ खाने के लिये आग्रह किया, “मेरे पास खाने के लिये ऐसा भोजन है जिसे तुम नहीं जानते” (यूहन्ना 4:32)।

**5. क्या खोजा गया था (8:10-12)**

*और वह तुरन्त अपने चेलों के साथ नाव पर चढ़कर दलमनूता प्रदेश को चला गया। (8:10)*

ऐसा माना जाता है कि दलमनूता गलील की झील के पश्चिमी तट पर मगदला या तिबिरियास के पास एक स्थान था। किसी भी मामले में, प्रभु अब झील के किनारे वापस आ गया था जहाँ वह रहता था और जहाँ उसने असंख्य आश्चर्यकर्म किए थे।

*फिर फरीसी आकर उससे वाद–विवाद करने लगे, और उसे जाँचने के लिये उससे कोई स्वर्गीय चिह्न माँगा। (8:11)*

उसके पुराने शत्रु वापस आ गए थे, अब अपने अविश्वास में डूबे हुए, स्वर्ग से एक चिह्न की माँग कर रहे थे - मानो उसने उन्हें पृथ्वी पर पहले से ही पर्याप्त चिह्न नहीं दिए थे। स्वर्ग से एक चिह्न कई वर्षों पहले ही दिया जा चुका था। जब वह उत्पन्न हुआ, तो परमेश्वर ने आकाश में एक नया तारा रखा। जब वह मर जाएगा, तो परमेश्वर उन्हें स्वर्ग से एक और चिह्न देगा - वह सूरज को बुझा देगा। हालाँकि, जो लोग चिह्न की माँग करते हैं, वे शायद ही कभी संतुष्ट होते हैं जब उन्हें एक मिलता है; वे और अधिक चाहते हैं।

यीशु के लिये स्वर्ग से चिह्न देना बहुत आसान होता। वह स्वर्गदूतों की बारह सेनाएँ बुला सकता था। वे वहाँ थे, उसके चारों ओर, खींची हुई तलवारों के साथ। उन्हें यह कैसा लगा होगा? वह स्वर्ग से आग और गंधक बरसा सकता था, जैसा कि उसने एक बार सदोम को नष्ट करने के लिये किया था। उन्हें यह कैसा लगा होगा? वह सूर्य को तब तक स्थिर रख सकता था जब तक कि पृथ्वी का एक भाग रेगिस्तान में न बदल जाए और दूसरा भाग आर्कटिक बंजर में न बदल जाए। उन्हें यह कैसा लगा होगा?

*उसने अपनी आत्मा में आह भर कर कहा, “इस समय के लोग क्यों चिह्न ढूँढ़ते हैं? मैं तुम से सच कहता हूँ कि इस समय के लोगों को कोई चिह्न नहीं दिया जाएगा।” (8:12)*

“आह भर कर” शब्द से उसके अस्तित्व की गहराई से उठती हुई गहरी कराह का विचार व्यक्त होता है। नि:संदेह, प्रभु ने इस चिह्न की माँग में शैतान की आवाज सुनी। आरम्भ से ही शैतान ने उसे स्वयं को परमेश्वर का पुत्र प्रमाणित करने के लिये कुछ शानदार करने के लिये लुभाया था। उसने उससे मन्दिर के कंगूरे से स्वयं को नीचे गिराने का आग्रह किया ताकि स्वर्गदूतों के द्वारा अद्भुत रूप से बचाया जा सके (मत्ती 4:5-7)। प्रभु ने दृढ़तापूर्वक ऐसी किसी भी परीक्षा का उत्तर देने से इन्कार कर दिया। दुष्ट ने इन फरीसियों के मनों पर नियंत्रण कर लिया था, और यह उसकी आवाज थी जिसे उसने सुना। बाद में, कलवरी में शक्तिशाली चिह्न दिए गए (मत्ती 27:45, 51-53), परन्तु वह “दुष्ट और व्यभिचारी” पीढ़ी जल्द ही इन चिन्हों को भूल गई और अनदेखा कर दिया।

**6. क्या लड़ा गया (8:13-21)**

*और वह उन्हें छोड़कर फिर नाव पर चढ़ गया और पार चला गया। (8:13)*

कितनी गम्भीर बात है! और कितनी दुःखद बात है! उसने बस अपनी एड़ियाँ घुमा लीं तथा उन्हें उनके और उनके पापी अविश्वास के भरोसे छोड़ दिया। उसके पास उनसे कहने के लिये और कुछ नहीं था। यह आत्मा की एक गम्भीर स्थिति है। जब वह हेरोदेस के सामने खड़ा था, तब भी ऐसा ही था। यीशु के पास उससे कहने के लिये कुछ नहीं था। जिस व्यक्ति ने यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की हत्या की थी, वह यीशु का मजाक उड़ाने के लिये तैयार था, इसलिये यीशु ने, जिसने उस व्यक्ति के मन को पढ़ा था, उसे अनदेखा कर दिया। ऐसे मामलों में परमेश्वर की चुप्पी उसकी दया का प्रमाण है क्योंकि यदि वह बोलता, तो यह न्याय के लिये होता।

*चेले रोटी लेना भूल गए थे, और नाव में उनके पास एक ही रोटी थी। (8:14)*

यह रोटी उस तरह की रोटी नहीं होगी जिससे हम परिचित हैं, जिसे टुकड़ों में काटा जा सकता है, बल्कि मध्य पूर्व की छोटी, गोल जेब में रखी जाने वाली रोटी होगी, जो कठिनाई से एक व्यक्ति के लिये पर्याप्त होती है, सभी चेलों की तो बात ही छोड़िए। ऐसा लगता है कि चेले अपने सामान्य घरेलू कामों को करने में बहुत व्यस्त थे। परन्तु चिन्ता किसको करनी चाहिए? उनके साथ एक ऐसा व्यक्ति था जिसके हाथ एक छोटी रोटी को वास्तव में बहुत दूर तक ले जा सकते थे!

*उसने उन्हें चिताया, “देखो, फरीसियों के खमीर और हेरोदेस के खमीर से चौकस रहो।” (8:15)*

उन्हें अभी-अभी फरीसियों के खमीर का नमूना दिया गया था। पवित्रशास्त्र में खमीर को समान रूप से बुराई के प्रतीक के रूप में उपयोग किया जाता है, विशेष रूप से बुरे सिद्धांत के लिये। फरीसियों का खमीर मरा हुए कट्टरवाद और धार्मिक पाखण्ड था। हेरोदेस का खमीर हेरोदियों के दर्शन को दर्शाता है। उनका खमीर सांसारिक समझौता था, भौतिक लाभ के लिये *यथास्थिति के साथ समझौता* करना। हेरोदेस एक दुष्ट समूह थे, परन्तु उनके पास शक्ति थी और वे संरक्षण दे सकते थे। हेरोदियों को ऐसे काम करने में कोई समझदारी नहीं दिखी जिससे प्रतिशोध भड़के। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला जैसा व्यक्ति उन्हें बहुत खतरनाक व्यक्ति लगता था क्योंकि उसने हेरोदेस की निंदा की थी। इससे हेरोदेस का क्रोधित होना स्वाभाविक था, और क्रोधित हेरोदेस सभी के लिये खतरा था।

*वे आपस में विचार करके कहने लगे, “हमारे पास रोटी नहीं है।” (8:16)*

चेले लगभग फरीसियों जैसे ही बुरे थे। खमीर का उल्लेख आते ही उनके विचार रोटी से अधिक नहीं उठते थे – कि मानो प्रभु को इस बात की चिन्ता थी कि वे नाव पर पर्याप्त मात्रा में भोजन न ला पाए!

*यह जानकर यीशु ने उनसे कहा, “तुम क्यों आपस में यह विचार कर रहे हो कि हमारे पास रोटी नहीं? क्या अब तक नहीं जानते और नहीं समझते? क्या तुम्हारा मन कठोर हो गया है? क्या आँखें रखते हुए भी नहीं देखते, और कान रखते हुए भी नहीं सुनते? और क्या तुम्हें स्मरण नहीं? (8:17-18)*

सुसमाचारों में हम पाते हैं कि चेलों में यह समझने की दुःखद अक्षमता थी कि प्रभु उनसे प्रतीकात्मक भाषा में बात कर रहा था। जब उसने खमीर की बात की, तो उन्हें तुरन्त रोटी याद आ गई। हालाँकि, वह फरीसियों की मानसिकता की ओर संकेत कर रहा था, जिनसे उसने अभी-अभी मुँह मोड़ा था। चेलों ने सोचा कि वह उन्हें केवल एक रोटी होने के कारण डाँट रहा था।

प्रभु को इस बात पर दुःख हुआ कि वे अपने विचारों को भौतिकता से परे आत्मिकता के स्तर तक नहीं ले जा सके। वह, जिसके पास सारी सामर्थ्य थी, वह इतनी छोटी सी बात के बारे में क्यों चिन्तित होगा कि उनके पास कितनी रोटियाँ हैं? दुःख की बात है कि उसने अपनी शिक्षा को उनके स्तर तक नीचे ला दिया।

*कि जब मैं ने पाँच हज़ार के लिये पाँच रोटियाँ तोड़ी थीं तो तुम ने टुकड़ों की कितनी टोकरियाँ भरकर उठाईं?” उन्होंने उससे कहा, “बारह टोकरियाँ।” “और जब चार हज़ार के लिये सात रोटियाँ थीं तो तुम ने टुकड़ों के कितने टोकरे भरकर उठाए थे?” उन्होंने उससे कहा, “सात टोकरे।” (8:19-20)*

तो फिर, भौतिक बातों के प्रति उनकी निराशाजनक व्यस्तता के लिये कहने को इतना कुछ है। उसके हाथों में एक रोटी थी, जो उन सभी को पर्याप्त थी और बची हुई रोटी के साथ खिला सकती थी। भौतिक बातों के बारे में कम चिन्ता के बावजूद भी उन्हें *यही* सोचना चाहिए था।

*उसने उनसे कहा, “क्या तुम अब तक नहीं समझते?” (8:21)*

वह उन्हें अपने मूल कथन पर वापस ले गया: “सावधान रहो, फरीसियों के खमीर और हेरोदेस के खमीर से सावधान रहो।” प्रभु ने जो भी आश्चर्यकर्म किए थे, वे फरीसियों पर व्यर्थ हो गए। प्रभु के मसीह होने के सभी दावे हेरोदियों पर व्यर्थ हो गए। क्या ये बातें उसके चेलों पर भी व्यर्थ हो गईं? उन्हें वास्तव में सावधान रहना चाहिए।

**7. क्या लाया गया (8:22-26)**

*वे बैतसैदा में आए; और लोग एक अंधे को उसके पास ले आए और उससे विनती की कि उसको छुए। (8:22)*

बैतसैदा वह जगह थी जहाँ प्रभु ने अपने कुछ सबसे बड़े आश्चर्यकर्म किए थे। इसी स्थान के निकट उसने पाँच हज़ार लोगों को भोजन खिलाया था। यह वह जगह थी जहाँ प्रभु को हेरोदेस के द्वारा यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की हत्या के बारे में बताया गया था, जिसके बाद वह वहाँ चला गया था। अब वह वापस आ गया था, और लोग एक और आश्चर्यकर्म के लिये उत्सुक थे।

*वह उस अंधे का हाथ पकड़कर उसे गाँव के बाहर ले गया, और उसकी आँखों में थूककर उस पर हाथ रखे, और उससे पूछा, “क्या तू कुछ देखता है?” (8:23)*

स्कोफील्ड ने बताया कि प्रभु के द्वारा अंधे व्यक्ति को चंगा करने के लिये नगर से बाहर ले जाने का क्या महत्व है। प्रभु ने बैतसैदा नगर पर आने वाले न्याय की घोषणा पहले ही कर दी थी क्योंकि वहाँ बहुत अधिक अविश्वास था (मत्ती 11:21-24)। इसलिये अब वह उस नगर में कोई आश्चर्यकर्म नहीं करेगा या वहाँ आगे कोई गवाही नहीं देगा (वचन 26)। फिर भी, हालाँकि उसकी आशीष समुदाय से वापस ले ली गई थी, फिर भी वह व्यक्तियों पर करुणा दिखाएगा।

इस व्यक्ति को चंगा करने का प्रभु का तरीका असामान्य था। उसने उस व्यक्ति की आँखों पर थूका और फिर उसे छुआ, जो लोगों ने उससे करने के लिये कहा था। ऐसा लगता है कि प्रभु की लार में भी चंगाई के गुण थे। वैसे ही, ऐसा लगता है कि ऐसा करना उसके लिये एक असामान्य बात है। शायद यह किसी तरह उस अभिशाप से जुड़ा हो जिसके अधीन अब बैतसैदा के लोग जी रहे थे।

*उस ने आँख उठा कर कहा, “मैं मनुष्यों को देखता हूँ; वे मुझे चलते हुए पेड़ों जैसे दिखाई देते हैं।” (8:24)*

यह एक सुधार था। पहले वह कुछ भी नहीं देख सकता था।

हमें यह नहीं बताया गया है कि प्रभु ने इस व्यक्ति को कई चरणों में क्यों चंगा किया। शायद कोई असामान्य शैतानी बाधा मौजूद थी; आखिरकार, बैतसैदा के लोग आने वाले न्याय के दण्ड के अधीन थे। शायद वह व्यक्ति स्वयं केवल आधा ही विश्वास करता था। प्रभु अपने गृहनगर नासरत में कई शक्तिशाली कार्य करने में असमर्थ इसलिये था क्योंकि अविश्वास से बाधा उत्पन्न हुई थी (लूका 4:16-30; मरकुस 6:1-6)। या शायद प्रभु एक गहरा सबक सिखाना चाहता था, अर्थात्, आत्मिक ज्योति अक्सर धीरे-धीरे आती है। यहाँ तक कि सबसे अच्छे और सबसे परिपक्व विश्वासी भी वास्तव में केवल आंशिक रूप से ही देखते हैं (1 कुरिं. 13:12)। प्रभु के अपने चेले कठिनाई से सरलतम सबक समझ पाते थे और सरलतम परीक्षाओं में भी असफल हो जाते थे, जैसा कि उन्होंने अभी-अभी साबित किया था। प्रभु को कुछ ही मिनट पहले उनसे भी कहना पड़ा था, “क्या अब तक नहीं जानते और नहीं समझते?... क्या आँखें रखते हुए भी नहीं देखते?...” (पद 17-18)। बाद में, उसे उन्हें बताना होगा कि यद्यपि उसके पास उन्हें सिखाने के लिये अभी भी बहुत कुछ है, वे उन्हें ग्रहण करने की स्थिति में नहीं थे; उन्हें पूरी तरह से प्रकाशमान होने के लिये पवित्र आत्मा के आने की प्रतीक्षा करनी होगी (यूहन्ना 16:12-13)। इसके बाद भी, उसे परिवर्तन करना पड़ा और एक बाहरी व्यक्ति (तरसुस के शाऊल) को नियुक्त करना पड़ा ताकि वह पत्रियों के एक बड़े हिस्से को लिख सके और मसीहियत के सबसे गहन सत्यों को प्रकट कर सके।

*तब उसने दोबारा उसकी आँखों पर हाथ रखे, और अंधे ने ध्यान से देखा। वह चंगा हो गया, और सब कुछ साफ–साफ देखने लगा। (8:25)*

जब दृष्टिकोण बहुत उज्ज्वल न हो, तो हमेशा ऊपर की ओर देखना अच्छा विचार है। चरणों में इस व्यक्ति के अंधेपन को ठीक करने के लिये जो शिक्षाएँ वह देना चाहता था, उन्हें सिखाने के बाद, प्रभु ने सभी बाधाओं को दूर किया, अपना हाथ आगे बढ़ाया, और उस व्यक्ति को फिर से छुआ, अपनी महान सामर्थ्य का प्रयोग किया और उसे पूरी तरह से चंगा किया।

*उसने उसे यह कहकर घर भेजा, “इस गाँव के भीतर पाँव भी न रखना।” (8:26)*

उसके पास कहने या उस जगह पर लोगों को दिखाने के लिये और कुछ नहीं था। आने वाले तूफानी बादल अब क्षितिज पर बनने लगे थे। शत्रु की शक्तियाँ और भी स्पष्ट होने लगी थीं। प्रभु अब क्षितिज पर कलवरी को स्पष्ट रूप से देख सकता था।

स्पष्ट है, यह अंधा व्यक्ति वास्तव में बैतसैदा में नहीं रहता था। हम कल्पना कर सकते हैं कि वह जिस जगह पर रहता था, वहाँ जाते समय उसने जो कुछ भी देखा, उसे देखकर वह कितना आश्चर्यचकित हुआ होगा।

**खंड 4—रूपरेखा**

**खंड 4: सेवक का मूल्य (8:27-9:13)**

1. इसे कैसे पहचाना गया था (8:27-38)
   1. अंगीकार (8:27-30)
      1. वह कहाँ था (8:27a)
      2. वह क्या चाहता था (8:27b-30)
         1. पहला प्रश्न (8:27b-28)
            1. पूछा गया प्रश्न (8:27b)
            2. प्रश्न का उत्तर (8:28)

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला: वह अवश्य ही पुनर्जीवित व्यक्ति होगा (8:28a)

एलिय्याह: वह अवश्य ही स्वर्गारोहित व्यक्ति होगा (8:28b)

एक भविष्यद्वक्ता: वह अवश्य ही एक लौटा हुआ मनुष्य होगा (8:28c)

* + - 1. अगला प्रश्न (8:29-30)
         1. पूछा गया प्रश्न (8:29a)
         2. प्रश्न का उत्तर (8:29ब-30)

प्रभु ने क्या आनन्द उठाया (8:29b)

प्रभु ने क्या आदेश दिया (8:30)

* 1. क्रूस (8:31-38)
     1. मसीह के लिये क्रूस (8:31-33)
        1. प्रकाशन (8:31)
           1. उसका आने वाला अस्वीकार (तिरस्कार) (8:31a-b)

इसके पीछे कौन था (8:31a)

उसके आगे क्या था (8:31b)

* + - * 1. उसका आने वाला पुनरुत्थान (8:31c)
      1. डाँट (8:32-33)
         1. पतरस ने प्रभु को कैसे डाँटा (8:32)
         2. प्रभु ने पतरस को कैसे डाँटा (8:33)
    1. मसीहियों के लिये क्रूस (8:34-38)
       1. क्रूस बढ़ाया गया (8:34)
       2. क्रूस की व्याख्या की गई (8:35-37)
          1. कलवरी का तर्क (8:35)
          2. मसीह का तर्क (8:36-37)
       3. क्रूस से दोषमुक्ति (8:38)
          1. मसीह का वर्तमान अस्वीकरण (8:38a)
          2. मसीह के द्वारा सम्भावित अस्वीकरण (8:38b)

1. यह कैसे प्रकट हुआ (9:1-13)
   1. प्रतिज्ञा (9:1)
   2. स्थान (9:2)
   3. योजना (9:3-7)
      1. दर्शन (9:3)
      2. आगंतुक (9:4)
      3. आवाज़ें (9:5-7)
         1. मूर्खतापूर्ण आवाज (9:5-6)
            1. पतरस ने क्या कहा (9:5)
            2. पतरस ने क्यों कहा (9:6)
         2. चुप करने वाली आवाज (9:7)
            1. बादल (9:7a)
            2. आज्ञा (9:7b)
   4. व्यक्ति (9:8-9)
      1. दृष्टि (9:8a)
      2. प्रभु (9:8b)
      3. पाठ (9:9)
         1. यीशु ने उनसे क्या अपेक्षा की (9:9a)
         2. यीशु ने उन्हें क्या बताया (9:9b)
   5. समस्याएँ (9:10-13)
      1. पहली समस्या (9:10)
      2. आगे की समस्या (9:11-13)
         1. एलिय्याह के विषय में पूछा गया प्रश्न (9:11)
         2. एलिय्याह के बारे में प्रश्न का उत्तर (9:12-13)
            1. प्रभु के राज्य करने के लिये आने के सम्बन्ध में (9:12a)
            2. प्रभु के उद्धार के लिये आने के सम्बन्ध में (9:12b-13)

पूर्वानुमान (9:12b)

अग्रदूत (9:13)

**खंड 4: सेवक का मूल्य (8:27-9:13)**

**क. इसे कैसे पहचाना गया (8:27-38)**

**1. अंगीकार (8:27-30)**

*यीशु और उसके चेले कैसरिया फिलिप्पी के गाँवों में चले गए। मार्ग में उसने अपने चेलों से पूछा, “लोग मुझे क्या कहते हैं?” (8:27)*

कैसरिया फिलिप्पी यरदन के दो स्रोतों में से सबसे पूर्वी और सबसे महत्वपूर्ण था। यह नगर गलील की झील से बीस मील उत्तर में हर्मोन पर्वत के तल पर एक घाटी में स्थित था। हेरोदेस फिलिप्पुस ने इसे बड़ा किया। उसने इसका नाम कैसर के नाम पर रखा, परन्तु तट पर स्थित कैसरिया से इसे अलग करने के लिये अपना नाम भी जोड़ा। यह स्थान प्रभु की यात्रा की सबसे उत्तरी सीमा का भी प्रतिनिधित्व करता है। इस यात्रा का समय रूपान्तरण से ठीक एक सप्ताह पहले था।

जब प्रभु और उनके चेले उत्तर की ओर बढ़ रहे थे, तो उसने उनसे एक प्रश्न पूछा: “लोग मुझे क्या कहते हैं?” उस प्रश्न का उत्तर हम जो देते हैं, वह हमें पूरी तरह से प्रकट करता है। सभी प्रकार के उत्तर दिए गए हैं, जिनमें सबसे स्पष्ट और ईशनिंदा वाला अविश्वास और सबसे अधिक संरक्षणात्मक सामान्य बातें शामिल हैं।

*उन्होंने उत्तर दिया, “यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला; पर कोई कोई एलिय्याह और कोई कोई भविष्यद्वक्‍ताओं में से एक भी कहते हैं।” (8:28)*

यीशु ने यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले को एक स्त्री से उत्पन्न हुआ सबसे महान व्यक्ति कहा (मत्ती 11:11)। यूहन्ना मरे हुओं में से जी उठा - यह लोगों का मसीह के बारे में एक दृष्टिकोण था। दूसरों का मानना था कि वह स्वर्ग से लौटा एलिय्याह था। फिर भी दूसरों का मानना था कि वह कब्र से जीवित हुए अन्य भविष्यद्वक्ताओं - मूसा, दानिय्येल, यिर्मयाह या यहेजकेल में से एक था। हालाँकि, एक बात पर वे सभी सहमत थे: यीशु के द्वारा किए गए सामर्थी आश्चर्यकर्म केवल पुनरुत्थान की सामर्थ्य में रहने वाले व्यक्ति के द्वारा ही किए जा सकते थे। इस प्रकार, उन्होंने उसे अपने इतिहास के सबसे महान पुरुषों के बराबर माना, जो हाल के और दूर के थे।

*उसने उनसे पूछा, “परन्तु तुम मुझे क्या कहते हो?” पतरस ने उसको उत्तर दिया, “तू मसीह है।” (8:29)*

भीड़ के उत्तर में, यहाँ तक कि जो लोग उसे अपने महानतम भविष्यद्वक्ताओं में शामिल होते थे, वे भी पूरी तरह अपर्याप्त थे। उसकी तुलना प्रतिभाशाली लोगों से नहीं की जा सकती, भले ही वे कितने भी महान क्यों न हों। उसे बुद्ध, कन्फ्यूशियस या मोहम्मद के बराबर मानना आत्मिक अंधेपन का प्रतीक है। आखिरकार, वे केवल मनुष्य थे, और पापी मनुष्य थे। यीशु की तुलना उनसे नहीं की जानी चाहिए। उसके और उनके बीच एक बहुत बड़ी खाई है।

प्रभु ने अपने चेलों को अपना निर्णय देने का अवसर दिया। पतरस ने उन सभी की ओर से कहा: “तू मसीह है,” उसने कहा। उसने उसे मसीह, अभिषिक्त व्यक्ति - भविष्यद्वक्ता, याजक और राजा - लम्बे समय से प्रतीक्षित, अक्सर प्रतिज्ञा किए गए परिजन-उद्धारकर्ता, मनुष्य का पुत्र और परमेश्वर का पुत्र के रूप में देखा। इसने उसे इस संसार के महान लोगों की श्रेणी और सूची से अलग कर दिया। और प्रभु ने पतरस के कथन को उसके वास्तविक मूल्य पर स्वीकार कर लिया क्योंकि वह वास्तव में वही है - मसीह - उस शीर्षक में निहित सभी बातों के साथ!

*तब उसने उन्हें चिताकर कहा कि मेरे विषय में यह किसी से न कहना। (8:30)*

उस पीढ़ी को पहले ही इस बात की पर्याप्त गवाही दी जा चुकी थी कि वह वास्तव में कौन था। वे और प्रमाणों की माँग कर रहे थे - वास्तव में स्वर्ग से चिह्न माँग रहे थे। उसने उन्हें ऐसे कोई भी चिह्न देने से इन्कार कर दिया। और उसने उन्हें कोई और बयान देने से इन्कार कर दिया। उन्होंने पहले ही अपना मन बना लिया था। उसके शत्रुओं ने उस पर दुष्ट के साथ गठबंधन करने का आरोप लगाया। यहाँ तक कि जो लोग उसे पूरा श्रेय देने के लिये इच्छुक थे, वे भी उसके बारे में अपने आकलन में बहुत कम थे। आखिरकार, किस भविष्यद्वक्ता ने कभी उसके द्वारा किए गए आश्चर्यकर्मों का दसवाँ हिस्सा किया या उसके द्वारा सिखाए गए सत्य का दसवाँ हिस्सा प्रचारित किया? नहीं! उन्हें अकेला छोड़ दो। उन्हें और कुछ मत बताओ। बाद की पीढ़ियाँ विश्वास करेंगी। उस पीढ़ी को पर्याप्त आश्चर्यकर्म और वचन दिए गए थे।

**2. क्रूस (8:31-38)**

सबसे पहले, हमारे पास *मसीह के लिये क्रूस है* (8:31-38):

*तब वह उन्हें सिखाने लगा कि मनुष्य के पुत्र के लिये अवश्य है कि वह बहुत दु:ख उठाए, और पुरनिए और प्रधान याजक, और शास्त्री उसे तुच्छ समझकर मार डालें, और वह तीन दिन के बाद जी उठे। (8:31)*

पतरस के अंगीकार ने द्वार खोल दिया। कम से कम उसे और बाकी लोगों को तो पता चल गया था कि वह कौन था। अब वह उन्हें और भी गहरे, अधिक विस्मयकारी सत्य की ओर ले जा सकता था। आगे प्रतीक्षा में था - एक *क्रूस।* वे एक मुकुट की अपेक्षा कर रहे थे।

सुसमाचार प्रचारक हमें केवल एक सारांश कथन देते हैं। उसने उन्हें उन “बहुत सी बातों” के बारे में सिखाना आरम्भ किया जिन्हें उसे सहना होगा। शायद उसने उन्हें पुराने नियम के प्रकारों और छायाओं के माध्यम से और भजन 22; भजन 69; और यशायाह 53 अध्याय जैसी कई प्रत्यक्ष भविष्यद्वाणियों के माध्यम से ले गया। शायद उसने उन्हें फसह और प्रायश्चित के दिन के आत्मिक महत्व को समझाया और उन्हें लेवीय व्यवस्था के सभी बलिदानों में अपनी पीड़ा को दर्शाया।

एक बात तो तय थी: दलमनूता में हाल ही में चिह्न चाहने वाले फरीसियों के साथ हुए टकराव ने यह स्पष्ट रूप से दिखा दिया कि हवा किस तरफ बह रही थी। आधिकारिक यहूदी धर्म ने यह तय कर लिया था कि वह मसीह नहीं था। अविश्वास के किस आश्चर्यकर्म से वे उस निष्कर्ष पर पहुँचे, यह केवल वे ही बता सकते हैं जो अपने संदेह और अविश्वास की गहरी गहराइयों को जानते हैं।

“पुरनिये” महासभा के मूल शासकीय निकाय का गठन हुआ। इस निकाय की जड़ें सत्तर पुरुषों की परिषद में थीं, जिन्हें मूसा ने ईश्वरीय आदेश के द्वारा इस्राएल पर शासन करने के लिये अपने साथ जोड़ा था (गिनती 11:16)। पलिश्तीन पर यूनानी विजय के बाद के दिनों में महासभा प्रमुखता में आया। नये नियम के समय में, इसमें महायाजकों (दो दर्जन पाठ्यक्रमों के प्रमुख, जिनमें याजकीय विभाजित था), “पुरनिये” (आयु, अनुभव और प्रभाव वाले पुरुष) और शास्त्री (यहूदी व्यवस्था में प्रशिक्षित वकील) शामिल थे। इसमें सत्तर सदस्य थे, एक नियम के रूप में, महायाजक अध्यक्ष होता था। सत्र के दौरान, सदस्य अर्धवृत्त में बैठते थे। यीशु के दिनों में, महासभा यहूदी सर्वोच्च न्यायालय था। इसकी प्राथमिक ज़िम्मेदारियाँ लोगों को गलत करने से बचाना और लोगों को धोखा देने वालों की जाँच करना था। पुरुषों के इस समूह ने, एक निकाय के रूप में, अब यीशु को अस्वीकार कर दिया, जैसे उन्होंने यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले को अस्वीकार कर दिया था।

यीशु ने अपने अचम्भित चेलों को आश्वस्त करते हुए कहा, “मनुष्य के पुत्र को अवश्य मार डाला जाएगा।”

“मारा जाएगा?” असम्भव! “अवश्य मारा जाएगा?” अविश्वसनीय!

यह बाइबल की रहस्यमयी “अवश्य होने वाली बातों” में से एक है। इससे पहले, यीशु ने निकुदेमुस को याद दिलाया था, “जिस रीति से मूसा ने जंगल में साँप को ऊँचे पर चढ़ाया, उसी रीति से *अवश्य* है कि मनुष्य का पुत्र भी ऊँचे पर चढ़ाया जाए” (यूहन्ना 3:14)। उसके कुछ समय बाद, यूहन्ना ने लिखा, “उसको सामरिया से होकर जाना *अवश्य* था” (यूहन्ना 4:4)। या, जैसा कि उसने अपनी माता और यूसुफ को याद दिलाया, “क्या नहीं जानते थे कि मुझे अपने पिता के भवन में होना *अवश्य* है?” (लूका 2:49)।

“अवश्य है कि मार डाला जाए!” जैसा कि पतरस ने बाद में पिन्तेकुस्त के दिन यहूदियों को याद दिलाया, प्रभु यीशु को “परमेश्‍वर की ठहराई हुई योजना और पूर्व ज्ञान के अनुसार पकड़वाया गया” (प्रेरितों के काम 2:23)। यह सब अनगिनत युगों पहले स्वर्ग में तय हो चुका था। आदम की बर्बाद जाति के खोए हुए लोगों के लिये एक कुलपुरुष-उद्धारकर्ता को खोजना होगा।

परन्तु उसके मारे जाने से कहानी का अंत नहीं होता। यीशु ने आगे कहा, “और वह तीन दिन के बाद फिर से जी उठे।” और सम्भवतः यहाँ उसने उन्हें “योना भविष्यद्वक्ता के चिह्न” (मत्ती 12:39; 16:4) और मोरिय्याह पर्वत पर अब्राहम और इसहाक की कहानी (इब्रानियों 11:17-19) की याद दिलाई।

*उसने यह बात उनसे साफ–साफ कह दी। इस पर पतरस उसे अलग ले जाकर झिड़कने लगा। (8:32)*

“साफ-साफ” शब्द से सरल, स्पष्ट बोलने का विचार व्यक्त होता है। यहाँ कोई अस्पष्ट चिह्न या संकेत नहीं थे। यहाँ स्पष्ट, खुला भाषण था। उसके अर्थ में कोई गलती नहीं हो सकती थी।

पतरस के लिये यह बहुत अधिक था। वह प्रभु को दूसरे चेलों से अलग ले जाकर, जैसा कि मूल में बताया गया है, उसे “झिड़कने लगा।” उपयोग किए गए शब्द का अर्थ है किसी से बहस करना। पतरस ने अभी-अभी यीशु को मसीह माना था, जिसमें असीमित बुद्धि और सामर्थ्य के संदर्भ में निहित सभी बातें शामिल थीं। अब वह, एक नश्वर मनुष्य, उसे झिड़कने के लिये अलग ले गया!

*परन्तु उस ने फिरकर अपने चेलों की ओर देखा, और पतरस को झिड़क कर कहा, “हे शैतान, मेरे सामने से दूर हो; क्योंकि तू परमेश्‍वर की बातों पर नहीं, परन्तु मनुष्यों की बातों पर मन लगाता है।” (8:33)*

पतरस ने प्रभु को दूसरों से अलग करके अपनी झिड़क की शर्मिंदगी से बचाने के बारे में सोचा। “प्रभु ऐसा न हो!” पतरस का अपराध बहुत गम्भीर था क्योंकि उसने अभी-अभी यीशु को प्रभु और मसीह दोनों माना था। प्रभु ने पतरस की ओर पीठ फेर ली और जानबूझकर चेलों का सामना किया। फिर उसने सबके सामने पतरस को सार्वजनिक रूप से झिड़क दिया। इस मामले में “झिड़क” के लिये शब्द वही है जो अभी-अभी पतरस के लिये उपयोग किया गया था। पतरस को एहसास नहीं हुआ कि उसका कार्य कितना गम्भीर और दुस्साहसपूर्ण था। प्रभु ने पतरस की भूल, अज्ञानतापूर्ण कार्यवाही से परे देखा और छाया में छिपे हुए दुष्ट को देखा। यह वह था जिसने पतरस को इस तरह की सांसारिक कामुकता के साथ बोलने के लिये प्रेरित किया था। सबसे बड़े शत्रु, शैतान ने पहले भी एक बार मसीह को क्रूस के बिना मुकुट स्वीकार करने के लिये मनाने का प्रयत्न किया थी (मत्ती 4:8-10)। पतरस को इस बात का अनुमान नहीं था कि शैतान वहाँ था, और यह भी नहीं कि वह उसका साधन बन गया था।

ये वचन उसे चौंका देने वाले रहे होंगे: “हे शैतान, मेरे सामने से दूर हो!” अब हम देख सकते हैं कि यीशु ने पतरस से मुँह क्यों मोड़ लिया। वह नहीं चाहता था कि पतरस एक पल के लिये भी यह सोचे कि प्रभु *उसे* शैतान कह रहा है। बिलकुल नहीं! प्रभु को ठीक-ठीक पता था कि शैतान कहाँ है। उसने उसे उजागर करके निकाल दिया। यह एहसास होने का आघात कि वह वास्तव में शैतान का हथियार बन गया था, पतरस के लिये पर्याप्त दण्ड था।

फिर, हमारे पास *मसीहियों के लिये भी एक क्रूस है* (8:34-38):

*उसने भीड़ को अपने चेलों समेत पास बुलाकर उनसे कहा, “जो कोई मेरे पीछे आना चाहे, वह अपने आपे से इन्कार करे और अपना क्रूस उठाकर, मेरे पीछे हो ले। (8:34)*

प्रभु अब अपने श्रोताओं को बढ़ाता हैं और उन सभी से बात करता हैं जो उसका अनुसरण करेंगे, न कि केवल अपने निकटतम चेलों से। उनसे भी स्पष्ट रूप से बात करने का समय आ गया था। यदि उसके लिये एक क्रूस तैयार किया गया था, जैसा कि उसने अभी-अभी अपने चेलों से कहा था, तो उन सभी के लिये भी एक क्रूस तैयार किया गया था जो उसका अनुसरण करेंगे।

तथाकथित “समृद्धि” वाले सुसमाचार के लिये इतना ही! “नाम लो, दावा करो” वाला धर्म सच्ची मसीहियत से बहुत दूर है। यदि संसार ने महिमा के प्रभु को जन्म लेने के लिये एक भेड़शाला और मरने के लिये एक क्रूस का प्रस्ताव रखा, तो हमें यह अपेक्षा क्यों करनी चाहिए कि यह हमें कुछ और देगा?

संसार शत्रु का क्षेत्र है। शैतान “गर्जनेवाले सिंह के समान इस खोज में रहता है कि किस को फाड़ खाए” (1 पतरस 5:8)। लोगों को यह विचित्र लगता है कि मसीही भी अन्य लोगों की तरह ही भयावहता और कठिनाइयों से पीड़ित हैं और उन्हें अक्सर इतनी क्रूरता से सताया जाता है, यहाँ तक कि उनकी मृत्यु भी हो जाती है। यह इतना विचित्र नहीं है। यह परमेश्वर से घृणा करने वाला, मसीह को अस्वीकार करने वाला संसार है। यह बहुत विचित्र होता, यदि प्रभु के लोगों से संसार घृणा न करता।

*क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहे वह उसे खोएगा, पर जो कोई मेरे और सुसमाचार के लिये अपना प्राण खोएगा, वह उसे बचाएगा। (8:35)*

यह सब दृष्टिकोण का मामला है। यदि यह जीवन ही सब कुछ है, तो निश्चित रूप से दुःख भोगने वाले पवित्र लोगों का भाग्य दीये के लायक नहीं है। परन्तु यदि आगे एक महान, शानदार जीवन है, तो ठीक है, जैसा कि पौलुस कहता हैं, इस समय के दु:ख और क्लेश उस महिमा के साम्हने, जो हम पर प्रगट होने वाली है, कुछ भी नहीं हैं। (रोमियों 8:18)।

*यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्‍त करे और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा? मनुष्य अपने प्राण के बदले क्या देगा? (8:36-37)*

अब मुद्दों में सभी को शामिल करने के लिये उसे व्यापक बना दिया गया है। यह सब इस पर आकर समाप्त होता है: हम किस संसार के लिये जी रहे हैं? इस प्रश्न पर सबसे बड़ी टिप्पणी ईश्वरीय प्रेरणा से लिखी गई सभोपदेशक की पुस्तक है, जिसे सुलैमान ने अपने बुढ़ापे में लिखा था, जब वह अपने जीवन के बारे में सोच रहा था। उस पुस्तक का मुख्य शब्द है *व्यर्थ।* पुराने नियम में उपयोग किए गए इस शब्द के पीछे का विचार खालीपन है। अपने जीवन का एक भयानक जहाज डूबने के बाद, और अपने राज्य के जहाज डूबने के लिये अपरिवर्तनीय मार्ग निर्धारित करने के बाद, सुलैमान के पास आने वाले न्याय के अलावा कुछ भी अनुमान लगाने के लिये नहीं था। सिंहासन पर अपने प्रारम्भिक वर्षों में, उसने आने वाले संसार के लिये जीवन बिताया था। फिर उसकी भटकती हुई दृष्टि स्त्रियों, सभी प्रकार की स्त्रियों, जिनमें अन्यजाति और मूर्तिपूजक स्त्रियाँ भी शामिल थीं, पर लग गई। उसने सैकड़ों स्त्रियों से विवाह किया। अंत में, इन स्त्रियों ने उसका मन पूरी तरह से परमेश्वर से दूर कर दिया। वह गलत संसार के लिये जीवन बिताने लगा, और इस प्रक्रिया में उसने लगभग अपनी आत्मा खो दी। उसने निश्चित रूप से अपनी ईश्वरीय बुद्धि और अजेय शक्ति खो दी।

परमेश्वर अपना तराजू सामने लाता है। एक तरफ, वह पूरे संसार को रखता है - कुछ ऐसा जो कभी किसी के पास नहीं रहा, हालाँकि कई लोगों ने प्रयत्न किया है। निम्रोद ने इसे अपने पास रखने का प्रयत्न किया। नबूकदनेस्सर ने प्रयत्न किया। नेपोलियन ने प्रयत्न किया। सभी विफल रहे। मसीह विरोधी समूचे संसार को जीतने का प्रयत्न करेगा और वास्तव में, कुछ ही वर्षों के लिये एक वैश्विक साम्राज्य पर शासन करेगा। परन्तु फिर उसका जर्जर साम्राज्य परमेश्वर के न्याय के अधीन बिखर जाएगा, और वह स्वयं पापों से लदा हुआ, एक खोए हुए अनन्त काल में डूब जाएगा।

तराजू के दूसरी तरफ, परमेश्वर एक मानवीय आत्मा को रखता है। संसार एक बार में ही प्रकट हो जाता है। यह बहुत हल्की, बहुत कमजोर वस्तु है, जब अनन्त काल के मूल्यों को ध्यान में रखा जाता है, जिसके लिये किसी को अपनी आत्मा देनी चाहिए - भले ही इसे पाने की कुछ सम्भावना हो। वह मूर्ख है जो समूचे संसार को नियंत्रित करने के व्यर्थ प्रयत्न में अपनी आत्मा को फेंक देता है, उस छोटे से हिस्से की तो बात ही छोड़िए जो शैतान के द्वारा उसे चारे के रूप में प्रस्तुत किया जाता है, जिसकी गोद में समूचा संसार है (1 यूहन्ना 5:19)।

*जो कोई इस व्यभिचारी और पापी जाति के बीच मुझ से और मेरी बातों से लजाएगा, मनुष्य का पुत्र भी जब वह पवित्र दूतों के साथ अपने पिता की महिमा सहित आएगा, तब उस से भी लजाएगा।” (8:38)*

अभी, कुछ समय के लिये, शैतान इस संसार का सरदार है, परन्तु उसका समय समाप्त हो रहा है। वह विश्वासियों को डरा-धमका सकता है, उन्हें मार सकता है; उनका मजाक उड़ा सकता है और उन्हें शहीद कर सकता है। परन्तु यीशु, महिमा और सामर्थ्य के साथ और स्वर्ग की सेनाओं के साथ फिर से आ रहा हैं।

शैतान के लोग हमारी पाठशालाओं और विश्वविद्यालयों में हैं; वे तिरस्कार करने वालों की कुर्सी पर बैठे हैं; और विश्वासियों को डराते, धमकाते हैं और उन्हें पीड़ित करने का प्रयत्न करते हैं। उसके लोग व्यापार जगत और शिक्षा जगत में हैं, जो लोग सत्ता का उपयोग करते हैं, जो लोग शाप देते हैं और ईशनिंदा करते हैं और प्रभु यीशु के नाम का व्यर्थ में उपयोग करते हैं, जो लोग उस अनमोल नाम को सबसे गंदे शब्दों से जोड़ते हैं जिन्हें नये जन्म रहित दिमाग के अंधेरे नाले से निकाला जा सकता है। ऐसे लोग विश्वासियों को चुप करवाने का प्रयत्न करते हैं। शैतान के लोग सरकार में हैं जहाँ वे मसीहियत के विरुद्ध व्यवस्था पारित कर सकते हैं और मसीहियों को बन्दीगृह, यातना और पीड़ादायी मृत्यु की धमकी दे सकते हैं। परन्तु शैतान का समय समाप्त हो रहा है।

प्रभु सब कुछ परिप्रेक्ष्य में रखता है। हमें अपनी दृष्टि *उस पर* टिकाए रखनी है। एक बार जब हम उसे देख लेंगे और याद कर लेंगे कि वह कौन हैं और कहाँ हैं, तो हमें उससे शर्म नहीं आएगी। और उसे हमसे शर्म नहीं आएगी। जैसा कि पुराने भजन में कहा गया है:

क्या मुझे यीशु से शर्म आती है, उस प्यारे मित्र से,

जिस पर मेरी स्वर्ग की आशाएँ निर्भर हैं?

क्या अब और कभी मुझे यीशु से शर्म आती है,

क्या साँझ को एक तारे को अपनाने से शर्म आनी चाहिए![1]

**ख. यह कैसे प्रकट हुआ (9:1-13)**

सबसे पहले, *प्रतिज्ञा* पर ध्यान दें:

*उसने उनसे कहा, “मैं तुम से सच कहता हूँ कि जो यहाँ खड़े हैं, उनमें से कोई–कोई ऐसे हैं, कि जब तक परमेश्‍वर के राज्य को सामर्थ्य सहित आया हुआ न देख लें, तब तक मृत्यु का स्वाद कदापि न चखेंगे।” (9:1)*

वह विशेष रूप से पतरस, याकूब और यूहन्ना के बारे में बात कर रहा था। परमेश्वर का राज्य स्वर्ग के राज्य के समान नहीं है। “स्वर्ग का राज्य” अभिव्यक्ति मत्ती का वाक्यांश है, और यह सहस्राब्दी राज्य को संदर्भित करता है। स्वर्ग का राज्य अस्थायी है। यह पृथ्वी पर स्वर्ग के शासन को संदर्भित करता है (दानिय्येल 4:26)। यह सभी प्रकार के लोगों को शामिल करता है, जिनमें से कई को इससे बाहर निकालना होगा। “भेद” वाले दृष्टांत (मत्ती 13 अध्याय) स्वर्ग के राज्य से सम्बन्धित हैं। इसके विपरीत, परमेश्वर का राज्य अनन्त और आत्मिक है और इसमें केवल नये जन्म के माध्यम से प्रवेश किया जा सकता है (यूहन्ना 3:3, 5)। रूपान्तरण की कहानी के अपने परिचय में, मत्ती “स्वर्ग के राज्य” वाली अभिव्यक्ति के अपने सामान्य तकनीकी उपयोग से बचते हुए यही कहता है, “वे जब तक मनुष्य के पुत्र को उसके राज्य में आते हुए न देख लेंगे” (मत्ती 16:28)।

प्रभु ने अपने चेलों को प्रार्थना करना सिखाया, “तेरा *राज्य* आए” (मत्ती 6:10)। यह *कलीसिया* थीजो पिन्तेकुस्त के दिन अनुग्रह और सामर्थ्य के साथ आई थी। चेले जानना चाहते थे कि क्या प्रभु सहस्राब्दि राज्य स्थापित करने वाला था (प्रेरितों 1:6)। नहीं, बिलकुल नहीं! अब इसे लगभग दो हज़ार वर्षों के लिये टाल दिया गया था। वह एक *कलीसिया* बनाने वाला था।अब जल्द ही, कलीसिया का युग समाप्त हो जाएगा, और राज्य की स्थापना का समय आ जाएगा। यह दूसरे आगमन पर सामर्थ्य और महिमा के साथ आएगा। कलीसिया का युग समाप्त हो जाएगा, और उठाए जाने ने कलीसियाई-युग के विश्वासियों को पृथ्वी से हटा दिया होगा। पुनर्जीवित इब्रानी लोगों को राज्य वापस मिल जाएगा (मत्ती 24:30-31)। यह *वह* घटना है जिसकी ओर रूपान्तरण संकेत करता है।

प्रभु का अपमान होने वाला था। उसे धोखा दिया जाना था और तीन सांसारिक न्यायालयों के समक्ष एक नकली मुकदमा चलाया जाना था। उसे अपमानित किया जाना था, पीटा जाना था, उपहास किया जाना था, कोड़े मारे जाने थे, क्रूस पर चढ़ाया जाना था और मारा जाना था - यह सब हमारे ग्रह पर होना था। निश्चित रूप से, यह सम्भवतः इसका अंत नहीं हो सकता है! वह दिन अवश्य आएगा जब, यहीं, इस पृथ्वी पर, ऐसे अपमानजनक अत्याचारों के दृश्य में, “यही यीशु” सर्वशक्तिमान, प्रभु और राजा के रूप में स्वीकार किया जाएगा और उसे मुकुट पहनाया जाएगा।

रूपान्तरण उस घटना की पूर्वछाया थी। केवल पतरस, याकूब और यूहन्ना ने इसे देखा। उन तीन लोगों ने, छोटे रूप में, “परमेश्वर के राज्य को सामर्थ्य के साथ आते देखा।” प्रभु चाहता था कि उसके चेले यह समझें कि अंधकार की शक्तियाँ उसे केवल इसलिये पकड़ सकती हैं, परख सकती हैं और क्रूस पर चढ़ा सकती हैं क्योंकि प्रभु उन्हें ऐसा करने देगा (यूहन्ना 19:10-11)।

*स्थान* पर भी ध्यान दें:

*छ: दिन के बाद यीशु ने पतरस और याकूब और यूहन्ना को साथ लिया, और एकान्त में किसी ऊँचे पहाड़ पर ले गया। वहाँ उनके सामने उसका रूप बदल गया। (9:2)*

यह उल्लेखनीय घटना पलिश्तीन की उत्तर-पूर्वी सीमा पर हर्मोन पर्वत पर घटी। यह पर्वत पुराने सीमावर्ती नगर दान से ऊपर है। हर्मोन पलिश्तीन का सबसे विशिष्ट और सुंदर पर्वत है। गर्मी की तपिश में भी, इसके सफेद सिर पर बर्फ की सफेद पट्टियाँ देखी जा सकती हैं। यह लगभग दस हज़ार फ़ीट की ऊँचाई तक पहुँचता है। कैसरिया फिलिप्पी नगर बहुत दूर नहीं था। यह वह सुनसान जगह थी जहाँ प्रभु अब अपने सबसे करीबी सांसारिक मित्रों को ले गया।

वहाँ उसका रूपान्तरण हुआ! यह यूनानी भाषा के मेटामोर्फो शब्द से आया है, जिसका अर्थ है “रूप या दिखावट बदलना।” इस शब्द का प्रयोग यहाँ विश्वासी के व्यवहार में होने वाले परिवर्तन के लिये किया जाता है। इसमें संकट (रोमियों 12:1-2) और प्रक्रिया (2 कुरिं. 3:18) दोनों शामिल हैं।

आगे, *योजना* पर ध्यान दें(9:3-7):

*और उसका वस्त्र ऐसा चमकने लगा और यहाँ तक उज्ज्वल हुआ, कि पृथ्वी पर कोई धोबी भी वैसा उज्ज्वल नहीं कर सकता। (9:3)*

उनके चारों ओर हर्मोन की नयी-नवेली बर्फ बिछी हुई थी। अचानक, उसके वस्त्र सफेदी और पवित्रता के मामले में बर्फ से भी अधिक सफेद लगने लगे। मानवीय वेशभूषा में ऐसी सफेदी पृथ्वी पर पहले कभी नहीं देखी गई थी।

बाइबल के समय में, कपड़ों को साफ करने की प्रक्रिया में कपड़ों को पैरों से रौंदना या उन्हें पानी के टब में पीटना शामिल था जिसमें कुछ क्षारीय रसायन मिलाया जाता था। सिरका (नाइट्रे) (नीतिवचन 25:20) और साबुन (मत्ती 3:2) का उल्लेख किया गया है। सफेद करने की प्रक्रिया में कपड़ों को चाक या किसी तरह की मिट्टी से रगड़ना शामिल था। यह प्रक्रिया अप्रिय लगती थी, जिससे दुर्गंध आती थी और कपड़ों को सुखाने के लिये जगह की आवश्यकता होती थी। इन कारणों से, यह व्यापार आमतौर पर नगर के बाहर किया जाता था।

प्रभु के रूपान्तरित कृषक वस्त्र की उज्जवल चमक के साथ तुलना करने के लिये कोई भी भरपूर सफेदी नहीं ला सकता था। बाहर से वह वस्त्र, प्रकाश से जगमगाता हुआ, उनके भीतर के बेदाग चरित्र का प्रतिबिम्ब था।

*और उन्हें मूसा के साथ एलिय्याह दिखाई दिया; वे यीशु के साथ बातें करते थे। (9:4)*

अचानक मूसा और एलिय्याह प्रकट हुए। मूसा ने व्यवस्था का प्रतिनिधित्व किया, एलिय्याह ने भविष्यद्वक्ताओं का। दोनों ही अपने समय में सामर्थी और अद्भुत व्यक्ति थे। मूसा की मृत्यु हो गई और परमेश्वर ने उसे नबो पर्वत पर गाड़ दिया। वह उठाए जाने में पुनर्जीवित पवित्र लोगों का प्रतिनिधित्व करता है। एलिय्याह को जीवित स्वर्ग में उठा लिया गया था। वह स्वर्गारोहण में स्वर्ग में जीवित उठाए गए पवित्र लोगों का प्रतिनिधित्व करता है।

पतरस (जिसका रूपान्तरण के बारे में दृष्टिकोण मरकुस यहाँ दर्ज कर रहा है) हमें यह नहीं बताता कि मूसा, एलिय्याह और प्रभु यीशु क्या बात कर रहे थे। पतरस स्वयं बात करने में बहुत व्यस्त था। हालाँकि, लूका हमें बताता है कि वे “उसके मरने की चर्चा कर रहे थे, जो यरूशलेम में होनेवाला था” (लूका 9:31)। नि:संदेह उन्होंने पुराने नियम के सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र की समीक्षा की जो कलवरी, उसके कारण, उसके मूल्य और उसके परिणामों के बारे में बात करते हैं। प्रभु रूपान्तरण के पर्वत से सीधे महिमा में कदम रख सकता था क्योंकि रूपान्तरण उसके बेदाग, अद्वितीय जीवन के लिये परमेश्वर का औचित्य था। परन्तु तब मूसा और एलिय्याह को पृथ्वी पर रहना पड़ता, एलिय्याह को नियत समय में मरना पड़ता और मूसा को फिर से मरना पड़ता। कोई उत्थान और कोई वापसी नहीं होती, कोई कलीसिया युग और कोई राज्य नहीं होता।

*इस पर पतरस ने यीशु से कहा, “हे रब्बी, हमारा यहाँ रहना अच्छा है : इसलिये हम तीन मण्डप बनाएँ; एक तेरे लिये, एक मूसा के लिये, और एक एलिय्याह के लिये।” (9:5)*

पतरस ने “कहा।” कोई भी उससे बात नहीं कर रहा था, परन्तु वह बातचीत सुन रहा था। अब उसे बस अपने सांसारिक मन के उलझे हुए विचारों को उगलना था और अपनी राय देनी थी कि क्या किया जाना चाहिए।

पहाड़ पर उसने जो कहा वह उतना ही बुरा था जितना उसने एक सप्ताह पहले कहा था जब उसने प्रभु को झिड़का था। वह इस समय पर भी वही गलती करने का दोषी था जो नया जन्म न पाने वाले लोगों ने की थी, जिन्होंने प्रभु को यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला, एलिय्याह और भविष्यद्वक्ता के क्रम के अन्य लोगों के बराबर माना था। पतरस ने अब प्रभु को एलिय्याह और मूसा के बराबर माना। उसने सोचा कि पहाड़ पर रहना एक अच्छा विचार होगा। *हम* शब्द का वास्तव में का अर्थ है कि उसने प्रभु यीशु को इस पूरी तरह से अनुचित परियोजना में उसके और अन्य लोगों के साथ शामिल होने के लिये प्रोत्साहित किया।

*क्योंकि वह न जानता था कि क्या उत्तर दे, इसलिये कि वे बहुत डर गए थे। (9:6)*

वास्तव में, पतरस और उसके साथी भयभीत थे। *भयभीत शब्द* का अर्थ है कि वे भयंकर भय में डूब गए थे। नये नियम में यह शब्द केवल एक जगह मिलता है, जहाँ मूसा के सीनै पर भय का वर्णन किया गया है (इब्रानियों 12:21)। भय से प्रेरित होकर, पतरस ने जो भी नासमझी वाली बात उसके मन में आई, उसे बोल दिया।

*तब एक बादल ने उन्हें छा लिया, और उस बादल में से यह शब्द निकला, “यह मेरा प्रिय पुत्र है, इसकी सुनो।” (9:7)*

पतरस के शब्दों ने उस दर्शन को इतना प्रभावित किया कि उसे वापस ले लिया गया। इसकी जगह पिता की आवाज ने ले ली जिसमें पतरस को खुलेआम फटकार लगाई गई। इसने प्रभु यीशु के अतुलनीय जीवन को परमेश्वर की ओर से पूर्ण समर्थन दिया और प्रभु पर ध्यान केंद्रित किया क्योंकि वह एकमात्र व्यक्ति था जिसे सुनने की आवश्यकता थी।

वह आवाज पहले भी सुनी गई थी, प्रभु के बपतिस्मा के समय (1:11)। यह फिर से सुनी जानी थी, जब इस्राएल के द्वारा अस्वीकार किए गए प्रभु ने उस दिन की आशा की थी जब अन्यजाति लोग उसका उत्तर देंगे (यूहन्ना 12:28)।

उस छाए हुए बादल ने मूसा और एलिय्याह को स्वर्ग की ओर वापस जाते हुए देखने से रोक दिया।

इसके अलावा, *उस व्यक्ति* पर भी ध्यान दीजिए(9:8-9):

*तब उन्होंने एकाएक चारों ओर दृष्‍टि की, और यीशु को छोड़ अपने साथ और किसी को न देखा। (9:8)*

सब कुछ समाप्त हो चुका था, परन्तु यीशु अभी भी वहाँ था। वास्तव में, यह सब समाप्त हो चुका होता, यदि यीशु ही जाने वाला होता! मूसा की क्या आवश्यकता थी, जबकि *वह,* अर्थात्प्रभु ही वह था जिसने व्यवस्था को पूरा किया? एलिय्याह की क्या आवश्यकता थी, जबकि *वह,* अर्थात्प्रभु ही वह था जिसके बारे में सभी भविष्यद्वक्ताओं ने बात की थी? मूसा की तुलना में यीशु का होना कहीं बेहतर था, जिसे अपना आपा खोने के कारण प्रतिज्ञा किए गए देश से बाहर रखा गया था, या एलिय्याह, जिसकी सेवकाई समाप्त कर दी गई थी क्योंकि वह लगातार उदास रहता था। ये लोग जितने भी महान थे, वे केवल मनुष्य थे। यीशु परमेश्वर का पुत्र था। न तो मूसा और न ही एलिय्याह अपने समय में प्रतिज्ञा किए गए राज्य को ला सके, हालाँकि उन्होंने प्रयत्न किया। यीशु इसे ला सकता हैं और लाएगा जब वह फिर से पृथ्वी पर आएगा।

*पहाड़ से उतरते समय उसने उन्हें आज्ञा दी कि जब तक मनुष्य का पुत्र मरे हुओं में से जी न उठे, तब तक जो कुछ तुम ने देखा है वह किसी से न कहना। (9:9)*

रूपान्तरण का पर्वत प्रभु की सांसारिक तीर्थयात्रा का उच्चतम बिंदु था। अब से, उसका मार्ग सीधे क्रूस की ओर जाता था। विरोध बढ़ता और अधिक कटु तथा बेहतर ढंग से संगठित होता; इसलिये, यह आदेश दिया गया कि पतरस, याकूब और यूहन्ना हर्मोन पर्वत के उस दर्शन को गुप्त रखें।

अंत में, *समस्याओं* पर ध्यान दें(9:10-13):

*उन्होंने इस बात को स्मरण रखा; और आपस में वाद–विवाद करने लगे, “मरे हुओं में से जी उठने का क्या अर्थ है?” (9:10)*

प्रभु ने पहले ही चेलों को चेतावनी देना आरम्भ कर दिया था कि उसे मार डाला जाएगा, और पतरस ने पहले ही उस प्रकाशन का विरोध किया था और उसके परिणामस्वरूप उसके व्यवहार के लिये उसे फटकार लगाई गई थी। यह अतिरिक्त सत्य कि प्रभु को मरे हुओं में से फिर से जीवित होना था, उनके मन में नहीं उतरा था - और न ही यह तब तक उतरेगा जब तक कि ऐसा नहीं हो जाता, और तब भी, उनमें से कुछ लोग केवल तभी आश्वस्त होंगे जब प्रभु उन्हें “कई अचूक प्रमाण” देगा। वास्तव में, बैतनिय्याह की मरियम (यूहन्ना 12 अध्याय) के अलावा, केवल प्रभु के शत्रुओं ने ही उसके पुनरुत्थान के बारे में उसकी शिक्षा को गम्भीरता से लिया; तब भी, उन्होंने वास्तव में इस पर विश्वास नहीं किया (मत्ती 27:62-66)।

सम्भवतः पतरस और अन्य लोगों ने मूसा और एलिय्याह को प्रभु से न केवल उसकी मृत्यु के बारे में बल्कि उसके पुनरुत्थान के बारे में भी बात करते हुए सुना था। एलिय्याह ने एक बार मरे हुओं में से एक व्यक्ति को जीवित किया था (1 राजाओं 17:17-24), और प्रभु के पुनरुत्थान की सच्चाई मूसा के लेखन में अंतर्निहित थी (उदाहरण के लिये, उत्पत्ति 22:5; इब्रानियों 11:17-18; लैव्यव्यवस्था 14:1-7)।

*और उन्होंने उससे पूछा, “शास्त्री क्यों कहते हैं कि एलिय्याह का पहले आना अवश्य है?” (9:11)*

यहाँ “पूछा” के लिये शब्द अपूर्ण काल में है, जिसका अर्थ है कि वे उससे पूछते रहे।

पुराने नियम का अंत एलिय्याह के आगमन की भविष्यद्वाणी के साथ होता है (मलाकी 4:5-6)। चेलों ने सोचा होगा कि रूपान्तरण के पर्वत पर एलिय्याह का अचानक प्रकट होना उस भविष्यद्वाणी की पूर्ति थी। यदि ऐसा है, तो यह बहुत संतोषजनक नहीं था क्योंकि, उस स्थिति में, प्रभु अपने नियुक्त दूत के सामने प्रकट हुए होगा! चेले, जैसा कि कई लोग होते हैं, बाइबल की भविष्यद्वाणी के विशिष्ट विवरणों, विशेष रूप से घटनाओं के कालानुक्रमिक क्रम को लेकर उलझन में थे। ऐसा लगता है कि प्रभु इस समय भविष्यद्वाणी के विवरण में जाने के लिये अनिच्छुक है। चेले मसीह के दूसरे आगमन से सम्बन्धित परस्पर जुड़ी भविष्यद्वाणियों की सभी जटिलताओं को समझने की स्थिति में नहीं थे। वास्तव में, *दूसरे आगमन* के बारे में सच्चाई अभी तक खुले तौर पर प्रकट नहीं हुई थी।

*उसने उन्हें उत्तर दिया, “एलिय्याह सचमुच पहले आकर सब कुछ सुधारेगा, परन्तु मनुष्य के पुत्र के विषय में यह क्यों लिखा है कि वह बहुत दु:ख उठाएगा, और तुच्छ गिना जाएगा? (9:12)*

ऐसा प्रतीत होता है कि चेलों ने दो प्रश्न पूछे थे, एक एलिय्याह के पूर्व प्रकटीकरण के बारे में, जिसका उत्तर प्रभु अब देने वाला था (पद 13), और दूसरा प्रश्न मनुष्य के पुत्र के रूप में मसीह के कष्टों से सम्बन्धित भविष्यद्वाणियों के बारे में।

उन्होंने पहले से लिखी हुई बातों का हवाला दिया। मरकुस यह नहीं बताता कि उन्होंने किस लिखित स्रोत का हवाला दिया, न ही वह इस प्रश्न के लिये प्रभु के उत्तर को दर्ज करता है। ऐसे सभी प्रश्नों का उत्तर उचित समय पर दिया जाएगा। भजन 22; भजन 69; यशायाह 53; और जकर्याह 13 अध्याय जैसे वचन उन सभी के लिये परिचित होंगे।

*परन्तु मैं तुम से कहता हूँ, कि एलिय्याह तो आ चुका, और जैसा उसके विषय में लिखा है, उन्होंने जो कुछ चाहा उसके साथ किया।” (9:13)*

प्रभु यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की ओर संकेत कर रहा था, जो यद्यपि वास्तविक एलिय्याह नहीं था, फिर भी एलिय्याह की आत्मा और सामर्थ्य में मसीह के आने की घोषणा से पहले उस जाति को परमेश्वर के पास वापस बुलाने के लिये आया था (मत्ती 11:14)। यदि उस जाति ने यीशु को मसीह के रूप में स्वीकार कर लिया होता, तो यूहन्ना की सेवकाई ने उसे प्रतिनिधि के रूप में एलिय्याह बना दिया होता।

कलवरी के अपराध और उसके बाद यहूदियों के द्वारा पवित्र आत्मा को अस्वीकार करने के कारण, प्रतिज्ञा किए गए मसीही, सहस्राब्दी राज्य को एक लम्बे समय के लिये स्थगित करना आवश्यक हो गया। मसीह के दूसरे आगमन के लिये मंच को फिर से तैयार करना होगा।

कलीसिया के उठाए जाने के बाद, प्रभु मसीह की वापसी से पहले यहूदी लोगों को परमेश्वर के पास वापस बुलाने के लिये दो गवाहों को भेजेगा (प्रकाशितवाक्य 11:3-13)। ये 1,44,000 यहूदी हृदय परिवर्तित लोगों को जीतेंगे, जो बदले में, राज्य के सुसमाचार को सब जातियों तक ले जाएँगे (प्रकाशितवाक्य 7 अध्याय)। दो गवाहों में से एक नि:संदेह एलिय्याह स्वयं होगा। सम्भवतः उसका साथी हनोक होगा, जो बिना मरे स्वर्ग में उठाए जाने वाला एकमात्र अन्य व्यक्ति है।

**खंड 5—रूपरेखा**

**खंड 5: सेवक की इच्छा (9:14-29)**

1. दुःखद घटनाक्रम (9:14-16)
   1. यीशु ने क्या समझा (9:14)
      1. भीड़ (9:14a)
      2. आलोचक (9:14b)
   2. यीशु ने क्या प्रदर्शित किया (9:15)
   3. यीशु ने क्या माँग की (9:16)
2. भयानक दुष्टात्मा (9:17-27)
   1. एक दुःखी पिता (9:17-18)
      1. उसकी आवश्यकता उजागर हुई (9:17-18a)
         1. कैसे उसका पुत्र दुष्टात्मा से ग्रस्त हो गया (9:17)
         2. उसके पुत्र को दुष्टात्मा ने कैसे सताया (9:18a)
      2. उसकी आवश्यकता पूरी न हुई (9:18b)
   2. एक गम्भीर विफलता (9:19)
      1. प्रभु की दुःखद सूचना (9:19a)
      2. प्रभु का अनुग्रहपूर्ण निमंत्रण (9:19b)
   3. एक शैतानी दुष्टात्मा (9:20-22a)
      1. इसकी अनुभूति (9:20a)
      2. इसका जुनून (9:20b)
      3. इसकी दृढ़ता (9:21)
      4. इसकी तीव्र प्रतिक्रियाएँ (9:22a)
   4. एक गम्भीर गलती (9:22b-24)
      1. मनुष्य का “यदि” (9:22b)
      2. स्वामी का *यदि* (9:23-24)
         1. फटकार (9:23)
         2. प्रत्युत्तर (9:24)
   5. एक बचानेवाला मित्र (9:25-27)
      1. प्रभु की आज्ञा (9:25)
         1. जब उसने कहा (9:25a)
         2. उसने क्या कहा (9:25b)
      2. प्रभु का तरस (9:26-27)
         1. एक भयानक यातना (9:26)
         2. एक कोमल स्पर्श (9:27)
3. परेशान चेले (9:28-29)
   1. एक विस्मयादिबोधक (9:28)
   2. एक स्पष्टीकरण (9:29)

**खंड 5: सेवक की इच्छा (9:14-29)**

**क. दुःखद घटनाक्रम (9:14-16)**

*जब वह चेलों के पास आया, तो देखा कि उनके चारों ओर बड़ी भीड़ लगी है और शास्त्री उनके साथ विवाद कर रहे हैं। (9:14)*

यह दृश्य और परिस्थिति का एक नाटकीय परिवर्तन था। कुछ समय पहले, वे ऊपर थे, स्वर्गीय दर्शन का हिस्सा बन रहे थे, मसीह की महिमा के गवाह थे, अतीत से आए आगंतुकों को विस्मय से देख रहे थे और बादल से आने वाली आवाज को सुन रहे थे।

अब वे पहाड़ से उतरकर एक प्रतीक्षारत संसार में आ गए थे, एक ऐसा संसार जो शैतान की लोहे वाली पकड़ में था, एक ऐसा संसार जो नीचे चुनौती देता था, मजाक उड़ाता था और युद्ध करता था। और वहाँ दूसरे चेले शास्त्रियों के साथ व्यर्थ के झगड़ों में उलझे हुए थे, जबकि एक संदेहास्पद, जड़हीन भीड़ इधर-उधर घूम रही थी। पहली दृष्टि में ही यह स्पष्ट था कि मसीह के बिना चेले अपनी गहराई से बाहर थे। कितनी बार हम भी उनके जैसे शक्तिहीन रहे हैं।

*उसे देखते ही सब बहुत ही आश्‍चर्य करने लगे, और उसकी ओर दौड़कर उसे नमस्कार किया। (9:15)*

प्रभु आ चुका था! सब ठीक था! परन्तु उसके बारे में कुछ ऐसा था जिसने उन्हें विस्मय से भर दिया। वे “बहुत ही आश्चर्य करने लगे।” उपयोग किए गए शब्द का अर्थ है बहुत आश्चर्य में होना। केवल मरकुस ही इसका उपयोग करता है। यह केवल यहाँ और दो अन्य स्थानों पर आता है - गतसमनी (14:33) और खाली कब्र पर (16:5-6)।

प्रभु के व्यक्तित्व में उसके रूपान्तरण की विस्मयकारी महिमा का कुछ अंश अभी भी शेष रहा होगा।

*उसने उनसे पूछा, “तुम इन से क्या विवाद कर रहे हो?” (9:16)*

परन्तु, जैसा कि जल्द ही पता चल जाएगा, यह सब कुछ नहीं था, क्योंकि बेचारे पिता के पास सही विचार था। वह लड़के को यीशु के पास ले जाएगा! चेले उसके लिये एक खराब विकल्प थे, जितना वे उससे प्रेम करते थे, जितना वे उसके साथ थे, और जितनी बार उन्होंने उसे एक वचन से दुष्टात्माओं को निकालते देखा था। हममें से कोई भी उसका विकल्प नहीं है।

**ख. भयानक दुष्टात्मा (9:17-27)**

हम *एक दुःखी पिता* से आरम्भ करते हैं(9:17-18):

*भीड़ में से एक ने उसे उत्तर दिया, “हे गुरु, मैं अपने पुत्र को, जिसमें गूँगी आत्मा समाई है, तेरे पास लाया था। जहाँ कहीं वह उसे पकड़ती है, वहीं पटक देती है : और वह मुँह में फेन भर लाता, और दाँत पीसता, और सूखता जाता है। मैं ने तेरे चेलों से कहा कि वे उसे निकाल दें, परन्तु वे निकाल न सके।” (9:17-18)*

सच में, लड़के को बहुत आवश्यकता थी। यह सब बहुत ही स्पष्ट और सजीव है। व्याकुल पिता ने कहा कि दुष्टात्मा “उसे पकड़ती है।” शब्द है कैटालम्बन, जिससे हमें अंग्रेजी भाषा का शब्द *कैटालेप्सी* मिला है,और इसका अर्थ है “किसी व्यक्ति या वस्तु को इस तरह से पकड़ना कि उसे अपना बना ले।”

“वहीं उसे पटक देती है,” पिता ने आगे कहा। शब्द है रेग्नुमी। विचार यह है कि भयंकर दुष्टात्मा बेचारे लड़के को भूमि पर पटक देगी। इसका अर्थ है “विकृत करना” या “ऐंठना।”

फिर, लड़के के मुँह से पागल कुत्ते की तरह झाग निकलने लगा। और वह अपने दांतों को पीसने लगा। शब्द है ट्रिज़ो। यह दांतों को पीसने के साथ-साथ तीखी चीख का संकेत देता है। इन भयानक विकृतियों और पीड़ाओं के परिणामस्वरूप, लड़का तड़प रहा था। शब्द है ज़ेरैनो। इसका अर्थ है नष्ट हो जाना, मुरझा जाना। इसका उपयोग घास के मुरझाने के लिये किया जाता है। इसके अलावा, वह बेचारा लड़का बोलने में असमर्थ था, अपने माता-पिता से एक शब्द भी कहने में असमर्थ था, अपनी असहनीय पीड़ा को व्यक्त करने में असमर्थ था।

लड़के के पिता ने आखिरकार यीशु के बारे में सोचा और उसे न पाकर उसने सबसे अच्छा काम किया। वह दुष्टात्मा से ग्रस्त लड़के को प्रभु के चेलों के पास ले गया, परन्तु उसने पाया कि वे जो कुछ भी कर सकते थे, उसके लिये वह घर पर ही रह सकता था।

इसके बाद, हमारे सामने *एक गम्भीर विफलता है:*

*यह सुनकर उसने उनसे उत्तर देके कहा, “हे अविश्‍वासी लोगो, मैं कब तक तुम्हारे साथ रहूँगा? और कब तक तुम्हारी सहूँगा? उसे मेरे पास लाओ।” (9:19)*

प्रभु ने हाल ही में अपने चेलों को अशुद्ध आत्माओं पर अधिकार दिया था, और उन्होंने इसका प्रयोग किया था (6:7), अत: उनके पास वास्तव में कोई बहाना नहीं था। इसके अलावा, समय कम होता जा रहा था क्योंकि प्रभु जानता था कि वह यहाँ अधिक समय तक नहीं रहेगा। वह उस भयानक अविश्वास पर चिल्लाया जो सबसे समर्पित अनुयायी के हृदय में भी छिपा हुआ है।

“उसे मेरे पास लाओ,” उसने कहा। यह पिता के कानों के लिये संगीत की तरह रहा होगा। जहाँ तक शास्त्रियों का प्रश्न है, वे चेलों की तरह ही शक्तिहीन थे। उन्हें भी चुप रहना चाहिए था।

अब हम *एक शैतानी दुष्टात्मा को देखते हैं* (9:20-22a):

*तब वे उसे उसके पास ले आए : और जब उसने उसे देखा, तो उस आत्मा ने तुरन्त उसे मरोड़ा; और वह भूमि पर गिरा, और मुँह से फेन बहाते हुए लोटने लगा। (9:20)*

यह एक बहुत ही विद्रोही और साहसी दुष्टात्मा थी। आमतौर पर, दुष्टात्माएँ मसीह से सामना होने पर डर कर चिल्लाती हैं, परन्तु इसने अपनी दुर्भावना और शक्ति का प्रदर्शन किया।

जैसा कि मरकुस ने बताया, पतरस ने याद किया, “आत्मा ने उसे मरोड़ा।” उसने अपना अंतिम दुर्भावनापूर्ण आक्रमण किया। उपयोग किए गए शब्द से पता चलता है कि दुष्टात्मा ने उसे पूरी तरह से जकड़ लिया, इतना कि बेचारा लड़का भूमि पर लोटने लगा। मरकुस ने जिस शब्द का उपयोग किया, उससे लड़के के भूमि पर बार-बार लोटने का चित्र बनता है। इसके अलावा, उसके मुँह से झाग निकल रहा था। यह बिलकुल वैसा ही था जैसा लड़के के पिता ने बताया था।

*उसने उसके पिता से पूछा, “इसकी यह दशा कब से है?” उसने कहा, “बचपन से। (9:21)*

कैसा बचपन था! इस बेचारे छोटे लड़के के लिये प्रभु का हृदय कितना करुणा से भरा होगा। इसमें कोई संदेह नहीं कि प्रभु को पहले से ही सब कुछ पता था। फिर भी, उसने यह प्रश्न पूछा, शायद इसलिये कि वह चेलों, शास्त्रियों और सभी एकत्रित लोगों को यह बताना चाहता था कि यह व्यवहार कितने समय से चल रहा था और यह दुष्टात्मा के कब्जे का कितना कठिन और हठीला मामला था। चेलों को यह जानकर कुछ सांत्वना मिली होगी कि यदि वे असफल हुए थे, तो मामले में कुछ कम करने वाली परिस्थितियाँ शामिल थीं।

*उसने इसे नष्‍ट करने के लिये कभी आग और कभी पानी में गिराया; (9:22a)*

वह दुष्टात्मा, इस बच्चे को गूंगा बनाकर और उसे भयानक ऐंठन देकर संतुष्ट नहीं हुआ, उसने उसे एक से अधिक बार आग और पानी में फेंककर मार डालने का प्रयत्न किया। यह वास्तव में एक बहुत बड़ी दुष्टात्मा थी।

फिर हमें *एक गम्भीर गलती* मिलती है(9:22b-24):

*परन्तु यदि तू कुछ कर सके, तो हम पर तरस खाकर हमारा उपकार कर।” (9:22b)*

दुःखी पिता, चेलों से निराश और उनकी असफलता से हतोत्साहित, उनका विश्वास पूरी तरह डगमगा गया, बोला, “यदि तू कुछ कर सके...”

*यीशु ने उससे कहा, “यदि तू कर सकता है? यह क्या बात है! विश्‍वास करनेवाले के लिये सब कुछ हो सकता है।” (9:23)*

उसने उस व्यक्ति के *यदि को* वापस उसके पास फेंक दिया। साथ ही, उसने उस व्यक्ति की *किसी भी बात की तुलना* अपनी *सभी बातों से की।* यीशु के साथ, सब बातें सम्भव हैं। जो एक सौ अरब आकाशगंगाएँ बना सकता है, जिनमें से प्रत्येक सौ अरब तारों से बनी है, उसे एक दुष्टात्मा की हरकतों से डरना नहीं चाहिए।

*बालक के पिता ने तुरन्त गिड़गिड़ाकर कहा, “हे प्रभु, मैं विश्‍वास करता हूँ, मेरे अविश्‍वास का उपाय कर।” (9:24)*

यहाँ “उपाय कर” के लिये उपयोग किए गए शब्द का शाब्दिक अर्थ है खतरे में पड़े लोगों की पुकार पर दौड़ना। पिता ने अंगीकार किया कि उसे न केवल अपने लिये बल्कि अपने लड़के के लिये भी सहायता की आवश्यकता है। यहाँ “बच्चे” के लिये शब्द छोटा है। यह हमें बताता है कि लड़का केवल एक छोटा लड़का था, एक शिशु। दुष्टात्माएँ कितनी निर्दयी होती हैं! चेलों के लिये यह देखना काफी दुःखद था कि एक वयस्क व्यक्ति, दुष्टात्माओं की सेना के द्वारा जकड़ा हुआ, पूरे समुदाय को आतंकित कर रहा था (5:1-5), परन्तु इस छोटे लड़के के रूप में एक असहाय बच्चे को पीड़ित देखना कहीं अधिक बुरा था।

परन्तु अब हम *एक बचाने वाले मित्र* को देखते हैं(9:25-27):

*जब यीशु ने देखा कि लोग दौड़कर भीड़ लगा रहे हैं, तो उसने अशुद्ध आत्मा को यह कहकर डाँटा, “हे गूँगी और बहिरी आत्मा, मैं तुझे आज्ञा देता हूँ, उसमें से निकल आ, और उसमें फिर कभी प्रवेश न करना।” (9:25)*

यह बात चारों ओर फैल गई थी कि यीशु एक और आश्चर्यकर्म करने वाला था। आजकल सनसनी फैलाने वाले “चंगाई कर्त्ताओं” के विपरीत, यीशु ने अपनी चंगाई की शक्तियों का प्रदर्शन नहीं किया। जैसे ही उसने देखा कि भीड़ दौड़कर आ रही है, उसने तुरन्त दुष्टात्मा को बाहर निकाल दिया और भीड़ के इकट्ठा होने से पहले ही उसका अंत कर दिया।

“मैं तुझे आज्ञा देता हूँ,” उसने कहा, और “ *मैं”* पर जोर दिया गया है। यह दुष्टात्मा चुंगी लेने वाले मत्ती, संदेह करने वाले थोमा, कमजोर याकूब और अब अस्पष्ट यहूदा के विरुद्ध नहीं थी। वह सर्वशक्तिमान मसीह के विरुद्ध थी।

उस आत्मा को “अशुद्ध” आत्मा के रूप में वर्णित किया गया है। इसके लिये उपयोग किया गया शब्द अकाथार्टोस है। इसका अर्थ वास्तव में भ्रष्ट, अपवित्र, अशुद्ध है। उस आत्मा को “गूंगी और बहरी” आत्मा के रूप में भी वर्णित किया गया है, शायद इसलिये क्योंकि उसमें अपने शिकार को बहरापन और गूंगापन दोनों देने की शक्ति थी।

दुष्टात्माओं को सुधारा नहीं जा सकता, उनके सुधार की कोई अपेक्षा नहीं है। इस विशेष दुष्टात्मा ने पहले ही अपनी दृढ़ता और अनाज्ञाकारिता का प्रदर्शन कर दिया था। प्रभु ने यह सोचकर द्वार बंद कर दिया कि यह अशुद्ध वस्तु प्रभु के चले जाने के बाद अपने शिकार को वापस पाने की अपेक्षा कर रहा था। “उसमें फिर कभी प्रवेश न करना,” उसने कहा। लड़के के पिता को भी यह जानकर कितनी राहत मिली होगी कि उसे फिर से किसी प्रकोप के बारे में चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं होगी।

*तब वह चिल्‍लाकर और उसे बहुत मरोड़ कर, निकल आई; और बालक मरा हुआ सा हो गया, यहाँ तक कि बहुत लोग कहने लगे कि वह मर गया। (9:26)*

यह इस क्रूर दुष्टात्मा का अंतिम क्रूर, द्वेषपूर्ण कृत्य था। अपना सबसे बुरा काम करने के बाद, दुष्टात्मा ने लड़के को मरने के लिये छोड़ दिया - या उसने ऐसी ही अपेक्षा की थी। यदि वह उसे नहीं पकड़ सकती, तो कोई भी नहीं पकड़ सकता। वैसे, अब वह चली गई थी, और बेचारा लड़का आखिरकार शान्त पड़ा रहा। बहुत से लोगों ने बहुत बुरा सोचा। उन्हें लगा कि लड़का मर चुका है।

*परन्तु यीशु ने उसका हाथ पकड़ के उसे उठाया, और वह खड़ा हो गया। (9:27)*

यह कुछ ऐसा था जिसे वह लड़का जीवनभर याद रखेगा - यीशु का दृढ़, सक्षम हाथ उसे धीरे से उठा रहा था और जीवन के नये मार्ग पर चलने के लिये उसे अपने पैरों पर स्थिर कर रहा था।

**ग. परेशान चेले (9:28-29)**

*जब वह घर में आया, तो उसके चेलों ने एकान्त में उस से पूछा, “हम उसे क्यों न निकाल सके?” उसने उनसे कहा, “यह जाति बिना प्रार्थना किसी और उपाय से नहीं निकल सकती।” (9:28-29)*

*यह जाति!* हम दुष्टात्माओं के संसार के बारे में बहुत कम जानते हैं। स्पष्ट है, विभिन्न प्रकार की आत्माएँ मौजूद हैं। उनका पूरा इतिहास रहस्य में डूबा हुआ है। वे कहाँ से आती हैं? पतित स्वर्गदूतों के विपरीत, वे मानवीय शरीर धारण करने की लालसा क्यों करती हैं? उनमें से कुछ मसीह की उपस्थिति से क्यों काँपती हैं? यह इतनी विद्रोही और दृढ़ क्यों थी? “इस प्रकार” को उसे निकालने की क्षमता के लिये विशेष प्रार्थना और उपवास की आवश्यकता क्यों थी? ऐसी शक्तिशाली और दुष्टात्माएँ स्पष्ट रूप से उन लोगों की आत्मिक स्थिति का आकलन करने में तेज होती हैं जिनके साथ उनका सम्बन्ध होता है।

**खंड 6—रूपरेखा**

**खंड 6: सेवक की बुद्धि (9:30-10:52)**

1. सिद्ध बुद्धि (9:30-50)
   1. एक गम्भीर भविष्यद्वाणी (9:30-32)
      1. एक गुप्त यात्रा (9:30)
      2. एक दुःखद सत्य (9:31-32)
         1. स्वामी (प्रभु) की भविष्यद्वाणी (9:31)
            1. उसका आने वाला इंकार (अस्वीकार) (9:31a)
            2. उसका आने वाला पुनरुत्थान (9:31b)
         2. लोगों की घबराहट (9:32)
            1. उनकी असफलता (9:32a)
            2. उनका डर (9:32b)
   2. एक सरल दृष्टिकोण (9:33-37)
      1. बड़ी बहस (9:33-34)
         1. खोजी प्रश्न (9:33)
         2. अचानक शान्ति (9:34)
      2. बड़ा अंतर (9:35-37)
         1. प्रकाशन (9:35)
         2. दृष्टांत (9:36-37)
            1. बालक (9:36)
            2. चुनौती (9:37)
   3. साम्प्रदायिक समस्या (9:38-41)
      1. साम्प्रदायिक कार्य का प्रतिवेदन (9:38)
         1. प्रभु के चेलों ने क्या देखा था (9:38a)
         2. प्रभु के चेलों ने क्या कहा था (9:38b-c)
            1. उनकी प्रतिक्रिया (9:38b)
            2. उनका कारण (9:38c)
      2. साम्प्रदायिक कार्य का खण्डन (9:39-41)
         1. प्रभु की नीति (9:39)
         2. प्रभु का दृष्टिकोण (9:40)
         3. प्रभु का उपसंहार (9:41)
   4. एक गम्भीर सम्भावना (9:42-50)
      1. विस्मयादिबोधक (9:42)
         1. बच्चे को ठोकर मारने का अपराध (9:42a)
         2. बच्चे को ठोकर मारने के परिणाम (9:42b)
      2. उपदेश (9:43-48)
         1. गलत काम करना (9:43-44)
         2. गलत राह पर चलना (9:45-46)
         3. गलत दृष्टि से देखना (9:47-48)
      3. व्याख्या (9:49-50)
         1. नमक और बलिदान (9:49)
         2. नमक और उसका स्वाद (9:50a)
         3. नमक और पवित्र लोग (9:50b)
2. भेदनेवाली बुद्धि (10:1-31)
   1. यीशु और विवाह (10:1-16)
      1. कानूनी शपथ का स्थायित्व (10:1-12)
         1. एक और यात्रा (10:1)
         2. एक और परीक्षा (10:2-12)
            1. तलाक पर पूछा गया परीक्षा का प्रश्न (10:2)
            2. तलाक पर परीक्षा के प्रश्न का उत्तर (10:3-12)

उसके शत्रुओं को दिया गया उत्तर (10:3-9)

व्यवस्था का उत्तर (10:3-5)

उसकी उदारता की वास्तविकता (10:3-4)

उसकी उदारता का कारण (10:5)

प्रभु का उत्तर (10:6-9)

सृष्टि सिद्धांत की अपील (10:6-8)

विवाह का ईश्वरीय नियम (10:6-7)

विवाह का ईश्वरीय तर्क (10:8)

सृष्टि सिद्धांत का अनुप्रयोग (10:9)

अपने मित्रों को दिया गया उत्तर (10:10-12)

उनकी उलझन का वर्णन (10:10)

उनकी उलझन दूर हो गई (10:11-12)

पहला अपराध (10:11)

आगे का अपराध (10:12)

* + 1. एक छोटे बच्चे की बहुमूल्यता (10:13-16)
       1. वह स्पर्श जिसकी अभिलाषा थी (10:13a)
       2. जो संकट सामने आया (10:13b)
          1. यीशु के पास लाए गए बच्चे (10:13b)
          2. बच्चों को यीशु से दूर रखा गया (10:13c)
       3. सत्य जिसकी पुष्टि हुई (10:14-15)
          1. एक प्राथमिक सत्य (10:14)
          2. एक व्यावहारिक सत्य (10:15)
       4. जो कोमलता व्यक्त की गई (10:16)
  1. यीशु और भौतिकतावाद (10:17-31)
     1. धनवान व्यक्ति का दुःख (10:17-22)
        1. उसकी इच्छा (10:17)
           1. उसकी जल्दबाजी (10:17a)
           2. उसकी विनम्रता (10:17b)
           3. उसकी आशा (10:17c)
        2. उसकी घोषणा (10:18-20)
           1. प्रभु की चुनौती (10:18)
           2. व्यवस्था की चुनौती (10:19-20)

मूसा की आज्ञाएँ (10:19)

गलत टिप्पणी (10:20)

* + - 1. उसकी खोज (10:21)
         1. स्वामी का सबसे बड़ा प्रेम (10:21a)
         2. मनुष्य की सबसे बड़ी कमी (10:21b-c)

व्यवस्था के व्यावहारिक अनुपालन के बारे में (10:21b)

प्रभु के प्रति व्यक्तिगत् प्रतिबद्धता (10:21c)

* + - 1. उसका प्रस्थान (10:22)
         1. उसकी उदासी (10:22a)
         2. उसका फंदा (10:22b)
    1. धनवान व्यक्ति पर उपदेश (10:23-31)
       1. आश्चर्य का एक वचन (10:23-27)
          1. बड़ी बाधा (10:23-25)

एक प्रकाशमान सिद्धांत (10:23-24)

एक सामान्य नियम (10:23)

एक वास्तविक कारण (10:24)

एक उदाहरणात्मक दृष्टान्त (10:25)

* + - * 1. सबसे बड़ी असम्भवता (10:26-27)

विस्मयादिबोधक (10:26)

एक स्पष्टीकरण (10:27)

* + - 1. मूल्यांकन का एक वचन (10:28-31)
         1. पतरस के द्वारा पूछा गया प्रश्न (10:28)
         2. पतरस के प्रश्न का उत्तर (10:29-30)

त्याग (10:29)

हम क्या समर्पण करते हैं (10:29a)

हम क्यों समर्पण करते हैं (10:29b)

प्रतिफल (10:30-31)

सांसारिक आशा (10:30b-c)

प्रावधान जिनकी हम अपेक्षा कर सकते हैं (10:30a)

हम सताव की अपेक्षा कर सकते हैं (10:30b)

अनन्त भविष्य (10:30b-31)

तथ्य (10:30b)

पाद-टिप्पणी (10:31)

1. व्यावहारिक बुद्धि (10:32-52)
   1. एक बार फिर दोहराई गई भविष्यद्वाणी (10:32-34)
      1. एक उल्लेखनीय निर्देश (10:32a)
      2. एक नया भय (10:32b-c)
         1. वे आश्चर्यचकित थे (10:32b)
         2. वे डर गए थे (10:32c)
      3. एक आवश्यक खुलासा (10:32d)
         1. जानबूझकर किया गया खुलासा (10:32d)
         2. विस्तृत खुलासा (10:33-34)
            1. मुकदमा (10:33)

इब्रानी मुकदमा (10:33a)

विधर्मी मुकदमा (10:33b-34a)

* + - * 1. विजय (10:34b)
  1. एक नाराजगी भरी याचिका (10:35-45)
     1. राजकीय माहौल (10:35-44)
        1. दो चेले (10:35-40)
           1. उनका दृष्टिकोण (10:35)
           2. उनकी अपील (10:36-40)

उनकी अपील का वर्णन (10:36-37)

उनकी अपील पर चर्चा (10:38-39)

कटोरा (10:38)

दावा (10:39a)

सुराग (10:39b)

उनकी अपील खारिज कर दी गई (10:40)

एक ईश्वरीय सीमा (10:40a)

एक ईश्वरीय विधान (10:40b)

* + - 1. दस चेले (10:41-44)
         1. उनकी नाराजगी स्पष्ट की गई (10:41)
         2. उनकी नाराजगी का अध्ययन (10:42-44)

इस संसार का तरीका (10:42)

उस संसार का तरीका (10:43-44)

एक सेवक की सेवकाई (10:43)

एक दास की सेवकाई (10:44)

* + 1. एक महत्वपूर्ण वचन (10:45)
       1. प्रभु सेवा में अपना जीवन देता है (10:45a)
       2. प्रभु अपना जीवन बलिदान में देता है (10:45b)
  1. एक दृढ़ निश्चयी व्यक्ति (10:46-52)
     1. मनुष्य (10:46-47)
        1. वह कहाँ था (10:46a)
        2. वह क्या था (10:46b-47)
           1. वह एक अंधा व्यक्ति था (10:46b)
           2. वह एक भिखारी व्यक्ति था (10:46c)
           3. वह एक विश्वासी व्यक्ति था (10:47)
     2. भीड़ (10:48)
        1. बरतिमाई के द्वारा इसकी नाराजगी भड़काई गई (10:48a)
        2. बरतिमाई के द्वारा इसकी नाराजगी को अनदेखा किया गया (10:48b)
     3. स्वामी (10:40-52)
        1. बुलाहट (10:49-50)
           1. स्वामी की बुलाहट की घोषणा (10:49)
           2. स्वामी की बुलाहट पर ध्यान दिया गया (10:50)
        2. उपचार (10:51-52)
           1. यह एक व्यक्तिगत् उपचार था (10:51)
           2. यह एक तात्कालिक उपचार था (10:52a)
           3. यह एक निर्विवाद उपचार था (10:52b)

**खंड 6: सेवक की बुद्धि (9:30-10:52)**

**क. सिद्ध बुद्धि (9:30-50)**

हम *एक गम्भीर भविष्यद्वाणी* (9:30-32) से आरम्भ करते हैं:

*फिर वे वहाँ से चले, और गलील में होकर जा रहे थे। वह नहीं चाहता था कि कोई जाने। (9:30)*

अब प्रभु फिर से आगे बढ़ रहा था, घर की ओर वापस जा रहा था, अपनी गतिविधियों को यथासम्भव गुप्त रखने का प्रयत्न कर रहा था। आश्चर्यकर्म की भूखी भीड़ ने रुकावट उत्पन्न की, जिससे वह बचना चाहता था। अब उसका मुख्य लक्ष्य अपने चेलों को यथासम्भव सिखाना था। भले ही वे इस स्थिति में निराशाजनक लग रहे थे, परन्तु कलीसिया का भविष्य और अगले दो सहस्राब्दियों के लिये परमेश्वर के कार्यक्रम उनके हाथों में थे। यह कहीं अधिक महत्वपूर्ण था कि वह उन्हें सिखाए, इसके बजाय कि वह कुछ दर्जन और बीमार लोगों को चंगा करे।

*क्योंकि वह अपने चेलों को उपदेश देता और उनसे कहता था, “मनुष्य का पुत्र, मनुष्यों के हाथ में पकड़वाया जाएगा, और वे उसे मार डालेंगे; और वह मरने के तीन दिन बाद जी उठेगा।” पर यह बात उन की समझ में नहीं आई, और वे उससे पूछने से डरते थे। (9:31-32)*

“वह उपदेश देता।” यहाँ अपूर्ण काल का प्रयोग किया गया है। यह “तब वह उन्हें सिखाने लगा” (8:31) का विस्तार है, जो हमें एक सप्ताह या उससे भी पहले के अवसर पर वापस ले जाता है जब उसने कैसरिया फिलिप्पी में पहली बार अपनी आने वाली मृत्यु के विषय पर चर्चा की थी। उसने कहा, “मनुष्य का पुत्र... पकड़वाया जाएगा।” उसने अपनी भविष्यद्वाणी की गई पीड़ाओं के आने की ओर संकेत करने के लिये वर्तमान काल का प्रयोग किया। उसके शत्रु संगठित हो रहे थे। धोखेबाज, जो अभी तक प्रकट नहीं हुआ था, उनके बीच में था, सम्भवतः पतरस, याकूब और यूहन्ना के यीशु के साथ पहाड़ पर चढ़ने के बाद दूसरों के साथ छोड़े जाने पर क्रोधित था, तथा बहरी और गूंगी दुष्टात्मा को बाहर निकालने में असमर्थ होने पर भी क्रोधित था। तथा अब मारे जाने और तीन दिन बाद फिर से जीवित होने के बारे में यह सब बातें! *यह* किस तरह की बात थी *?*

न केवल यहूदा बल्कि अन्य सभी चेले भी क्रूस के बारे में प्रभु के वचन से भ्रमित और हतोत्साहित हो रहे थे - एक दण्ड। यहाँ तक कि तीन प्रिय चेलों ने भी, जिन्होंने हाल ही में एलिय्याह और मूसा को यीशु के साथ उसकी आगामी मृत्यु के बारे में बात करते हुए सुना था - जिसे उन्होंने कुछ ऐसा बताया था जिसे वह “पूरा” करेगा - उसे नहीं समझा।

इसके अलावा, वे उससे पूछने से भी डरते थे। नि:संदेह, कैसरिया फिलिप्पी में पतरस को प्रभु के द्वारा दी गई तीखी फटकार ने उन्हें अपने विचार व्यक्त करने से डरा दिया। अत: वे दुःखी होकर अपने संदेहों और कठिनाइयों को सहते हुए आगे बढ़ते रहे, जबकि, हर समय, प्रभु उन्हें सिखाता था और यदि वे अपने प्रश्नों को शब्दों में व्यक्त करते तो वह प्रसन्नता से उनके प्रश्नों का उत्तर देता।

इसके बाद, हमारे पास *एक सरल दृष्टिकोण है* (9:33-37):

*फिर वे कफरनहूम में आए; और घर में आकर उसने उनसे पूछा, “रास्ते में तुम किस बात पर विवाद कर रहे थे?” (9:33)*

वे वापस आकर एक घर में इकट्ठे हुए, सम्भवतः पतरस के घर में। वे उससे वह प्रश्न पूछने के लिये तैयार नहीं थे जिस पर वे घर वापस आते समय आपस में बहस कर रहे थे, इसलिये अब वह उन्हें उनका अवसर देता है। स्पष्ट है, लबानोन और कफरनहूम के बीच किसी समय उनके बीच काफी चर्चा हुई थी, और प्रभु के तेज कानों ने उसके स्वर और भाव को पकड़ लिया था। यहाँ “पूछा” शब्द का अनुवाद “पूछता रहा” किया जा सकता है क्योंकि वे उसे यह बताने में अनिच्छुक थे कि वे किस बारे में बहस कर रहे थे।

*वे चुप रहे, क्योंकि मार्ग में उन्होंने आपस में यह वाद–विवाद किया था कि हम में से बड़ा कौन है। (9:34)*

प्रयुक्त शब्द का अर्थ है “चुप रहना।” अचानक, उन्हें अपने आप पर शर्म आने लगी।

हम अच्छी तरह से कल्पना कर सकते हैं कि उन्होंने किस तरह की बातें कही होंगी। नि:संदेह, पतरस ने सर्वोच्चता का दावा किया होगा। आखिरकार, वही था जिसने वह महान घोषणा की थी। वही था जिसका नाम प्रभु ने परिणामस्वरूप बदल दिया था। याकूब और यूहन्ना, “गर्जन के पुत्र,” असहमत होते। यदि कोई प्रभु के पक्ष में सबसे ऊपर था, तो वे थे। आखिरकार, क्या वे प्रभु के चचेरे भाई नहीं थे? मत्ती की बोली को सार्वभौमिक रूप से तिरस्कृत किया गया होगा क्योंकि जब सब कुछ कहा और किया गया था, तो वह एक चुंगी लेने वाला था। यहूदा ने इस आधार पर अपना दावा प्रस्तुत किया होगा कि वह एक यहूदी था; इसके अलावा, वह पद पर रहने वाला एकमात्र व्यक्ति था। वह कोषाध्यक्ष था। और ऐसा ही चलता रहा होगा। प्रभु ने, जो अब कलवरी को अपनी आँखों के सामने रखता था, यह सब सुना था। अब वे बोलने में बहुत शर्मिंदा थे।

*तब उसने बैठकर बारहों को बुलाया और उनसे कहा, “यदि कोई बड़ा होना चाहे, तो सबसे छोटा और सब का सेवक बने।” (1:35)*

एक छोटे से वाक्य में, उसने उनके मूल्यों के पूरे पैमाने को उलट दिया, और हमारे मूल्यों को भी। स्वामी की सेवा में सच्ची महानता का मार्ग सभी का सेवक बनना है।

हमारे आसपास विपरीत दर्शन व्याप्त है। हम देखते हैं कि लोग व्यवसायिक सीढ़ी पर चढ़ते हैं, शीर्ष पर पहुँचने के लिये उत्सुक हैं, जहाँ समृद्धि और शक्ति उन्हें आकर्षित करती है, वे उन लोगों की परवाह नहीं करते जिन्हें वे चोट पहुँचाते हैं या बर्बाद करते हैं। राजनीतिक क्षेत्र में, हम लोगों को पद के लिये होड़ करते, एक-दूसरे को गाली देते, किसी और की विफलता, कमजोरी या भेद्यता पर प्रसन्न होते देखते हैं, जिसे वे अपने लाभ के लिये उपयोग कर सकते हैं। हम इसे अंगीकार करने वाली कलीसिया में भी देखते हैं।

*और उसने एक बालक को लेकर उनके बीच में खड़ा किया, और उसे गोद में लेकर उनसे कहा, “जो कोई मेरे नाम से ऐसे बालकों में से किसी एक को भी ग्रहण करता है, वह मुझे ग्रहण करता है; और जो कोई मुझे ग्रहण करता, वह मुझे नहीं, वरन् मेरे भेजनेवाले को ग्रहण करता है।” (9:36-37)*

प्रभु अब जिस सिद्धांत की घोषणा कर रहा था, वह सीधे परमेश्वर के सिंहासन तक पहुँचता है। उदाहरण के लिये, ऐसा कौन है जो जॉर्ज मुलर की जीवनी पढ़कर उसमें सच्चाई न देखे? जॉर्ज मुलर सभी का सेवक बन गया। एक निर्धन, विनम्र व्यक्ति, वह ब्रिस्टल के अनाथ बच्चों की खोज में गया और उन्हें भोजन, आवास, कपड़े, शिक्षा और लाभदायक रोजगार में लगाने के लिये अपने घर में इकट्ठा किया। उनमें से हजारों थे। दयालु, सौम्य, विनम्र, सभी का सेवक, एक मसीह जैसा व्यक्ति, मुलर ने उस नगर का हृदय जीत लिया। जब वह मर गया, तो ब्रिस्टल के सभी लोग उसके अंतिम संस्कार में गए।

जब प्रभु ने उस छोटे बच्चे को अपनी गोद में लेकर चेलों को सबसे बड़ी शिक्षा दी, तो *बच्चे* उनके विचारों से सबसे दूर थे।

उसके बाद *साम्प्रदायिक समस्या* आती है (9:38-41):

*तब यूहन्ना ने उससे कहा, “हे गुरु, हम ने एक मनुष्य को तेरे नाम से दुष्‍टात्माओं को निकालते देखा और हम उसे मना करने लगे, क्योंकि वह हमारे पीछे नहीं हो लेता था।” (9:38)*

क्या यह जानबूझकर विषय बदलने का प्रयत्न था? बच्चों और अन्य असहाय और विकलांग लोगों की सेवा करने का विचार चेलों को बहुत पसंद नहीं आया। शायद यूहन्ना को अपनी साम्प्रदायिक भावना के लिये प्रशंसा के शब्द पाने की अपेक्षा थी। दो बार उसने कहा, “वह हमारे पीछे नहीं हो लेता था।” वह प्रेरित मण्डली की विशिष्टता, सम्मान और अनोखेपन के लिये ईर्ष्यालु था, जिससे वह सम्बन्धित था। जो कोई भी उनकी मण्डली का नहीं था, वह दुष्टात्माओं को भगाने के लिये यीशु के नाम का उपयोग करने का साहस कैसे कर सकता है? यूहन्ना की नाराजगी में यह तथ्य भी शामिल था कि यह बाहरी व्यक्ति जो कर रहा था, उसमें स्पष्ट रूप से सफल था, जबकि चेलों ने हाल ही में एक दुष्टात्मा को बाहर निकालने में अपनी विफलता पर स्वयं को शर्मिंदगी से ढक लिया था।

*यीशु ने कहा, “उस को मत मना करो; क्योंकि ऐसा कोई नहीं जो मेरे नाम से सामर्थ्य का काम करे, और जल्दी से मुझे बुरा कह सके, क्योंकि जो हमारे विरोध में नहीं, वह हमारी ओर है। (9:39-40)*

इस दलीय भावना ने सदियों से सताव की आग को भड़काया है, और अक्सर इसके मूल में व्यापारिक ईर्ष्या होती है। प्रभु को इसमें कोई हिस्सा नहीं चाहिए था। उन्हें उस व्यक्ति को अकेला छोड़ देना चाहिए था। केवल यह तथ्य कि वह दुष्टात्माओं को निकालने के लिये प्रभु के नाम का उपयोग कर रहा था, किसी भी तरह से उसके नैतिक चरित्र या उसके आत्मिक जीवन का समर्थन नहीं था। साथ ही, जब वह व्यक्ति ऐसा कर रहा था, तो उसे शत्रु नहीं माना जा सकता था - और प्रभु के पास ऐसी बहुत से शत्रु थे। किसी भी मामले में, यूहन्ना ने यह नहीं कहा, “हमने उसे इसलिये रोका क्योंकि वह *तेरे* पीछेनहीं हो लेता था।” *उसने कहा,* “हमने उसे इसलिये रोका क्योंकि वह *हमारे* पीछेनहीं हो लेता था।”प्रभु का वचन है कि हमें ऐसे सभी लोगों को *उसके* पासछोड़ देना चाहिए।

*जो कोई एक कटोरा पानी तुम्हें इसलिये पिलाए कि तुम मसीह के हो तो मैं तुम से सच कहता हूँ कि वह अपना प्रतिफल किसी रीति से न खोएगा। (9:41)*

हमें लोगों की सहायता करनी है, उन्हें बाधा नहीं पहुँचानी है। यह विचार प्रभु के द्वारा चेलों को उस व्यक्ति के कार्यों में हस्तक्षेप करने के लिये फटकार लगाने में सहजता से प्रवाहित होता है जो उनके विशेष समूह से सम्बन्धित नहीं था।

एक कटोरा ठण्डा पानी! यहाँ जो बात ध्यान में रखी जा रही है, वह उस उपहार का भौतिक मूल्य नहीं है, जो कि न्यूनतम है, बल्कि आत्मिक मूल्य, साझा करना, प्रोत्साहन, बेदारी है। यह सब बहुत अधिक महत्वपूर्ण इसलिये हो जाता है क्योंकि इस प्रकार सहायता प्राप्त व्यक्ति मसीह का है। इस सम्पूर्ण विषय को प्रभु के बाद के भेड़ और बकरियों के दृष्टांत में सहस्राब्दी महत्व तक उठाया गया है (मत्ती 25:31-46)।

प्रभु यहाँ प्रतिफल के विषय का परिचय देता हैं। उसका ध्यान मसीह के न्याय आसन पर है। वहाँ खड़े होकर हम पाएँगे कि किसी भी साथी विश्वासी की सहायता करने वाला हाथ अनदेखा नहीं किया जाएगा या उसे बिना पुरस्कृत किए नहीं रखा जाएगा। चेले महत्व और महानता के संदर्भ में सोच रहे थे - महत्वाकांक्षी लोगों के द्वारा कल्पना की गई महानता। प्रभु के मूल्यों के पैमाने ने सबसे विनम्र, सबसे निम्न, सबसे महत्वहीन कार्यों को भी शामिल किया।

फिर हमारा ध्यान *एक गम्भीर सम्भावना* की ओर आकर्षित होता है(9:42-50):

*“जो कोई इन छोटों में से जो मुझ पर विश्‍वास करते हैं, किसी को ठोकर खिलाए तो उसके लिये भला यह है कि एक बड़ी चक्‍की का पाट उसके गले में लटकाया जाए और वह समुद्र में डाल दिया जाए। (9:42)*

“ठोकर खिलाए” शब्द का अर्थ है “ठोकर खाने के लिये प्रेरित करना।” प्रभु के मन में यह वह व्यक्ति हो सकता है जिसे चेलों ने डाँटा था (आयत 38) और जिसके विश्वास को उन्होंने नुकसान पहुँचाया हो। नि:संदेह, हम वचनों को उनके वास्तविक अर्थ में ही ले सकते हैं। एक बच्चे को ठोकर खिलाना एक गम्भीर बात है, विशेष रूप से उसके अपने बच्चे को। उन लोगों के लिये वह दण्ड कितना भयानक है जो एक बच्चे की मासूमियत को छीन लेते हैं, जो उसकी नाजुक मासूमियत से छेड़छाड़ करते हैं, जो उन्हें बाल पोर्नोग्राफी में फँसाने के दोषी हैं, जो अपनी स्वयं की अपमानजनक अभिलाषाओं को संतुष्ट करने के लिये एक बच्चे को दूषित करते हैं, जो एक बच्चे के सरल विश्वास को कमजोर करते हैं, या जो उसके भरोसे को धोखा देते हैं। और उन अधिक परिष्कृत नष्ट करने वालों के बारे में क्या जो शिक्षा के भवनों पर कब्जा करते हैं, जो पाठशालाओं और विश्वविद्यालयों में तिरस्कार करने वालों की कुर्सी पर बैठते हैं, या जो धार्मिक संस्थानों में आचार्यों की कुर्सियों पर बैठते हैं और जो व्यवस्थित रूप से अपने छात्रों के परमेश्वर के वचन पर विश्वास को कमजोर करने के लिये काम करते हैं? निश्चित रूप से परमेश्वर के पास ऐसे लोगों की गले के लिये एक विशेष चक्की का पाट है।

*यदि तेरा हाथ तुझे ठोकर खिलाए तो उसे काट डाल। टुण्डा होकर जीवन में प्रवेश करना तेरे लिये इससे भला है कि दो हाथ रहते हुए नरक की आग में डाला जाए जो कभी बुझने की नहीं। [जहाँ उनका कीड़ा नहीं मरता और आग नहीं बुझती।] यदि तेरा पाँव तुझे ठोकर खिलाए तो उसे काट डाल। लंगड़ा होकर जीवन में प्रवेश करना तेरे लिये इससे भला है कि दो पाँव रहते हुए नरक में डाला जाए। [जहाँ उनका कीड़ा नहीं मरता और आग नहीं बुझती।] यदि तेरी आँख तुझे ठोकर खिलाए तो उसे निकाल डाल। काना होकर परमेश्‍वर के राज्य में प्रवेश करना तेरे लिये इससे भला है कि दो आँख रहते हुए तू नरक में डाला जाए। जहाँ उनका कीड़ा नहीं मरता और आग नहीं बुझती। (9:43-48)*

यहाँ “ठोकर खिलाए” शब्द का अर्थ है किसी को लगातार ठोकर खाने के लिये प्रेरित करना। *हाथ! पैर! आँख! बेहतर! नरक! आग! कीड़ा! बुझा नहीं!* क्या भाषा इससे अधिक सशक्त, अधिक गम्भीर हो सकती है? हम किसी भी तरह से इन शब्दों, वाक्यांशों और वाक्यों को कमजोर नहीं कर सकते। प्रत्येक दोहराव के साथ, उन्हें रेखांकित, बल दिया और पुष्टि की जाती है। उनसे शरण लेने का प्रयत्न करना क्योंकि वे प्रतीकात्मक भाषा में लिखे गए हैं, सहायता नहीं करता है। चित्रात्मक भाषा का उपयोग केवल सिखाए गए सत्य को और अधिक स्पष्ट करता है। यीशु ने स्पष्ट रूप से, साफ-साफ और बार-बार सिखाया कि न केवल स्वर्ग को प्राप्त किया जाना चाहिए, बल्कि नरक को भी त्यागना चाहिए। उसने वास्तव में स्वर्ग के बारे में जितना कहा, उससे कहीं अधिक नरक के बारे में बात की, और उसने दोनों को शाब्दिक वास्तविकता घोषित किया।

इसलिये, जैसे कोई व्यक्ति हथौड़े से बार-बार भूमि में खूँटा गाड़ता है, वैसे ही प्रभु ने अपनी चेतावनी दी। उसके छोटे बालकों के साथ छेड़छाड़ करने का साहस मत करना!

*क्योंकि हर एक जन आग से नमकीन किया जाएगा। (9:49)*

ध्यान अभी भी आने वाले न्याय पर है। पुराने नियम में, बलिदान को जलाने में सहायता के लिये नमक का उपयोग किया जाता था (लैव्यव्यवस्था 2:13; व्यवस्थाविवरण 29:23)। मसीह के न्याय आसन पर हमारे आचरण की पूरी तरह से परीक्षा होनी है। पौलुस चेतावनी देता है, “यदि कोई इस नींव पर सोना या चाँदी या बहुमूल्य पत्थर या काठ या घास या फूस का रद्दा रखे, तो हर एक का काम प्रगट हो जाएगा; क्योंकि वह दिन उसे बताएगा, इसलिये कि आग के साथ प्रगट होगा और वह आग हर एक का काम परखेगी कि कैसा है।” (1 कुरि. 3:12-13)।

*नमक अच्छा है, पर यदि नमक का स्वाद जाता रहे, तो उसे किस से नमकीन करोगे? अपने में नमक रखो, और आपस में मेल मिलाप से रहो।” (9:50)*

स्वादरहित नमक! यह शब्दों का विरोधाभास है। प्रभु ने अपने चेलों से पहले ही कह दिया था कि वे पृथ्वी के नमक हैं (मत्ती 5:13)। प्रशीतन के दिनों से पहले, नमक का उपयोग परिरक्षक और एंटीसेप्टिक के रूप में किया जाता था। संसार में, विश्वासी को भ्रष्ट समाज पर एक स्वस्थ संयमी प्रभाव के रूप में कार्य करना है। स्वादरहित नमक वास्तविकता के बिना व्यवसाय का प्रतिनिधित्व करता है। “अपने में नमक रखो, और आपस में मेल मिलाप से रहो,” यीशु ने निष्कर्ष निकाला, चेलों को उस कटु प्रतिद्वंद्विता और शारीरिक धक्का-मुक्की की ओर वापस ले जाते हुए जो उनके बीच हर्मोन से कफरनहूम के मार्ग पर हुई थी।

**ख. भेदनेवाली बुद्धि (10:1-31)**

**1. यीशु और विवाह (10:1-16)**

**क. कानूनी शपथ का स्थायित्व (10:1-12)**

*फिर वह वहाँ से उठकर यहूदिया की सीमा में और यरदन के पार आया। भीड़ उसके पास फिर इकट्ठी हो गई, और वह अपनी रीति के अनुसार उन्हें फिर उपदेश देने लगा। (10:1)*

इस अध्याय में वह दर्ज है जिसे आमतौर पर मसीह की पीरिया की सेवकाई कहा जाता है। मरकुस ने यहूदिया और यरदन के पूर्वी किनारे पर प्रभु की बाद की सेवकाई पर ध्यान केंद्रित करने के लिये कई महीनों के कालक्रम को छोड़ दिया है। गलील अब पीछे छूट गया है। प्रभु के पास उस बहुत आशीषित क्षेत्र में करने या कहने के लिये कुछ नहीं है जहाँ वह इतने लम्बे समय तक रहा और शिक्षा दी और अपने कई आश्चर्यकर्म किए। अब कलवरी सामने है, इसकी छायादार रूपरेखा हर दिन स्पष्ट और स्पष्ट होती जा रही है।

हमेशा की तरह, लोग उसके कदमों पर चलते रहे, और जैसा कि वह हमेशा करता था, उसने उन्हें शिक्षा दी।

*तब फरीसियों ने उसके पास आकर उसकी परीक्षा करने को उससे पूछा, “क्या यह उचित है कि पुरुष अपनी पत्नी को त्यागे?” (10:2)*

यह एक गम्भीर प्रश्न था, और वह इसे अच्छी तरह से जानता था। इस अध्याय में दो मामलों को एक साथ रखा गया है - तलाक का प्रश्न और बच्चों के साथ हुई घटना। इन दो घटनाओं को एक साथ रखने से परिवार के लिये प्रभु के आदर्श का एक चित्र मिलता है - इसकी आवश्यक पवित्रता और माता-पिता के लिये अपने बच्चों को यीशु के पास लाने की आवश्यकता।

तलाक के विषय पर यहूदियों के बीच दो विचारधाराएँ मौजूद थीं। रब्बी शम्माई ने संकीर्ण दृष्टिकोण का समर्थन किया, जो इसे नैतिक अपराधों तक सीमित करता था, वास्तव में, विशेष रूप से अनैतिकता तक। वास्तव में, यहूदी व्यवस्था लगभग किसी भी आधार पर तलाक की अनुमति देता था। रब्बी हिलेल ने उदार दृष्टिकोण का समर्थन किया, जो लगभग किसी भी आधार पर तलाक की अनुमति देता था। एक स्त्री को उसके पति के भोजन को खराब करने, घर से बाहर सिर खुला रखने, झगड़ालू होने, सन्तानहीन होने या यहाँ तक कि यदि पति को कोई दूसरी स्त्री अधिक आकर्षक लगती है, तो भी तलाक दिया जा सकता है।[1] फरीसी नि:संदेह इस विवादास्पद मुद्दे पर प्रभु को पक्ष लेने के लिये विवश करना चाहते थे, इस प्रकार उसे एक या दूसरे पक्ष के कई लोगों से अलग कर दे। वे उसकी “परीक्षा” कर रहे थे। उपयोग किए गए शब्द का अर्थ है “परीक्षा में डालना।” वे उसे एक अत्यधिक विवादास्पद मुद्दे पर स्वयं को प्रतिबद्ध करने के लिये विवश करना चाहते थे।

*उसने उनको उत्तर दिया, “मूसा ने तुम्हें क्या आज्ञा दी है?” उन्होंने कहा, “मूसा ने त्याग–पत्र लिखने और त्यागने की आज्ञा दी है।” (10:3-4)*

मूसा की व्यवस्था जिसका उन्होंने उल्लेख किया है, वह व्यवस्थाविवरण 24:1-4 में पाई जाती है। यदि कोई व्यक्ति अपनी पत्नी में कोई शर्मनाक या आपत्तिजनक बात पाता है तो वह तलाक का दस्तावेज लिखने के माध्यम से उसे अपने घर से निकाल सकता है। तलाक का ऐसा आधार स्पष्ट रूप से व्यभिचार के अलावा कुछ और होना चाहिए क्योंकि व्यभिचार बहुत जल्दी मृत्यु के माध्यम से विवाह को समाप्त कर देता है। बहुत कुछ पति के विवेक पर छोड़ दिया गया था; पत्नी के पास बहुत कम अधिकार थे। फरीसी मूसा की व्यवस्था और उसके आसपास विकसित हुई रब्बी की पारम्परिक शिक्षा के बारे में सब कुछ जानते थे ।

*यीशु ने उनसे कहा, “तुम्हारे मन की कठोरता के कारण उसने तुम्हारे लिये यह आज्ञा लिखी। (10:5)*

दूसरे शब्दों में, तलाक के हर मामले में कहीं न कहीं कठोरता होती है। अक्सर, यह पहली जगह में तलाक का प्रमुख कारण होता है। कभी-कभी यह एक बाद का कारक होता है जो तब स्पष्ट हो जाता है जब स्थितियाँ दृढ़ हो जाती हैं और अनुचितता एवं कटुता विकसित होती है।

*पर सृष्‍टि के आरम्भ से परमेश्‍वर ने नर और नारी करके उनको बनाया है। (10:6)*

प्रभु अब शम्माई की संकीर्णता और हिलेल की उदारता दोनों को दरकिनार कर देता हैं। वह मूसा की व्यवस्था में पाई जाने वाली मानवीय कठोरता के प्रति रियायत को भी दरकिनार कर देता है। वह अपने प्रश्नकर्ताओं को वापस परमेश्वर के लोगों को नर और मादा बनाने के उसके मूल उद्देश्य पास ले जाता है । स्पष्ट है कि योजना यह थी कि दोनों प्रेम और सामंजस्य में एक दूसरे के पूरक और सम्पूरक बनें। आखिरकार, विवाह मानवजाति के लिये परमेश्वर का आदर्श था। एक खुशहाल मानवीय घर एक ऐसी जगह है जो स्वर्ग के उतना ही निकट हो सकता है जितना कि पृथ्वी पर कभी भी पाया जा सकता है। पौलुस कहता है कि परमेश्वर ने जिस सम्बन्ध की योजना बनाई थी वह मसीह और उसकी कलीसिया के बीच निर्धारित सम्बन्ध के समान था। आदम का स्वर्ग तब तक पूरा नहीं हुआ जब तक कि परमेश्वर ने उसे हव्वा से नहीं मिलवाया।

*इस कारण मनुष्य अपने माता–पिता से अलग होकर अपनी पत्नी के साथ रहेगा, और वे दोनों एक तन होंगे; इसलिये वे अब दो नहीं पर एक तन हैं। (10:7-8)*

प्रभु ने यहाँ शब्दों के चयन में सटीकता दिखाई। “अलग होकर” के लिये शब्द बहुत दृढ़ है - कटैलीपो। इसका अर्थ है “पीछे छोड़ना”, “दूर जाना” या “त्याग करना।” जब कोई जोड़ा विवाह करता है, तो उनके मन में माता-पिता के पास वापस जाने की सम्भावना के बारे में कोई अलिखित विकल्प या आरक्षण नहीं होना चाहिए। नहीं! पुराने सम्बन्ध टूट जाते हैं, और एक नया बंधन बनता है।

“के साथ रहेगा” के लिये शब्द प्रोस्कोलाओ है। इसका शाब्दिक अर्थ है “चिपक जाना” या “जुड़ जाना।” परमेश्वर चाहता है कि विवाह के द्वारा बनाया गया बंधन दृढ़ और स्थायी हो, जो आसानी से न टूटे। वे दोनों एक हो जाते हैं।

*इसलिये जिसे परमेश्‍वर ने जोड़ा है उसे मनुष्य अलग न करे।” (10:9)*

आजकल जब कोई जोड़ा तलाक की सम्भावना के बारे में बात करना आरम्भ करता है, तो वे यहीं से आरम्भ नहीं करते, बल्कि जहाँ से परमेश्वर आरम्भ करता हैं। आज हमारे अनुमोदक समाज में, लोग अपने विवाह की शपथ तोड़ने के लिये बहुत इच्छुक हैं। परमेश्वर कहता है कि ये शपथ पवित्र और दृढ़ हैं और इन्हें आसानी से नहीं तोड़ा जा सकता। वास्तव में, ईश्वरीय दृष्टिकोण से, एक बार जब परमेश्वर ने दोनों को एक में जोड़ दिया है, तो किसी भी व्यक्ति को विवाह को तोड़ने का कोई अधिकार नहीं है। परमेश्वर ने जो जोड़ा है उसे जबरदस्ती तोड़ने का प्रयत्न करने से केवल बहुत पीड़ा, हानि, बर्बादी और तबाही ही हो सकती है।

*घर में चेलों ने इसके विषय में उससे फिर पूछा। (10:10)*

चेले स्वयं इस उत्तर से संतुष्ट नहीं थे, अत: नि:संदेह फरीसी भी इससे प्रसन्न नहीं थे।

*उसने उनसे कहा, “जो कोई अपनी पत्नी को त्यागकर दूसरी से विवाह करे तो वह उस पहली के विरोध में व्यभिचार करता है; और यदि पत्नी अपने पति को छोड़कर दूसरे से विवाह करे तो वह व्यभिचार करती है।” (10:11-12)*

मरकुस के विवरण में कोई *यदि, और,* या *परन्तु नहीं है।* मत्ती ने इसका पूरा विवरण दिया है, ऐसा अपवाद जिसे प्रभु ने स्वीकार किया है, जो कुछ लोगों की इन निरपेक्षताओं को स्वीकार करने में असमर्थता, और पुनर्विवाह के संदर्भ में विभिन्न विकल्प है (मत्ती 19:3-12)।

मरकुस केवल आदर्श बात को दर्ज करता है। वह हमें परमेश्वर के दृष्टिकोण से विवाह, तलाक और पुनर्विवाह दिखाता है। ईश्वरीय मानक सिद्धता की माँग करता है और इससे कम की अनुमति नहीं देता। जो लोग केवल मरकुस के विवरण को लेते हैं, उन्हें इसका पूरा चित्र नहीं मिलता है, परन्तु उन्हें स्वर्ग के दृष्टिकोण से विवाह की स्थायित्व, सिद्धता और पवित्रता और तलाक की सामान्य अस्वीकार्यता का एक दृष्टिकोण मिलता है। मरकुस इस मुद्दे के दूसरे पक्ष को नहीं देखता है - कि हम एक पापी वातावरण में रहने वाले असिद्ध लोग हैं। मत्ती उस दूसरे पक्ष पर विचार करता है, और मरकुस की शिक्षा को मत्ती की शिक्षा से अलग करना एक गलती है।

**ख. एक छोटे बच्चे की बहुमूल्यता (10:13-16):**

*फिर लोग बालकों को उसके पास लाने लगे कि वह उन पर हाथ रखे, पर चेलों ने उनको डाँटा। (10:13)*

ऐसा लगता है कि चेलों को इस तरह की हरकतें करने का शौक था! कुछ समय पहले, उन्होंने एक व्यक्ति को यीशु के नाम पर दुष्टात्माओं को निकालने से इसलिये मना किया था क्योंकि वह उनके समूह से सम्बन्धित नहीं था। अब वे कुछ माताओं को इसलिये धमका रहे थे क्योंकि वे चाहती थीं कि उनके बच्चे यीशु से आशीष प्राप्त करें। नि:संदेह, उन्होंने सोचा कि यीशु को उसके अपने लोगों से बचाना उनके कर्तव्य का हिस्सा है, विशेष रूप से उसके बच्चों से परेशान होने से। वे उसे कितना कम जानते थे!

*लाने लगे* क्रिया अपूर्ण काल में है, जिसका अर्थ है कि वे अपने बच्चों को लाते रहे। बच्चों के लिये शब्द पेडियन है, जो एक छोटा शब्द है, जिसका अर्थ है छोटे बच्चे और शिशु, हालाँकि यह शब्द बड़े बच्चों को बाहर नहीं करता है। सम्भवतः बच्चे सभी आयु के थे।

चेलों ने इन माताओं को “डाँटा”। प्रयुक्त शब्द अन्याय का विचार व्यक्त करता है। इसका अर्थ है “डाँटना।” यह अपूर्ण काल में है, जो यह दर्शाता है कि वे इन स्त्रियों को भगाने में बहुत सफल नहीं हो रहे थे, जो अपने बच्चों को प्रभु से आशीष दिलाने के लिये दृढ़ संकल्पित थीं।

*यीशु ने यह देख क्रुद्ध होकर उन से कहा, “बालकों को मेरे पास आने दो और उन्हें मना न करो, क्योंकि परमेश्‍वर का राज्य ऐसों ही का है। (10:14)*

क्रुद्ध होकर! उपयोग किए गए शब्द का कई तरह से अनुवाद किया गया है। इसका अर्थ है “पीड़ा महसूस करना” या “क्रोधित होना” (2 कुरिं. 7:11)। चेलों ने सोचा कि गुरु बहुत महत्वपूर्ण है और उसे छोटे बच्चों से परेशान नहीं होना चाहिए। इसके विपरीत, यीशु ने सोचा कि छोटे बच्चे इतने महत्वपूर्ण हैं कि उन्हें उनकी कोमल आयु में उनके पास *नहीं* लाया जाना चाहिए। चेलों ने माताओं को डाँटा, परन्तु प्रभु ने चेलों को डाँटा। उसने अपने चेलों से स्पष्ट रूप से कहा कि वे इन छोटे बच्चों को उसके पास लाने से रोकना बंद करें।

कई वर्षों से एकत्र किए गए आँकड़ों से पता चला है कि आमतौर पर, जीवन के किसी भी अन्य समय की तुलना में बचपन में अधिक लोग उद्धार पाते हैं। एक बच्चे का हृदय कोमल और संवेदनशील होता है। बच्चे बहुत विश्वासी होते हैं। वे अभी तक संसार और उसके तरीकों के आगे नहीं झुके हैं।

बचपन में हृदय परिवर्तन के महत्व का एक उत्कृष्ट उदाहरण मूसा है। वह मृत्युदण्ड के अधीन उत्पन्न हुआ था, परन्तु उसकी माता ने उसे यथासम्भव लम्बे समय तक घर में छिपाकर रखा। घरों का यही उद्देश्य है। उन्हें शरणस्थल होना चाहिए। उन्हें इस शत्रुतापूर्ण, घृणित संसार के सभी हानिकारक प्रभावों और शक्तियों से मुक्त रखा जाना चाहिए। जब योकेबेद मूसा को घर में और नहीं छिपा सकी, तो उसने उसे नूह के जहाज की तरह एक छोटे से जहाज में रख दिया। यह इस संसार के सरदार के प्रकोप से शरणस्थल होना था। मूसा का जहाज और नूह का जहाज दोनों ही क्रोध से उद्धार को दर्शाते हैं, ऐसा उद्धार जो केवल मसीह में ही पाया जाता है। मूसा की माता ने अपने पुत्र को मरे हुओं में से वापस प्राप्त किया ताकि उसके सबसे प्रभावशाली वर्षों के दौरान उसका पालन-पोषण कर सके। इससे पहले कि फिरौन की बेटी, जिसने उसे गोद लिया था, इस संसार का प्रभाव मूसा पर ला पाती, उसकी माता ने उसे विश्वास में जड़ और आधार दिया। वास्तव में, योकेबेद ने छोटे बच्चे को इतनी अच्छी तरह से समझाया कि जब वह बड़ा हुआ, तो मिस्र की सारी शक्ति, सुख-सुविधाएँ या सम्भावनाएँ उसे लुभा नहीं सकीं! ईश्वरीय घर की सामर्थ्य ऐसी ही होती है।

इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि यीशु ने प्रेम से भरे हृदय से माँग की कि छोटे बच्चों को उसके पास लाया जाए! वह इन बच्चों, उनकी माताओं और उनके घरों को आशीष देने के लिये कितना लालायित था!

यह निश्चित रूप से महत्वपूर्ण है कि बच्चों की घटना तलाक पर प्रभु की शिक्षा के तुरन्त बाद हुई। परिवार को हर मूल्य पर सुरक्षित रखा जाना चाहिए। तलाक बच्चों का एक भयानक विनाशक है।

*मैं तुम से सच कहता हूँ कि जो कोई परमेश्‍वर के राज्य को बालक के समान ग्रहण न करे, वह उसमें कभी प्रवेश करने न पाएगा ।” और उसने उन्हें गोद में लिया, और उन पर हाथ रखकर उन्हें आशीष दी। (10:15-16)*

हमें यीशु के पास एक छोटे बच्चे की तरह सादगी, ईमानदारी और उत्सुकता के साथ आना चाहिए। आजकल यह देखना आम बात है कि क्रिसमस के समय हमारे बड़े-बड़े शॉपिंग मॉल्स में माता-पिता अपने छोटे बच्चों को सांता क्लॉज को दिखाने के लिये लाते हैं। यहाँ तक कि सबसे अधिक शंकालु बच्चे भी सांता के घुटनों पर चढ़कर उन्हें क्रिसमस के लिये अपनी सभी इच्छाएँ बताने के प्रलोभन का विरोध नहीं कर पाते, जबकि उनके माता-पिता गर्व से भरे हुए दिखते हैं। वे तस्वीरें लेते हैं, बच्चे इसका आनन्द लेते हैं, और यहाँ तक कि राहगीर भी आकर्षित होते हैं। परन्तु यह सब एक गम्भीर तमाशा है, और हम यह जानते हैं, परन्तु फिर भी हम इसे सहते हैं।

हमें अपने बच्चों को उसके पास लाने के लिये कितना अधिक उत्सुक होना चाहिए जो क्रिसमस को अर्थ देता है, जो बैतलहम में जन्मा था, जो कभी एक छोटा बालक था, जो बड़े होने के सभी चरणों से होकर गुजरा, वह अकेला ही वास्तव में इस संसार के छोटे बच्चों की आवश्यकताओं और इच्छाओं को संतुष्ट कर सकता है।

हमें भी - चाहे हम कितने भी वयस्क, परिष्कृत और सांसारिक रूप से बुद्धिमान क्यों न हों - सब कुछ एक ओर रख कर बच्चों जैसे भरोसे के साथ उसके पास आने की आवश्यकता है।

उन बूढ़ी माताओं को खाली हाथ नहीं भेजा गया। एक-एक करके, प्रभु ने उनके बच्चों को अपनी गोद में लेकर उन्हें अपने पवित्र हाथों से छुआ। उसने उन्हें आशीष दी। यह एक ऐसा अनुभव था जिसे वे कभी नहीं भूलेंगे। जब वे स्वयं बूढ़े हो गए, तो वे बड़े हो चुके बच्चे अपने बच्चों और पोते-पोतियों से कहते, “हाँ, उसने एक बार मुझ पर अपना हाथ रखा था। मुझे याद है...”

**2. यीशु और भौतिकतावाद (10:17-31)**

हम *धनवान व्यक्ति के दुःख* पर ध्यान देते हैं(10:17-22):

*जब वह वहाँ से निकलकर मार्ग में जा रहा था, तो एक मनुष्य उसके पास दौड़ता हुआ आया, और उसके आगे घुटने टेककर उससे पूछा, “हे उत्तम गुरु, अनन्त जीवन का अधिकारी होने के लिये मैं क्या करूँ?” (10:17)*

हम नहीं जानते कि यह व्यक्ति इतनी जल्दी में क्यों था। वह दौड़कर आया। उसने स्वयं को यीशु के पाँवों पर गिरा दिया। स्पष्ट है, वह यीशु के द्वारा कही गई या की गई किसी बात से बहुत प्रभावित हुआ था। उसने आरम्भ किया, “हे उत्तम गुरु!” उसने जो शब्द उपयोग किया वह था डिडास्कालोस, जिसका अर्थ है “शिक्षक,” या हमारे आधुनिक उपाधि “विद्वान” का उपयोग करें। इसका समानांतर इब्रानी शब्द “रब्बी” होगा।

इस घटना को दर्ज करते हुए लूका ने उस युवक को अर्चोन शब्द से पुकारा, जिसका अर्थ है “प्रथम व्यक्ति”, अर्थात्, एक प्रमुख व्यक्ति। इस शब्द का उपयोग आराधनालय के सरदार या एक उत्कृष्ट फरीसी (मत्ती 9:18; लूका 14:1; 18:18) का वर्णन करने के लिये किया जाता था। ऐसा लगता है कि इसका उपयोग महासभा के सदस्य, किसी महान व्यक्ति या सरदार को नामित करने के लिये भी किया जाता था। स्पष्ट है, वह युवक महत्वपूर्ण व्यक्ति था, जो प्रभु यीशु के प्रति उसकी श्रद्धा को और भी उल्लेखनीय बनाता है। अधिकार के पदों पर बैठे कई लोग, विशेष रूप से जो यहूदी प्रतिष्ठान से जुड़े थे, मसीह के प्रति लगातार शत्रुतापूर्ण होते जा रहे थे। यहाँ तक कि जो लोग सक्रिय रूप से उसके शत्रु नहीं थे, वे भी सहायता देने की प्रवृत्ति रखते थे।। हालाँकि, यह युवक सीखने के लिये उत्सुक था। वह जितना जवान था, जितना धनी था, और जितना प्रभावशाली था, उसने अपने जीवन में एक आवश्यकता को महसूस किया और उसे मसीह के पास आने की अच्छी समझ थी। उसने प्रभु को “*हे* *उत्तम* गुरु” के रूप में सम्बोधित किया, और नि:संदेह वह ईमानदार था। यीशु की भलाई उन सभी के लिये स्वयंसिद्ध थी जिनके पास देखने के लिये आँखें और सुनने के लिये कान थे। शायद भलाई के इसी क्षेत्र में उस युवक ने अपनी कमी को महसूस किया। वह यीशु के पास किसी भौतिक लाभ की खोज में नहीं आया था, जैसा कि बहुत से अन्य लोग करते हैं। बल्कि, वह यह जानने के लिये आया था कि अनन्त जीवन पाने के लिये क्या करना चाहिए। उसे धन, पद और प्रभाव विरासत में मिला था - वे सभी वस्तुएँ जो लोग चाहते हैं - परन्तु उसे अनन्त जीवन विरासत में नहीं मिला था। इसलिये वह जितना धनी था, उतना ही निर्धन था, और जितना बड़ा था, उतना ही खोया हुआ था।

उसकी बुनियादी गलती उसके द्वारा कही गई बातों से पता चलती है। “अनन्त जीवन का अधिकारी होने के लिये मैं क्या करूँ?” कोई व्यक्ति उत्तराधिकार पाने के लिये कुछ नहीं *करता*; उत्तराधिकार वह वस्तु है जो हमें किसी और से वसीयत के रूप में मिलती है।

*यीशु ने उससे कहा, “तू मुझे उत्तम क्यों कहता है? कोई उत्तम नहीं, केवल एक अर्थात् परमेश्‍वर। (10:18)*

यीशु ने उस व्यक्ति को वहीं रोक दिया। यीशु ने पूछा, “जब तू मुझे 'उत्तम' कहता है तो तेरा क्या अर्थ है?” असल में, उसने पूछा, “क्या तू *सापेक्ष* अच्छाई की बात कर रहा है? दूसरे 'अच्छे' लोगों की तुलना में अच्छाई की बात कर रहा है? या तू *पूर्ण* अच्छाई की बात कर रहा है, ऐसी अच्छाई जो केवल स्वयं परमेश्वर में ही पाई जाती है?” दूसरे शब्दों में, क्या यह युवक प्रभु यीशु की पूर्ण अच्छाई के लिये सब कुछ दाँव पर लगाने के लिये तैयार था, एक ऐसी अच्छाई जो उसे सभी साधारण लोगों से पूरी तरह अलग मानती थी और उसे परमेश्वर के बराबर बनाती थी? हालाँकि, यदि यह व्यावहारिक मानवीय अच्छाई के प्रश्न पर आया, तो उसे व्यवस्था का मार्ग अपनाना था।

*तू आज्ञाओं को तो जानता है : ‘हत्या न करना, व्यभिचार न करना, चोरी न करना, झूठी गवाही न देना, छल न करना, अपने पिता और अपनी माता का आदर करना’।” (10:19)*

ये अपेक्षाकृत सरल आज्ञाएँ थीं जिनका पालन करना था - कम से कम बाहरी तौर पर। पौलुस ने अपने अपरिवर्तित दिनों में कल्पना की थी कि उसने इन सभी आज्ञाओं का पालन किया है। जब तक वह दसवीं आज्ञा तक नहीं पहुँचा - “तू लालच न करना” (अर्थात्, अभिलाषा न करना, बुरी इच्छा न रखना) तब तक उसे पवित्र जीवनयापन में अपनी पूरी असमर्थता का एहसास नहीं हुआ (रोमियों 7:7)।

*उसने उससे कहा, “हे गुरु, इन सब को मैं लड़कपन से मानता आया हूँ।” (10:20)*

उस जवान की अपने उत्तर में *उत्तम* शब्द को छोड़ने की इच्छा कितनी पीड़ादायी और स्पष्ट थी। अब यह “हे उत्तम गुरु!” नहीं था, बल्कि केवल “हे गुरु!” था। स्पष्ट है, वह यीशु को परमेश्वर मानने के लिये तैयार नहीं था। उसने यह भी दावा किया कि वयस्क होने के बाद से ही उसने यीशु के द्वारा बताई गई आज्ञाओं का ईमानदारी से पालन किया है। प्रभु ने अब उस पर यह प्रमाणित कर दिया कि उसने उनका बिलकुल भी पालन नहीं किया था। परन्तु पहले मरकुस एक अवलोकन जोड़ता है।

*यीशु ने उस पर दृष्‍टि करके उससे प्रेम किया, और उससे कहा, “तुझ में एक बात की घटी है। जा, जो कुछ तेरा है उसे बेच कर कंगालों को दे, और तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा, और आकर मेरे पीछे हो ले।” (10:21)*

“दृष्टि करके” के लिये उपयोग किए गए शब्द का अर्थ है “भीतर झाँकना”, “पर आँखें टिकाना” या “ध्यान से देखना।” इसका अर्थ है निरीक्षण करके किसी चीज या किसी व्यक्ति को जानना। यीशु ने इस युवक के हृदय को पढ़ लिया। उसने देखा कि उसके अगले वचन क्या उथल-पुथल लाएँगे। उसका अपना प्रेम भरा बड़ा हृदय उसके लिये उमड़ पड़ा।

वास्तव में, यीशु ने उससे कहा, “हे जवान, तुझ में वास्तविकता की कमी है। मैंने तुझे सातवीं, छठी, आठवीं, नौवीं और पाँचवीं आज्ञाएँ बताईं। ये आज्ञाएँ मुख्य रूप से तेरे साथियों के प्रति तेरे व्यवहार से सम्बन्धित हैं, दूसरों की भलाई की तेरी कथित सुरक्षा से। तू अनन्त जीवन पाने के लिये कुछ *करना* चाहता है। तुझे यही करना है: निर्धन लोगों से वैसा ही प्रेम रख जैसा परमेश्वर उनसे रखता है, जैसा मैं उनसे रखता हूँ। तू कहता है कि तूने हमेशा इन आज्ञाओं का पालन किया है। इस बात को प्रमाणित कर। तेरे पास जो कुछ भी है उसे कंगालों में निवेश कर। तेरे पास स्वर्ग में खजाना होगा।

“ओह, और एक बात और है। मैं कलवरी नामक स्थान पर जा रहा हूँ, जहाँ मुझे क्रूस पर मरना है। मैं तुझे भी आने के लिये आमंत्रित करता हूँ। 'क्रूस उठाकर मेरे पीछे हो ले।'“ यह वास्तव में बहुत शक्तिशाली दवा थी।

*इस बात से उसके चेहरे पर उदासी छा गई, और वह शोक करता हुआ चला गया, क्योंकि वह बहुत धनी था। (10:22)*

यह उस युवक की अपेक्षा से कहीं अधिक था। यह उन सभी लोगों से कहीं अधिक था जो किसी बात के लिये प्रतिबद्ध हैं। वह दौड़ता हुआ आया; वह टूटकर चला गया। यीशु को प्रभु के रूप में स्वीकार *करने* और अपना सब कुछ अनन्त खजाने और अनन्त जीवन में निवेश करने के बजाय, वह यीशु से मुँह मोड़कर चला गया।

उसके साथ क्या हुआ? क्या वह अंत में लूका 12:15-21 का धनी व्यक्ति बन गया और अंत में लूका 16:19-31 का धनी व्यक्ति बन गया? सम्भावना अवश्य ही मौजूद है।

फिर *धनवान व्यक्ति* पर उपदेश आया(10:23-31):

*यीशु ने चारों ओर देखकर अपने चेलों से कहा, “धनवानों का परमेश्‍वर के राज्य में प्रवेश करना कैसा कठिन है!” (10:23)*

दो संसार मौजूद हैं: एक यह और एक आने वाला संसार। दो व्यवस्थाएँ मौजूद हैं: इस संसार की व्यवस्था, जिसमें प्रतिज्ञाएँ, सम्भावनाएँ, सुख, सम्पत्ति, दृष्टिकोण और शक्ति है; और दूसरे संसार की व्यवस्था, जिसमें मूल्यों का बिलकुल अलग समूह है। ये दोनों संसार मानवीय इतिहास में अचानक प्रकट हुए। वे पतन के तुरन्त बाद सामने आएँ। कैन (उत्पत्ति 4 अध्याय) के वंशज इस संसार के लिये जीवन बिताते थे, और शेत (उत्पत्ति 5 अध्याय) के वंशज आने वाले संसार के लिये जीवन बिताते थे। इन दोनों संसार के बीच कोई समझौता नहीं हो सकता।

धन-सम्पत्ति इस संसार से जुड़ जाती है, यही कारण है कि भौतिकतावाद परमेश्वर के राज्य का इतना घातक शत्रु है। अंत में, परमेश्वर लोगों को कलवरी में लाता है, जहाँ हम सीखते हैं कि यह संसार मसीह के बारे में क्या सोचता है और परमेश्वर इस संसार के बारे में क्या सोचता है। जिनके पास धन है, उनका इस संसार में उन लोगों से कहीं अधिक हिस्सा है जो निर्धन हैं। यही कारण है कि जिनके पास धन है, उनके लिये परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना कठिन है। धन-सम्पत्ति हमें गलत संसार में बाँधकर परम, अनन्त और आत्मिक वास्तविकताओं के प्रति हमारी आँखें बंद कर देती है।

*चेले उसकी बातों से अचम्भित हुए। इस पर यीशु ने फिर उनसे कहा, “हे बालको, जो धन पर भरोसा रखते हैं, उनके लिये परमेश्‍वर के राज्य में प्रवेश करना कैसा कठिन है! (10:24)*

प्रभु ने मूल्यों की पूरी व्यवस्था को उलट दिया था। पुराने नियम में, प्रभु की आशीष ने धन और खुशहाली की प्रतिज्ञा की थी (नीतिवचन 10:22)। वास्तव में, यह वह मानदण्ड था जिसके द्वारा अय्यूब के मित्रों ने पीड़ित कुलपति का न्याय किया था। प्रभु के चेलों के द्वारा भी यह मान लिया गया था कि धन और स्वास्थ्य ईश्वरीय जीवन के स्वाभाविक प्रमाण और गुण हैं। बैतलहम, कलवरी और पिन्तेकुस्त ने यह सब बदल दिया है।

प्रभु यहाँ एक ऐसा शब्द जोड़ता हैं जो धन की सूक्ष्मता को दर्शाता है। जिनके पास यह है वे इस पर *भरोसा करने लगते हैं।* वे इस पर निर्भर रहते हैं। पैसे से अधिकांश वस्तुएँ खरीदी जा सकती हैं, इसलिये उन्हें लगता है कि इससे आत्मिक आशीषें भी खरीदी जा सकती है।

*परमेश्‍वर के राज्य में धनवान के प्रवेश करने से ऊँट का सूई के नाके में से निकल जाना सहज है!” (10:25)*

चेलों ने इस संदर्भ को आसानी से समझ लिया होगा। इस परिचित उदाहरण से उनका आश्चर्य और भी बढ़ गया होगा। स्पष्ट है कि प्रभु का संदर्भ एक छोटे से दरवाजे से है जो एक दीवार वाले नगर के मुख्य द्वार में लगा होता है। यह उन लोगों की सुविधा के लिये था जो बड़े दरवाजे के बंद होने के बाद नगर में प्रवेश करना चाहते थे; रात के लिये बंद कर दिए जाने के बाद *उस* दरवाजे के खुलने की कोई अपेक्षा नहीं थी। एक यात्री जो एक लदे हुए ऊँट के साथ देर से पहुँचता है, उसे समस्या होगी। अपने भार के साथ ऊँट इतना बड़ा होगा कि वह छोटे दरवाजे से भी नहीं निकल पाएगा, जिसे “सुई का नाका” कहा जाता था। ऊँट के स्वामी को छोटे से छेद से उसे बाहर निकालने से पहले उस पशु से उसका भार हटाना होगा।

तो फिर, यह धनी व्यक्ति की दुविधा थी। उस “सकरे” (संकीर्ण) द्वार से परमेश्वर के राज्य में प्रवेश पाने के लिये, जिसके बारे में यीशु ने बात की थी (मत्ती 7:13-14), उसे पहले ऊँट से भार को उतारना होगा, स्वयं को उस वस्तु से अलग करना होगा जो उसे परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने से रोक रही थी - उसकी सम्पत्ति।

*वे बहुत ही चकित होकर आपस में कहने लगे, “तो फिर किसका उद्धार हो सकता है?” (10:26)*

यह धारणा कि समृद्धि को ईश्वरीयता के बराबर माना जाना चाहिए, बहुत गहराई से समाई हुई थी। इस गलत विचार के बारे में प्रभु के स्पष्ट खण्डन के बावजूद, यह आज भी बना हुआ है। जो लोग इसका समर्थन करते हैं, वे प्रभु की अस्वीकृति, पीड़ा, सताव, अभाव और दुःख की चेतावनियों को अनदेखा करते हैं, जिनकी इस युग में धर्मी लोग अपेक्षा कर सकते हैं। बहुत से लोग मानते हैं कि उन्हें विश्वास के जन्मसिद्ध अधिकार के रूप में धन और स्वास्थ्य, साथ ही लम्बी आयु और प्रसन्नता का प्रस्ताव दिया जाता है। शत्रुतापूर्ण संसार में कलीसिया का सम्पूर्ण इतिहास ऐसे काल्पनिक विचारों को झूठा साबित करता है।

*यीशु ने उनकी ओर देखकर कहा, “मनुष्यों से तो यह नहीं हो सकता, परन्तु परमेश्‍वर से हो सकता है; क्योंकि परमेश्‍वर से सब कुछ हो सकता है।” (10:27)*

चाहे धनी हो या निर्धन, चाहे वे निराश जवान शासक जितने धनी हों या भिखारी लाज़र जितने निर्धन, किसी भी तरह से उद्धार असम्भव है। उद्धार खरीद से परे है; पैसे से परे है; मूल्य से परे है; और धर्म, नैतिकता, अच्छे कामों और आत्म-प्रयत्न के सभी मानवीय मानकों से परे है। चेलों को पुराने नियम के वचनों से ही पता होना चाहिए था कि उद्धार का मूल सिद्धांत पैसे के अलावा किसी और बात पर आधारित है (यशायाह 55:1; मीका 6:5-8)।

परन्तु जो मनुष्य के लिये असम्भव है, वह परमेश्वर के लिये सम्भव है। उद्धार परमेश्वर का विचार है, जिसकी योजना उसने समय के आरम्भ होने से पहले ही बना ली थी, उसने अनन्त लागत पर इसे प्रदान किया और अपने अनुग्रह के वरदान के रूप में सभी को प्रदान किया।

*पतरस उससे कहने लगा, “देख, हम तो सब कुछ छोड़कर तेरे पीछे हो लिये हैं।” (10:28)*

अचानक, पतरस को सिक्के का दूसरा पहलू समझ में आया। धनी जवान शासक मसीह के लिये कुछ भी त्यागने के लिये तैयार नहीं था; पतरस और अन्य चेलों ने उसके लिये सब कुछ त्याग दिया था। पतरस, अन्द्रियास, याकूब, यूहन्ना और मत्ती सभी ने प्रभु के चेले बनने के लिये आकर्षक व्यवसाय छोड़ दिए थे। स्पष्ट है, अब तक उन्हें कभी नहीं लगा था कि उनके कार्य में कुछ विशेष रूप से पुण्य था। उस समय, ऐसा करना समझदारी भरा काम लगा था। उन्हें जीवित परमेश्वर के आश्चर्यकर्म करने वाले, हृदयस्पर्शी, जीवन बदलने वाले, मन को विस्तृत करने वाले पुत्र के साथ अपनी संगति से बहुत अधिक पुरस्कृत किया गया था।

*यीशु ने कहा, “मैं तुम से सच कहता हूँ कि ऐसा कोई नहीं, जिसने मेरे और सुसमाचार के लिये घर या भाइयों या बहनों या माता या पिता या बाल–बच्‍चों या खेतों को छोड़ दिया हो, और अब इस समय सौ गुणा न पाए, घरों और भाइयों और बहनों और माताओं और बाल–बच्‍चों और खेतों को, पर सताव के साथ और परलोक में अनन्त जीवन। (10:29-30)*

इस उल्लेखनीय कथन में दो अलंकार स्पष्ट हैं। पहला पैराडायस्टोल है (विभाजक “या तो, या,” या विभाजक “न तो, न ही” की पुनरावृत्ति)। *या* शब्द को लगातार दोहराया जाता है ताकि समर्पित की गई प्रत्येक वस्तु को अन्य वस्तुओं से अलग किया जा सके। इस अलंकार का उपयोग जोर देने के लिये किया जाता है। इस प्रकार, प्रभु प्रत्येक वस्तु को विशिष्ट बनाता हैं। इसी प्रकार, पॉलीसिंडेटन का उपयोग किया जाता है - *और* शब्द को लगातार दोहराया जाता है ताकि प्रत्येक प्रतिज्ञा को अलग किया जा सके, प्रत्येक प्रतिज्ञा पर ध्यान आकर्षित किया जा सके और प्रत्येक प्रतिज्ञा पर जोर दिया जा सके। इस प्रकार, प्रत्येक प्रतिज्ञा को स्वतंत्र, महत्वपूर्ण और जोरदार बनाया जाता है।

प्रभु ने इन अलंकारों का प्रयोग उन सभी के प्रति अपनी सराहना की ओर ध्यान आकर्षित करने के लिये किया जो उसके और सुसमाचार के लिये कभी भी त्यागे जाते हैं, तथा यह दिखाने के लिये कि वह प्रत्येक समर्पण पर कितनी सूक्ष्म दृष्टि रखता है ताकि आने वाला प्रतिफल सुनिश्चित हो सके।

पहली सूची की प्रत्येक वस्तु को दूसरी सूची में दोहराया गया है, *पिता* और *पत्नियों को छोड़कर।* प्रभु का एक चेला, जो घर और चूल्हे से कटा हुआ है, उसके पास कितनी भी बहनें और भाई हो सकते हैं और इसी तरह; उससे दस हज़ार ऐसे लोगों की प्रतिज्ञा की गई है। उसे कई पिताओं की आवश्यकता नहीं है क्योंकि उसका पिता पहले से ही स्वर्ग में है। उसे दस हज़ार पत्नियों का प्रतिज्ञा करना अनुचित होता!

मसीह के कार्य और उद्देश्य में किए गए निवेश पर मिलने वाले अद्भुत प्रतिफल को सूचीबद्ध करने के बाद, प्रभु कहता हैं कि “सताव के साथ” भी होगा - क्योंकि हो सकता है कि कोई केवल लाभ ही प्राप्त करना चाहता हो।

परन्तु और भी बहुत कुछ है! यह सब कुछ है और स्वर्ग भी है!

*पर बहुत से जो पहले हैं, पिछले होंगे; और जो पिछले हैं, वे पहले होंगे।” (10:31)*

प्रभु अब “उस मुकुट दिवस की ओर देख रहा है जो धीरे-धीरे आने वाला है,” जब कुछ चौंकाने वाले प्रकाशन होंगे। जिन लोगों को हमने यहाँ राजाओं के रूप में शासन करते देखा है, वे स्वयं को वहाँ अलग-थलग पाएँगे। बहुत से लोग जिन्हें हम यहाँ कुलीन मानते हैं, वे स्वर्ग में महान कुलीनों के रूप में नहीं जाने जाते। शमूएल भविष्यद्वक्ता ने इस सिद्धांत की खोज तब की, जब परमेश्वर ने उसे यिशै के पुत्रों में से एक राजा चुनने के लिये भेजा। वे सुंदर लड़के थे। जब सबसे बड़ा, अपनी सभी प्राकृतिक भव्यता में, उसके सामने सबसे पहले खड़ा हुआ, तो उसने निश्चित रूप से सोचा कि यह वही है जो हर इंच से एक राजा है। परन्तु यहोवा ने शमूएल से कहा, “न तो उसके रूप पर दृष्‍टि कर, और न उसके कद की ऊँचाई पर, क्योंकि मैं ने उसे अयोग्य जाना है; क्योंकि यहोवा का देखना मनुष्य का सा नहीं है; मनुष्य तो बाहर का रूप देखता है, परन्तु यहोवा की दृष्‍टि मन पर रहती है” (1 शमूएल 16:7)। एलीआब एला घाटी में राजा शाऊल से अधिक उपयोगी नहीं था - जिसे लोगों ने इस्राएल का राजा होने के लिये केवल इसलिये चुना था क्योंकि वह बहुत लम्बा था (1 शमूएल 9:1-2; 18:22, 28)।

**ग. व्यावहारिक बुद्धि (10:32-52)**

सबसे पहले, हमारे पास *एक दोहराई गई भविष्यद्वाणी है* (10:32-34):

*वे यरूशलेम को जाते हुए मार्ग में थे, और यीशु उन के आगे आगे जा रहा था : चेले अचम्भित थे और जो उसके पीछे–पीछे चलते थे वे डरे हुए थे। तब वह फिर उन बारहों को लेकर उनसे वे बातें कहने लगा, जो उस पर आनेवाली थीं। (10:32)*

राजमार्ग अब सीधे लक्ष्य की ओर ले गया - यरूशलेम, वह नगर जो प्रवृत्ति के अनुसार भविष्यद्वक्ताओं को पत्थर मारता था और जिन्हें परमेश्वर ने उसके पास भेजा था उन लोगों को मार डालता था (मत्ती 23:37)। प्रभु जानता था कि सिंहों की उस मांद में प्रकट होने के बाद उसे क्या अपेक्षा करनी चाहिए। उसकी सांसारिक तीर्थयात्रा समाप्त होने वाली थी। ऐसा लगता है कि उसके बारे में एक नया, स्पष्ट संकल्प, दृढ़ता और उद्देश्य था। जैसे नियाग्रा नदी अपनी गति को तेज करती है और झरने के पास पहुँचते ही नये बल के साथ आगे बढ़ती है, वैसे ही प्रभु के साथ भी हुआ। जो लोग उसका अनुसरण करते थे, उन्होंने इसे महसूस किया और इससे विस्मित हो गए।

“यरूशलेम को!” यहूदी हमेशा इसे इसी तरह से संदर्भित करते थे। यह नगर यरदन और महासागर के बीच उत्तर और दक्षिण में फैली पहाड़ियों की रीढ़ की हड्डी की चोटी के सबसे ऊँचे बिंदु पर स्थित था। “यरूशलेम को।” यह जाने का एकमात्र मार्ग था। परमेश्वर ने इसे इसी उद्देश्य के लिये चुना था। वहाँ मन्दिर था। यह उचित था कि जब कोई ऐसी जगह पर पहुँचे तो उसे अपने पाँवों को ऊँची भूमि पर रखने के प्रति सचेत रहना चाहिए - “महान राजा का नगर”, जैसा कि इसे कहा जाता है (भजन 48:2; मत्ती 5:35)।

यह उसके कष्टों की तीसरी घोषणा थी। उसने कैसरिया फिलिप्पी में पतरस के विश्वास के महान अंगीकार के बाद उनका उल्लेख किया था (8:3), और उसने रूपान्तरण के पर्वत से घर लौटते समय फिर से उनका उल्लेख किया था (9:31)। अगली बार अंतिम बार होगा (10:45)। यह एक ऐसा सत्य नहीं था जिसका चेले सामना करना चाहते थे।

*“देखो, हम यरूशलेम को जाते हैं, और मनुष्य का पुत्र प्रधान याजकों और शास्त्रियों के हाथ पकड़वाया जाएगा, और वे उसको घात के योग्य ठहराएँगे, और अन्य जातियों के हाथ में सौंपेंगे। वे उसको ठट्ठों में उड़ाएँगे, उस पर थूकेंगे, उसे कोड़े मारेंगे और उसे घात करेंगे, और तीन दिन के बाद वह जी उठेगा।” (10:33-34)*

हमबार-बार आनेवाले *“और”* पर ध्यान देते हैं - “और! और! और!” प्रत्येक व्यक्तिगत् पीड़ा को जोर देने के लिये चिन्हित किया गया है, मृत्यु से ठीक पहले, धड़कन में एक विराम के बिना, पुनरुत्थान तक! मनुष्य अपना सबसे बुरा काम करेंगे। तब परमेश्वर कार्य करेंगे। मसीह का पुनरुत्थान उसकी मृत्यु की तरह ही अपरिहार्य था।

पहली दो घोषणाएँ बहुत संक्षिप्त थीं क्योंकि उस समय चेलों के लिये यही सब कुछ था: यहूदी धार्मिक और शासकीय प्रतिष्ठान के अगुवे उसे मार डालेंगे, और वह फिर से जी उठेगा। अब वह आधा दर्जन और विवरण जोड़ता है, जिनमें से प्रत्येक पिछले विवरण से अधिक भयावह है। अंतिम अस्वीकृति यरूशलेम में होगी, जो देश की राजधानी है, जिसकी ओर वह अब इतने दृढ़ संकल्प के साथ बढ़ रहा था। महासभा उसे मृत्युदण्ड सुनाएगी। इससे संतुष्ट न होकर, वे उसे अन्यजातियों को सौंप देंगे। उसका मजाक उड़ाया जाएगा, उसे कोड़े मारे जाएँगे, उस पर थूका जाएगा और उसे मार दिया जाएगा—वह, जो महिमा का राजा है (भजन 24 अध्याय)। चेले इसे आसानी से नहीं समझ पाए, जैसा कि अगला कथन दिखाता है।

इसके बाद, हमारे पास *एक नाराजगी भरी याचिका है* (10:35-45):

*तब जब्दी के पुत्र याकूब और यूहन्ना ने उसके पास आकर कहा, “हे गुरु, हम चाहते हैं कि जो कुछ हम तुझ से माँगें, वह तू हमारे लिये करे।” उसने उन से कहा, “तुम क्या चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिये करूँ?” (10:35-36)*

उन्होंने कहा, “हमसे कुछ प्रतिज्ञा कर।” परन्तु वह उन्हें खाली चेक नहीं देने वाला था ताकि वे उसमें अपनी इच्छानुसार कोई भी राशि भर सकें। वे वास्तविकता से बहुत दूर थे।

हम मत्ती से सीखते हैं कि जो अनुरोध वे करने वाले थे उसके पीछे उनकी माता थी। उनकी माता सलोमी, ऐसा लगता है कि प्रभु की माता मरियम की बहन थी। मानवीय स्तर पर, वह उसकी चाची थी, और वे उसकी चचेरे भाई थे।

*उन्होंने उससे कहा, “हमें यह दे कि तेरी महिमा में हम में से एक तेरे दाहिने और दूसरा तेरे बाएँ बैठे।” (10:37)*

इस प्रकार, उन्होंने क्रूस के बारे में प्रभु की कही गई बातों को अनदेखा कर दिया। उनकी आँखें मुकुट पर टिकी थीं। वे क्रूस के बिना मुकुट चाहते थे। वे अभी भी राज्य, सामर्थ्य और महिमा के बारे में सोच रहे थे (लूका 4:5-8)। प्रभु के द्वारा क्रूस के बार-बार उल्लेख किए जाने के बावजूद, वे स्पष्ट रूप से अभी भी अपेक्षा कर रहे थे कि सहस्राब्दि राज्य प्रकट होने वाला था। कैसरिया फिलिप्पी में पतरस की गलती का भी यही उनका संस्करण था, जब उसने प्रभु को क्रूस के बारे में और अधिक न बोलने का आग्रह करने के लिये अलग ले गया था *(*8:31-34)। वैसे, राज्य, सामर्थ्य और महिमा को खारिज नहीं किया जाना था; परन्तु उन्हें स्थगित किया जाना था - दो हज़ार वर्ष के लिये। प्रभु यह जानता था। याकूब और यूहन्ना ने अभी तक इसे नहीं समझा था।

*यीशु ने उनसे कहा, “तुम नहीं जानते कि क्या माँगते हो? जो कटोरा मैं पीने पर हूँ, क्या तुम पी सकते हो? और जो बपतिस्मा मैं लेने पर हूँ, क्या तुम ले सकते हो?” (10:38)*

कटोरा! ओह, वह कटोरा! गतसमनी में उसे देखते ही उसके माथे पर लहू का पसीना आ गया था। पृथ्वी पर उसके अलावा और स्वर्ग में उसके पिता और उसके हृदय में पवित्र आत्मा के अलावा कोई भी उस कटोरे की पूरी भयावहता को नहीं जान सकता था।

और वह बपतिस्मा! उसने अपनी सार्वजनिक सेवकाई यरदन के ठण्डे पानी में डुबकी लगाकर आरम्भ की थी, इस तरह उसने स्वयं की पहचान आदम की बर्बाद जाति के साथ करवाई, जिसे वह बचाने आया था। आगे एक बहुत ही गहरी अंधकारमय यरदन थी, जो मृत्यु की काली नदी है। वहाँ उसे संसार के पापों के साथ पहचाना जाएगा। वहाँ वह जो पाप नहीं जानता था, हमारे लिये पाप बन जाएगा। वहाँ वह, जीवन का परमेश्वर, हर व्यक्ति के लिये मृत्यु का स्वाद चखेगा। जो कोई भी उस बपतिस्मा के पूरे डर को जानना चाहता है, उसे उसकी पीड़ा भरी पुकार की गहराई को समझना चाहिए, “हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?”

वह कटोरा उसके आंतरिक कष्टों की बात करता है; बपतिस्मा उसके बाहरी कष्टों की बात करता है। इस प्रकार, उसने याकूब और यूहन्ना तथा उनकी महत्वाकांक्षी माता को चुनौती दी।

*उन्होंने उससे कहा, “हम से हो सकता है।” यीशु ने उनसे कहा, “जो कटोरा मैं पीने पर हूँ, तुम पीओगे; और जो बपतिस्मा मैं लेने पर हूँ, उसे लोगे। (10:39)*

उनका उत्तर अज्ञानतापूर्ण था। यह इस्राएल की घोर मूर्खता के समान है, जब उन्हें व्यवस्था दी गई, तो उन्होंने कहा, “जो कुछ यहोवा ने कहा है, वह सब हम नित करेंगे” (निर्गमन 19:8)। उस समय तक इस्राएल ने यह भी नहीं सुना था कि व्यवस्था में क्या लिखा है, और इससे भी कम उन्होंने इसकी आज्ञाओं को मानने की अपनी क्षमता पर प्रश्न उठाया था! उन्होंने मूर्खतापूर्वक और आत्मविश्वास से ! उनमें से सभी 613 को मानने के लिये स्वयं को प्रतिबद्ध किया।

प्रभु ने याकूब और यूहन्ना के हृदयों को पढ़ लिया था। उसने उनके भविष्य को भी उतनी ही स्पष्टता से देखा था, जितनी स्पष्टता से उसने अपने भविष्य को देखा था। नि:संदेह, वे उसके कटोरे का सबसे गंदा पानी नहीं पी सकते थे या उसके लिये न्याय के पानी में नहीं डूब सकते थे। परन्तु वे उसके कारण शहीद हो सकते थे। और ऐसा ही हुआ। याकूब प्रेरितों में से पहला था जो शहीद हुआ (प्रेरितों 12:1-2)। प्रेरित यूहन्ना एक परिपक्व वृद्धावस्था तक जीवित रहा, परन्तु वह जानता था कि एक दण्डात्मक द्वीप पर निर्वासित होना कैसा होता है और, ऐसा कहा जाता है, तेल में उबाला जाना कैसा होता है।

*पर जिनके लिये तैयार किया गया है, उन्हें छोड़ और किसी को अपने दाहिने और अपने बाएँ बैठाना मेरा काम नहीं।” (10:40)*

उद्धार और प्रतिफलों के बीच संसारभर में बहुत अंतर है। उद्धार नि:शुल्क है; प्रतिफल अर्जित करने होते हैं। विश्वासियों को पवित्र जीवनयापन के लिये अतिरिक्त प्रोत्साहन के रूप में प्रतिफल दिए जाते हैं। मसीह की न्याय आसन को विश्वासियों के रूप में हमारे जीवन के परमेश्वर के मूल्यांकन में शामिल सभी मुद्दों से निपटने के लिये बुलाया जाना चाहिए (1 कुरिं. 3:12-15; रोमियों 14:10)। वैसे ही, मुकुट दिए जाते हैं और हमारे सामने रखे जाते हैं जैसे कि कुछ जीता जाना है। निश्चित रूप से, सबसे बड़े सम्मानों में से एक उसकी महिमा के दिन स्वयं मसीह के साथ बैठना होना चाहिए।

*यह सुनकर दसों याकूब और यूहन्ना पर रिसियाने लगे। (10:41)*

पतरस क्रोधित था। यहूदा क्रोधित था। थोमा और मत्ती को गुस्सा आ गया। सभी ने प्रभु की इस घोषणा पर बहुत कम या बिलकुल ध्यान नहीं दिया था कि वह कब्र की ओर जा रहा है। और वे पूरी तरह से बच्चों की तरह और विनम्र होने की उसकी शिक्षा को भूल गए थे। यह सब देखकर प्रभु को कितना दुःख हुआ होगा। वे न केवल पद के लिये अनुचित होड़ में लगे हुए थे, बल्कि वे एक-दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप भी कर रहे थे। प्रभु ने धीरज बनाए रखा।

*तो यीशु ने उनको पास बुलाकर उनसे कहा, “तुम जानते हो कि जो अन्य जातियों के हाकिम समझे जाते हैं, वे उन पर प्रभुता करते हैं; और उनमें जो बड़े हैं, उन पर अधिकार जताते हैं। पर तुम में ऐसा नहीं है, वरन् जो कोई तुम में बड़ा होना चाहे वह तुम्हारा सेवक बने; और जो कोई तुम में प्रधान होना चाहे, वह सब का दास बने। (10:42-44)*

इस प्रकार, प्रभु अपने राज्य और उसके शासकों को इस संसार के सभी राज्यों से अलग रखता हैं। जो लोग इस संसार के राज्यों में सत्ता के पदों की आकांक्षा रखते हैं, वे लाभ के लिये होड़ करते हैं। शेक्सपियर ने अपने प्रसिद्ध नाटक *जूलियस सीज़र में* वर्णन किया है कि षड्यंत्रकारियों ने महान रोमी तानाशाह, उसकी महत्वाकांक्षाओं और अपनी ईर्ष्यापूर्ण प्रतिक्रियाओं को कैसे देखा। उसने कैसियस को ब्रूटस से यह कहते हुए दिखाया,

क्यों मनुष्य एक विशालकाय प्राणी की तरह

संकीर्ण दुनिया में घूमता है; और हम तुच्छ मनुष्य

उसके विशाल पैरों के नीचे चलते हैं,

और अपने लिए अपमानजनक कब्रें ढूँढ़ने के लिए इधर-उधर झाँकते हैं...[2]

महान यूनानी विजेता सिकंदर जब मरने पर था तो उससे उसके सबसे करीबी सहयोगियों ने उसकी वसीयत के बारे में पूछा। वह अपने विशाल साम्राज्य का निपटान कैसे करने जा रहा था? उसके सबसे करीबी अनुयायी उसके निकट इकट्ठे हुए। उन्होंने उससे पूछा, “तू अपना राज्य किसे सौंपना चाहता है?” वे यह जानने के लिये उत्सुक थे कि इस प्रतिष्ठित पुरस्कार का उत्तराधिकारी कौन होगा।

उसने कहा, “सबसे शक्तिशाली को।” उसके मरने के ये शब्द एक भविष्यद्वाणी थे: “मैं अपने ऊपर एक महान अंतिम संस्कार प्रतियोगिता देख रहा हूँ,” उसने कहा, फिर उसने अपनी आँखें हमेशा के लिये बंद कर लीं।[3]

प्रभु का आत्मा इस संसार के विजेताओं, शासकों और सत्ता के दलालों से उतना ही भिन्न है, जितना दिन रात से। *सेवा* मुख्य शब्द है, विनम्र सेवा ।

*क्योंकि मनुष्य का पुत्र इसलिये नहीं आया कि उसकी सेवा टहल की जाए, पर इसलिये आया कि आप सेवा टहल करे, और बहुतों की छुड़ौती के लिये अपना प्राण दे।” (10:45)*

अद्भुत बात है! जिसके पास दस हज़ार के भी दस हज़ार गुना स्वर्गदूत सेवक थे, जिनमें से प्रत्येक जीवित अग्नि की ज्वाला थे, जो उसके वचनों पर ध्यान देते थे और उसकी आज्ञा का पालन करने के लिये तत्पर रहते थे, वह यहाँ *सेवा* करने के लिये आया था!

संयोग से, यह मरकुस के सुसमाचार का मुख्य पद है। इस सुसमाचार के पहले भाग में, हम प्रभु यीशु को *सेवा* में अपना जीवन देते हुए देखते हैं– वह सेवा करवाने के लिये नहीं, बल्कि सेवा करने के लिये आया था। इस सुसमाचार के दूसरे भाग में, हम उसे *बलिदान* में अपना जीवन देते हुए देखते हैं– वह बहुतों के लिये अपना जीवन छुड़ौती के रूप में देने आया था। और यह कैसा जीवन था! यह एक *अलौकिक* जीवन था। उसकी एक दृष्टि से पानी दाखरस में बदल गया। उसके एक वचन से सबसे भयंकर दुष्टात्मा भाग गई। उसके एक स्पर्श से एक छोटे लड़के का दोपहर का भोजन पाँच हज़ार से अधिक लोगों के लिये भोज बन जाता है।

यह एक पापरहित जीवन था। एक बार भी - विचार, वचन, कर्म, या छिपी, गुप्त इच्छा में, चाहे शिशु के रूप में या लड़के के रूप में, किशोर के रूप में या वयस्क व्यक्ति के रूप में, चाहे घर में या पाठशाला के कमरे में, काम की बेंच पर या अपने मूल देश के राजमार्गों और सड़कों पर घूमते समय - उसने कभी पाप नहीं किया। वह पवित्र, हानिरहित, निष्कलंक और पापियों से अलग था।

यह एक *पर्याप्त* जीवन था। पुराने नियम की व्यवस्था में कहा गया था, “प्राण के बदले प्राण का।” ऐसा होने पर भी, कोई भी व्यक्ति अपने भाई के लिये छुड़ौती नहीं दे सकता, क्योंकि सभी ने पाप किया है। परन्तु यदि ऐसा कोई मिल भी जाए, तो वह केवल एक जीवन को ही छुड़ा सकता है। यीशु ने कलवरी के क्रूस पर जो जीवन दिया वह कोई साधारण जीवन नहीं था; यह एक अनन्त जीवन था, एक असीमित जीवन। इस कारण, यह किसी भी सीमित जीवन के लिये प्रायश्चित कर सकता था। इसीलिये बाइबल मसीह के बारे में कह सकती है कि “वही हमारे पापों का प्रायश्‍चित है, और केवल हमारे ही नहीं वरन् सारे जगत के पापों का भी” (1 यूहन्ना 2:2)।

अन्त में, हमारे पास *एक दृढ़ निश्चयी व्यक्ति है* (10:46-52):

*वे यरीहो में आए, और जब वह और उसके चेले, और एक बड़ी भीड़ यरीहो से निकलती थी, तब तिमाई का पुत्र बरतिमाई, एक अंधा भिखारी, सड़क के किनारे बैठा था। (10:46)*

यरीहो एक बहुत ही प्राचीन नगर था। यह यरदन से पाँच मील पश्चिम और मृतसागर से सात मील उत्तर-पश्चिम में स्थित था। यह हेरोदेस महान के अधीन एक महत्वपूर्ण स्थान बन गया था, जिसने इसे दृढ़ किया और वहाँ कई महल बनवाए। यह वह जगह थी जहाँ यह दुष्टात्मा ग्रस्त व्यक्ति मरने के लिये गया था। प्रभु ने यरीहो में या उसके आसपास कई अंधे लोगों को दृष्टि प्रदान की थी। यहाँ भी, उसने चुंगी लेने वाले जक्कई का आतिथ्य स्वीकार किया। प्रभु की दयालु सामरी की कहानी यरूशलेम और यरीहो के बीच की सड़क पर आधारित थी।

प्रभु इस प्राचीन नगर से होकर जा रहा था, तभी उसकी मुलाकात अंधे बरतिमाई से हुई। बरतिमाई उन कुछ लोगों में से एक है जिन्हें यीशु ने चंगा किया था और जिनका नाम भी बताया गया है। लाज़र और मलखुस भी ऐसे ही एक व्यक्ति थे।

*वह यह सुनकर कि यीशु नासरी है, पुकार पुकार कर कहने लगा, “हे दाऊद की सन्तान, यीशु मुझ पर दया कर!” (10:47)*

नि:संदेह, बरतिमाई ने सड़क पर उस स्थान पर भीड़ को आते हुए सुना होगा जहाँ वह प्रवृत्ति के अनुसार रोटी माँगता था। लोगों की अचानक भीड़ देखकर उसे अपेक्षा हुई होगी कि शायद कोई उसे एक या दो सिक्के दे सकता है, शायद यह अप्रत्याशित रूप से मिलने वाली रकम हो।

फिर उसे एक नाम याद आया: नासरत का यीशु! यह तो जीवन का सबसे बड़ा अवसर था! नासरत का यीशु आश्चर्यकर्म करने वाला था। वह उसे दृष्टि प्रदान करेगा। उसे इस बारे में कोई संदेह नहीं था। उसके लिये यह अभी नहीं या कभी नहीं था। उसने अपनी आवाज ऊँची की।

“हे दाऊद की सन्तान, यीशु!” उसने पुकारा। इस उपाधि का प्रयोग नौ बार किया गया है। सुरूफिनीकी स्त्री ने इस उपाधि से उससे अपील की, परन्तु जब तक उसने अपनी अपील नहीं बदली और उसे प्रभु के रूप में सम्बोधित नहीं किया, तब तक उसे कोई उत्तर नहीं मिला (मत्ती 15:21-28)। एक अन्यजाति के रूप में, उसका “हे दाऊद की सन्तान” के रूप में उस पर कोई अधिकार नहीं था। यह उपाधि उसे इस्राएल के सही राजा, दाऊद के उत्तराधिकारी, दाऊद के सिंहासन के दावेदार के रूप में दर्शाती है। बरतिमाई ने इस्राएल के सच्चे मसीह के रूप में प्रभु यीशु पर अपना विश्वास व्यक्त किया।

*बहुतों ने उसे डाँटा कि चुप रहे, पर वह और भी पुकारने लगा, “हे दाऊद की सन्तान, मुझ पर दया कर!” (10:48)*

लोग उसके मार्ग में आ गए, उसे चुप रहने को कहा, और उसे मसीह से दूर रखने का पूरा प्रयत्न किया। परन्तु यह समझदार व्यक्ति—अपनी आवश्यकता के बारे में जानता था, मसीह की बचाने वाली सामर्थ्य के बारे में आश्वस्त था, और जानता था कि उसके लिये यह अभी नहीं या कभी नहीं था—उसने भीड़ से डरने से इन्कार कर दिया। यह वास्तव में उसका एकमात्र अवसर था। यीशु कलवरी की ओर जा रहा था। वह फिर कभी उस मार्ग से वापस नहीं आएगा। पूरी कहानी उद्धार की एक ज्वलंत छवि है।

परमेश्वर हमें बचाए जाने का दूसरा अवसर देने का आश्वासन नहीं देता। हर किसी ने एक बार सुनने से पहले किसी को दो बार सुसमाचार क्यों सुनना चाहिए? सुसमाचार की बातें इतनी महान और शानदार हैं, तथा वे इतने आधिकारिक और विश्वसनीय स्रोत से आती हैं, कि परमेश्वर को यह अपेक्षा करने का पूरा अधिकार है कि समाचार पर तुरन्त विश्वास किया जाएगा और उसे स्वीकार किया जाएगा। जो लोग हिचकिचाते हैं उनके साथ वह धीरज धरता है, यह उसके अनुग्रह की एक और अभिव्यक्ति है। अंधा बरतिमाई इस मामले में कोई जोखिम नहीं उठा रहा था।

*तब यीशु ने ठहरकर कहा, “उसे बुलाओ।” और लोगों ने उस अंधे को बुलाकर उससे कहा, “ढाढ़स बाँध! उठ! वह तुझे बुलाता है।” (10:49)*

प्रभु के कान इस निर्धन व्यक्ति की पुकार पर खुले थे। भीड़ के शोरगुल से ऊपर, उसने इस एक आवश्यकता में पड़े व्यक्ति की आवाज सुनी। उसके विश्वास की पुकार ने उद्धारकर्ता के हृदय को प्रसन्न कर दिया। वह रुक गया, शोरगुल को चीरते हुए, और आदेश दिया कि मार्ग साफ किया जाए। प्रभु एक उत्कट, प्रभावशाली प्रार्थना का उत्तर देने के लिये कितना उत्सुक हैं।

*वह अपना कपड़ा फेंककर शीघ्र उठा, और यीशु के पास आया। (10:50)*

यह वस्त्र एक बड़ा, और भारी, और बाहरी वस्त्र था जो नि:संदेह निर्धन बरतिमाई को मौसम से बचाने के लिये काम आता था। निर्धन लोग अक्सर ऐसे लबादे में लिपटे हुए सोते थे। परन्तु यह एक बाधा हो सकती थी; यह अंधे व्यक्ति के उद्धारकर्ता की बुलाहट का उत्तर देने की जल्दबाजी में उसके मार्ग में आ सकता था, अत: उसने इसे एक ओर फेंक दिया! यह उस धनी जवान शासक से कितना अलग है! कितनी बार, यह इतनी बुरी बातें नहीं होतीं जो लोगों को मसीह से दूर रखती हैं, बल्कि अच्छी बातें और आवश्यक बातें होती हैं।

*इस पर यीशु ने उससे कहा, “तू क्या चाहता है कि मैं तेरे लिये करूँ?” अंधे ने उससे कहा, “हे रब्बी, यह कि मैं देखने लगूँ।” (10:51)*

आखिरकार, उस व्यक्ति ने अभी तक अपनी आवश्यकता के बारे में नहीं बताया था। लोग हर तरह के गलत कारणों से मसीह के पास आते हैं। कुछ ही समय पहले, याकूब और यूहन्ना प्रमुख स्थान पाने की चाहत में आए थे।

बरतिमाई को इस बात पर कोई संदेह नहीं था कि वह क्या चाहता है; वह देखना चाहता था। *उसने* कहा, “हे प्रभु!” - “हे रब्बी! हे मेरे स्वामी!” ठीक उसी तरह, जैसे मरियम मगदलीनी ने अपने हृदय की बड़ी भूख को व्यक्त किया था (यूहन्ना 20:16)।

*यीशु ने उससे कहा, “चला जा, तेरे विश्‍वास ने तुझे चंगा कर दिया है।” वह तुरन्त देखने लगा, और मार्ग में उसके पीछे हो लिया। (10:52)*

और यही वह है जो मसीह के पास आने वाले सभी लोगों को करना चाहिए। यीशु ने उससे कहा, “चला जा!” उसने जल्द ही दिखा दिया कि वह मार्ग क्या था - मसीह का मार्ग! उसकी दृष्टि वापस आ गई, अब वह केवल यीशु को छोड़कर किसी को नहीं देख सकता था। मसीह पर अपनी आँखें टिकाए रखने के कारण, उसे यह जानने में कोई परेशानी नहीं हुई कि उसे किस मार्ग पर जाना है! और न ही हमें होनी चाहिए।

**भाग 2.**

**सेवक अपना जीवन बलिदान कर देता है**

मरकुस 11:1-16:20

**खंड 1—रूपरेखा**

**खंड 1: कलवरी के संकट का समय से पूर्व आरम्भ (11:1-12:44)**

1. यीशु ने क्या किया (11:1-33)
   1. उसका आगमन (11:1-11)
      1. तैयारी (11:1-6)
         1. आगमन (11:1a)
         2. व्यवस्थाएँ (11:1b-6)
            1. आदेश (11:1b-3)

दो लोग (11:1b)

कार्य (11:2-3)

वे क्या पाएँगे (11:2)

उन्हें क्या सामना करना पड़ेगा (11:3)

* + - * 1. अनुपालन (11:4-6)

उनके द्वारा खोजा गया गदही का बच्चा (11:4)

गदही का बच्चा उन्हें सौंप दिया गया (11:5-6)

* + 1. प्रस्तुति (11:7-11)
       1. उसका मार्ग बिखरा हुआ है (11:7-8)
          1. गदही का बच्चा (11:7)
          2. बागा (11:8a)
          3. कालीन (11:8b)
       2. उसकी प्रशंसा गायी गई (11:9-10)
          1. कहने वाली दृष्टि (11:11a)
          2. बँधा हुआ मेम्ना (11:11b)
  1. उसका शाप (11:12-14)
     1. एक साधारण इच्छा (11:12-13)
        1. प्रभु की भूख (11:12)
        2. प्रभु की आशा (11:13)
           1. वर्णित आशा (11:13a)
           2. आशा निराश हुई (11:13b)
     2. एक प्रतीकात्मक दुःख (11:14)
  2. उसका शुद्धीकरण (11:15-21)
     1. प्रभु की निर्भयता (11:15-17)
        1. प्रभु का वीरतापूर्ण न्याय (11:15-16)
           1. व्यापारी (11:15a)
           2. पैसे बदलने वाले (11:15b)
           3. दुराचारी लोग (11:16)
        2. प्रभु का वैध औचित्य (11:17)
     2. प्रभु के शत्रु (11:18-21)
        1. उनके षड्यंत्र (11:18a)
        2. उनकी दुर्दशा (11:18b-21)
           1. उनकी तात्कालिक दुविधा (11:18b)
           2. उनका आने वाला विनाश (11:19-21)

अंतराल (11:19-20a)

अपरिहार्य (11:20b-21)

* 1. उसकी सलाह (11:22-26)
     1. सामर्थ्य के विषय में एक वचन (11:22-24)
        1. विश्वास की आवश्यकता (11:22)
        2. विश्वास का स्वभाव (11:23-24)
           1. उदाहरण (11:23)
           2. उपदेश (11:24)
     2. प्रार्थना के बारे में एक वचन (11:25-26)
        1. क्षमा की आवश्यकता (11:25a)
        2. क्षमा का स्वभाव (11:25b-26)
  2. उसके आलोचक (11:27-33)
     1. उन्होंने उसका सामना कैसे किया (11:27-28)
        1. मन्दिर क्षेत्र (11:27a)
        2. मन्दिर के अधिकारी (11:27b-28)
           1. उनका संयुक्त मोर्चा (11:27b)
           2. उनका सर्वसम्मत ध्यान (11:28)
     2. उसने उन्हें कैसे लज्जित किया (11:29-33)
        1. जो उसने तय किया (11:29)
        2. उसने क्या माँगा (11:30-33)
           1. उनकी दुविधा (11:30-32)
           2. उनका निर्णय (11:33a)
        3. उसने क्या अस्वीकार किया (11:33b)

**खंड 1: कलवरी के संकट का समय से पूर्व आरम्भ (11:1-12:44)**

**क. यीशु ने क्या किया (11:1-33)**

**1. उसका आगमन (11:1-11)**

सबसे पहले*, वहाँ तैयारी* थी (11:1-6):

*जब वे यरूशलेम के निकट, जैतून पहाड़ पर बैतफगे और बैतनिय्याह के पास आए तो उसने अपने चेलों में से दो को यह कहकर भेजा। (11:1)*

नाम लिये गए दो गाँव एक दूसरे के करीब थे। *बैतनिय्याह* नामका अर्थ है “खजूरों का घर”; *बैतफगे* नामका अर्थ है “कच्चे अंजीरों का घर।” दोनों जगहों में बैतफगे बड़ा था, परन्तु बैतनिय्याह वह जगह थी जहाँ चेलों को गदही का बच्चा मिला। इसके अलावा, बैतनिय्याह में, यीशु के कुछ बहुत प्रिय मित्र रहते थे। जैतून के पहाड़ से, कोई यरूशलेम नगर को देख सकता था। यात्रा का अंत दिखाई दे रहा था।

*“सामने के गाँव में जाओ, और उस में पहुँचते ही एक गदही का बच्‍चा, जिस पर कभी कोई नहीं चढ़ा, बंधा हुआ तुम्हें मिलेगा। उसे खोल लाओ। यदि तुम से कोई पूछे, ‘यह क्यों करते हो?’ तो कहना, ‘प्रभु को इस का प्रयोजन है,’ और वह शीघ्र उसे यहाँ भेज देगा।” (11:2-3)*

प्रभु को इसके बारे में सब पता था। जैसे कि वह लाज़र (यूहन्ना 11:1-15) और ऊपरौठी कोठरी वाले व्यक्ति (14:12-15) के बारे में सब कुछ जानता था। कभी-कभी प्रभु ने जानकारी प्राप्त करने के लिये प्रश्न पूछना चुना - जो उसकी मानवता का प्रदर्शन था; कभी-कभी उसने लोगों और घटनाओं के बारे में पूर्ण ज्ञान प्रदर्शित किया - जो उसके ईश्वरत्व का प्रदर्शन था। हमारे लिये यह बताना असम्भव है कि मानवता कहाँ समाप्त होती है और ईश्वरत्व कहाँ आरम्भ होता है या ईश्वरत्व कहाँ समाप्त होता है और मानवता कहाँ आरम्भ होती है। न ही हमें जानने का प्रयत्न करना चाहिए। यह सब “ईश्वरत्व के रहस्य” (1 तीमु. 3:16) का हिस्सा है।

प्रभु उस गदही के बच्चे के बारे में सब कुछ जानता था। उसे उसकी आयु पता थी, कि उस पर कभी काठी नहीं लगाई गई थी, कि उसे नियंत्रण में रखने के लिये बाँधा गया था, कि जब चेले उसे खोलने का प्रयत्न करेंगे तो उन्हें चुनौती दी जाएगी, और कि वह उसके लिये तत्परता से उपलब्ध होगा। उसे गदही के बच्चे के स्वामी के बारे में सब कुछ पता था तथा वह उसे स्वामी की सेवा करने और एक प्राचीन भविष्यद्वाणी की पूर्ति में हिस्सा लेने का अनूठा और अमूल्य विशेषाधिकार दे रहा था। आने वाले वर्षों में, जब भी यह व्यक्ति सुसमाचार में इस कहानी को पढ़ेगा, तो वह कह सकेगा, “यह मैं हूँ!” और स्वर्ग में उसका प्रतिफल कितना बड़ा होगा!

*उन्होंने जाकर उस बच्‍चे को बाहर द्वार के पास चौक में बंधा हुआ पाया, और खोलने लगे। (11:4)*

“एक ऐसी जगह जहाँ दो मार्ग मिलते हैं” के लिये शब्द एम्फोडोन है, जो एक गोल चक्कर वाली सड़क को संदर्भित करता है, जो शायद भवनों के एक खण्ड के चारों ओर घुमावदार हो। यह सम्भावना है कि यीशु ने इस मिशन पर जिन दो चेलों को भेजा था वे पतरस और यूहन्ना थे - वे दो लोग थे जिन्हें यीशु ने फसह की तैयारी करने और ऊपरौठी कोठरी का सुरक्षित उपयोग करने के लिये भेजा था (लूका 22:8-13)। गदही के बच्चे के पाए जाने के बारे में मरकुस के विवरण से दृढ़ता से पता चलता है कि यह विवरण एक वास्तविक प्रत्यक्षदर्शी का था - नि:संदेह पतरस, जिससे मरकुस ने अपनी जानकारी प्राप्त की।

*उनमें से जो वहाँ खड़े थे, कोई कोई कहने लगे, “यह क्या करते हो, गदही के बच्‍चे को क्यों खोलते हो?” जैसा यीशु ने कहा था, वैसा ही उन्होंने उनसे कह दिया; तब लोगों ने उन्हें जाने दिया। (11:5-6)*

निश्चित रूप से, चेलों को चुनौती दी गई, जैसा कि अपेक्षित था जब उन्होंने गदही के बच्चे को खोलने का प्रयत्न किया। गुरु का उल्लेख करना ही पर्याप्त था। उसका नाम किसी भी ऋण के लिये पर्याप्त सुरक्षा थी।

इसके बाद, हमारे पास *प्रस्तुति है* (11:7-11):

*उन्होंने बच्‍चे को यीशु के पास लाकर उस पर अपने कपड़े डाले और वह उस पर बैठ गया। तब बहुतों ने अपने कपड़े मार्ग में बिछाए और औरों ने खेतों में से डालियाँ काट काट कर फैला दीं। (11:7-8)*

प्रभु, जिसने अब तक किसी भी तरह के प्रचार और प्रसार को हतोत्साहित किया था, अब जानबूझकर अपने आगमन का विज्ञापन कर रहा था। उसके एक वचन या स्पर्श से ही बंधा हुआ गदही का बच्चा न केवल उनके नियंत्रण में आ गया, बल्कि लोगों की जय-जयकार करने वाली भीड़ के बीच से भी वह अपना मार्ग बनाता चला गया, जो खजूर की डालियाँ हिला रहे थे और अपने कपड़े उसके पाँवों के सामने फेंक रहे थे।

प्रेरितों के वस्त्र काठी के समान थे। सभी प्रकार के पुआल, सरकंडे, नरकट और पत्तों से कालीन बनाया गया था, कि मानो कि यह उसका मार्ग प्रशस्त करने के लिये था। यह प्रभु का राजधानी में “दाऊद के पुत्र” के रूप में आधिकारिक प्रवेश था, वास्तव में (बरतिमाई की समझ के लिये उसे शाबाश!), यही दाऊद के सिंहासन का असली उत्तराधिकारी है।

*जो उसके आगे आगे जाते और पीछे पीछे चले आते थे, पुकार–पुकार कर कहते जाते थे, “होशाना! धन्य है वह जो प्रभु के नाम से आता है! हमारे पिता दाऊद का राज्य जो आ रहा है; धन्य है! आकाश में होशाना!” (11:9-10)*

ये उद्धरण भजन 118:25-26 से लिये गए हैं। होसन्ना शब्द का अर्थ है “अभी स्तुति करो!” भजन 118 प्रभु की अस्वीकृति के पूर्वानुमान के लिये उल्लेखनीय है। जब वह लहर की चोटी पर सवार था, तो दूसरी तरफ गहरा गर्त उसे प्राप्त करने के लिये प्रतीक्षा कर रहा था। सप्ताह के भीतर, यही भीड़ उसकी मृत्यु के लिये चिल्लाएगी - जैसा कि वह अच्छी तरह से जानता था।

नि:संदेह, इस विजयी प्रवेश का समाचार रोमी राज्यपाल और महासभा दोनों को तुरन्त बताया गया । जहाँ तक रोमियों का प्रश्न है, समाचार आने पर व्यंग्यात्मक मुस्कान देखी गई होगी। “एक *राजा, एक गधे के बच्चे* पर सवार? वह कितना मूर्ख है! वैसे भी, *यहूदियों* के राजा से आप क्या अपेक्षा कर सकते हैं ?”

यहूदी अधिकारी इतनी जल्दी उपहास नहीं करते। आखिरकार, यह *भविष्यद्वाणी की गई थी:* “हे सिय्योन बहुत ही मगन हो! हे यरूशलेम, जयजयकार कर! क्योंकि तेरा राजा तेरे पास आएगा; वह धर्मी और उद्धार पाया हुआ है, वह दीन है, और गदहे पर वरन् गदही के बच्‍चे पर चढ़ा हुआ आएगा” (जकर्याह 9:9)। हालाँकि महासभा को एक नम्र मसीह की कोई आवश्यकता नहीं थी और वह एक उग्र मसीह चाहती थी, जो इस्राएल को एक नये विश्व साम्राज्य का केंद्र बनाए, परन्तु वे नासरत के यीशु के अचानक मसीह की भूमिका में प्रकट होने से चिन्तित थे।

*वह यरूशलेम पहुँचकर मन्दिर में आया, और चारों ओर सब वस्तुओं को देखकर बारहों के साथ बैतनिय्याह गया, क्योंकि साँझ हो गई थी। (11:11)*

हर्मोन से लम्बी यात्रा समाप्त हो चुकी थी। प्रभु अब यरूशलेम में था। वह फसह का मेम्ना बनकर आया था और इस तरह, वह मन्दिर के आँगन में निरंतर पहरेदारी के लिये उपस्थित हुआ ताकि सभी देख सकें कि उसमें कोई दाग या दोष नहीं है। हर रात, वह बैतनिय्याह तक जाता था, जहाँ उसके मित्र थे जैसे मार्था, मरियम और लाज़र; शमौन कोढ़ी; और वे लोग जिन्होंने उसे अपना गदही का बच्चा उधार दिया था।

हम उसे उत्तर से अपनी लम्बी यात्रा के अंत में यरूशलेम में प्रवेश करते हुए देखते हैं, ठीक उसी समय जब शाम की छाया आसमान में काफी हद तक जमने लगती है। हम उसे मन्दिर के आँगनों के चारों ओर व्यापक दृष्टि डालते हुए देखते हैं, सब कुछ देखते हुए: याजक, लोग, व्यापार के सरदार। हम उसे आगे आने वाले विशाल टकरावों के लिये स्वयं को तैयार करने के लिये बैतनिय्याह में वापस जाते हुए देखते हैं।

**2. उसका शाप (11:12-14)**

*दूसरे दिन जब वे बैतनिय्याह से निकले तो उसको भूख लगी। (11:12)*

हमें यह नहीं बताया गया है कि उसने रात कहाँ बिताई थी। यह तथ्य कि वह भूखा था, इस बात को दर्शाता है कि वह लाज़र के घर पर नहीं था। मार्था इतनी अच्छी अतिथि-सत्कार करने वाली थी कि उसने इतने प्रिय अतिथि को बिना नाश्ता किए जाने नहीं दिया होगा। अधिक सम्भावना है कि उसने जैतून के पहाड़ पर रात प्रार्थना में बिताई थी, ताकि आने वाले कठिन दिनों के लिये स्वयं को तैयार कर सके।

*वह दूर से अंजीर का एक हरा पेड़ देखकर निकट गया कि क्या जाने उसमें कुछ पाए : पर पत्तों को छोड़ कुछ न पाया; क्योंकि फल का समय न था। (11:13)*

अंजीर के पेड़ पर लगे हरे-भरे पत्ते बहुत बढ़िया थे। यह एक स्वस्थ पेड़ था। पुराने समय में जैतून का पहाड़ अपने अंजीर के पेड़ों के लिये मशहूर था। फल हमेशा पत्तियों से पहले दिखाई देते हैं, इसलिये प्रभु को पेड़ पर अंजीर की अपेक्षा करने का पूरा अधिकार था, हालाँकि, कठोरता से, यह फलों के मौसम का आरम्भ था। आमतौर पर गर्मियों में फलों की फसल मई या जून तक नहीं काटी जाती है, परन्तु जैतून के पहाड़ की धूप वाली घाटियों में, अंजीर के पेड़ों पर कुछ सप्ताह पहले ही पके हुए फल लग सकते हैं। इसलिये, भोर के समय ही प्रभु के द्वारा एकदम नये, खाने योग्य अंजीर की अपेक्षा करना कोई विचित्र बात नहीं है, हालाँकि वह फलों की कटाई का सामान्य समय नहीं था।

*इस पर उसने उससे कहा, “अब से कोई तेरा फल कभी न खाए!” और उसके चेले सुन रहे थे। (11:14)*

अंजीर के पेड़ को मसीह से कुछ कहना था। उसने दुःख के साथ बांझपन के बारे में उससे फुसफुसाया। प्रभु ने इसका उत्तर दिया। यह एक असाधारण घटना है क्योंकि इस अवसर पर प्रभु ने अपना एकमात्र न्याय वाला आश्चर्यकर्म किया था। यह स्पष्ट रूप से एक प्रतीकात्मक कार्य था; अंजीर का पेड़ इस्राएल जाति का प्रतीक था। प्रभु उस जाति में वैसे ही आया था, जैसे वह अब अंजीर के पेड़ के पास आया था। वह जाति बहुत जीवंत थी, अपनी सभी राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक गतिविधियों को जारी रखे हुए थी, परन्तु यह आत्मिक फल से रहित थी। उसके पास यीशु को देने के लिये कुछ भी नहीं था - सिवाय एक क्रूस के। अंजीर के पेड़ का शाप मसीह को अस्वीकार करने वाली जाति के बाद के शाप का प्रतीक था, एक शाप जिसे मत्ती (अध्याय 23) के द्वारा विस्तार से दर्ज किया गया था। उस समय जीवित कुछ लोगों के जीवनकाल में ही शाप पड़ गया। 70 ईस्वी में, रोमियों ने यरूशलेम और मन्दिर को नष्ट कर दिया। 135 ईस्वी में, बार कोचबा विद्रोह के समय, रोमियों ने यहूदी जाति के राष्ट्रीय जीवन को समाप्त कर दिया।

**3. उसका शुद्धीकरण (11:15-21)**

सबसे पहले, हम *प्रभु की निर्भयता* पर ध्यान देते हैं(11:15-17):

*फिर वे यरूशलेम में आए, और वह मन्दिर में गया; और वहाँ जो लेन–देन कर रहे थे उन्हें बाहर निकालने लगा, और सर्राफों के पीढ़े और कबूतर बेचनेवालों की चौकियाँ उलट दीं, और मन्दिर में से किसी को बरतन लेकर आने जाने न दिया। (11:15-16)*

इस घटना की पृष्ठभूमि मलाकी 3:1 है। मलाकी भविष्यद्वक्ता ने भविष्यद्वाणी की थी कि एक आवाज सुनाई देगी, और संदेशवाहक (यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला) प्रकट होगा। वैसे, वह प्रकट हुआ था, और हेरोदेस ने उसे मार डाला था। फिर अचानक दर्शन होगा, मसीह अपने मन्दिर में प्रकट होगा।

यीशु पहले भी कई बार उस मन्दिर में गया था। बारह वर्ष के लड़के के रूप में वह एक बार वहाँ गया था। राजधानी में अपनी सेवा आरम्भ करने के बाद वह फिर से वहाँ गया था (यूहन्ना 1:13-17)। अब वह अंतिम बार वहाँ गया था, ताकि वह वही कर सकें जो उसने पहले किया था - उसे शुद्ध करना।

उसके आसपास वास्तुकला की भव्यता और आत्मिक गंदगी दोनों ही थी। महायाजक पद का प्रतिनिधित्व राजनीतिक सोच वाले सदूकी, कैफा और उसके ससुर, भ्रष्ट हन्ना के द्वारा किया जाता था, जिन्होंने आधी सदी तक महायाजक पद को एक तरह से या दूसरे तरीके से नियंत्रित किया था। कैफा की तरह, हन्ना भी एक सदूकी था। वह चतुर, सांसारिक, कुटिलता और द्वेष और नीचता से भरा हुआ था। मसीह के समय, स्वयं को सत्ता में बनाए रखने के लिये समर्पित समय-सेवा करने वाले याजकों के एक समूह से , मन्दिर को नियंत्रित करने वाली महासभा थोड़ी बेहतर थी। हन्ना ने उन दुकानों और रियायतों को मंजूरी दी जो उस खरीदारों की भीड़ को संचालित करती थीं जो प्रभु को इतना प्रभावित करती थीं। वास्तव में, ऐसा लगता है कि उसने और उसके गोत्र ने उन्हें स्थापित किया था; उन्हें इन रियायतों की आय से काफी लाभ हुआ। मन्दिर को साफ करके, यीशु ने इस शक्तिशाली, भ्रष्ट और बेकार व्यक्ति का सामना किया। हन्ना वह व्यक्ति था जो प्रभु को क्रूस पर चढ़ाने के लिये मुख्य रूप से जिम्मेदार था। हन्ना और कैफा तथा उनके सहयोगियों के क्रोध को भड़काने के लिये इससे अधिक सोची-समझी बात और कुछ नहीं हो सकती थी कि उसने उन व्यापारियों और मुद्रा परिवर्तकों को मन्दिर से बाहर निकाल दिया, जिन्हें वे स्वयं अनुमति देते थे और नियंत्रित करते थे।

फसह और पिन्तेकुस्त के बीच वार्षिक पर्वों के समूह ने हजारों यहूदियों को दूर-दूर देशों के सभी हिस्सों से यरूशलेम में लाया। स्पष्ट है कि ये आगंतुक अपने साथ वे बलिपशु नहीं ला सकते थे जिनकी उन्हें आवश्यकता थी। यह उचित था कि उनके लिये इन्हें खरीदने का प्रावधान किया गया था, परन्तु यह आवश्यक नहीं था कि मन्दिर के आँगन का उपयोग इस उद्देश्य के लिये किया जाए। फिर, यहूदियों को वार्षिक मन्दिर कर का भुगतान करने की आवश्यकता थी, और यह कर अन्य जाति देशों के अपवित्र दमड़ियों में नहीं चुकाया जा सकता था; इसे यहूदी मुद्रा में चुकाना पड़ता था। उचित मुद्रा विनिमय के लिये प्रावधान किया जाना था, परन्तु, फिर से, यह वित्तीय मामला यरूशलेम में अन्य कई स्थानों पर संचालित किया जा सकता था।

इन लेन-देनों का मन्दिर क्षेत्र में केन्द्रित होना पूरी तरह से अनुचित था। इसके अलावा, ऐसा लगता है कि ये रियायतें अन्यजातियों के न्यायालय में स्थापित की गई थीं, एक ऐसा तथ्य जिसने केवल प्रभु की नाराजगी को बढ़ाया। अन्यजातियों के न्यायालय का ऐसा उपयोग यहूदियों की अन्यजातियों के प्रति क्षुद्र-भावनापूर्ण अवमानना के अनुरूप था। इसके विपरीत, प्रभु यहूदियों से जितना प्रेम करता था, उतना ही अन्यजातियों से भी करता था। अंतिम बात यह थी कि रियायतों से जुड़े व्यापार और बाजार में धोखाधड़ी धार्मिक अधिकारियों की पूरी मिलीभगत से की जाती थी।

यीशु ने तुरन्त इस पर रोक लगा दी। उसने लोगों को मन्दिर के बीच से गुजरने की भी अनुमति नहीं दी। हालाँकि, उसका गुस्सा वास्तविक था, परन्तु पवित्र था। यह तथ्य स्पष्ट है। उसने पैसे बदलने वालों की *मेज़ें* उलट दीं*,* उन्हें दमड़ियों के लिये हाथापाई करने पर विवश कर दिया जो हर जगह लुढ़क गई थीं, और उसने कबूतर बेचने वालों की *कुर्सियाँ* उलट दीं। ऐसा करके, उसने अपने पिंजरों में बंद असहाय निर्दोष प्राणियों को चोट नहीं पहुँचाई।

*और उपदेश करके उनसे कहा, “क्या यह नहीं लिखा है कि मेरा घर सब जातियों के लिये प्रार्थना का घर कहलाएगा? पर तुम ने इसे डाकुओं की खोह बना दी है ।” (11:17)*

यह संयुक्त उद्धरण यशायाह 56:7 और यिर्मयाह 7:11 से लिया गया है। यहूदियों ने परमेश्वर के घर को लुटेरों का अड्डा बना दिया था। यह उन धार्मिक अगुवों के लिये एक भयानक अभियोग था जिन्होंने इस अनुचित गतिविधि को बढ़ावा दिया; परन्तु, अपने कार्य और स्पष्ट शिक्षा के द्वारा, प्रभु ने अपनी मृत्यु के आदेशपत्र पर हस्ताक्षर कर दिए।

*प्रभु के शत्रुओं* पर भी ध्यान देते हैं (11:18-21):

*यह सुनकर प्रधान याजक और शास्त्री उसके नाश करने का अवसर ढूँढ़ने लगे; क्योंकि वे उससे डरते थे, इसलिये कि सब लोग उसके उपदेश से चकित होते थे। (11:18)*

हालाँकि, इस समय तक वह सुरक्षित था। महासभा के राजनीतिक रूप से चतुर सदस्य जानते थे कि, अभी के लिये, लोग प्रभु की बात सुन रहे थे। उनके लिये उसके विरुद्ध आगे बढ़ना सुरक्षित नहीं होगा। इससे दंगा भड़क सकता है, जिससे रोमी सेना के द्वारा फिर से दमन किया जाएगा और उनके विशेषाधिकारों में और कटौती की जाएगी।

इस कारण, अधिकारी अनिश्चित थे कि इस अवांछित मसीह के विरुद्ध कैसे आगे बढ़ा जाए। आखिरकार, वह शक्ति और आश्चर्यकर्म से सुसज्जित था, और वह लोगों के बीच लोकप्रिय था। अत: शास्त्रियों और प्रधान याजकों ने लोगों को दंगा भड़काए बिना और इस अवांछित मसीह के द्वारा आत्मरक्षा में अपनी असाधारण आश्चर्यकर्म की सामर्थ्य का उपयोग किए बिना उसके पतन और मृत्यु को पूरा करने का कोई तरीका ढूँढ़ना आरम्भ कर दिया। परन्तु, अभी के लिये, वे केवल देख सकते थे और प्रतीक्षा कर सकते थे।

*साँझ होते ही वे नगर से बाहर चले गए। (11:19)*

सम्भवतः, वह बैतनिय्याह वापस चला गया। यह एक घटनापूर्ण दिन था। चेलों के पास बात करने के लिये बहुत कुछ होगा। प्रभु ने काफी निर्णायक रूप से कार्य किया था, परन्तु नि:संदेह उन्हें संदेह था कि क्या उसने प्रतिष्ठान को भड़काने के लिये बुद्धिमानी की थी। फिर भी, उसके विजयी प्रवेश ने उन्हें प्रोत्साहित किया होगा। शायद वह आखिरकार एक असली मसीह की तरह काम करना आरम्भ करने जा रहा था।

*फिर भोर को जब वे उधर से जाते थे तो उन्होंने उस अंजीर के पेड़ को जड़ तक सूखा हुआ देखा। पतरस को वह बात स्मरण आई, और उसने उससे कहा, “हे रब्बी, देख! यह अंजीर का पेड़ जिसे तू ने स्राप दिया था, सूख गया है।” (11:20-21)*

अंजीर का पेड़ मर गया था। नि:संदेह! यह अपने सृष्टिकर्ता की आशीष के बिना अस्तित्व में नहीं रह सकता था। संयोग से, इस्राएली जाति भी नहीं रह सकती थी। इसने पहले ही शास्त्रियों और प्रधान याजकों के क्रोध, द्वेष और षड्यंत्रों में मसीह को अस्वीकार करने की अपनी भावना को दिखाना आरम्भ कर दिया था। यह भावना तब तक बढ़ती जाएगी जब तक कि वे न केवल परमेश्वर के पुत्र को बल्कि परमेश्वर के आत्मा को भी अस्वीकार नहीं कर देते। तब उस जाति पर एक न्यायपूर्ण आत्मिक और चिरस्थायी अंधापन उतरेगा (रोमियों 10:1-3; 11:25), मसीह के बारे में एक जातीय अंधापन जो आज तक कायम है।

हालाँकि, यह वह मुद्दा नहीं था जो प्रभु अब पतरस की टिप्पणी के उत्तर में कहता हैं।

**4. उसकी सलाह (11:22-26)**

*यीशु ने उस को उत्तर दिया, “परमेश्‍वर पर विश्‍वास रखो। मैं तुम से सच कहता हूँ कि जो कोई इस पहाड़ से कहे, ‘तू उखड़ जा, और समुद्र में जा पड़,’ और अपने मन में सन्देह न करे, वरन् प्रतीति करे कि जो कहता हूँ वह हो जाएगा, तो उसके लिये वही होगा। (11:22-23)*

ऐसा प्रतीत होता है कि प्रभु के उत्तर का अंजीर के पेड़ के बारे में पतरस के अवलोकन से कोई लेना-देना नहीं है। पतरस की टिप्पणी का औषधात्मक अनुप्रयोग कहीं ओर पाया जाता है (मत्ती 24:32-33)। यहाँ प्रभु बाधाओं को दूर करने के साधन के रूप में विश्वास के महत्वपूर्ण महत्व को रेखांकित करने के लिये पूरी घटना का उपयोग करता है। चाहे वे बाधाएँ कितनी भी बड़ी और विशाल क्यों न लगें, परमेश्वर उन्हें हटा सकता है। विश्वास वह हाथ है जिसके द्वारा हम परमेश्वर तक पहुँचते हैं और जो परिस्थितियों में आवश्यक परिवर्तन लाता है। विश्वास को बड़ा होने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि “राई के दाने के बराबर” विश्वास (मत्ती 17:20) ही बड़े-बड़े लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिये पर्याप्त है। परन्तु विश्वास सच्चा और संदेहरहित होना चाहिए। और यह *परमेश्वर पर विश्वास होना चाहिए।* परमेश्वर किसी भी पहाड़ को हटाने के लिये काफी बड़ा है। अक्सर, वह हमें विश्वास का अभ्यास करने का अवसर प्रदान करने और एक ऐसा मंच प्रदान करने के लिये बाधाओं को उत्पन्न होने देता है जिस पर वह अपनी सामर्थ्य प्रदर्शित कर सकता है।

कुछ ही आयत पहले, मरकुस ने इस सत्य को दर्शाया था। प्रभु पहाड़ से नीचे उतर आया था। नीचे घाटी में एक दुष्टात्माग्रस्त लड़का, एक व्याकुल पिता, एक मजाक उड़ाने वाला संसार और एक शक्तिहीन “कलीसिया” थी। पिता स्पष्ट रूप से असमर्थ और शर्मिंदा चेलों से सर्वशक्तिमान प्रभु की ओर मुड़ा। “यदि तू कुछ कर सके,” उसने लड़खड़ाते हुए पूछा।

“यदि तू विश्वास करे” प्रभु का तत्काल उत्तर था (9:22-23)। उसके लिये इसमें कोई *संदेह* नहीं है। मार्ग में आने वाले पहाड़ उसके लिये कुछ भी नहीं हैं। क्योंकि उसने उन्हें बनाया है, इसलिये वह निश्चित रूप से उन्हें हटा सकता है। प्रकृति की सभी शक्तियाँ उसके आदेश पर हैं, और ईश्वरीयता के संसाधन उसके आदेश पर हैं। जैसा कि जॉन न्यूटन ने अपने भजन “आ, मेरी आत्मा, अपना वस्त्र तैयार कर” में कहा है,

तुम एक राजा के पास आ रहे हो,

अपने साथ बड़ी-बड़ी याचनाएँ लेकर आओ,

क्योंकि उसका अनुग्रह और सामर्थ्य ऐसा है

कोई भी कभी बहुत अधिक नहीं माँग सकता।

*इसलिये मैं तुम से कहता हूँ कि जो कुछ तुम प्रार्थना करके माँगो, तो प्रतीति कर लो कि तुम्हें मिल गया, और तुम्हारे लिये हो जाएगा। (11:24)*

इस प्रकार, प्रभु हमें प्रार्थना करने और यह विश्वास करने के लिये प्रोत्साहित करता है कि परमेश्वर हमारी माँगों को पूरा करने में सक्षम है। प्रार्थना विश्वास की अभिव्यक्ति है। ऐसा नहीं है कि प्रार्थना किसी तरह की जादू वाली छड़ी है। हर बात की तरह प्रार्थना के भी नियम होते हैं। प्रभु अब उनमें से एक नियम बताता है। वह हमें याद दिलाता है (पद 24 में दिए गए कथन को पद 25-26 में दिए गए कथन से जोड़कर) कि पवित्रशास्त्र के किसी भी पाठ को उसके संदर्भ के अलावा उसके वास्तविक मूल्य पर नहीं लिया जा सकता।

*और जब कभी तुम खड़े हुए प्रार्थना करते हो तो यदि तुम्हारे मन में किसी के प्रति कुछ विरोध हो, तो क्षमा करो : इसलिये कि तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा करे। [और यदि तुम क्षमा न करो तो तुम्हारा पिता भी जो स्वर्ग में है, तुम्हारा अपराध क्षमा न करेगा।”] (11:25-26)*

क्षमा न करने वाली आत्मा प्रभावशाली प्रार्थना में बहुत बड़ी बाधा है। हमारे कई अन्य अपराध भी इसी तरह के हैं। क्षमा न करने वाली आत्मा परमेश्वर को हमारी स्वयं की गलतियों और असफलताओं को क्षमा करने से रोकती है और इस प्रकार हमारी प्रार्थनाओं के उत्तर को अवरुद्ध करती है।

क्षमा करना धर्मी ठहराए जाने के जैसा नहीं है। क्षमा स्वीकार किए गए अपराध के आधार पर एक याचना है। एक व्यक्ति जो धर्मी ठहराया गया है, वह पूरी तरह से अलग आधार पर अपना पक्ष रखता है। एक विश्वासी को मसीह के साथ अपनी पहचान के आधार पर गलत काम करने से बरी कर दिया जाता है। यह पहचान इतनी परिपूर्ण और सम्पूर्ण है कि जब परमेश्वर विश्वासी को देखता है तो वह केवल मसीह की धार्मिकता को देखता है। क्षमा शर्त के साथ है - परमेश्वर बार-बार इसे दूसरों को क्षमा करने की हमारी इच्छा पर निर्भर करता है (मत्ती 6:12; 18:21-35) - परन्तु धर्मी ठहराया जाना बिना शर्त के है।

अतः, जबकि प्रभु हमें यहाँ एक बहुत ही व्यापक और सारगर्भित प्रतिज्ञा देता है, वास्तव में, “जो कुछ तुम प्रार्थना करके माँगो”, इसकी मान्यता यह है कि जो व्यक्ति स्वर्ग में इतनी बड़ी विनती लेकर आता है, वह एक विनम्र, मसीह-समान आत्मा में निहित विश्वास का अभ्यास करेगा और वह प्रार्थना से जुड़े सभी सामान्य नियमों का पालन करेगा।

**5. उसके आलोचक (11:27-33)**

*वे फिर यरूशलेम में आए, और जब वह मन्दिर में टहल रहा था तो प्रधान याजक और शास्त्री और पुरनिए उसके पास आकर पूछने लगे। (11:27)*

अब हमारे सामने तीन निकायों के प्रतिनिधियों के द्वारा की गई आधिकारिक जाँच है, जो कि महासभा का गठन करते हैं। ये लोग इस्राएल के धार्मिक अगुवे थे। वे स्वयं को रूढ़िवाद के संरक्षक, विश्वास के रक्षक, जिसमें सभी बहुसंख्यक रब्बी परम्पराएँ शामिल हैं, के रूप में देखते थे। ऐसा लगता है कि उन्होंने तय कर लिया था कि इस अपरम्परागत् मसीह को चुनौती देने का समय आ गया है, जो अब उनके नगर में स्वयं को स्थापित कर चुका था और जिसने उनके मन्दिर को ऐसे माना जैसे कि वह उसका अपना हो। उन्होंने पूरी गरिमा और महिमा के साथ उसका सामना किया जो वे जुटा सकते थे। उसे उनके अधिकार को पहचानना चाहिए।

*“तू ये काम किस अधिकार से करता है? और यह अधिकार तुझे किस ने दिया है कि तू ये काम करे?” (11:28)*

वह उनसे भी यही प्रश्न पूछ सकता था। उस समय इस्राएल में जिस तरह से महासभा का गठन किया गया था, वह तुलनात्मक रूप से हाल ही की संस्था थी। परमेश्वर के नाम पर बोलने और कार्य करने का अधिकार, जैसा कि सभी भविष्यद्वक्ताओं ने माना था, किसी स्व-नियुक्त या राज्य-नियुक्त धार्मिक निकाय से नहीं बल्कि परमेश्वर के वचन और परमेश्वर के आत्मा से प्राप्त होता था।

*यीशु ने उनसे कहा, “मैं भी तुम से एक बात पूछता हूँ; मुझे उत्तर दो तो मैं तुम्हें बताऊँगा कि ये काम किस अधिकार से करता हूँ। यूहन्ना का बपतिस्मा क्या स्वर्ग की ओर से था या मनुष्यों की ओर से था। मुझे उत्तर दो।” (11:29-30)*

वैसे, वे जानते थे कि यीशु यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले से कहीं अधिक बढ़कर था। यूहन्ना ने कोई आश्चर्यकर्म नहीं किया था, परन्तु दान से लेकर बेर्शेबा तक पूरा देश मसीह के असंख्य, अद्भुत और पूरी तरह से प्रमाणित आश्चर्यकर्मों की कहानियों से गूँज रहा था। यूहन्ना ने मन फिराव का उपदेश दिया था, परन्तु, वह महान उपदेशक और प्रसिद्ध भविष्यद्वक्ता था, उसकी तुलना यीशु से नहीं की जा सकती थी। कोई भी व्यक्ति कभी भी उसके जैसा नहीं बोल सकता था।

हाल ही में यरूशलेम में यीशु की विजयी यात्रा इन लोगों के यीशु के प्रति इतने शत्रुतापूर्ण होने का कारण थी। उसने मसीह होने का दावा किया, एक ऐसा मसीह जिसका उन्होंने समर्थन या प्रमाणिकता नहीं की थी। वे मन्दिर की उसकी हाल ही में की गई सफाई से भी क्रोधित थे। यह कि सभी जगहों में से नासरत से आया यह गलीली उनके अधिकार को अनदेखा करे और यह कि वह उन्हें सबसे कठोर भाषा में उजागर करे और उनकी निंदा करे, इससे वे क्रोधित हो गए (मत्ती 23 अध्याय)।

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने भी यही किया था, परन्तु हेरोदेस ने उसे सुविधाजनक तरीके से मार डाला था। यीशु एक बहुत कठिन प्रस्ताव था। उन्होंने उसे उसी शत्रुता और अविश्वास के साथ अस्वीकार कर दिया जिसके साथ उन्होंने यूहन्ना को अस्वीकार किया था, परन्तु वे यीशु से थोड़ा बहुत डरते थे। एक व्यक्ति जो एक वचन से फलहीन अंजीर के पेड़ को नष्ट कर सकता था, वह कोई ऐसा व्यक्ति नहीं था जिसे धोखा दिया जा सके। इसके अलावा, वह यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले से बहुत अधिक चतुर था। यूहन्ना के बपतिस्मा के अधिकार के बारे में उसके प्रश्न ने यह साबित कर दिया। उसने अपने प्रश्न से उन्हें दुविधा में डाल दिया था, और वे यह जानते थे।

*तब वे आपस में विवाद करने लगे कि यदि हम कहें ‘स्वर्ग की ओर से,’ तो वह कहेगा, ‘फिर तुम ने उसकी प्रतीति क्यों नहीं की?’ और यदि हम कहें, ‘मनुष्यों की ओर से,’ तो लोगों का डर है, क्योंकि सब जानते हैं कि यूहन्ना सचमुच भविष्यद्वक्‍ता था। (11:31-32)*

यूहन्ना का जन्म याजकीय परिवार में हुआ था! वह निर्भीकता और स्पष्टवादिता के लिये एलिय्याह था, जो सदियों की चुप्पी को तोड़ने के लिये जंगल में प्रकट हुआ था। उसे महासभा ने अस्वीकार कर दिया था, हेरोदेस उससे डरता था, हेरोदियास उससे घृणा करती थी, और आम लोग उससे प्रेम करते थे। उसने स्वयं को खुरदरे कपड़े पहनाए थे। वह एक अकेला तपस्वी था। आम लोगों की दृष्टि में, वह वही सब था जो एक भविष्यद्वक्ता को होना चाहिए। उसने स्वयं को मसीह का अग्रदूत घोषित किया था। वह आत्मा से भरा हुआ था और उसने बिना किसी डर या पक्षपात के मन फिराव का प्रचार किया था। उसने विशाल और उत्तरदायी भीड़ को आकर्षित किया था। तो, वे यह कहने का साहस कैसे कर सकते थे कि उसकी सेवकाई केवल मनुष्यों की थी? नहीं! नहीं! उन्होंने ऐसा करने का साहस नहीं किया।

परन्तु क्या आप मानते हैं कि यूहन्ना का बपतिस्मा परमेश्वर की ओर से था? पुराने नियम में यूहन्ना के बपतिस्मा के लिये कोई मिसाल नहीं है। एलिय्याह और एलीशा ने किसी को बपतिस्मा नहीं दिया। यशायाह, यिर्मयाह और दानिय्येल ने किसी को बपतिस्मा नहीं दिया। यहेजकेल ने किसी को बपतिस्मा नहीं दिया। छोटे भविष्यद्वक्ताओं ने भी किसी को बपतिस्मा नहीं दिया। यहाँ तक कि बंधुआई के बाद के भविष्यद्वक्ताओं ने भी, जो यूहन्ना के समय के सबसे करीबी भविष्यद्वक्ताओं थे, किसी को बपतिस्मा नहीं दिया। व्यवस्था में विभिन्न प्रकार के स्नान (धोने) का प्रावधान था, परन्तु उनमें से कोई भी बपतिस्मा के समान नहीं था। मूसा ने किसी को भी उस तरह से बपतिस्मा नहीं दिया जिस तरह से यूहन्ना ने दिया था - हालाँकि पौलुस ने लाल समुद्र को पार करने में इस्राएल के बपतिस्मा की एक छवि देखी (1 कुरिं. 10:1-2), और पतरस ने नूह के जहाज में इसकी एक छवि देखी (1 पतरस 3:18-22)।

अत:, यूहन्ना को अपने हृदय परिवर्तित लोगों को बपतिस्मा देने का अधिकार कहाँ से मिला? स्पष्ट है, उसे यह अधिकार परमेश्वर से मिला था। प्रभु ने स्वयं इसके प्रति समर्पित होकर इसका समर्थन किया था। पिता और पवित्र आत्मा ने भी उसी समय इसका समर्थन किया था (मत्ती 3:13-17)। ये बातें आम ज्ञान थीं। वे यह कहने का साहस कैसे कर सकते थे कि यूहन्ना के पास जो कुछ भी उसने किया उसके लिये उसकी अपनी कल्पना से परे कोई अधिकार नहीं था? दूसरी ओर, वे यह स्वीकार करने का साहस कैसे कर सकते थे कि यूहन्ना की सेवकाई परमेश्वर से प्राप्त हुई थी और परमेश्वर के द्वारा आशीषित थी? प्रभु ने इन लोगों को अच्छी तरह से घेर लिया था।

*अत: उन्होंने यीशु को उत्तर दिया, “हम नहीं जानते।” यीशु ने उनसे कहा, “मैं भी तुम को नहीं बताता कि ये काम किस अधिकार से करता हूँ।” (11:33)*

उन्हें बताने का क्या अर्थ होता? उन्होंने पहले ही अपना मन बना लिया था। उनके दुष्ट हृदय दृढ़ अविश्वास में अड़े हुए थे। अब उन्होंने उसे भी उतने ही निश्चित और दोषी रूप से अस्वीकार कर दिया था, जितना कि उन्होंने यूहन्ना को अस्वीकार किया था। उसने उनसे बहस नहीं की। उसने उन्हें समझाने का प्रयत्न नहीं किया। वे केवल अविश्वास से आगे बढ़कर धर्मत्याग में चले गए थे - और परमेश्वर हमेशा धर्मत्यागी को उसके अपने विनाश का काम करने के लिये छोड़ देता है। उसके पास ऐसे लोगों से कहने के लिये कुछ नहीं है - तब या अब।

1. यीशु ने क्या घोषणा की (12:1-44)
   1. एक साहसी दृष्टान्त (12:1-12)
      1. इसकी जातीय अपील (12:1-9)
         1. दाख की बारी का स्वामी (12:1)
            1. उसका परिश्रम (12:1a-c)

उसने दाख की बारी कैसे लगाई (12:1a)

उसने दाख की बारी की रक्षा कैसे की (12:1b)

उसने दाख की बारी के लिये क्या प्रबंध किया (12:1c)

* + - * 1. उसका प्रस्थान (12:1d)
      1. दाख की बारी के निरीक्षक (12:2-9)
         1. भेजे गए सेवक (12:2)

दाख की बारी से लाभ पाने का पहला प्रयत्न (12:2-5a)

वह सेवक जो पिटा गया था (12:2-3)

वह सेवक जिसे पत्थरवाह किया गया (12:4)

वह सेवक जो मारा गया (12:5a)

दाख की बारी से लाभ पाने के लिये आगे किए गए प्रयत्न (12:5b)

* + - * 1. भेजा गया पुत्र (12:6-9)

पुत्र के विषय में एक वचन (12:6)

उसकी निकटता (12:6a)

उसकी प्रियता (12:6b)

उनके पाप के विषय में एक वचन (12:7-9)

उनका षड्यंत्र (12:7)

उनका अपराध (12:8)

उनकी निंदा (12:9)

दाख की बारी के किसानों का भाग्य (12:9a)

दाख की बारी का भविष्य (12:9b)

* + 1. इसका स्वाभाविक अनुप्रयोग (12:10-12)
       1. प्रश्न (12:10a)
       2. उद्धरण (12:10b-12)
  1. जानबूझकर उकसाया गया (12:13-34)
     1. धर्मनिरपेक्षता के संदर्भ में (12:13-17)
        1. षड्यंत्र रचा गया (12:13)
           1. इसके भड़काने वाले (12:13a)
           2. इसका उद्देश्य (12:13b)
        2. षड्यंत्र आगे बढ़ा (12:14-15a)
           1. उनकी सूक्ष्मता (12:14b)
           2. उनका विषय (12:14a)
           3. उनका फंदा (12:15b)
        3. षड्यंत्र विफल हो गया (12:15b-17)
           1. उसने क्या पहचाना (12:15b)
           2. उसने क्या माँगा (15:15c)
           3. उसने क्या उत्तर दिया (12:16-17)

एक सरल उदाहरण (12:16)

एक आश्चर्यजनक अनुप्रयोग (12:17)

उसका वचन (12:17a)

उनका आश्चर्य (12:17b)

* + 1. सामाजिक संदर्भ में (12:18-27)
       1. सदूकियों ने क्या इन्कार किया (12:18)
       2. सदूकियों ने क्या घोषणा की (12:19-23)
          1. व्यवस्था की अपील (12:19)
          2. तर्क की अपील (12:20-23)

उन्होंने जो दृष्टान्त बताया (12:20-23a)

उन्होंने जो बात रेखांकित की (12:23b)

* + - 1. सदूकियों ने क्या पाया (12:24-27)
         1. स्थिति पर प्रभु की महारत (12:24-25)

उसने क्या उजागर किया (12:24)

परमेश्वर के प्रेरित प्रकाशन के प्रति उनकी अज्ञानता (12:24a)

परमेश्‍वर के असीम संसाधनों के प्रति उनकी अज्ञानता (12:24b)

उसने क्या समझाया (12:25)

* + - * 1. पवित्रशास्त्र पर प्रभु की महारत (12:26-27)

पवित्रशास्त्र से उसकी आत्मविश्वासपूर्ण अपील (12:26-27a)

एक परिचित पाठ (12:26)

एक अद्भुत सत्य (12:27a)

पवित्रशास्त्र का उसका तीखा अनुप्रयोग (12:27b)

* + 1. आत्मिक संदर्भ में (12:28-34)
       1. पवित्रशास्त्र ने क्या कहा (12:28-31)
          1. शास्त्री का प्रश्न (12:28)

उसकी समझ (12:28a)

उसकी सावधानी (12:28b)

* + - * 1. शास्त्री के प्रश्न का उत्तर (12:29-31)

व्यवस्था की सर्वोच्च आज्ञा (12:29-30)

परमेश्वर का प्रकाशन (12:29)

परमेश्वर के प्रति प्रत्युत्तर (12:30)

व्यवस्था की अतिरिक्त आज्ञा (12:31)

एक महान पाठ (12:31a)

एक महान सत्य (12:31b)

* + - 1. शास्त्री ने क्या कहा (12:32-33)
         1. प्रशंसा का वचन (12:32a)
         2. टिप्पणी का वचन (12:32b-33)

पहली आज्ञा का पुनः कथन (12:32b-33a)

अगली आज्ञा का सुदृढ़ीकरण (12:33b)

* + - 1. उद्धारकर्ता ने क्या कहा (12:34)
         1. उसकी टिप्पणी ([12:34a-b](file:///Z:\Finished%20CROSS%20Goods\SOURCE\PhillipsCmty\ExpMark\source\%25server%25ref=Mark%2012:34) )

व्यक्ति की धारणा (12:34a)

व्यक्ति की स्थिति (12:34b)

* + - * 1. उसके आलोचक (12:34c)
  1. एक नाटकीय मुख्य वाक्य (12:35-40)
     1. बुद्धि का वचन (12:35-37)
        1. मसीह (12:35-37a)
           1. मन्दिर (12:35a)
           2. सत्य (12:35b-37a)

एक उचित उद्धरण (12:35b-36)

शास्त्रियों ने क्या कहा (12:35b)

पवित्रशास्त्र ने क्या कहा (12:36)

एक उलझा हुआ प्रश्न (12:37a)

* + - 1. भीड़ (12:37b)
    1. चेतावनी का एक वचन (12:38-40)
       1. शास्त्रियों का कपट (12:38-40a)
          1. उनकी लालसा (12:38-39)

जो वस्त्र वे दिखाते हैं (12:38a)

वह सम्मान जिसकी वे इच्छा रखते हैं (12:38b-39)

मार्ग पर (12:38b)

आराधनालय में (12:39a)

उनके सामाजिक कार्यक्रमों में (12:39b)

* + - * 1. उनके अपराध (12:40a-b)

उनकी निर्दयी लूटपाट (12:40a)

उनका पाखण्डी धर्म (12:40b)

* + - 1. शास्त्रियों की निंदा (12:40c)
  1. अमर सिद्धांत (12:41-44)
     1. जहाँ वह बैठा था (12:41a)
     2. जिसे उसने देखा (12:41b-42)
        1. धनी लोग (12:41b)
        2. विधवा (12:42)
     3. उसने क्या कहा (12:43-44)
        1. उसका मूल्यांकन (12:43)
        2. उसका स्पष्टीकरण (12:44)

**ख. यीशु ने क्या घोषणा की (12:1-44)**

**1. एक साहसी दृष्टांत (12:1-12)**

**क. इसकी जातीय अपील (12:1-9)**

हम *दाख की बारी के स्वामी से आरम्भ करते हैं:*

*फिर वह दृष्‍टान्तों में उनसे बातें करने लगा : “किसी मनुष्य ने दाख की बारी लगाई, और उसके चारों ओर बाड़ा बाँधा, और रस का कुण्ड खोदा, और गुम्मट बनाया; और किसानों को उसका ठेका देकर परदेश चला गया। (12:1)*

प्रभु के पास इन लोगों के लिये कोई संदेश नहीं था जो उसके विरुद्ध षड्यंत्र रच रहे थे, सिवाय आने वाले न्याय के। जिस क्षण उसने दाख की बारी का उल्लेख किया, उनके विचार यशायाह 5:1-7 और पुराने नियम के महान सुसमाचारी भविष्यद्वक्ता के दाख की बारी के दृष्टांत पर वापस चले गए। दाख की बारी, इतनी तैयार और संरक्षित और प्रावधानित, इस्राएली जाति थी। स्वामी परमेश्वर था। दाख की बारी ने परमेश्वर की सारी देखभाल का बदला खट्टे अंगूरों से दिया। इसके परिणामस्वरूप, इसे विनाश के लिये अन्यजातियों को सौंप दिया गया। यशायाह की भविष्यद्वाणी का “प्रिय” दाख की बारी के विनाश को बताता है - विनाश और बंधुआई, पहले अश्शूरियों के हाथों और फिर बेबीलोनियों के हाथों। वह विनाश रोमियों के हाथों दोहराया जाने वाला था। प्रभु अपने दृष्टांत में धर्मत्यागी किसानों के विनाश को दर्शाता है। उचित रूप से, यशायाह के “गीत” के बाद भयानक “विपत्तियों” की एक श्रृंखला आई (यशायाह 5:8, 11, 18, 20-22)। इसी रीति से, दाख की बारी के बारे में प्रभु के दृष्टांत के साथ भी उतनी ही भयानक “विपत्तियों” की एक श्रृंखला आई (मत्ती 23:13-39)।

इसलिये प्रभु इन दुष्ट लोगों का ध्यान दाख की बारी की ओर आकर्षित करता है, वह दाख की बारी जिसकी देखभाल और खेती उन्हें परमेश्वर के लिये करनी थी। बाइबल में तीन पौधे इस्राएली जाति के प्रतीक हैं- अंजीर, जैतून और दाखलता। दाखलता उस जाति का प्रतिनिधित्व करती है जैसा कि पुराने नियम के समय में था, उस समय तक जब उस जाति ने मसीह को अस्वीकार कर दिया था। जैतून (रोमियों 11 अध्याय) इस्राएल का प्रतिनिधित्व करता है जैसा कि आने वाले दिन में होगा जब अविश्वास का परदा उनकी आँखों से हट जाएगा और एक जाति के रूप में इब्रानी लोग अंत में यीशु को उद्धारकर्ता और प्रभु के रूप में पहचानेंगे और स्वीकार करेंगे और सहस्राब्दी राज्य में प्रवेश करेंगे। इस बीच, इस्राएल को अंजीर के पेड़ के रूप में देखा जाता है - एक ऐसा पेड़ जो अक्सर पाप और विफलता से जुड़ा होता है (उत्पत्ति 3:7; मत्ती 24:32-34; मरकुस 11:13-21)।

मसीह को अस्वीकार करने वाली महासभा के सदस्य वहाँ खड़े थे, और अच्छी तरह जानते थे कि दाख की बारी का यह दृष्टांत क्या दर्शाता है। यह उसी व्यक्ति के द्वारा दिया गया विनाश का निर्णय था जिसे वे चुनौती देने और जाँचने के लिये आए थे।

अगला ध्यान *दाख की बारी के निरीक्षकों* की ओर आकर्षित किया गया है(12:2-9):

*फिर फल के मौसम में उसने किसानों के पास एक दास को भेजा कि किसानों से दाख की बारी के फलों का भाग ले। (12:2)*

परमेश्वर ने इस दाखलता को मिस्र में परिपक्वता तक उगाया था, जहाँ इब्रानी परिवार एक आबादी वाली जाति के रूप में विकसित हुआ था। फिर उसने इस दाखलता को उठाया, इसे सीनै की रेत के पार ले गया, और इसे कनान की सुंदर और उपजाऊ भूमि में लगाया। उसने इसे चारों ओर से घेर लिया और इसकी रक्षा की, जिससे इस्राएल के अगुवों को सभी सम्भावित शत्रुओं से बचाव का एक निश्चित साधन मिल गया - स्वयं परमेश्वर। दाखलता के विकास के लिये मिट्टी उपजाऊ थी, और जलवायु अनुकूल थी। इस्राएली जाति के एक शक्तिशाली राज्य में विकसित होने के लिये हर प्रावधान किया गया था। परमेश्वर केवल यही चाहता था कि दाख की बारी, इस्राएली जाति में उसके निवेश पर उचित प्रतिफल मिले। वह उनकी विश्वासयोग्यता और प्रेम चाहता था, परन्तु ऐसा नहीं हो सका।

*पर उन्होंने उसे पकड़कर पीटा और छूछे हाथ लौटा दिया। फिर उसने एक और दास को उनके पास भेजा; उन्होंने उसका सिर फोड़ डाला और उसका अपमान किया। फिर उसने एक और को भेजा; उन्होंने उसे मार डाला। तब उसने और बहुतों को भेजा; उनमें से उन्होंने कुछ को पीटा, और कुछ को मार डाला। (12:3-5)*

आरम्भ से ही, इब्रानी लोग जिद्दी, हठीले और यहोवा, उनके परमेश्वर, जो कि दाख की बारी का असली स्वामी है, के दावों के प्रति शत्रुतापूर्ण थे। समय बीतने के साथ शत्रुता बढ़ती गई और हिंसा बढ़ती गई।

मूसा के समय से लेकर एलिय्याह के समय तक, लगातार विद्रोह और धर्मत्याग हुआ। जब एलिय्याह दृश्य में आया, तो अहाब ने उसे पकड़ने का आदेश-पत्र जारी किया, और इज़ेबेल उसे पकड़ने के लिये तरस गई। बेचारे नाबोत ने तब मामले को तूल दे दिया, जब उसने अपनी दाख की बारी को अहाब को बेचने से इन्कार कर दिया। इज़ेबेल ने उसकी ईमानदारी के लिये उसकी हत्या कर दी (1 राजाओं 21:1-26)।

इसी तरह, अहज्याह ने एलिय्याह को परेशान करने का प्रयत्न किया, परन्तु एलिय्याह की आदत के कारण वह सफल नहीं हो पाया, क्योंकि वह अपने शत्रुओं पर स्वर्ग से आग बरसाने का प्रयत्न करता था (2 राजाओं 1:1-12)। जब वह अदम्य भविष्यद्वक्ता को अपने सामने लाने में सफल हो गया, तो एलिय्याह ने शान्ति से उसे उसका विनाश पढ़कर सुनाया (13-18)।

एलिय्याह के उठाए जाने और एलीशा की मृत्यु के बाद, हालात अत्यधिक बुरे होते चले गए। परमेश्वर के भविष्यद्वक्ताओं के सताव की परिणति यशायाह की निर्मम और क्रूर हत्या में हुई, जिसके बारे में आमतौर पर माना जाता है कि उसे राजा मनश्शे के आदेश पर चीरकर मार डाला गया था (इब्रानियों 11:37)।

उत्तरी इस्राएल राज्य के पतन के साथ, धर्मत्याग और सताव का भार यहूदा के कंधों पर आ गया। यिर्मयाह की पीड़ाएँ इस अवधि में यहूदियों की निरंतर दुष्टता का एक स्पष्ट प्रमाण हैं।

बेबीलोन की बंधुआई से लौटने के बाद भी यह बहुत अलग नहीं था। जकर्याह को मन्दिर और वेदी के बीच में स्वदेश लौटे यहूदियों ने मार डाला था - जैसा कि प्रभु जल्द ही अपने शत्रुओं को याद दिलाने वाला था (मत्ती 23:33-35)। जकर्याह पुराने नियम का अंतिम शहीद था। उसके बाद, परमेश्वर ने मलाकी के माध्यम से केवल एक बार और बात की, और फिर वह चुप हो गया।

ऐसा था किसानों का इतिहास, एक ऐसा इतिहास जो अब सबसे बुरे धर्मत्याग में चरम पर पहुँच गया है।

*अब एक ही रह गया था, जो उसका प्रिय पुत्र था; अन्त में उसने उसे भी उनके पास यह सोचकर भेजा कि वे मेरे पुत्र का आदर करेंगे। (12:6)*

इस कहानी में पुत्र को पता होना चाहिए था कि वह एक खतरनाक मिशन पर जा रहा था। किसानों ने बार-बार साबित किया था कि वे कितने विद्रोही, बेईमान और हत्या करने वाले बदमाशों की भीड़ थे। फिर भी, अनुग्रह ने एक बार फिर न्याय का आना रोक दिया। दाख की बारी का स्वामी उन्हें एक और अवसर देगा। निश्चित रूप से, वे उसके पुत्र का सम्मान करेंगे! इसी तरह, जब प्रभु ने अनन्त काल से समय में कदम रखा, तो वह स्वयं अच्छी तरह से जानता था कि पालने से निकलने वाला मार्ग सीधे क्रूस की ओर जाता है।

अत: यह हुआ कि यीशु “हाथीदांत के महलों से निकलकर दुःख के संसार में” आया। वह आया! यह सब अनुग्रह था! वह परमेश्वर का एकलौता और प्रिय पुत्र था। उसने स्वयं को ऐसा घोषित किया (यूहन्ना 5:18-23)। पिता ने उसे ऐसा घोषित किया (मत्ती 3:17)। पतरस ने उसे ऐसा घोषित किया (मत्ती 16:14-17)। पवित्र आत्मा ने उसे ऐसा घोषित किया (भजन 2:7-9; यूहन्ना 3:16; इब्रानियों 1:8-14)। अब वह उस दिन मन्दिर में खड़ा था, अपने शत्रुओं का सामना कर रहा था, उन्हें शान्ति से एक कहानी सुना रहा था जिसमें उसने, बहुत स्पष्ट रूप से, एक बार फिर स्वयं को पिता का प्रिय पुत्र घोषित किया।

*पर उन किसानों ने आपस में कहा, ‘यही तो वारिस है; आओ, हम इसे मार डालें, तब मीरास हमारी हो जाएगी।’ और उन्होंने उसे पकड़कर मार डाला, और दाख की बारी के बाहर फेंक दिया। (12:7-8)।*

प्रभु ने अपने दृष्टांत को उसके अपरिहार्य निष्कर्ष पर पहुँचाया: किसान स्वामी के पुत्र की हत्या करेंगे। यह कितनी बड़ी मूर्खता है! यह कितना घमण्ड और अहंकार है! महासभा का भी कितना वर्णनात्मक वर्णन है - जैसा कि इसके वर्तमान महायाजक, हन्ना और कैफा के द्वारा दर्शाया गया है - वे दुष्ट, बेईमान, भ्रष्ट, हत्यारे व्यक्ति थे!

प्रभु उनके विचारों को जानता था और उनके हृदयों को पढ़ सकता था। उन्होंने पहले ही अपनी मंशाएँ पूरी तरह से स्पष्ट कर दी थीं और यही कारण था कि वे उसकी हत्या करने में क्यों हिचकिचा रहे थे (11:18)। प्रभु जानता था कि उसके शत्रुओं के हृदयों में अब जो कटु घृणा काम कर रही है, उसका केवल एक ही अंत हो सकता है। वे उसकी हत्या कर देंगे। वे उसे दाख की बारी से बाहर निकाल देंगे।

इससे उन्हें बहुत लाभ होगा। प्रभु जल्द ही अपने चेलों को युगों के पूर्ण परिवर्तन की घोषणा करने वाला था। ऊपरौठी कोठरी में, वह उन्हें बताएगा कि इस्राएली जाति पर केन्द्रित बातों की पूरी योजना बदलने वाली थी। *वह* अब *सच्ची* दाखलता था, और उसका *पिता* किसान था (यूहन्ना 15:1)। उसने अपने शत्रुओं को यह नहीं बताया। ऐसे सूअरों के सामने ऐसे मोती फेंकने का कोई अर्थ नहीं था - अपने स्वयं के भाव का उपयोग करते हुए (मत्ती 7:6)। उसने बस इन लोगों को उनके विनाश के बारे में पढ़कर सुनाया।

*“इसलिये दाख की बारी का स्वामी क्या करेगा? वह आकर उन किसानों का नाश करेगा, और दाख की बारी दूसरों को दे देगा। (12:9)*

उनका विनाश निश्चित था। वे सबसे बड़ा अपराध करने वाले थे। अब वे केवल न्याय की अपेक्षा कर सकते थे।

जहाँ तक दाख की बारी की बात है - वैसे, कलीसिया ने अब तक परमेश्वर की सभाओं में इसकी जगह ले ली है। पौलुस ने रोमियों को लिखी अपनी पत्री (अध्याय 9-11) में इसके पूरे महत्व पर चर्चा की है।[1]

**ख. इसका स्वाभाविक अनुप्रयोग (12:10-12)**

*क्या तुम ने पवित्रशास्त्र में यह वचन नहीं पढ़ा : ‘जिस पत्थर को राजमिस्त्रियों ने निकम्मा ठहराया था, वही कोने का सिरा हो गया; यह प्रभु की ओर से हुआ, और हमारी दृष्‍टि में अद्भुत है’!” (12:10-11)*

प्रभु अब भजन 118:22 से उद्धरण देता है, वह जिसे भजन गाती भीड़ ने एक या दो दिन पहले ही सुनाया था, जब उन्होंने यरूशलेम में उसके विजयी प्रवेश की जय-जयकार की थी (10:9)। महासभा उसे मृत्युदण्ड देने वाली थी और उसे क्रूस पर चढ़ाकर गाड़ने वाली थी। और यही उसका अंत होगा। नहीं, बिलकुल नहीं! पवित्रशास्त्र ने स्वयं उसकी आने वाली महिमा की घोषणा की है। कब्र उसे नहीं रोक पाएगी। वह वापस आ जाएगा, एक नये भवन का मुख्य सिरा, जिसके बारे में वे बिलकुल भी नहीं सोच सकते थे - कलीसिया!

कुछ ही महीनों के भीतर, पतरस ने इसी पवित्रशास्त्र को इन्हीं लोगों के सामने फेंक दिया, और उसी विचित्र अंधेपन के साथ उसी यीशु को अस्वीकार करने की उसी भयानक नीति का अनुसरण किया, जो अब ऊपर उठा लिया गया था और प्रेरितों, पवित्र आत्मा और कलीसिया के माध्यम से पृथ्वी पर अपना कार्य जारी रख रहा था (प्रेरितों 5:7-11)।

बाद में, पतरस ने अपनी पहली पत्री में परमेश्वर के द्वारा बनाए गए जीवित पत्थरों के बारे में लिखा, जो “एक आत्मिक घर” बन गए (1 पतरस 2:4-8)। इस्राएली जाति अपने पूर्वानुमानित विनाश की ओर आगे बढ़ेगा। परमेश्वर अपनी कलीसिया में एक दूर के भविष्य की ओर आगे बढ़ेगा।

दाख की बारी का दृष्टांत ऐसा ही था। धार्मिक अगुवों ने उसके अधिकार को चुनौती देने का प्रयत्न किया था। उसने उनके अधिकार को पूरी तरह से हटा दिया।

*तब उन्होंने उसे पकड़ना चाहा; क्योंकि समझ गए थे कि उसने उनके विरोध में यह दृष्‍टान्त कहा है। पर वे लोगों से डरे, और उसे छोड़ कर चले गए। (12:12)*

स्पष्ट है कि इस समय, धार्मिक अगुवों ने यह देखने के लिये इधर-उधर देखा कि क्या मन्दिर के सिपाहियों को बुलाना और प्रभु को पकड़वाना सुरक्षित होगा। पहले की तरह (11:18), अधिकारियों ने हिचकिचाहट दिखाई। लोग अभी भी यीशु के बारे में उत्सुक थे, और अंतिम वस्तु जो ये लोग चाहते थे वह दंगा भड़काना था। उन्हें अधिक अनुकूल अवसर की प्रतीक्षा करनी होगी।

वे क्रोधित होकर चले गए। वे यह समझने में काफी चतुर थे कि प्रभु ने उन्हें और उनकी दुष्टता को सार्वजनिक रूप से उजागर कर दिया था। उसने उन्हें उनकी अपेक्षा से कहीं अधिक दिया था। उन्हें सहयोगियों की आवश्यकता थी। उन्हें कुछ ऐसे विशेषज्ञ भी खोजने थे जो इस गलीली किसान को कुछ दोषपूर्ण कहने के लिये उकसाकर पकड़ सकें।

**2. जानबूझकर उकसाया गया (12:13-34)**

**क. धर्मनिरपेक्षता के संदर्भ में (12:13-17)**

ध्यान दें कि वह *षड्यंत्र कैसे रचा गया:*

*तब उन्होंने उसे बातों में फँसाने के लिये कुछ फरीसियों और हेरोदियों को उसके पास भेजा। (12:13)*

यहाँ “फँसाने” के लिये आए शब्द का अर्थ है “शिकार करना” या “फँसा लेना।” अब एक नया और अप्रत्याशित गठबंधन सामने आया, दो यहूदी सम्प्रदायों के बीच सुविधा के लिये विवाह, जिसमें बहुत कम या कुछ भी समान नहीं था। हेरोदियों ने रोमी जुए को स्वीकार कर लिया और कब्जा करने वाली राजकीय शक्ति के साथ सहयोग करने के तरीके खोजे। फरीसी रोमी लोगों से बहुत नाराज थे। दोनों पक्ष लगातार झगड़ते रहते थे। यह तथ्य कि वे एक साथ काम कर रहे थे, प्रभु पर नहीं छिपा होगा, जो लोगों के विचारों को पढ़ने में कुशल था।

इस बात पर भी ध्यान दें कि इस *षड्यंत्र को किस प्रकार आगे बढ़ाया गया* (12:14-15a):

*उन्होंने आकर उससे कहा, “हे गुरु, हम जानते हैं, कि तू सच्‍चा है, और किसी की परवाह नहीं करता; क्योंकि तू मनुष्यों का मुँह देख कर बातें नहीं करता, परन्तु परमेश्‍वर का मार्ग सच्‍चाई से बताता है। तो क्या कैसर को कर देना उचित है या नहीं? (12:14)*

उनके आरम्भिक शब्दों की भरपूर चापलूसी निश्चित रूप से प्रभु पर व्यर्थ गई। उसने उनके पाखण्ड को देखा। कोई अन्य व्यक्ति या समूह ईमानदारी से प्रश्न पूछ सकता था क्योंकि सभी ईमानदार लोगों को यह जानना चाहिए कि कलीसिया और राज्य के बीच की रेखा कहाँ खींची जाए। परन्तु ये लोग स्पष्ट रूप से दोमुँहे थे।

इस प्रश्न के निर्माण के पीछे स्पष्ट व्यंग्य है। वह एक निडर शिक्षक था। उसने यहूदी धार्मिक अगुवों, महासभा से प्रतियोगिता करने में संकोच नहीं किया था। निश्चित रूप से वह रोमी राजनीतिक अगुवों-कैसर, न्यायालय, रोमी राज्यपाल और, यदि आवश्यक हो, तो सेना से भी प्रतियोगिता करने में उतना ही साहसी होगा। इस चालाक निर्माण के बाद बिजली का झटका आया: “क्या कैसर को कर देना उचित है या नहीं?”

*हम दें, या न दें?” उसने उनका कपट जानकर उनसे कहा, “मुझे क्यों परखते हो? एक दीनार मेरे पास लाओ, कि मैं उसे देखूँ।” (12:15)*

यह जाल स्पष्ट था। यदि उसने कहा कि उन्हें कैसर को कर देना चाहिए, तो वह फरीसियों के शक्तिशाली सम्प्रदाय को नाराज कर देगा और मसीह होने के अपने दावे को कमजोर कर देगा। आम लोगों के मन में, प्रतिज्ञा किए गए मसीह को अपना स्वयं का राज्य स्थापित करना था, जिसका अर्थ था, नि:संदेह, रोमी सत्ता से छुटकारा पाना। दूसरी ओर, यदि उसने कहा कि रोमी कर प्रणाली गैरकानूनी थी और उन्हें रोम को कर नहीं देना चाहिए, तो वह हेरोदियों के हाथों में खेल रहा होगा, जो रोमी अधिकारियों के सामने उसकी निंदा करेंगे।

उसने कहा, “एक दीनार मेरे पास लाओ!” “पैसा” एक दीनार था, जो कम मूल्य का एक छोटा सिक्का था। वह उस समय मन्दिर में था, जहाँ केवल यहूदी सिक्के ही वैध मुद्रा थे। सम्भवतः रोमी सिक्का प्रस्तुत किए जाने से पहले खोज की गई थी। संयोग से, यह प्रभु की अपनी व्यक्तिगत् निर्धनता के बारे में कुछ कहता है, कि उसके पास स्वयं वह सिक्का नहीं था जिसकी उसे इस दृष्टांत के लिये आवश्यकता थी।

इसके अलावा, ध्यान दें *कि कैसे उस षड्यंत्र को विफल किया गया* (12:15-17):

*वे ले आए, और उसने उनसे कहा, “यह छाप और नाम किसका है?” उन्होंने कहा, “कैसर का।” यीशु ने उनसे कहा, “जो कैसर का है वह कैसर को, और जो परमेश्‍वर का है परमेश्‍वर को दो।” तब वे उस पर बहुत अचम्भा करने लगे। (12:16-17)*

प्रभु ने वह सिक्का लेकर देखा, उसे अपने हाथ में लेकर दोनों तरफ से जाँचने के लिये पलटा। नि:संदेह, वह अच्छी तरह से जानता था कि उस सिक्के पर क्या उकेरा गया था। एक तरफ रोमी कैसर की छाप थी। दूसरी तरफ एक नाम था।

उसने ऊपर देखा। “यह किसकी छाप है?” उसने पूछा। “किसका नाम है?”

उन्होंने अनिच्छा से कहा, “कैसर का।” फिर उसका अद्वितीय उत्तर आया: “जो कैसर का है वह कैसर को, और जो परमेश्‍वर का है परमेश्‍वर को दो।” उन्होंने ऐसा कुछ पहले कभी नहीं सुना था।

वे “अचम्भा करने लगे।” कुछ पाण्डुलिपियों में शब्द है एकथौमाज़ो - “अत्यधिक आश्चर्य करने लगे।” प्राप्त पाठ का यह शब्द *अचम्भा करने लगे* अपूर्ण काल में थाउमाज़ो है, जिसका अर्थ है निरंतर आश्चर्य करना - वे इससे उबर नहीं पाए! जो जाल उन्होंने उसके लिये बिछाया था, उससे वह पूरी तरह से बच गया था।

**ख. सामाजिक संदर्भ में (12:18-27)**

ध्यान दें *कि सदूकियों ने किस बात से इन्कार किया:*

*फिर सदूकियों ने भी, जो कहते हैं कि मरे हुओं का जी उठना है ही नहीं, उसके पास आकर उस से पूछा। (12:18)*

सदूकियों का फरीसियों से झगड़ा था। सदूकियों ने इस बात से इन्कार किया कि “मौखिक व्यवस्था”, जो रब्बियों और फरीसियों को बहुत प्रिय थी, उसमें कोई ईश्वरीय अधिकार था। हालाँकि, वे यहीं नहीं रुके। उन्होंने पुनरुत्थान, आत्माओं और स्वर्गदूतों के अस्तित्व और सामान्य रूप से अलौकिकता के तथ्य को भी नकार दिया। हालाँकि, उन्होंने लिखित व्यवस्था के अधिकार को बनाए रखा। अब प्रभु को उनके छोटे आकार में लाने का प्रयत्न करने की बारी उनकी थी।

ध्यान दें *कि सदूकियों ने क्या घोषणा की थी* (12:19-23):

*“हे गुरु, मूसा ने हमारे लिये लिखा है कि यदि किसी का भाई बिना सन्तान मर जाए और उस की पत्नी रह जाए, तो उसका भाई उसकी पत्नी से विवाह कर ले और अपने भाई के लिये वंश उत्पन्न करे। (12:19)*

सदूकियों ने व्यवस्थाविवरण 25:5-6 से उद्धरण दिया। मूसा की व्यवस्था में विधवा को उसके मृत पति के भाई को सौंपने का प्रावधान था। उसे उससे विवाह करके अपने परिवार में ले जाना था ताकि वह अपनी पत्नियों में से एक के रूप में उससे प्रेम करे और उसकी देखभाल करे। एक वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित किया गया था। इस नये मिलन से उत्पन्न हुए बच्चे का नाम मरे हुए भाई के नाम पर रखा जाना था, इस प्रकार उसका नाम इस्राएल में जीवित रहेगा। इस व्यवस्था ने मरे हुए भाई की सम्पत्ति को भी परिवार के भीतर रखा – जो इस्राएल के भूमि कानूनों के अधीन एक महत्वपूर्ण विचार था।

हालाँकि, यह व्यवस्था मूसा की व्यवस्था से भी बहुत पुरानी है, इसकी जड़ें गोत्रों के रीति-रिवाजों में हैं। इस नियम ने आश्वासन दिया कि प्रभु यहूदा के गोत्र में उत्पन्न हुआ (उत्पत्ति 38:6-30; मत्ती 1:3)। हम इस व्यवस्था को फिर से काम करते हुए देखते हैं, इस बार मूसा की व्यवस्था की आड़ में, रूत के मामले में। फिर से, इसने आश्वासन दिया कि प्रभु यहूदा से उत्पन्न होगा (रूत 2-4 अध्याय)।

इस व्यवस्था में कुछ कमियाँ हो सकती हैं। इसमें शामिल पक्षों की व्यक्तिगत् भावनाओं का कोई हिसाब नहीं रखा गया। यहूदा के मामले में लालसा प्रबल थी; बोअज के मामले में, यह प्रेम और आपसी सम्मान था। परन्तु, अपनी सभी सीमाओं के बावजूद, यह व्यवस्था परोपकारी था - यह कितनी परोपकारी है, यह मूर्तिपूजक लोगों के रीति-रिवाजों के साथ मापा जा सकता है। जब कोई भारतीय वीर मर जाता था, तो लोग नयी विधवा से उसके दिवंगत् पति की सम्पत्ति लूट लेते थे; और, यदि वह इतनी तिरस्कृत होती थी कि उसे किसी रिश्तेदार के परिवार में नहीं रखा जा सकता था, तो उसे भेड़ियों के द्वारा मारे जाने या मौसम के सम्पर्क में आने के लिये सड़क के किनारे छोड़ दिया जाता था। कुछ मूर्तिपूजक संस्कृतियों में विधवा को उसके पति की चिता पर जला दिया जाता था या उसे उसके पति के शव के साथ, जीवित या मरा हुआ, गाड़ दिया जाता था। सदियों से हिंदू विधवाओं की दुर्दशा उस धर्म के लिये एक निंदनीय अभियोग रही है।

अत:, सदूकी एक काल्पनिक, संदेहात्मक और उपहासपूर्ण मामले के साथ यीशु के पास आए, जिसके द्वारा वे प्रभु को चुनौती दे सकें और मरे हुओं के पुनरुत्थान के अपने तर्कवादी इन्कार को उचित ठहरा सकें।

*सात भाई थे। पहला भाई विवाह करके बिना सन्तान मर गया। तब दूसरे भाई ने उस स्त्री से विवाह कर लिया और बिना सन्तान मर गया; और वैसे ही तीसरे ने भी किया। और सातों से सन्तान न हुई। सब के पीछे वह स्त्री भी मर गई। अत: जी उठने पर वह उनमें से किस की पत्नी होगी? क्योंकि वह सातों की पत्नी हो चुकी थी।” (12:20-23)*

इस बेचारी विधवा की कल्पना करें। निश्चित रूप से सम्भावना थी कि यह कोई काल्पनिक मामला नहीं था, बल्कि यह वास्तव में हुआ था। हम विधवा को उसके पति के अंतिम संस्कार से घर लौटते हुए देखते हैं। वह अभी भी जवान है, शायद अभी भी काफी आकर्षक है। हो सकता है कि वह अपने देवरों को पसंद करे या न करे, परन्तु यह विचार कोई मायने नहीं रखता। वह अपने आप ही अगले देवर से विवाह करके उसके घर में ले जाई जाती है। उस दूसरे विवाह के बारे में सैकड़ों कहानियाँ लिखी जा सकती हैं। वह किस तरह की स्त्री थी? उसका देवर किस तरह का व्यक्ति था? क्या उसकी दूसरी पत्नियाँ थीं? क्या वह प्रेम करने वाला था या कामुक था? क्या वह क्रूर था या दयालु था? क्या वह उसे पसंद करता था या उससे घृणा करता था? वह किस तरह के व्यवसाय में था? क्या वह उदार था या स्वार्थी था? यह विवाह कितने समय तक चला?

फिर दूसरा अंतिम संस्कार हुआ और तीसरा पति, उसके बाद तीसरा अंतिम संस्कार और चौथा पति। त्रासदी, पीड़ा, विजय और आँसुओं की एक के बाद एक कहानियाँ लिखी जा सकती हैं।

जैसे-जैसे एक के बाद दूसरे पति को गाड़ा जाता है, वैसे-वैसे उसके बाद के पति भी आशंकित होने लगते हैं - हमारे पास यहूदा और तामार (उत्पत्ति 38 अध्याय) की कहानी में ऐसी ही स्थिति का एक दर्ज मामला है। इस स्त्री के बारे में ऐसा क्या है? कैसे उसके पति इतनी अशुभ नियमितता से मरते हैं? क्या उस पर गलत काम करने का संदेह था? शायद सातवें स्थान वाले पति को अपने मर चुके आधा दर्जन बड़े भाइयों की जगह लेने के लिये बहुत साहस की आवश्यकता थी।

परन्तु इस बार भी वही परिणाम रहा और फिर भी बिलकुल अलग। इस बार भी इस विवाह से कोई सन्तान नहीं हुई, परन्तु इस बार लम्बे समय से पीड़ित स्त्री की स्वयं ही मृत्यु हो गई।

इस कहानी के लिये इतना ही है! ऐसा हो सकता था। परन्तु फिर व्यंग्यात्मक मुख्य वाक्य आया: “अत: जी उठने पर वह उनमें से किस की पत्नी होगी? क्योंकि वह सातों की पत्नी हो चुकी थी।”

यह ऐसी कमजोर नींव पर था कि इन “बुद्धिजीवियों” ने पुनरुत्थान के महान बाइबल आधारित सत्य को अस्वीकार कर दिया और उसका उपहास किया। इसी तरह, अज्ञेयवादियों के अधिकांश तर्क विकृति, अज्ञानता और स्व-इच्छाधारी दम्भ पर आधारित हैं। प्रभु सदूकियों के अविश्वास से प्रभावित नहीं था; यह उथला और घटिया दोनों था। यदि उनके द्वारा उद्धृत ऐसा कोई मामला अस्तित्व में होता , तो उसका हृदय उस बेचारी स्त्री और उसके उत्तराधिकारी पतियों दोनों के लिये दुःखी होता। वह उस हल्केपन के लिये कोई औचित्य नहीं देख सकता था जिसके साथ कहानी बताई जा सकती थी। जहाँ तक उनके निष्कर्ष का प्रश्न है कि उन्होंने इस कहानी के माध्यम से पुनरुत्थान के तथ्य को गलत साबित कर दिया था, उसने तुरन्त उनकी गलती को उजागर कर दिया।

इसके अलावा, ध्यान दें *कि सदूकियों ने क्या खोज की थी* (12:24-27):

*यीशु ने उनसे कहा, “क्या तुम इस कारण से भूल में नहीं पड़े हो कि तुम न तो पवित्रशास्त्र ही को जानते हो, और न ही परमेश्‍वर की सामर्थ्य को? (12:24)*

परमेश्वर के वचन के प्रति अज्ञानता सभी अविश्वास की जड़ में है। परमेश्वर की सामर्थ्य के प्रति अज्ञानता भी ऐसी ही है। ये निंदक लोग परमेश्वर के वचन के प्रति अज्ञानी थे। पुराने नियम के वचन, उनकी बाइबल ने स्पष्ट रूप से पुनरुत्थान के सिद्धांत को सिखाया।

उदाहरण के लिये, अय्यूब के सभी दु:खों के बीच उसके शानदार विस्फोट पर विचार करें: “भला होता, कि मेरी बातें लिखी जातीं; भला होता, कि वे पुस्तक में लिखी जातीं, और लोहे की टाँकी और सीसे से वे सदा के लिये चट्टान पर खोदी जातीं। मुझे तो निश्‍चय है कि मेरा छुड़ानेवाला जीवित है, और वह अन्त में पृथ्वी पर खड़ा होगा; और अपनी खाल के इस प्रकार नष्‍ट हो जाने के बाद भी, मैं शरीर में होकर परमेश्‍वर का दर्शन पाऊँगा। उसका दर्शन मैं आप अपनी आँखों से अपने लिये करूँगा, और कोई दूसरा नहीं। यद्यपि मेरा हृदय अन्दर ही अन्दर चूर चूर भी हो जाए, तौभी मुझ में तो धर्म का मूल पाया जाता है!” (अय्यूब 19:23-28)। अय्यूब जल्द ही मर जाएगा, बिलदाद की इस व्यंग्यात्मक भविष्यद्वाणी के प्रति अय्यूब का यह उत्तर शानदार था। विश्वासी के शारीरिक पुनरुत्थान पर इससे बड़ा कोई कथन तब तक मौजूद नहीं है जब तक कि हम कुरिन्थियों को लिखी पौलुस की पहली पत्री के पंद्रहवें अध्याय तक नहीं पहुँच जाते।

दानिय्येल के उल्लेखनीय वचन पर भी विचार करें: “जो भूमि के नीचे सोए रहेंगे उन में से बहुत से लोग जाग उठेंगे, कितने तो सदा के जीवन के लिये, और कितने अपनी नामधराई और सदा तक अत्यन्त घिनौने ठहरने के लिये।” (दानिय्येल 12:2)।

इसके अलावा, पुराने नियम में पुनरुत्थान के तीन उल्लेखनीय मामले दर्ज हैं, एक एलिय्याह से जुड़ा है और दो एलीशा से (1 राजाओं 17:10-24; 2 राजाओं 4:16-37; 13:20-21)। इसलिये सदूकियों के द्वारा पुनरुत्थान के तथ्य को नकारना, उनके लिये परमेश्वर के वचन को नकारना था - जो कि पूरी तरह से जानबूझकर की गई अज्ञानता के कारण था।

परन्तु उन्होंने परमेश्वर की सामर्थ्य को भी नकार दिया। आखिर वे किस तरह के परमेश्वर की उपासना करते थे, एक ऐसा परमेश्वर जो मरे हुओं को जीवित नहीं कर सकता था? उन्होंने अपने लिये कितना बेचारा, छोटा सा परमेश्वर गढ़ लिया था, एक ऐसा परमेश्वर जो उनसे बड़ा नहीं था - जो आज तथाकथित “उदारवादियों” का परमेश्वर है! एक परमेश्वर जो आकाशगंगाएँ बना सकता है, वह ऐसा परमेश्वर नहीं है जिसे शारीरिक मृत्यु के तथ्य से रोका जा सके! एक परमेश्वर जो पृथ्वी की मिट्टी से एक शरीर बना सकता है (एक ऐसा शरीर जो इतना जटिल है कि आधुनिक विज्ञान भी इसके रहस्यों के बारे में बहुत कम जानता है); उस शरीर को जीवन दे सकता है; उसे बुद्धि, भावनाएँ और इच्छाशक्ति दे सकता है; और उसे अपना आत्मा दे सकता है, वह ऐसा परमेश्वर नहीं है जिसे मृत्यु से रोका जा सके। यह उतना ही उल्लेखनीय है कि हम *फिर से* जीवन बिताएँ जितना कि यह कि हम जीवन बिताएँ! सदूकी वास्तव में संकीर्ण सोच वाले थे।

*क्योंकि जब वे मरे हुओं में से जी उठेंगे, तो वे न विवाह करेंगे और न विवाह में दिए जाएँगे, परन्तु स्वर्ग में दूतों के समान होंगे। (12:25)*

प्रभु अब सदूकियों के संदेह की मूल समस्या को सम्बोधित करता हैं। वह यह नहीं कहता कि “*यदि* वे मरे हुओं में से जी उठेंगे” बल्कि वह कहता है, “*जब* वे जी उठेंगे।” इसमें कोई संदेह नहीं है। वह स्वयं “पुनरुत्थान और जीवन” था (यूहन्ना 11:25-26)। वह पहले ही दो लोगों को मरे हुओं में से जीवित कर चुका था (मरकुस 5:22-43; लूका 7:11-17)। ऐसा कोई तरीका नहीं था कि सदूकियों को इन घटनाओं के बारे में पता न हो। इसके अलावा, वह एक ऐसे व्यक्ति को जीवित करने जा रहा था, जो यीशु के आने तक मर चुका होगा और इतने समय पहले ही गाड़ दिया गया होगा कि उसका शरीर सड़ना आरम्भ हो जाएगा (यूहन्ना 11:17-44)। अत: सदूकियों का अविश्वास जानबूझकर किया गया अविश्वास था। पूरे यरूशलेम को इस आगामी पुनरुत्थान के बारे में पता चल जाएगा।

जहाँ तक उस मामले की बात है जिसे उन्होंने पुनरुत्थान के इन्कार के बड़े आधार के रूप में उद्धृत किया था, वह भी अज्ञानता पर आधारित था। तथ्य यह है कि स्वर्ग में कोई विवाह नहीं होता। स्वर्गदूतों को अपनी प्रजाति को बढ़ाने की आवश्यकता नहीं है। न ही स्वर्ग में उद्धार पाने वालों को। सम्पूर्ण प्रजनन प्रणाली अस्थायी और सांसारिक है, जो मृत्यु के कारण आवश्यक है और प्रजाति को बढ़ाने के लिये तैयार की गई है। स्वर्ग में, हमारे सभी सम्बन्ध बदल जाएँगे। प्रभु ने इन बातों के बारे में पूर्ण अधिकार और विश्वास के साथ बात की। आखिरकार, स्वर्ग उसका घर था। वह वहाँ से आया था और जल्द ही वहाँ वापस जाने वाला था। मसीह की आत्म-विश्वासपूर्ण शिक्षा के साथ रखे जाने पर सदूकियों और उदार ईश-विज्ञान का अविश्वास कितना तुच्छ और दरिद्र प्रतीत होता है!

हालाँकि, प्रभु इन कुटिल मूर्खों के साथ अभी भी पूरी तरह से नहीं जुड़ा था, जैसा कि पौलुस ने कहा था (रोमियों 1:22)।

*मरे हुओं के जी उठने के विषय में क्या तुम ने मूसा की पुस्तक में झाड़ी की कथा में नहीं पढ़ा कि परमेश्‍वर ने उससे कहा, ‘मैं अब्राहम का परमेश्‍वर, और इसहाक का परमेश्‍वर, और याकूब का परमेश्‍वर हूँ’? परमेश्‍वर मरे हुओं का नहीं वरन् जीवतों का परमेश्‍वर है; अत: तुम बड़ी भूल में पड़े हो।” (12:26-27)*

आत्मा की तलवार के एक तीखे वार से प्रभु ने उनके पूरे मामले को ध्वस्त कर दिया। जब परमेश्वर ने जलती हुई झाड़ी के पास मूसा से बात की, तो याकूब 200 वर्ष से मरा हुआ था, इसहाक 225 वर्ष से मरा हुआ था, और अब्राहम 330 वर्ष से मरा हुआ था। मुद्दा यह था कि *वे बिलकुल भी मरे नहीं थे।* वे पूरी तरह से जीवित थे। वास्तव में, वे तब भी जीवित थे जब यीशु ने सदूकियों के तर्क को ध्वस्त कर दिया। बदला हुआ भिखारी, लाज़र, महिमा में अब्राहम के साथ था, और नरक में धनी मूर्ख ने न केवल अब्राहम को देखा, बल्कि उससे विनती भी की और उसके साथ बहस भी की (लूका 16:19-31)। यीशु इसके बारे में सब कुछ जानता था; भ्रमित सदूकियों को इसके बारे में कुछ भी पता नहीं था।

*यीशु ने कहा, “अत: तुम बड़ी भूल में पड़े हो।”* इसमें *तुम* शब्द पर जोर डाला गया है। जानबूझकर अंधा होना क्षमा करने योग्य नहीं है। पुनरुत्थान का प्रमाण इन लोगों के लिये उपलब्ध था, जैसा कि सभी के लिये उपलब्ध है, वचनों में। अंतिम विश्लेषण में, बुद्धिवाद एक मानसिक समस्या नहीं बल्कि एक नैतिक समस्या है। ऐसा नहीं है कि ऐसे लोग विश्वास नहीं कर सकते; बल्कि ऐसा है कि वे विश्वास नहीं करेंगे। यह सबसे बड़ी गलती है।

**ग. आत्मिक संदर्भ में (12:28-34)**

**(1) पवित्रशास्त्र ने क्या कहा (12:28-31)**

*शास्त्रियों में से एक ने आकर उन्हें विवाद करते सुना, और यह जानकर कि उसने उन्हें अच्छी रीति से उत्तर दिया, उससे पूछा, “सबसे मुख्य आज्ञा कौन सी है?” (12:28)*

हम नहीं जानते कि यह व्यक्ति उन शास्त्रियों में से एक था या नहीं, जिन्होंने कुछ समय पहले प्रभु के सेवा करने के अधिकार को चुनौती दी थी (11:27)। ऐसा लगता है कि वह उन अन्य लोगों की तुलना में अधिक ईमानदार था, जिन्होंने इस दिन प्रभु को चुनौती दी थी। यह शास्त्री फरीसियों के सम्प्रदाय से सम्बन्धित था, और वह स्पष्ट रूप से प्रभु के द्वारा प्रतिद्वंद्वी सदूकियों से निपटने की योग्यता से संतुष्ट था।

शास्त्रियों का एक समूह पूरे पवित्रशास्त्र में यहाँ-वहाँ दिखाई देता है। आरम्भिक शास्त्रियों ने दाऊद और सुलैमान के सचिव के रूप में कार्य किया (2 शमूएल 8:17; 20:25; 1 राजाओं 4:3)। हिजकिय्याह के समय तक, उन्होंने पुराने अभिलेखों को लिपिबद्ध किया और वे अपनी विद्वता एवं व्यवस्था की व्याख्या दोनों के लिये जाने जाते थे। वे अपनी बुद्धि का बखान करते थे (यिर्मयाह 8:8), और बेबीलोन की बंधुआई के बाद स्वदेश लौटने वालों के बीच वे एक प्रमुख शक्ति थे। एज़्रा एक शास्त्री था। उसने स्वयं को बाइबल के पाठ का सावधानीपूर्वक अध्ययन करने के लिये समर्पित कर दिया और इसे लिपिबद्ध करने के लिये नियम विकसित किए। समय के साथ, शास्त्रियों के वचनों ने पवित्रशास्त्र के वचनों पर प्रधानता ले ली। मसीह के समय तक, उनकी चालाकी स्पष्ट रूप से उन चतुर चालों में स्पष्ट हो गई थी जो उन्होंने परमेश्वर की व्यवस्था के द्वारा लगाए गए सबसे सरल कर्तव्यों को दरकिनार करने के लिये बनाई थीं (मत्ती 15:1-6; 23:16-23)।

एक सामान्य शास्त्री ने तेरह वर्ष की आयु में अपना प्रशिक्षण आरम्भ किया। वह यरूशलेम जाता था और रब्बियों की पाठशालाओं में से एक में दाखिला लेता था। हालाँकि, जब तक वह तीस वर्ष का नहीं हो गया, तब तक उसे अपने पद पर नियुक्त नहीं किया गया था। सफल शास्त्री देश में उच्च पदों पर पहुँचे। वे व्यवस्था के विद्वान और पारिवारिक वकील थे। उनमें से कुछ जो इतने प्रमुख नहीं थे, उन्होंने पवित्रशास्त्र की प्रतिलिपि बनाने का काम किया। अन्य कानून के जानकार बन गए और कानूनी दस्तावेज, बिक्री अनुबंध आदि लिखने के लिये उपलब्ध थे। एक वर्ग के रूप में शास्त्री सार्वजनिक मान्यता के लिये जुनूनी थे और औपचारिक समारोहों में प्रमुख स्थान दिए जाने को पसंद करते थे। उन्हें बाज़ार में अभिवादन किया जाना और प्रभावशाली उपाधियों से पुकारा जाना पसंद था। मसीह के समय तक, वे एक करीबी, वंशानुगत जाति बन गए थे। कोई भी याजक उनसे प्रतियोगिता नहीं कर सकता था, इसलिये कई याजक शास्त्रियों में शामिल हो गए।

इन विद्वानों ने आपस में इस बात पर बहस की कि कौन सी आज्ञा सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। यहूदियों ने मूसा की लिखित व्यवस्था की 613 आज्ञाओं को मान्यता दी। प्रारम्भिक दिनों में, औपचारिक कानूनों को सबसे महत्वपूर्ण माना जाता था। बाद में लिखने वाले भविष्यद्वक्ताओं ने नैतिक कानूनों को महत्व दिया। यीशु के दिनों में, शास्त्रियों और फरीसियों ने सब्त के पालन, दशमांश और व्यवस्था की आहार सम्बन्धी आवश्यकताओं को सबसे अधिक महत्व दिया; हालाँकि, उन्होंने न्याय, नैतिकता और सत्य के अधिक महत्वपूर्ण पहलुओं की उपेक्षा की।

ऐसा लगता है कि यह शास्त्री इस स्थिति से असंतुष्ट था। वह प्रभु को फँसाने का प्रयत्न नहीं कर रहा था; ऐसा लगता है कि वह वास्तव में प्रभु की राय जानने में रूचि रखता था।

*यीशु ने उसे उत्तर दिया, “सब आज्ञाओं में से यह मुख्य है : ‘हे इस्राएल सुन! प्रभु हमारा परमेश्‍वर एक ही प्रभु है, और तू प्रभु अपने परमेश्‍वर से अपने सारे मन से, और अपने सारे प्राण से, और अपनी सारी बुद्धि से, और अपनी सारी शक्‍ति से प्रेम रखना।’ (12:29-30)*

प्रभु ने व्यवस्थाविवरण 6:4-5 से उद्धरण दिया। केवल एक ही परमेश्वर है। प्रभु ने उस सरल तथ्य को दोहराया जो पूरी मूसा की व्यवस्था के पीछे है और जो दस आज्ञाओं की पहली आज्ञा का आधार है। हालाँकि, प्रभु ने इस शास्त्री से निपटने में दस आज्ञाओं का सहारा नहीं लिया। उसने इस महान बुनियादी सत्य का हवाला दिया कि परमेश्वर ही परमेश्वर है, और केवल वही परमेश्वर है। यहूदी शास्त्रियों ने इस सत्य को लिखा और इसे अपने साथ एक छोटे से डिब्बे में बांधकर माथे या हाथ पर बाँधकर ले गए।

केवल एक ही परमेश्वर है। उसका नाम “प्रभु” (यहोवा) है। यीशु ने शास्त्री को याद दिलाया कि उसे व्यक्ति के जीवन में इतनी प्रभुता और सर्वोच्चता से सिंहासन पर विराजमान होना चाहिए कि हर भावना परमेश्वर-केंद्रित भावना हो, हर विचार परमेश्वर-केंद्रित विचार हो, हर निर्णय परमेश्वर-केंद्रित निर्णय हो, और हर कार्य परमेश्वर-केंद्रित कार्य हो। इस प्रकार सम्पूर्ण अस्तित्व परमेश्वर में केन्द्रित होना चाहिए, जिसे अपनी पूरी सामर्थ्य से प्रेम और सेवा करनी चाहिए।

*और दूसरी यह है, ‘तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना।’ इससे बड़ी और कोई आज्ञा नहीं।” (12:31)*

इस बार, प्रभु ने लैव्यव्यवस्था 19:18 से उद्धरण दिया। परमेश्वर के प्रति हमारे प्रेम के बाद दूसरे स्थान पर हमारे साथियों के प्रति हमारा प्रेम होना चाहिए। मूसा की व्यवस्था को दस आज्ञाओं में सारांशित किया गया था। यीशु ने अब इसे दो आज्ञाओं में घटा दिया। प्रेम ही व्यवस्था को पूरा करना है (रोमियों 13:8-10)।

**(2) शास्त्री ने क्या कहा (12:32-33)**

*शास्त्री ने उससे कहा, “हे गुरु, बहुत ठीक! तू ने सच कहा कि वह एक ही है, और उसे छोड़ और कोई नहीं। और उससे सारे मन, और सारी बुद्धि, और सारे प्राण, और सारी शक्‍ति के साथ प्रेम रखना; और पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना, सारे होमबलियों और बलिदानों से बढ़कर है।” (12:32-33)*

यह इस विशेष शास्त्री के हृदय का एक उल्लेखनीय प्रकाशन था। उसने प्रभु के वचनों का हृदय से समर्थन करते हुए अपनी टिप्पणी भी जोड़ी। यहाँ “विवेकपूर्ण” के लिये प्रयुक्त शब्द का अर्थ है कि उसने बुद्धिमानी से उत्तर दिया। स्पष्ट है, उसके पास अपना मन था। वह उस धनी जवान शासक से बेहतर स्थिति में था जिसने अपने धन को अपने मार्ग में आने दिया, और यह शास्त्री परमेश्वर के राज्य से दूर नहीं था, परन्तु वह अभी तक परमेश्वर के राज्य में नहीं था। इसलिये, यह छिपी हुई चेतावनी थी। उस धनी जवान शासक ने अपने धन को अपने मार्ग में आने दिया। इस शास्त्री को अपने मन को अपने मार्ग में आने देने का खतरा था। परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के लिये, उसे राजा के प्रति निष्ठा की प्रतिज्ञा करनी चाहिए। और राजा ठीक उसी समय वहाँ से गुजर रहा था, उन सभी के लिये मरने के लिये क्रूस की ओर जा रहा था जो यीशु के द्वारा उद्धृत और व्याख्या की गई व्यवस्था का पालन करने में विफल रहे थे।

फिर किसी ने प्रभु के साथ मौखिक तलवारें पार करने का साहस नहीं किया। फिर भी, प्रभु जानता था कि व्यवस्था के बलिदानों और भेंटों के सापेक्ष महत्व के बारे में प्रश्न वास्तव में केवल अतिरिक्त मामले थे। यदि कोई व्यक्ति परमेश्वर और अपने पड़ोसी से वैसा ही प्रेम करता है जैसा उसे करना चाहिए, तो किसी भी अन्य आज्ञा की आवश्यकता नहीं होगी।

वह और भी आगे जा सकता था। अपने अपराध और निराशा में, दाऊद ने अपनी सख्त आवश्यकता में पहचाना कि पूरी औपचारिक व्यवस्था उसकी बिलकुल भी सहायता नहीं कर रही थी (भजन 51:16-17)। इसके विपरीत, उसे व्यवस्था के बलिदानों के द्वारा प्रदान धर्मी ठहराने के अलावा किसी और साधन की आवश्यकता थी (भजन 32:1-2)।

**(3) उद्धारकर्ता ने क्या कहा (12:34)**

*जब यीशु ने देखा कि उसने समझ से उत्तर दिया, तो उससे कहा, “तू परमेश्‍वर के राज्य से दूर नहीं।” और किसी को फिर उससे कुछ पूछने का साहस न हुआ। (12:34)*

प्रभु ने अपने आलोचकों को चुप करवा दिया था। समझदार शास्त्री को उत्तर मिल गया था। हालाँकि, कई प्रश्न अभी भी हवा में तैर रहे थे। उदाहरण के लिये, शास्त्री शायद सोच रहा था कि प्रभु के यह कहने का क्या अर्थ था कि वह परमेश्वर के राज्य से दूर नहीं था।

शास्त्री इस बात पर सहमत थे कि मसीह दाऊद का पुत्र होगा। वे इस तथ्य के लिये आसानी से वचन दे सकते थे (2 शमूएल 7:8-16), अत: उनके पास इस बारे में कोई विवाद नहीं था। यीशु स्वयं वह “दाऊद का पुत्र” था जिसके बारे में उन्होंने बात की थी (मत्ती 1:1-16)। मन्दिर में रखे वंशावली अभिलेखों का निरीक्षण करके, उस तथ्य की पुष्टि की जा सकती थी। परन्तु उस मुद्दे का एक दूसरा पक्ष भी था, जिसका शास्त्रियों के पास कोई उत्तर नहीं था।

**3. एक नाटकीय मुख्य वाक्य (12:35-40)**

**क. बुद्धि का वचन (12:35-37)**

*फिर यीशु ने मन्दिर में उपदेश करते हुए यह कहा, “शास्त्री कैसे कहते हैं कि मसीह दाऊद का पुत्र है? दाऊद ने आप ही पवित्र आत्मा में होकर कहा है : ‘प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा, “मेरे दाहिने बैठ, जब तक कि मैं तेरे बैरियों को तेरे पाँवों की पीढ़ी न कर दूँ।”’ दाऊद तो आप ही उसे प्रभु कहता है, फिर वह उसका पुत्र कहाँ से ठहरा?” और भीड़ के लोग उसकी आनन्द से सुनते थे। (12:35-37)*

इस बार प्रभु ने भजन 110:1 से उद्धरण दिया। दाऊद स्वयं भी इस बात से आश्चर्यचकित हुआ होगा कि उसने क्या लिखा था: “प्रभु [यहोवा] ने मेरे प्रभु से कहा, “मेरे दाहिने बैठ...” यहूदियों ने स्वीकार किया कि यह एक मसीह भजन था। इस भजन में, दाऊद ने एक व्यक्ति को सुना, जिसे वह यहोवा के रूप में जानता था, जिसने उसे आमंत्रित किया जिसे दाऊद ने अपना प्रभु माना, कि वह उसके सिंहासन पर, परमेश्वर के सिंहासन पर उसके साथ आकर बैठे। ऐसा व्यक्ति केवल परमेश्वर ही हो सकता था। कोई और परमेश्वर के सिंहासन को साझा नहीं कर सकता था। फिर भी, इस तरह से ऊँचे स्थान पर बैठने के लिये बुलाया गया यह व्यक्ति, मसीह के अलावा और कोई नहीं हो सकता था - और उसे दाऊद का पुत्र होना था!

प्रभु ने अब सभी का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लिया था। वह स्वयं दाऊद का पुत्र और इस्राएल का मसीह था। उसके हाल ही में विजयी प्रवेश ने उसे ऐसा घोषित कर दिया था। मन्दिर के अभिलेखों ने इसे प्रमाणित कर दिया। फिर भी, दाऊद ने ईश्वरीय प्रेरणा से अपने इस पुत्र को अपना *प्रभु मान लिया* - जो ईश्वरत्व की उपाधि है। तो फिर - उन्हें इस प्रश्न का उत्तर देना चाहिए - या तो दाऊद गलत था, या पवित्रशास्त्र झूठा था, और दाऊद का “पुत्र” उससे अधिक कुछ नहीं था, दाऊद का एक मात्र मानवीय वंशज था, या दाऊद का यह पुत्र दाऊद का ईश्वरीय प्रभु और परमेश्वर का पुत्र दोनों था।

*यही* वह बात थी जो यीशु के साथ व्यवस्था पर चर्चा करने वाले शास्त्री को तय करनी थी। यदि वह परमेश्वर के राज्य का सदस्य बनना चाहता था, तो उसे सत्य को बौद्धिक स्वीकृति देने से लेकर मसीह के प्रति व्यक्तिगत् समर्पण तक, विश्वास का वह कदम उठाना था। यह वास्तव में *व्यवस्था* का प्रश्न नहीं था, बल्कि *प्रभु* का प्रश्न था*।* वह यीशु के साथ क्या करेगा? यही मूल मुद्दा था। क्या वह वह अंगीकार करेगा जो पतरस ने किया थाः “तू जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है” (मत्ती 16:16), और जो नतनएल ने किया था : “हे रब्बी, तू परमेश्वर का पुत्र है; तू इस्राएल का महाराजा है” (यूहन्ना 1:49), और जो थोमा को करना था: “हे मेरे प्रभु, हे मेरे परमेश्वर” (यूहन्ना 20:28)?

मरकुस आगे कहता है, “भीड़ के लोग उसकी आनन्द से सुनते थे।” नि:संदेह, वे शास्त्रियों, फरीसियों, सदूकियों, प्रधान याजकों और शासकों को उनके पर पर रखे जाने से बहुत प्रसन्न हुए होंगे।

**ख. चेतावनी का एक वचन (12:38-40)**

*उसने अपने उपदेश में उनसे कहा, “शास्त्रियों से चौकस रहो, जो लम्बे–लम्बे चोगे पहने हुए फिरना और बाजारों में नमस्कार, और आराधनालयों में मुख्य मुख्य आसन और भोज में मुख्य मुख्य स्थान भी चाहते हैं। (12:38-39)*

हमें नहीं पता कि वह विचारशील शास्त्री जिसके साथ प्रभु ने अभी-अभी बात की थी, ऐसा व्यक्ति था या नहीं। किसी भी मामले में, प्रभु उसके लिये परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना आसान नहीं बनाने वाला था। उसे स्थान और जाति के बारे में अपने सभी अभिमान को त्यागना होगा। एक वर्ग के रूप में, शास्त्रियों के पास मूल्यों की पूरी तरह से गलत समझ थी, और वे घमण्ड से भरे हुए थे। उनकी आत्मा प्रभु की नम्रता और दीनता की आत्मा के साथ पूरी तरह से सामंजस्य से बाहर थी (मत्ती 11:29)। प्रभु उन लोगों को चेतावनी देता है जो यह सब सुन रहे थे कि इस गलत धारणा के बारे में कि आराधनालय में सबसे अच्छे आसन और सुन्दर, महंगे वस्त्र जैसी चीजों का ईश्वरीयता से कोई लेना-देना नहीं है। इसके विपरीत, अक्सर, वे किसी और वस्तु के लिये एक आवरण थे।

*वे विधवाओं के घरों को खा जाते हैं, और दिखाने के लिये बड़ी देर तक प्रार्थना करते रहते हैं। ये अधिक दण्ड पाएँगे।” (12:40)*

शास्त्रियों का एक काम वसीयत और अन्य दस्तावेज बनाना था। अक्सर ऐसा होता था कि अपनी सेवाओं के लिये मिलने वाले सामान्य शुल्क से संतुष्ट न होकर, शास्त्री हाल ही में विधवा हुई स्त्रियों के डर, अंधविश्वास और धार्मिक संवेदनशीलता का लाभ उठाते थे। वे उन्हें अनुग्रह के साधन के रूप में अपनी सम्पत्ति मन्दिर को सौंपने के लिये राजी करते थे। उन्हें स्वयं इस आय का एक बड़ा हिस्सा मिलता था। वे इस धोखाधड़ी वाली गतिविधि को पाखण्डी प्रार्थनाओं से छिपाते थे। ऐसे सभी अगुवों का न्याय भयानक होगा।

**4. अमर सिद्धांत (12:41-44)**

*वह मन्दिर के भण्डार के सामने बैठकर देख रहा था कि लोग मन्दिर के भण्डार में किस प्रकार पैसे डालते हैं; और बहुत से धनवानों ने बहुत कुछ डाला। (12:41)*

विवाद से थककर प्रभु अब ओसारे से बाहर निकल आया और “छत” से मन्दिर परिसर में जाने वाली सीढ़ियों पर चढ़ गया। भण्डार स्त्रियों के आँगन में स्थित था, जो लगभग दो सौ वर्ग फुट की जगह पर था और एक खम्भे से घिरा हुआ था। भीतर और दीवार के सामने तेरह तुरही के आकार के बक्से थे। इन “तुरही” पर विभिन्न शिलालेख थे, जो यह दर्शाते थे कि विभिन्न दान किस उद्देश्य से दिए गए थे। नौ कानूनी बकाया, मन्दिर कर और इसी तरह के अन्य कामों के लिये थे; चार स्वैच्छिक योगदान के लिये थे।

प्रभु ने बैठकर देखा कि लोग किस तरह से अपना योगदान दे रहे हैं। धनी लोग मुट्ठी भर पैसे डाल रहे थे। कुछ लोग प्रसन्न होकर दे रहे थे, तो कुछ अनिच्छा से। प्रभु ने उन सभी को देखा। “देख रहा था” के लिये शब्द थियोरेओ है, जो विचारशील अवलोकन का सुझाव देता है। यूनानी भाषा के इस शब्द से हमें अंग्रेजी शब्द *थिएटर अर्थात् रंगशाला* शब्दमिलता है*।* प्रभु ने यह सब उत्सुकता से देखा। सभी रंग और नाटक और, अक्सर, हमेशा बदलते तमाशे के नाटकीय अभिनय ने उसकी रुचि को आकर्षित किया। फिर अनन्त महत्व की कोई चीज उसकी दृष्टि में आई।

*इतने में एक कंगाल विधवा ने आकर दो दमड़ियाँ, जो एक अधेले के बराबर होती हैं, डालीं। (12:42)*

मेरे बचपन के दिनों में, इंग्लैंड में उस समय पर फार्थिंग्स हुआ करते थे। यह एक छोटा तांबे का सिक्का था जिसका मूल्य एक पेनी का चौथा भाग था, जिसका मूल्य पाठशाला के बच्चों के मूल्यों के पैमाने पर भी कोई महत्व नहीं था। दमड़ी - एक छोटा, पतला यहूदी तांबे की दमड़ी - मूल्यों के पैमाने पर उतना ही कम था। परन्तु विधवा के पास बस दो ऐसी दमड़ियाँ थीं।

ऐसा कहा जाता है कि रब्बियों ने दो दमड़ियों से कम देने से मना किया था। शायद इसीलिये उसने उन दोनों को बक्से में डाल दिया। या शायद वह मन्दिर को सहारा देने और निर्धनों को राहत देने के बीच उलझी हुई थी। वह परमेश्वर से प्रेम करती थी और उसे कुछ देना चाहती थी। दूसरी ओर, वह जानती थी कि बेहद निर्धन होना कैसा होता है। अंत में, उसने अपना सब कुछ दे दिया, शायद एक दमड़ी परमेश्वर के लिये और एक दमड़ी निर्धनों के लिये बक्से में डाल दी। किसी भी मामले में, प्रभु ने उसे भण्डार के पास जाते हुए देखा, वह अपने हाथ में दो दमड़ियाँ कसकर पकड़े हुए थी। उसने आंतरिक संघर्ष, अचानक निर्णय, तुरन्त कार्रवाई और स्त्री के जल्दबाजी में प्रस्थान को देखा। वह प्रसन्न था!

*तब उसने अपने चेलों को पास बुलाकर उन से कहा, “मैं तुम से सच कहता हूँ कि मन्दिर के भण्डार में डालने वालों में से इस कंगाल विधवा ने सबसे बढ़कर डाला है; क्योंकि सब ने अपने धन की बढ़ती में से डाला है, परन्तु इसने अपनी घटी में से जो कुछ उसका था, अर्थात् अपनी सारी जीविका डाल दी है।” (12:43-44)*

उसे नहीं पता था कि उस दिन किसकी आँखें उस पर लगी थीं! उसे नहीं पता था कि महिमा का प्रभु उस दिन “भण्डार के सामने बैठा था”! उसे नहीं पता था कि उसके बटुए में किसने झाँका था! उसे नहीं पता था कि वह उद्धारकर्ता के लिये कितनी प्रसन्नता लाई थी - विवाद के एक अंधेरे और उदास दिन पर धूप की एक किरण, उस अंधेरे में एक चमक जो अब क्रूस पर जाने के मार्ग पर उसके चारों ओर जमा हो रही थी। उसे नहीं पता था कि उस दिन उसका दान सुसमाचार में अपना मार्ग खोज लेगा, और अगले दो हज़ार वर्षों तक उसकी उदारता के बारे में बात की जाएगी और पृथ्वी के छोर तक प्रचार किया जाएगा!

मैं अक्सर सोचता हूँ कि उस दिन जब वह बिना पैसे के घर पहुँची होगी तो उसे क्या मिला होगा। क्या प्रभु ने यहूदा को दान के साथ भेजा था? कुछ ही दिन पहले, प्रभु को जक्कई की प्रतिज्ञा मिली थी: “मैं अपनी आधी सम्पत्ति कंगालों को देता हूँ” (लूका 19:8)। क्या प्रभु ने उस पश्चातापी चुंगी लेने वाले के हृदय को छुआ और उसके कदमों को उस निर्धन विधवा के द्वार की ओर निर्देशित किया?

हम कभी नहीं जान पाएँगे। परन्तु एक बात हम अनुमान लगा सकते हैं—स्वर्ग में उसका प्रतिफल बहुत बड़ा होगा।

**खंड 2—रूपरेखा**

**खंड 2: कलवरी के परिणामों की भविष्यद्वाणी करना (13:1-37)**

1. मन्दिर (13:1-4)
   1. उनका घमण्ड (13:1)
   2. उसकी भविष्यद्वाणी (13:2-4)
      1. उन्हें सटीक भविष्यद्वाणी प्राप्त हुई (13:2)
      2. उन्होंने जो विस्तृत भविष्यद्वाणी माँगी थी (13:3-4)
         1. कहाँ? (13:3a)
         2. कौन? (3:3b)
         3. कब? (13:4a)
         4. क्या? (13:4b)
2. समय (13:5-13)
   1. झूठी मान्यताएँ (13:5-6)
      1. धोखेबाजों पर ध्यान देना (13:5)
      2. धोखेबाजों की संख्या (13:6a)
      3. धोखेबाजों का स्वभाव (13:6b)
   2. भयंकर युद्ध (13:7-8)
      1. इन युद्धों का चित्रण किया गया है (13:7)
         1. स्थानिक युद्ध (13:7)
            1. अपरिहार्य (13:7a)
            2. अंतराल (13:7b)
         2. महामारी युद्ध (13:8a-c)
            1. इसका चरमोत्कर्ष (13:8a)
            2. इसका संयोग (13:8b)
            3. इसका परिणाम (13:8c)
      2. ये युद्ध अशुभ हैं (13:8d)
   3. औपचारिक मार (13:9-11)
      1. जानकारी (13:9)
         1. चेतावनी का एक वचन (13:9a)
         2. गवाही का वचन (13:9b)
      2. सूचना (13:10)
      3. प्रेरणा (13:11)
         1. उनकी व्यक्तिगत् अक्षमता (13:11a)
         2. उनकी प्रतिज्ञा की गई अजेयता (13:11b)
   4. पारिवारिक विश्वासघात (13:12-13)
      1. उनका पूर्णतया अस्वीकार (13:12-13a)
         1. उनके घर असुरक्षित हो जाएँगे (13:12)
         2. उनकी घृणा सर्वव्यापी होगी (13:13a)
      2. उनका विजयी संकल्प (13:13b)
3. क्लेश (13:14-23)
   1. सबसे बड़ा अपवित्रीकरण (13:14-18)
      1. वे क्या देखेंगे (13:14a-b)
         1. प्रसिद्ध भविष्यद्वक्ता के द्वारा वर्णित घृणित कार्य (13:14a)
         2. घृणित वस्तु, भविष्य के भविष्यद्वक्ता के द्वारा समर्पित (13:14b)
      2. उन्हें कहाँ होना चाहिए (13:14c-18)
         1. जाओ! (13:14c-16)
            1. स्थान (13:14c)
            2. निवेदन (13:15-16)

किसी भी चीज के लिये घर मत जाओ (13:15)

किसी भी चीज से बाधित न हो (13:16)

* + - 1. हाय! (13:17-18)
         1. सम्भावित बाधा के बारे में (13:17)
         2. सम्भावित कठिनाई के बारे में (13:18)
  1. सबसे बड़ा सताव (13:19)
  2. सबसे बड़ी उद्घोषणा (13:20-23)
     1. हियाव रखो (13:20)
     2. सावधान रहो (13:21-23)
        1. झूठ पर विश्वास मत करो (13:21-22)
           1. झूठा प्रचार (13:21)
           2. झूठे प्रमाण (13:22)
        2. प्रभु पर विश्वास करो (13:23)

1. समाप्ति (13:24-27)
   1. आकाश में चिह्न (13:24-25)
      1. कब तक (13:24a)
      2. किस बारे में (13:24b-25)
         1. भौतिक क्षेत्र (13:24b-25a)
            1. सौरमण्डल प्रभावित हुआ (13:24b)
            2. तारागण प्रणाली प्रभावित हुई (13:25a)
         2. रहस्यमय क्षेत्र (13:25b)
   2. उद्धारकर्ता का चिह्न (13:26-27)
      1. दर्शन की महिमा (13:26)
         1. उसका आगमन प्रत्यक्ष होगा (13:26a)
         2. उसका आगमन विजयी होगा (13:26b)
      2. पवित्र लोगों का एकत्र होना (13:27)
         1. सन्देशवाहक (13:27a)
         2. सभा (13:27b-c)
            1. शेष सांसारिक पवित्र लोग (13:27b)
            2. स्वर्गीय पवित्र लोगों का लौटना (13:27c)
2. पेड़ (13:28-33)
   1. दृष्टान्तिक अंजीर (13:28)
   2. भविष्यसूचक ध्यान (13:29-33)
      1. समय पर ध्यान (13:29-30)
         1. सामान्य विषय (13:29)
         2. पीढ़ी विषय (13:30)
      2. सत्य पर ध्यान केन्द्रित करना (13:31-32)
         1. पवित्रशास्त्र के विषय में एक वचन (13:31)
         2. रहस्य के बारे में एक वचन (13:32)
      3. कार्य पर ध्यान केन्द्रित (13:33)
3. परीक्षा (13:34-37)
   1. दृष्टान्त (13:34)
      1. प्रभु का प्रस्थान (13:34a)
      2. प्रभु के चेले (13:34b-c)
         1. उन्हें काम करना होगा (13:34b)
         2. उन्हें अवश्य देखना चाहिए (13:34c)
   2. मुद्दा (13:35-37)
      1. उसकी वापसी का रहस्य (13:35)
      2. उसकी अचानक वापसी (13:36-37)
         1. मूर्खतापूर्ण काम करना (13:36)
         2. समझदारी वाला काम करना (13:37)

**खंड 2: कलवरी के परिणामों की भविष्यद्वाणी करना (13:1-37)**

**क. मन्दिर (13:1-4)**

*जब वह मन्दिर से निकल रहा था, तो उसके चेलों में से एक ने उस से कहा, “हे गुरु, देख, कैसे विशाल पत्थर और कैसे भव्य भवन हैं!” (13:1)*

सचमुच वे पत्थर प्रभावशाली थे, सुलैमान के इंजीनियरों और हेरोदेस के निर्माणकर्ताओं के कौशल को एक श्रद्धांजलि । कुछ पत्थरों की लम्बाई बीस से चालीस फुट थी और उनका वजन एक सौ टन से भी अधिक था। मनुष्य की वास्तुकला की उपलब्धियाँ वास्तव में स्मारकीय हैं। स्टोनहेंज में ओबिलिस्क की अंगूठी, मिस्र में पिरामिड और चीन की महान दीवार आँखों को आकर्षित करती हैं और कल्पना को विस्मित करती हैं। तुच्छ मनुष्य इतने बड़े, भारी और भारी पत्थरों को कैसे तराश सकते थे, आकार दे सकते थे, हिला सकते थे और उन्हें गणितीय और अक्सर खगोलीय सटीकता के साथ रख सकते थे? यह सब यांत्रिकी और जनशक्ति का मामला था।

चेलों को यह बात बहुत पसंद आयी। उन्होंने सोचा कि यीशु भी इससे प्रभावित होगा ।

*यीशु ने उससे कहा, “क्या तुम ये बड़े–बड़े भवन देखते हो : यहाँ पत्थर पर पत्थर भी बचा न रहेगा जो ढाया न जाएगा।” (3:2)*

जिस भी चेले ने मन्दिर की बाहरी भव्यता पर यीशु की टिप्पणी को आमंत्रित किया, वह मन्दिर के निर्माण से *प्रभावित* हुआ*।* वास्तव में, यह विशेष मन्दिर अभी तक पूरा नहीं हुआ था। हेरोदेस महान ने 20 ईसा पूर्व में इस पर काम आरम्भ किया था, और यह 64 ईस्वी तक पूरा नहीं हुआ था, जिसे बनाने में लगभग पिचासी वर्ष लगे थे।

यीशु को इसके *विनाश* की अधिक चिन्ता थी।इस तथ्य के बावजूद कि उसने इसे पहले ही दो बार साफ कर दिया था, बेईमान लोगों का वही दुष्ट गिरोह अभी भी इस जगह को चला रहा था। क्रूस पर, वह इसके सबसे भीतरी पर्दे को दो भागों में फाड़ देगा और यहूदी धर्म को अप्रचलित कर देगा। यहूदी धर्म के लिये, जैसा कि पुराने नियम में अधिकृत है, सब कुछ मन्दिर और उसके साथ जुड़े रीति-रिवाजों पर टिका हुआ था। पर्दे ने मन्दिर को ही दो भागों में विभाजित कर दिया। यह प्रायश्चित वाले दिन के अनुष्ठानों का केंद्र था, जो वार्षिक यहूदी धार्मिक कैलेंडर का वास्तविक चरमोत्कर्ष था। पर्दे का फटना (मत्ती 27:51) इस सभी कर्मकाण्डों के अंत का संकेत था (इब्रानियों 10:19-22)। लगभग चालीस वर्ष बाद, प्रभु रोमी सेना को बुलाएगा कि वह आए और इसे पूरी तरह से गिरा दे।

“पत्थर पर पत्थर भी बचा न रहेगा।” नकारात्मक शब्द का उपयोग पूर्ण निश्चितता को दर्शाता है। यीशु ने उस दिन की भविष्यद्वाणी की जब रोमी सैनिक मन्दिर को बचाने की टाइटस की इच्छा की परवाह किए बिना, पत्थरों को अलग-अलग कर देंगे, उस सोने को पाने के लिये उत्सुकता से जो इसे इतनी भव्यता से सजाता है। टाइटस से अधिक अधिकार वाला व्यक्ति यह बात बोल रहा था।

*जब वह जैतून के पहाड़ पर मन्दिर के सामने बैठा था, तो पतरस और याकूब और यूहन्ना और अन्द्रियास ने अलग जाकर उससे पूछा। (13:3)*

यह समूह चेलों का सामान्य आंतरिक समूह था, परन्तु इसमें पतरस का भाई अन्द्रियास भी शामिल था। ये लोग, भले ही अच्छे लोग थे, परन्तु यीशु की तुलना में उनका हृदय बहुत कम था। वह पहले ही नगर और मन्दिर के लिये रो चुका था (मत्ती 23:36-38)। वे बस यह जानने के लिये उत्सुक थे कि यह अप्रत्याशित और असाधारण भविष्यद्वाणी कब पूरी होगी।

*“हमें बता कि ये बातें कब होंगी? और जब ये सब बातें पूरी होने पर होंगी उस समय का क्या चिह्न होगा?” (13:4)*

कब? क्या? वे समय के बारे में जानना चाहते थे, और वे चाहते थे कि उन्हें एक संकेत दिया जाए। प्रभु ने दो अंतिम समय की भविष्यद्वाणियाँ कीं, एक मन्दिर में और दूसरी जैतून के पहाड़ पर (लूका 21 और मत्ती 24-25; मरकुस 13)। लूका में दर्ज भविष्यद्वाणी 70 ईस्वी में हुए यरूशलेम के पतन पर केंद्रित है; मत्ती और मरकुस इस समय मसीह के द्वारा प्रकट की गई अंतिम समय की घटनाओं पर ध्यान केंद्रित करते हैं। हालाँकि, दोनों भविष्यद्वाणियों के बीच विषय-वस्तु में कुछ ऊपर-नीचे होता है, अत: यह हमेशा तुरन्त स्पष्ट नहीं होता है कि क्या प्रभु मन्दिर के आने वाले विनाश (70 ईस्वी), यहूदी राष्ट्रीय जीवन के अंतिम विघटन (135 ईस्वी, बार चोचबा विद्रोह के समय) या अंतिम समय की घटनाओं का उल्लेख कर रहा हैं। बाइबल की अधिकांश भविष्यद्वाणियों की तरह, इस अंत समय की भविष्यद्वाणी की भी निकट, जल्द पूरी होने वाले, और आंशिक पूर्ति (लूका का बोझ) और अंत समय की अंतिम, पूर्ण पूर्ति (मरकुस और मत्ती का बोझ) थी।

**ख. समय (13:5-13)**

हम *झूठी मान्यताओं* से आरम्भ करते हैं(13:5-6):

*यीशु उनसे कहने लगा, “चौकस रहो कि कोई तुम्हें न भरमाए। बहुतेरे मेरे नाम से आकर कहेंगे, ‘मैं वही हूँ!’ और बहुतों को भरमाएँगे। (13:5-6)*

अंतिम दिनों के विनाश के नुस्खे में पहला घटक धोखा है। प्रभु विशेष रूप से उस धोखे पर जोर देता हैं जो झूठे मसीहाओं के द्वारा प्रचारित किया जाता है, विशेष रूप से उस तरह के झूठे मसीह जो वास्तव में स्वयं मसीह होने का दावा करते हैं। यह धोखे का एक ऐसा रूप है जिसके लिये यहूदी विशेष रूप से अतिसंवेदनशील रहे हैं।

यहूदियों के पास कभी कोई झूठा मसीहा नहीं था जब तक कि उन्होंने सच्चे मसीहा को अस्वीकार नहीं कर दिया; उसके बाद, उनके पास बहुत सारे मसीहा थे। उदाहरण के लिये, क्रेते का मूसा था, जिसने समुद्र को मारने और यहूदियों को सूखी भूमि पर कनान तक ले जाने की प्रतिज्ञा की थी; इस झूठे मसीहा के भ्रमित अनुयायियों ने एक चट्टान पर एकत्र होकर अपने प्राण दे दिए। अब्राहम अबुलफिया था, जिसने पोप निकोलस तृतीय का हृदय परिवर्तित करने का प्रयत्न किया। पोप की उसी सप्ताह मृत्यु हो गई! अबुलफिया को न्यायिक जाँच के लिये सौंप दिया गया था, परन्तु वास्तव में वह इसके चंगुल से बाहर निकलने के लिये बातचीत करता रहा! यहाँ तक कि एक स्त्री मसीहा भी थी, ईवा फ्रैंक, एक मोहक प्रलोभनकर्ता जिसने अनैतिकता को धर्म के साथ कुशलता से जोड़ा!

जैसे-जैसे मसीही युग समाप्ति की ओर बढ़ रहा है, हम अपेक्षा कर सकते हैं कि स्वघोषित मसीहाओं की बाढ़ आ जाएगी। मसीह विरोधी और उसका यहूदी प्रवक्ता, झूठा भविष्यद्वक्ता, अंत में यहूदियों और झूठी कलीसिया के बचे हुए सदस्यों दोनों को धोखा देगा (2 थिस्सलुनीकियों 2; प्रका. 13)।

आगे हम *भयंकर युद्धों* को देखते हैं(13:7-8):

*जब तुम लड़ाइयाँ, और लड़ाइयों की चर्चा सुनो, तो न घबराना; क्योंकि इनका होना अवश्य है, परन्तु उस समय अन्त न होगा। (13:7)*

यीशु इस युद्धरत संसार के लिये परमेश्वर की ओर से शान्ति का प्रस्ताव था। स्वर्गदूतों ने गीत गाए, और उनकी आवाजें उस ठंडी, साफ सर्दियों की रात में यहूदिया की पहाड़ियों में गूँज उठीं: “आज दाऊद के नगर में तुम्हारे लिये एक उद्धारकर्ता जन्मा है, और यही मसीह प्रभु है... आकाश में परमेश्‍वर की महिमा और पृथ्वी पर उन मनुष्यों में जिनसे वह प्रसन्न है, शान्ति हो” (लूका 2:11, 14)। साढ़े तीन दशकों के भीतर, उत्तर स्पष्ट था: “हम नहीं चाहते कि यह हम पर राज्य करे” (लूका 19:14)। यहूदियों ने अपने मसीह को मृत्युदण्ड के लिये रोमियों को सौंप दिया और घोषणा की, “कैसर को छोड़ हमारा और कोई राजा नहीं” (यूहन्ना 19:15)। जब पिलातुस ने उसे क्रूस पर चढ़ाया, तो उसने सभी को पढ़ने के लिये उस समय की तीन मुख्य भाषाओं में उसका शीर्षक लिखा: “यीशु नासरी, यहूदियों का राजा” (यूहन्ना 19:19)।

*पालने* से जुड़े शान्ति के प्रस्ताव के बारे में इतना ही। तब से संसार ने युद्ध के अलावा कुछ नहीं जाना है। नि:संदेह, एक और शान्ति प्रस्ताव है, जो *क्रूस* से जुड़ा है(कुलुस्सियों 1:20-21), परन्तु वह बिलकुल अलग मामला है। इसलिये यीशु ने अंतिम समय की घटनाओं से जुड़े युद्धों पर ध्यान केंद्रित किया। यीशु ने कहा, “इनका होना अवश्य है।” शान्ति के राजकुमार (यशायाह 9:6) को अस्वीकार कर दिया गया है। जब तक वह वापस नहीं आता, तब तक युद्ध ही बचा है।

*क्योंकि जाति पर जाति, और राज्य पर राज्य चढ़ाई करेगा। हर कहीं भूकम्प होंगे, और अकाल पड़ेंगे। यह तो पीड़ाओं का आरम्भ ही होगा। (13:8)*

यह यशायाह 19:2 से एक उद्धरण है, जहाँ इसका स्थानीय अनुप्रयोग था। प्रभु ने भविष्यद्वाणी को व्यापक बनाया और इसे अंतिम समय का नया महत्व दिया। सबसे पहले, उसने इतिहास के विभिन्न युद्धों का उल्लेख किया, जो नेपोलियन के युद्धों के समय तक, मूल रूप से सेनाओं के बीच युद्ध थे। यीशु ने कहा, अंतिम समय में युद्ध एक विशाल, नया, भयावह आयाम लेगा।

प्रथम विश्व युद्ध की समाप्ति के लगभग दस वर्ष बाद और द्वितीय विश्व युद्ध के आरम्भ होने से दस वर्ष पहले, सर विंस्टन चर्चिल ने 1914 में हुए नाटकीय परिवर्तन का सारांश प्रस्तुत किया था। उसने कहा था कि युद्ध मानवजाति के सम्भावित विध्वंसक के रूप में उभरा है:

मानवजाति का महान राज्यों और साम्राज्यों में संगठन, तथा राष्ट्रों का पूर्ण सामूहिक चेतना की ओर उत्थान, नरसंहार के उपक्रमों को ऐसे पैमाने पर और ऐसी दृढ़ता के साथ नियोजित और क्रियान्वित करने में सक्षम बनाता है जिसकी पहले कभी कल्पना भी नहीं की गई थी...

किलेबंद नगरों को भूखा रखने के बजाय पूरे देश को विधिपूर्वक... अकाल के द्वारा कमी की प्रक्रिया के अधीन किया गया। पूरी आबादी ने किसी न किसी रूप में युद्ध में भाग लिया; सभी समान रूप से हमले का लक्ष्य थे...[1]

द्वितीय विश्व युद्ध ने युद्ध के दौरान भयावहता के नये आयाम जोड़े। हथियार अधिक परिष्कृत हो गए, अधिक राष्ट्र इसमें शामिल हो गए, मरने वालों की संख्या आसमान छू गई - और विज्ञान ने हमें परमाणु बम दिया। रणनीतिक नगरों पर गिराए गए दो छोटे परमाणु बमों ने जापान को घुटनों पर ला दिया। अब हमारे पास परिष्कृत परमाणु हथियार, अंतरमहाद्वीपीय बैलिस्टिक मिसाइल, लेजर हथियार, अंतरिक्ष में प्लेटफ़ॉर्म हैं - और यहाँ तक कि दुष्ट राष्ट्र भी भयवादियों को जीवाणुनाशक हथियारों और सामूहिक विनाश के अन्य हथियारों से सुसज्जित करने के लिये तैयार हैं। ये वस्तुएँ केवल अंतिम समय के न्याय के आने की सूचना हैं जो परमेश्वर-रहित संसार को चेतावनी देती हैं कि अंतिम समय आ गया है।

प्रभु ने इसके बाद भूकम्प का उल्लेख किया। आज हम भूकम्प के बारे में बीस वर्ष पहले की तुलना में बहुत अधिक जानते हैं। वैज्ञानिकों ने संसार के प्रमुख भूकम्प क्षेत्रों का नक्शा बना लिया है और उनके पास भूकम्प उत्पन्न करने वाली टेक्टोनिक शक्तियों के बारे में तैयार व्याख्याएँ हैं। परन्तु वे अभी भी उनका पूर्वानुमान लगाने में असमर्थ हैं, उन्हें रोकना तो दूर की बात है। भयानक भूकम्प तेजी से आम होते जा रहे हैं—अलास्का, सैन फ़्रांसिस्को, मेक्सिको और जापान उन जगहों में से कुछ हैं जहाँ हाल के दिनों में बड़े भूकम्प आए हैं—और भूकम्प-विज्ञानी हमें चेतावनी दे रहे हैं कि सभी संकेत इस बात की ओर संकेत कर रहे हैं कि आगे और भी अधिक विनाशकारी भूकम्प आने वाले हैं।

और अकाल। हमारे टेलीविजन के पर्दे अक्सर सामूहिक भुखमरी के भयावह दृश्य हमारे शयनकक्ष में लाते हैं। हम छोटे बच्चों को अपने पतले पाँवों और सूजे हुए पेट वाले असहाय कुपोषण के अंतिम चरण में देखते हैं। हम व्याकुल माताओं और अत्यधिक काम करने वाले, अपर्याप्त सुविधाओं वाले डॉक्टरों और नर्सों को यहाँ-वहाँ अकाल से मर रहे मुट्ठी भर लोगों की सहायता करने के लिये संघर्ष करते हुए देखते हैं। एक-एक देश और एक-एक वर्ष, जब तक कि सबसे दयालु परोपकारी लोग भी हतोत्साहित नहीं हो जाते। यह निराशाजनक लगता है। अत:, अंत में, लाखों लोगों को बस भूख से मरने के लिये छोड़ दिया जाता है - इक्कीसवीं सदी की अंतहीन डरावनी कहानियों में और भी कई आँकड़े हैं।

मरकुस ने “विपत्तियों” का उल्लेख किया है। मत्ती ने अधिक स्पष्ट रूप से कहा है; उसने “महामारियों” का उल्लेख किया है (मत्ती 24:7)।

वही बीसवीं सदी जिसने हमें वैश्विक युद्ध दिया, उसने युद्ध में भयावहता के नये आयाम जोड़ने के साधन के रूप में हमें रासायनिक और जीवाणु हथियार भी दिए। और अब हमारे पास “गर्म क्षेत्र” है, जहाँ संसार के भूमध्यरेखीय जंगलों में, दूरदराज के जंगल की गुफाओं और पेड़ों के बीच पहाड़ों में एक नया और घातक वायरस छिपा हुआ है।[2] इसे इबोला वायरस कहा जाता है। यह इतना घातक है कि यह एड्स वायरस को फ्लू के हल्के मामले जैसा दिखाता है। यह अपने दस में से नौ पीड़ितों को मार देता है, और यह ऐसा जल्दी और भयानक तरीके से करता है। यहाँ तक कि बायोहाजर्ड विशेषज्ञ भी इससे भयभीत हैं। जो लोग संक्रमित होते हैं वे मानवीय वायरस बम बन जाते हैं। वे शरीर के सभी छिद्रों से लहू बहाते हैं। उन्हें छूना या उनकी सहायता करना घातक है।

न ही यह वायरस जंगल तकसीमित है। यह कुछ समय पहले एक प्रमुख अमेरिकी नगर के उपनगरों में बंदरों के बीच फैला था, एक भवन में जहाँ पशुओं को प्रयोगात्मक उद्देश्यों के लिये रखा जा रहा था। इसके परिणामस्वरूप जो दृश्य सामने आया वह भयावह था। बायोहाजर्ड स्पेस सूट पहने सैनिकों और वैज्ञानिकों की एक SWAT दल ने अठारह दिनों तक इस खतरे से लड़ाई लड़ी, उन्हें डर था कि यह वायरस मानवीय आबादी में फैल सकता है और अभूतपूर्व अनुपात में महामारी उत्पन्न कर सकता है। जो लोग इस लड़ाई में शामिल थे, वे जानते थे कि यह वायरस उन्हें जल्दी और भयानक रूप से मार सकता है। इस नये और भयानक वायरस का उद्भव इस बढ़ते अहसास के साथ मेल खाता है कि पुराने जमाने की विपत्तियाँ - जैसे कि तपेदिक, कुष्ठ रोग और ब्यूबोनिक प्लेग - जल्द ही आधुनिक टीकों और अद्भुत दवाओं से प्रतिरक्षित हो सकती हैं और एक बार फिर पृथ्वी को तबाह कर सकती हैं।

प्रभु ने कहा, “यह तो पीड़ाओं का आरम्भ ही होगा।” “पीड़ाओं” के लिये शब्द ओडिन है। इसका उपयोग जन्म की पीड़ा और मृत्यु की पीड़ा दोनों के लिये किया जाता है। प्रभु ने पुराने क्रम को उसके अंतिम समय की पीड़ा के आरम्भ में और नये आदेश को उसके जन्म की पीड़ा में चित्रित किया है। यीशु ने जिसे “पीड़ाओं का आरम्भ” कहा है, उसमें ये तत्व सर्वनाश (प्रकाशितवाक्य 6 अध्याय) के मुहर के न्यायों के समानांतर हैं।[3]

तब प्रभु ने *औपचारिक मार-पीट की कल्पना की* (13:9-11):

*“परन्तु तुम अपने विषय में चौकस रहो; क्योंकि लोग तुम्हें महासभाओं में सौंपेंगे और तुम पंचायतों में पीटे जाओगे, और मेरे कारण हाकिमों और राजाओं के आगे खड़े किए जाओगे, ताकि उनके लिये गवाही हो। (13:9)*

यूहन्ना का भाई याकूब कलीसिया का पहला शहीद बन गया, और पतरस आश्चर्यकर्म के माध्यम से ही उसी भाग्य से बच गया। नवजात कलीसिया को खतरे के रूप में देखने में महासभा को अधिक समय नहीं लगा। पिन्तेकुस्त के लगभग तुरन्त बाद, पतरस ने एक लंगड़े व्यक्ति को चंगा किया और मन्दिर परिसर में प्रचार करने के लिये उसे पकड़ लिया गया। उसने और उसके साथ मौजूद यूहन्ना ने साहसपूर्वक यहूदी अधिकारियों पर मसीह की हत्या का आरोप लगाया (प्रेरितों के काम 4:1-21)। उन्हें यीशु के नाम पर आगे प्रचार न करने की चेतावनी के साथ छोड़ दिया गया और यदि उन्होंने ऐसा किया तो उन्हें गम्भीर परिणाम भुगतने की धमकी दी गई। पतरस ने उन पर अपनी उंगलियाँ चटकाईं और उनका विरोध किया।

कलीसिया के तेजी से विस्तार ने यहूदी अगुवों को क्रोधित कर दिया, जिन्होंने प्रेरितों को बन्दी बना लिया। फिर से, अद्भुत ढंग से रिहा होने के बाद, प्रेरित मन्दिर में लौट आए और प्रचार करना जारी रखा। उन्हें फिर से पकड़ लिया गया, उन्हें महासभा के सामने घसीटा गया और पीटा गया। वे बस हँसे और सदूकियों और आधिकारिक यहूदी विरोध के अन्य सरगनाओं की खुली अवहेलना करते हुए मन्दिर में प्रचार करते रहे (प्रेरितों के काम 5 अध्याय)।

और ऐसा ही सदियों से होता आ रहा है। कलीसिया इस विद्रोही ग्रह पर परमेश्वर का गढ़ है। शैतान उससे इतनी घृणा करता है कि उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। उसने आज तक अथक दृढ़ता के साथ उसको सताया है। उसने रोमी कैसर, स्पेनिश जाँचकर्ताओं, पवित्र रोमी सम्राटों, कम्युनिस्ट कमिसारों और अन्य तानाशाहों को अपने उपकरणों के रूप में उपयोग किया है। कलीसियाई-युग के शहीदों की सूची गिनती से परे है। मसीहियों का सताव पूरी कलीसियाई युग में स्थानिक रहा है। इक्कीसवीं सदी में यह महामारी बन गया है। यह अनुमान लगाया गया है कि पिछली सदी में संसार भर में जितने मसीही लोग मसीह के कारण शहीद हुए हैं, उससे कहीं अधिक पिछली उन्नीस शताब्दियों में हुए थे। संसार भर में और विशेष रूप से यहूदियों के लिये सताव की और भी भयावहता आने वाली है, जब कलीसिया को घर कहा जाएगा।

*पर अवश्य है कि पहले सुसमाचार सब जातियों में प्रचार किया जाए। (13:10)*

मत्ती अधिक विशिष्ट है। वह हमें बताता है कि सुसमाचार, जिसका उल्लेख प्रभु ने किया है, “परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार” है। सच है, कलीसिया का कार्य “सभी जातियों के लिये” (मत्ती 28:18-20) और “पृथ्वी के छोर तक” (प्रेरितों 1:8) है। परन्तु अंत समय की छाया हमारे ऊपर छाने लगी है, और वीरतापूर्ण प्रयत्नों और आधुनिक तकनीक के बावजूद, कार्य अभी भी पूरा नहीं हुआ है। “अनकहे लाखों लोग अभी भी अनकहे ही हैं।” संसार में पाँच हज़ार से अधिक ज्ञात भाषा समूह हैं, और उनमें से लगभग तीन हज़ार के पास अभी भी अपनी भाषा में पवित्रशास्त्र का कोई अनुवाद नहीं है।

एक बार जब कलीसिया को स्वर्गारोहित कर लिया जाएगा, तो पवित्र आत्मा का एक नया प्रवाह होगा क्योंकि पिन्तेकुस्त पर जो हुआ वह योएल की भविष्यद्वाणी की केवल आंशिक पूर्ति थी (योएल 2:28-32; प्रेरितों के काम 2:16-21)। दो गवाह (प्रकाशितवाक्य 11:3) उठाए जाएँगे (सम्भवतः हनोक और एलिय्याह), और वे इब्रानी लोगों में से 1,44,000 अन्य गवाहों को जीतेंगे (प्रकाशितवाक्य 7; 14)। ये, बदले में, “एक बड़ी भीड़ को जीतेंगे, जिसे कोई भी व्यक्ति गिन नहीं सकता” (प्रकाशितवाक्य 7:9)। वे लोग जो अभी भी सुसमाचार से वंचित हैं, उन्हें अंतिम समय के क्लेश से ठीक पहले स्वर्गदूतों की घोषणा के द्वारा उद्धार का अंतिम प्रस्ताव दिया जाएगा (प्रकाशितवाक्य 14:6-7)। मत्ती आगे कहता हैं, “तब [एक बार जब संसार इस तरह से सुसमाचार से भर जाएगा] अंत [टेलोस, बिलकुल अंत] आ जाएगा” (मत्ती 24:14)।

*जब वे तुम्हें ले जाकर सौंपेंगे, तो पहले से चिन्ता न करना कि हम क्या कहेंगे; पर जो कुछ तुम्हें उसी घड़ी बताया जाए वही कहना; क्योंकि बोलनेवाले तुम नहीं हो, परन्तु पवित्र आत्मा है। (13:11)*

ऐसा ही स्तिफनुस के साथ हुआ, जो कलीसिया का पहला शहीद था। यूनानी-रोमी संसार के यूनानीवादी यहूदियों (सम्भवतः तरसुस के शाऊल सहित) ने अपने यरूशलेम के आराधनालयों में स्तिफनुस से बहस की, परन्तु वे दूसरे स्थान पर रहे। वे आत्मा के सामर्थी संचार का विरोध नहीं कर सके, जिसने स्तिफनुस को वाक्पटुता और पवित्रशास्त्र पर महारत हासिल कराई जिसका वे खण्डन नहीं कर सकते थे। अत: उन्होंने उसके विरुद्ध षड्यंत्र रचकर उसे पकड़वा दिया और झूठा आरोप लगाया, और उसे मुकदमे के लिये जल्दी से भगा दिया।

सबसे पहले, उसके चेहरे ने उन्हें पकड़ लिया। यह एक स्वर्गदूत के चेहरे जैसा लग रहा था (प्रेरितों 6:13)। फिर उसका बचाव था! यह शानदार था। उसके वचन ज्वालामुखी से पिघले लावा की तरह बह रहे थे। उनका एकमात्र उत्तर एक दुष्टात्माओं और शैतानी क्रोध था क्योंकि स्तिफनुस ने पवित्र आत्मा के जोश, आग और तथ्यों के प्रवाह के साथ उनके विरुद्ध गवाही दी थी जिसे वे नकार नहीं सकते थे। उन्होंने तर्क दिया कि उनके लिये सबसे अच्छा काम उसे मारकर चुप करवाना था।

और ऐसा सदियों से होता आया है। उदाहरण के लिये, हम अग्रिप्पा के सामने पौलुस और डाइट ऑफ वर्म्स के सामने मार्टिन लूथर के बारे में सोचते हैं।

हमें *पारिवारिक विश्वासघात* के प्रति भी चेतावनी दी गई है(13:12-13):

*भाई को भाई, और पिता को पुत्र घात के लिये सौंपेंगे, और बच्‍चे माता–पिता के विरोध में उठकर उन्हें मरवा डालेंगे। (13:12)*

यह मीका 7:6 से एक उद्धरण है। मीका, यशायाह भविष्यद्वक्ता का एक जवान समकालीन था। उसने उस समय उपदेश दिया जब अश्शूर इस्राएल के राज्य पर आक्रमण करने और उसका अंत करने की तैयारी कर रहा था। दक्षिण में, यहूदी राजा, उसी खतरे का सामना करते हुए, मिस्र समर्थक और अश्शूरी समर्थक विदेश नीति के बीच झूलता रहा। उत्तरी राज्य में, सभी नैतिक और धार्मिक प्रतिबंधों को त्याग दिया गया। अश्शूरी आए; और भयानक, निर्दयी और हत्यारे अश्शूरियों के हाथों घेराबन्दी और लूट के भय ने अपने ही परिवार के सदस्यों के द्वारा विश्वासघात के कई उदाहरण प्रस्तुत किए होंगे।

70 ईस्वी में, रोमियों के द्वारा यरूशलेम की भयानक घेराबन्दी आरम्भ हुई। रोमी बाहर थे; युद्धरत यहूदी गुट भीतर एक दूसरे से लड़ रहे थे। इस झगड़े ने विश्वासघात की डरावनी कहानियाँ उत्पन्न की होंगी। इतिहास में, कलीसिया ने, अपने कष्ट और भय के घंटों में, अपने स्वयं के भयंकर किस्से भी बटोरे हैं। उदाहरण के लिये, न्यायिक जाँच के दिनों में, घरेलू विश्वासघात आम बात थी क्योंकि लोग अपने नजदीकी रिश्तेदार के प्राण के मूल्य पर अपने प्राण बचाने का प्रयत्न करते थे। आधुनिक समय में, नाज़ियों, सोवियत और चीनी कम्युनिस्टों के द्वारा कलीसिया पर किए गए अत्याचारों ने विश्वासघात की दुःखद घटनाओं की अपनी सूची में वृद्धि की है। माओ त्से-तुंग के नेतृत्व में चीनी कम्युनिस्टों ने पूरे देश, विशेष रूप से मसीहियों का मत परिवर्तन का प्रयत्न किया। पीड़ा के इस भयानक समय में कई धोखे और विश्वासघात हुए। मत परिवर्तन की पूरी व्यवस्था विश्वासघात पर आधारित थी।

*और मेरे नाम के कारण सब लोग तुम से बैर करेंगे; पर जो अन्त तक धीरज धरे रहेगा, उसी का उद्धार होगा। (13:13)*

फिर से यह दृश्य आने वाली भयावहता पर केंद्रित है जो महाक्लेश का चिह्न होगा। जो लोग मसीह विरोधी के यहाँ होने पर परमेश्वर के लिये खड़े होते हैं, वे किसी दया की अपेक्षा नहीं कर सकते। वह माँग करेगा कि सभी को यह चिह्न मिले। जो लोग मना करेंगे उन्हें मृत्युदण्ड दिया जाएगा। शहादत उद्धार के स्वीकृत परिणाम का हिस्सा होगी (प्रकाशितवाक्य 7:9-17)। स्वर्ग में उन लोगों को बहुत बड़ा प्रतिफल मिलेगा जो मसीह विरोधी को मृत्यु तक चुनौती देकर या अंत तक धीरज धरकर पराजित कर देते हैं।

कलीसिया का इतिहास प्रभु के वचनों की सच्चाई की गवाही देता है। मसीह का नाम धारण करने वालों को संसार के सभी हिस्सों में हर युग में सताया गया है। हालाँकि, यह बात अगले पद से स्पष्ट होती है कि प्रभु ने विशेष रूप से महाक्लेश के समय को ध्यान में रखा था।

**ग. क्लेश (13:14-23)**

सबसे पहले, हम *सबसे बड़े अपवित्रीकरण* पर ध्यान देते हैं(13:14-18):

*“अत: जब तुम उस उजाड़नेवाली घृणित वस्तु को जहाँ उचित नहीं वहाँ खड़ी देखो, (पढ़नेवाला समझ ले) तब जो यहूदिया में हों, वे पहाड़ों पर भाग जाएँ; (13:14)*

यह संदर्भ दानिय्येल 9:27 का है। जब मसीह विरोधी आएगा, तो वह अंत में संसार का तानाशाह बन जाएगा। शैतान आखिरकार उस लक्ष्य को प्राप्त कर लेगा जिसके लिये वह निम्रोद के दिनों से प्रयत्न कर रहा है - एक सांसारिक साम्राज्य जिस पर उसका अपना व्यक्ति शासन करेगा। एक बार जब मसीह विरोधी सांसारिक शक्ति और प्रभुत्व के सिंहासन पर बैठ जाता है, तो वह यरूशलेम में फिर से बनाए गए यहूदी मन्दिर पर कब्जा करके अपनी गुप्त योजनाओं का खुलासा करेगा। वह उस मन्दिर के पवित्रतम स्थान में अपनी मूर्ति रखेगा, मूर्ति को जीवन प्रदान करेगा, उसे मार डालने की शक्ति देगा, और माँग करेगा कि हर कोई उसकी छाप (उस प्रसिद्ध “पशु की छाप”) को निष्ठा के पदक के रूप में प्राप्त करे और उसकी मूर्ति की उपासना करे। जो लोग इन्कार करेंगे उन्हें नष्ट कर दिया जाएगा।

विश्वासियों के पास केवल एक ही अपेक्षा होगी—जैसे ही मसीह विरोधी मन्दिर पर कब्जा करेगा, वैसे ही पहाड़ों और सुनसान जगहों पर शरण लेने के लिये भाग जाना। इस्राएल में रहने वालों के लिये, विशेष रूप से यरूशलेम में रहने वालों के लिये भागना बहुत आवश्यक होगा।

*जो छत पर हो, वह अपने घर से कुछ लेने को नीचे न उतरे और न भीतर जाए; और जो खेत में हो, वह अपना कपड़ा लेने के लिये पीछे न लौटे। (13:15-16)*

भागो! अपने प्राण बचाने के लिये भागो! जैसे ही मसीह विरोधी की मूर्ति मन्दिर में होगी, उसके सिपाही नगर से बाहर निकलने के सभी मार्गों को बंद करने के लिये आगे बढ़ेगे, और उसकी सेना सड़कों और राजमार्गों पर गश्त करेगी। एक बार जब वह यरूशलेम को सुरक्षित कर लेगा, चौराहों पर अपने पहरुए बैठा देगा, और आने-जाने के मार्ग बंद कर देगा, तो भागने के लिये बहुत देर हो जाएगी। घर में वापस जाना घातक होगा। जीवन के छोटे-छोटे खजानों को सुरक्षित करने, भोजन और कपड़ों की आपूर्ति को इकट्ठा करने और बटुए और इस तरह की वस्तुओं को इकट्ठा करने में बिताए गए कुछ ही मिनट भागने और पकड़े जाने, जीवन और मृत्यु के बीच का अंतर बना देंगे।

लूत के दिनों में सदोम में भी यही स्थिति थी। स्वर्गदूतों को लूत और उसके परिवार को सदोम से घसीटकर बाहर निकालना पड़ा! वे वहाँ इस बात को लेकर असमंजस में रहते कि क्या लेना है या क्या छोड़ना है, यहाँ तक कि इसके लिये या उसके लिये कोई संदेश छोड़ना है या नहीं, जब तक कि वे सदोम के विनाश में डूब नहीं गए (उत्पत्ति 19 अध्याय)।

जब वेसुवियस में विस्फोट हुआ था, तब भी यही स्थिति थी। जो लोग पोम्पेई गए हैं, वे हमें उस दुर्भाग्यपूर्ण नगर के गिरे हुए खण्डहरों में सैकड़ों कंकालों के बारे में बताते हैं। दीवारें अभी भी ताजा हैं, जैसे कि उन्हें कल ही रंगा गया हो। समृद्ध मोज़ेक फर्श अपने रंग बनाए रखते हैं। घरों में, अंतिम भोज के टुकड़े बचे हुए हैं। और हर जगह हड्डियाँ और कंकाल हैं। एक कंकाल मिला जिसके हड्डीदार हाथ में एक चाबी थी, और पास में सिक्कों का एक थैला था। कुछ चाँदी के फूलदानों के पास एक और कंकाल पड़ा था, जिसे लूटपाट के दौरान मारे गए किसी गुलाम का माना जा रहा है। और ऐसे लोगों के प्रमाण भी हैं जो यह सोचकर मारे गए कि उनके पास भागने से पहले अपने खजाने को इकट्ठा करने के लिये अभी भी बहुत समय था।

“भाग जाएँ!” यह प्रभु की उन लोगों के लिये सलाह है जो तब जीवित होंगे जब मसीह विरोधी अपना कदम बढ़ाएगा।

*उन दिनों में जो गर्भवती और दूध पिलाती होंगी, उनके लिये हाय हाय! और प्रार्थना किया करो कि यह जाड़े में न हो। (13:17-18)*

कितनी भयानक बात है! गर्भावस्था के बढ़ते बोझ या जीवन की इस हताश दौड़ में छोटे बच्चों की देखभाल करना कितना अतिरिक्त बोझ, चिन्ता और दुःख है! यहाँ *दुःख* उन लोगों की अतिरिक्त दुर्दशा और बढ़े हुए दुःख को रेखांकित करता है जो इतने बोझिल हैं।

जहाँ तक सर्दियों की बात है, तो यह काफी कठोर हो सकती है, विशेष रूप से यरूशलेम के आसपास के ऊँचे क्षेत्रों में, जहाँ कभी-कभी बर्फ गिरती है। इसलिये खराब मौसम एक और बाधा होगी जिसे पार करना होगा। प्रभु उस समय रहने वाले लोगों से प्रार्थना करने का आग्रह करते हैं! यदि वे जागते और प्रार्थना करते, तो वे संकेत देख पाते और संकट के समय *से पहले* बच निकलते। प्रार्थना करो! प्रभु मौसम को तब भी नियंत्रित कर सकता हैं जब सर्दियों में तूफान आने की आशंका हो। प्रार्थना करो!

फिर आता है *सबसे बड़ा सताव:*

*क्योंकि वे दिन ऐसे क्लेश के होंगे कि सृष्‍टि के आरम्भ से, जो परमेश्‍वर ने सृजी है, अब तक न तो हुए और न फिर कभी होंगे। (13:19)*

यह दानिय्येल 12:1 से एक उद्धरण है। प्रभु ने दानिय्येल और उस व्यक्ति तथा उसकी पुस्तक दोनों की प्रामाणिकता पर विश्वास किया। आलोचकों के संदेह के लिये इतना कुछ है जिन्होंने अपनी आलोचना के साथ दानिय्येल की पुस्तक को खण्डित करने का प्रयत्न किया है। और उन लोगों के लिये भी इतना कुछ है जो इस्राएली जाति को खारिज करते हैं और पुराने नियम की भविष्यद्वाणी को आत्मिक बनाते हैं! यीशु (वह जो बुद्धि का अवतार था, अचूक, और जो कुछ भी उसने कहा उसमें अचूक था) ने दानिय्येल की पुस्तक से परमेश्वर के ईश्वरीय प्रेरित वचन के भाग के रूप में उद्धृत किया। इसके अलावा, उसने दानिय्येल की भविष्यद्वाणियों को शाब्दिक रूप से लिया।

इतिहास की लम्बी, दुःखद यात्रा में कई क्रूर सताव किए गए हैं, परन्तु महाक्लेश प्रलय उन सभी को बौना कर देगा। शैतान और मसीह विरोधी इस ग्रह पर हर अंतिम यहूदी, 1,44,000 गवाहों में से हर एक हृदय परिवर्तित व्यक्ति और यहूदी-मसीहियत के हर एक अवशेष को मिटाने का प्रयत्न करेंगे। नरसंहार और क्रूरता के दृश्य वैश्विक स्तर पर और भयावह रूप में होंगे।

*सबसे बड़ी उद्घोषणा* (13:20-23) पर भी ध्यान देते हैं :

*यदि प्रभु उन दिनों को न घटाता, तो कोई प्राणी भी न बचता; परन्तु उन चुने हुओं के कारण जिनको उसने चुना है, उन दिनों को घटाया। (13:20)*

परमेश्वर के पास एक से अधिक चुने हुए लोग हैं जिन्हें उसने अपनी सम्प्रभु इच्छा के अनुसार और अपने सर्वज्ञ पूर्वज्ञान के अनुसार विभिन्न युगों में चुना है। कलीसिया एक ऐसा ही समूह है, जिसे अनन्त काल तक यीशु के समान रहने के लिये बुलाया और पूर्वनिर्धारित किया गया है (रोमियों 8:29-30)। जब तक यह विशेष भविष्यद्वाणी पूरी होने के लिये ध्यान में आएगी, तब तक कलीसिया का चुना हुआ समूह स्वर्ग में होगा।

1,44,000 गवाह (प्रकाशितवाक्य 7:1-8) एक और ऐसा ही चुना हुआ समूह है। वे भी, अंत-समय के क्रोध के आरम्भ होने से पहले स्वर्ग में उठा लिये जाएँगे (प्रकाशितवाक्य 14 अध्याय)। यह उनके हृदय परिवर्तित लोग हैं, वह “भीड़, जिसे कोई भी व्यक्ति गिन नहीं सकता” (प्रकाशितवाक्य 7:9), जो चुने हुए लोग हैं, जिनके बारे में प्रभु यहाँ सोच रहा हैं। वे, विश्वास करने वाले यहूदी बचे हुए लोगों के साथ, वे लोग हैं जिनके लिये महाक्लेश (मत्ती 24:15-22) की अवधि “कम” की जाएगी। यह अवधि मन्दिर में मसीह विरोधी की मूर्ति की स्थापना से लेकर हरमगिद्दोन की लड़ाई तक चलेगी। यह प्रभु यीशु के “अपने पवित्र लोगों के साथ” व्यक्तिगत् रूप से वापस आने से समाप्त हो जाएगी (यहूदा 14 आयत; प्रकाशितवाक्य 19:19-21)। यह भयानक अवधि साढ़े तीन वर्षों तक चलेगी - वास्तव में, प्रभु की सांसारिक सेवकाई के द्वारा बिताई गई अवधि के बराबर। इस अवधि को विभिन्न तरीकों से बताया गया है: “एक समय, और समयों, और आधे समय” के रूप में (प्रकाशितवाक्य 12:14), बयालीस महीने (प्रकाशितवाक्य 13:5), और 1,260 दिन (प्रकाशितवाक्य 11:3)। मसीह विरोधी से भागकर और पृथ्वी की पहाड़ियों और खोहों में छिपकर, विश्वासी वास्तव में दिन-प्रतिदिन गिनने में सक्षम होंगे कि यातना कितनी देर तक चलेगी।

*उस समय यदि कोई तुम से कहे, ‘देखो, मसीह यहाँ है,’ या ‘देखो, वहाँ है,’ तो प्रतीति न करना; क्योंकि झूठे मसीह और झूठे भविष्यद्वक्‍ता उठ खड़े होंगे, और चिह्न और अद्भुत काम दिखाएँगे कि यदि हो सके तो चुने हुओं को भी भरमा दें। पर तुम चौकस रहो; देखो, मैं ने तुम्हें सब बातें पहले ही से बता दी हैं। (13:21-23)*

झूठे भविष्यद्वक्ता, मसीह विरोधी के प्रचार का मुख्य सेवक, अन्य झूठे भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा समर्थित, झूठे चिह्न और आश्चर्यकर्म दिखाएगा (प्रकाशितवाक्य 13:13-15)। छिपे हुए और ईश्वरीय रूप से संरक्षित अंतिम समय के विश्वासियों को उनके पवित्र स्थानों से लुभाने का प्रयत्न किया जाएगा।

झूठा भविष्यद्वक्ता, विशेष रूप से, सभी प्रकार के झूठे आश्चर्यकर्म करने में सक्षम होगा। वास्तव में नया नियम में उद्धृत एक आश्चर्यकर्म उसकी शैतानी शक्ति को दर्शाता है क्योंकि शैतान सभी प्रकार के शानदार आश्चर्यकर्म करने में सक्षम है और अपने दूतों को भी ऐसा करने की शक्ति प्रदान करता है। झूठा भविष्यद्वक्ता वास्तव में मसीह विरोधी की मूर्ति को जीवन देगा और उसे उन लोगों को मार डालने के लिये सशक्त करेगा जो उसकी उपासना करने से इन्कार करते हैं (प्रकाशितवाक्य 13:13-16)।

प्रभु ने क्लेश के पवित्र लोगों को चेतावनी दी है कि वे शैतान के बहकावे में न आएँ। उनके पास “भविष्यद्वाणी का अधिक पक्का वचन” है (2 पतरस 1:19), उनके पास परमेश्वर का वचन है, जिसका ईश्वरीय कैलेंडर है, जिसके अनुसार उन्हें चलना है। उन्हें 1,260 दिन पूरे होने तक छिपे रहना चाहिए और चिन्हों, आश्चर्यकर्मों और अद्भुत कार्यों से मूर्ख नहीं बनना चाहिए। चेतावनी का हमारे लिये भी लाभकारी अनुप्रयोग है। झूठे भविष्यद्वक्ताओं और उनके झूठे आश्चर्यकर्मों के बारे में प्रभु की चेतावनी व्यवस्थाविवरण 13 अध्याय से एक उद्धरण है।

**घ. समाप्ति (13:24-27)**

सबसे पहले, *आकाश में दिखने वाले चिन्हों* पर ध्यान दें(13:24-25):

*“उन दिनों में, उस क्लेश के बाद सूरज अन्धेरा हो जाएगा, और चाँद प्रकाश न देगा; और आकाश से तारागण गिरने लगेंगे; और आकाश की शक्‍तियाँ हिलाई जाएँगी। (13:24-25)*

यह यशायाह 13:10 से एक उद्धरण है। यह हमें महाक्लेश के चरमोत्कर्ष और समापन की ओर संकेत करता है क्योंकि चिह्न होंगे, अचूक चिह्न, आकाश में चिह्न, ऊपर से चिह्न। वे शैतान के चिन्हों और आश्चर्यकर्मों को जादूगर की चालों के थैले की तरह बना देंगे। जब परमेश्वर अंत में अंतिम समय के चरण पर आगे बढ़ेगा तो इसमें कोई गलती नहीं होगी।

इस समय तक, मसीह विरोधी के द्वारा किए गए भयानक सताव और छटनी ने इस ग्रह पर विश्वास करने वाले लोगों की आबादी को बहुत कम कर दिया होगा। सभी युद्धों और अकालों, भूकम्पों और आपदाओं, महामारियों और उत्पीड़नों के कारण, लाखों-करोड़ों लोग मर चुके होंगे।

परन्तु अब सुदूर पूर्व की सेनाएँ मसीह विरोधी और पश्चिम के विरुद्ध विद्रोह में जुट गई हैं। चीनी जनशक्ति का जापानी तकनीक से विवाह हो जाएगा। फरात के पार एशियाई भीड़ को जुटाया जाएगा। मसीह विरोधी, अभी भी उन सभी लोगों को मिटाने में व्यस्त है जिनसे वह घृणा करता है, विशेष रूप से यहूदियों को, फिर भी, पूर्व से इस नये खतरे का सामना करने के लिये पश्चिम को जुटाएगा। हरमगिद्दोन के लिये मंच तैयार हो जाएगा।

भयावह आकाशमण्डलीय आपदाएँ प्रभु के आने के आगमन की सूचना देंगी, जो प्रकृति के सम्पूर्ण क्रम तथा सौरमण्डल और बाहरी अंतरिक्ष की संरचना और स्थिरता को प्रभावित करेंगी।

इस समय तक, युद्ध शायद पृथ्वी तक ही सीमित नहीं रहेगा; तथाकथित “तारों के युद्ध” एक वास्तविकता बन चुका होगा। यह अंतिम युद्ध परमाणु युद्ध का खतरा लेकर आएगा। परमाणु हथियार; अत्याधुनिक वितरण प्रणाली; और जैविक, रासायनिक और लेजर हथियार - सभी उन्नत कंप्यूटर प्रणालियों के द्वारा नियंत्रित - इस ग्रह के निरंतर अस्तित्व को खतरे में डाल देंगे जब यह पूर्व-पश्चिम युद्ध आरम्भ होगा।

हालाँकि, परमेश्वर की यह मंशा नहीं है कि मनुष्य इस ग्रह को जलाकर राख कर दे। इसलिये जो पूर्व और पश्चिम के बीच टकराव के रूप में आरम्भ होता है, वह स्वर्ग और पृथ्वी के बीच टकराव के रूप में समाप्त होगा। संसार वास्तव में अंत में एक अंतिम प्रलयकारी परमाणु प्रलय में डूब जाएगा, परन्तु परमेश्वर स्वयं उन भस्म करने वाली आग को प्रज्वलित करेगा और वह भी सहस्राब्दी के अंत तक नहीं (2 पतरस 3:10-12; प्रकाशितवाक्य 20:7-9)। वस्तुओं की मौजूदा संरचना का विघटन एक नये स्वर्ग और एक नयी पृथ्वी के निर्माण की प्रस्तावना होगी।

मनुष्य की अंतिम, आगमन-पूर्व पागलपन के लिये परमेश्वर का उत्तर आकाश में भयानक संकेत होंगे। वे न केवल प्रभु की तत्काल वापसी का संकेत देंगे, बल्कि उस ग्रह को पूरी तरह से नष्ट करने की मनुष्य की क्षमता को भी बेअसर कर देंगे।

*उद्धारकर्ता के चिह्न पर* भी ध्यान दें (13:26-27):

*तब लोग मनुष्य के पुत्र को बड़ी सामर्थ्य और महिमा के साथ बादलों में आते देखेंगे। (13:26)*

यह दानिय्येल 7:13 से लिया गया उद्धरण है, जिसमें योएल 2:31 का संदर्भ दिया गया है। यह देखना रोचक है कि प्रभु का युगांतशास्त्र कितना हद तक पुराने नियम के वचनों के उसके ज्ञान, उन पर उसके अटूट भरोसे और उनकी शाब्दिक व्याख्या पर आधारित था।

मगिद्दो में एकत्रित लाखों लोग ऊपर देखेंगे। वे उसे देखेंगे। आकाश में पहले के चिन्हों ने उनका ध्यान खींचा होगा और उनके हाथ रोक दिए होंगे। हालाँकि, वे चिह्न केवल प्रारम्भिक हैं। इसके बाद, वे स्वयं प्रभु को देखेंगे। उन नास्तिक लोगों के लिये यह कितना भयावह, अचम्भित दृश्य होगा जो मसीह विरोधी के द्वारा संगठित हैं, शैतान के द्वारा प्रेरित हैं, और झूठे भविष्यद्वक्ता के द्वारा धोखा दिए गए हैं जो मगिद्दो में एकत्रित हैं। वे प्रभु को उसकी महिमा में देखेंगे। वे भयभीत हो जाएँगे। संसार पर बाहरी अंतरिक्ष से आक्रमण किया जा रहा है!

हम हरमगिद्दोन के “युद्ध” के बारे में बात करते हैं। मसीह की एक झलक, और उसके शत्रु, बड़े से लेकर छोटे तक, पूरी तरह से स्तब्ध हो जाएँगे। यूहन्ना हमें उसके मुँह से निकलने वाली “तलवार” के बारे में बताता है (प्रकाशितवाक्य 19:15)। उसका एक वचन, और सब कुछ समाप्त हो जाएगा! मसीह विरोधी और झूठे भविष्यद्वक्ता को आग की झील में फेंक दिया जाएगा। परमेश्वर-विहीन लाखों लोग खोए हुए अनन्त काल में बह जाएँगे। शैतान को अथाह कुण्ड में कैद कर लिया जाएगा (प्रकाशितवाक्य 20:1-3)। प्रभु आखिरकार आ गया है!

*उस समय वह अपने दूतों को भेजकर, पृथ्वी के इस छोर से आकाश के उस छोर तक, चारों दिशाओं से अपने चुने हुए लोगों को इकट्ठा करेगा। (13:27)*

शैतान के द्वारा उन सभी को मार डालने के प्रयत्नों के बावजूद, बहुत से पवित्र लोग अभी भी जीवित रहेंगे। परमेश्वर के पास उसके लोग हैं, कुछ पृथ्वी पर और, नि:संदेह, कुछ स्वर्ग में। पृथ्वी पर वे विश्वास करने वाले यहूदी अवशेष और 1,44,000 गवाहों में से बचे हुए गैर-यहूदी परिवर्तित और सुसमाचार प्रचारक स्वर्गदूत के परिवर्तित लोग होंगे (प्रकाशितवाक्य 14:6-7)। स्वर्गदूत उन्हें लम्बे समय से प्रतीक्षित, अब-वापस आए मसीह से मिलने के लिये इकट्ठा करेंगे। “छुड़ौती पाए हुए लोगों की यह कैसी सभा होगी!”

हम भविष्यद्वक्ता योएल और स्वयं प्रभु यीशु (योएल 3:1-2; मत्ती 25:31-46) से सीखते हैं कि प्रभु अब यहोशापात की घाटी में अपना न्याय-सिंहासन स्थापित करेगा। सर्वनाश के विभिन्न नरसंहारों के अजन्मे बचे लोगों को मुकदमे के लिये वहाँ बुलाया जाएगा। जब यह सब समाप्त हो जाएगा, तो तीन समूह होंगे: बचे हुए यहूदी जो अब मसीह के साथ पहचाने जाते हैं; गैर-यहूदी विश्वासी; और वे जो मसीह विरोधी का पक्ष लेते हैं। इस अंतिम समूह को पृथ्वी से तुरन्त निर्वासित कर दिया जाएगा; अन्य, यहूदी और गैर-यहूदी, सहस्राब्दी युग की जनसंख्या का केंद्र होंगे।

**ङ. पेड़ (13:28-33)**

*“अंजीर के पेड़ से यह दृष्‍टान्त सीखो : जब उसकी डाली कोमल हो जाती, और पत्ते निकलने लगते हैं; तो तुम जान लेते हो कि ग्रीष्मकाल निकट है। इसी प्रकार जब तुम इन बातों को होते देखो, तो जान लो कि वह निकट है वरन् द्वार ही पर है। (13:28-29)*

प्रभु के द्वारा जैतून के पहाड़ पर उपदेश देने से एक दिन पहले, उसने एक फलरहित अंजीर के पेड़ को शाप दिया (मत्ती 21:18-20)। यह बहुत ही महत्वपूर्ण प्रतीकात्मक कार्य था क्योंकि यह प्रभु का एकमात्र न्याय आश्चर्यकर्म था। एक दिन के भीतर, वह अंजीर का पेड़ मर गया। यह समृद्ध परन्तु मसीह को अस्वीकार करने वाली इस्राएली जाति का प्रतीक था।

अंजीर के पेड़ को शाप देने के साथ-साथ मसीह ने विद्रोही जाति को भी शाप दिया (मत्ती 13)। उस जाति पर घोषित विपत्तियों की एक श्रृंखला ने भविष्यद्वाणी की कि एक पीढ़ी के भीतर इस्राएली जाति परमेश्वर के न्याय के अधीन आ जाएगी।

70 ईस्वी में रोमियों ने यरूशलेम और मन्दिर को नष्ट कर दिया। 135 ईस्वी में, बार चोचबा विद्रोह के समय, उन्होंने यहूदी जातीय जीवन के बचेहिस्से को समाप्त कर दिया, मोरिय्याह पर्वत पर एक मूर्तिपूजक मन्दिर बनवाया और देश का नाम बदलकर - यहूदियों के वंशानुगत शत्रुओं, पलिश्तीनियों के नाम पर - पलिश्तीन रख दिया ।

अंजीर के पेड़ और उसकी प्रतीक जाति (इस्राएल) को शाप देने के लिये इतना ही पर्याप्त है। फिर प्रभु ने महान चिह्न दिया जिससे हम जान सकते हैं कि अंत समय की घटनाएँ पूरी होने वाली हैं। “अंजीर के पेड़ से यह दृष्टान्त सीखो!” उसने कहा। अर्थात्, इस्राएली जाति को देखो, जिसका प्रतीक अंजीर का पेड़ है। उसने संकेत दिया कि इस्राएल के लोग - जो सदियों से शाप के अधीन पीड़ित हैं, संसार भर में बिखरे हुए हैं, जिनसे घृणा की जाती है और जो सताए जाते हैं - अंत समय में प्रतिज्ञा किए गए देश में वापस आएँगे। इस्राएली जाति पुनर्जीवित होगी। परन्तु इस बात पर ध्यान दें: पुनर्जीवित इस्राएली जाति केवल “पत्तियाँ” दिखाएगी, अर्थात्, यह अभी भी मसीह को अस्वीकार करने वाली जाति होगी। परन्तु यह फिर से एक जाति होगी! यह सब हमारे अपने जीवनकाल में हुआ है। इस्राएल वापस भूमि पर है, अविश्वास में वापस है, ठीक उसी समय वापस आया है जब लम्बे समय से भविष्यद्वाणी की गई और लम्बे समय से विलम्बित अंत समय की घटनाओं का अनुभव किया जा रहा है। इस्राएल राज्य का नया जन्म हमें बताता है कि प्रभु की वापसी निकट है, बल्कि द्वार पर ही है।

*मैं तुम से सच कहता हूँ कि जब तक ये सब बातें न हो लेंगी, तब तक ये लोग जाते न रहेंगे। (13:30)*

यहाँ “ये लोग” किस पीढ़ी को संदर्भित करता है? स्पष्ट है कि यह वह पीढ़ी नहीं है जिसके *बारे में* प्रभु बोल रहा था क्योंकि वह पीढ़ी बहुत पहले ही गुजर चुकी है। यह वह पीढ़ी थी जिसने इस्राएली जाति को शाप दिए जाने और यहूदी लोगों के बिखराव को देखा था। तो निश्चित रूप से, यह वह पीढ़ी होनी चाहिए जिसके *बारे में* वह बोल रहा था, वह पीढ़ी जो वास्तव में इस्राएली जाति के नये जन्म को देखती है।

अनिश्चितता के दो कारक बने हुए हैं। हमें नहीं पता कि यह कब पूरा होना आरम्भ होगा। कुछ लोगों ने इसे वह तारीख माना है जब इस्राएल को एक सम्प्रभु राज्य घोषित किया गया था—14 मई, 1948। दूसरों ने सोचा है कि 7 जून, 1967, जिस दिन यहूदियों ने यरूशलेम पर फिर से कब्जा किया और मन्दिर पर्वत पर कब्जा किया, वह अधिक महत्वपूर्ण है। या यह कोई और समान रूप से उल्लेखनीय घटना हो सकती है।

न ही हम पीढ़ी की सटीक लम्बाई जानते हैं। यह माप की एक बहुत ही लचीली इकाई है। प्रभु के अपने दिन में, उसने अपने जैतून पर्वत के उपदेश (मत्ती 24-25) से ठीक पहले मौजूदा इस्राएली जाति के विनाश की भविष्यद्वाणी की (मत्ती 23:34-39)। यह भविष्यद्वाणी 33 ईस्वी में दी गई थी। यह अंत में 135 ईस्वी तक पूरी नहीं हुई। अत:, उस मामले में, एक पीढ़ी पूरी एक सदी तक चलती थी।

एक बात तो निश्चित है: इस्राएली जाति का नया जन्म उन सभी अन्त-समय की घटनाओं के आरम्भ की घोषणा करता है, जो कलीसिया के उठाए जाने, मसीह विरोधी के प्रकट होने, तथा उन सभी अन्य मामलों को जन्म देंगी, जिनका वर्णन मरकुस ने किया है।

*आकाश और पृथ्वी टल जाएँगे, परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगी। (13:31)*

अविश्वासी लोग उपहास कर सकते हैं। मसीही होने का दावा करने वाले लोग व्याख्या की ऐसी योजनाओं को अपना सकते हैं जो भविष्यद्वाणियों के पवित्रशास्त्र को रूपक बनाती हैं और स्पष्ट रूप से शाब्दिक कथनों को स्पष्ट करती हैं। हालाँकि, यह भविष्यद्वाणी, अन्य प्रासंगिक भविष्यद्वाणियों के प्रकाश में पढ़ी जाती है और शाब्दिक और व्याकरण के रूप से व्याख्या की जाती है, यह बिलकुल स्पष्ट है। प्रभु ने वही कहा जो उसका अर्थ था और उसका अर्थ वही था जो उसने कहा। हमें उसके वचन पर विश्वास करना चाहिए - एक ऐसा वचन जिसे तोड़ा नहीं जा सकता, एक ऐसा वचन जो तारों वाले आकाश से भी अधिक पक्का और दृढ़ है।

*“उस दिन या उस घड़ी के विषय में कोई नहीं जानता, न स्वर्ग के दूत और न पुत्र; परन्तु केवल पिता। (13:32)*

प्रभु हमें याद दिलाता हैं कि स्वर्गारोहण की तिथि जगत का सबसे सुरक्षित रहस्य है। कलीसिया के *स्वर्गारोहण* (अंतिम समय उत्प्रेरक) और मगिद्दो में अपने शत्रुओं से निपटने और अपना राज्य स्थापित करने के लिये प्रभु की बाद की *वापसी* के बीच यही अंतर है। स्वर्गारोहण की तिथि गुप्त है; अंतिम वापसी की तिथि की गणना पृथ्वी पर अभी भी जीवित बचे परमेश्वर के लोगों के द्वारा की जा सकती है।

*स्वर्गारोहण* कलीसिया के लिये है; *वापसी इस्राएल के लिये है।* स्वर्गारोहणतब होता है जब प्रभु *हवा* में आता है*;* वापसी तब होती है जब उसके पाँव *जैतून के पहाड़* को चीरते हैं(जकर्याह 14:1-5)। स्वर्गारोहण तब होता है जब प्रभु अपनी कलीसिया के लिये *आता* है; वापसी तब होती है जब वह अपनी कलीसिया *के साथ* आता है*।* स्वर्गारोहण की तिथि *गुप्त है;* वापसी की तिथि की *गणना* क्लेश युग में रहने वाले लोग कर सकते हैं। जिस तिथि से मसीह विरोधी ने पुनर्निर्मित यहूदी मन्दिर पर कब्जा किया, उस तिथि से लेकर मसीह की सामर्थ्य और महिमा में अंतिम आगमन तक 1,260 दिन होंगे।

स्वर्गारोहण के लिये तिथियाँ निर्धारित करना मूर्खता की पराकाष्ठा है। ऐसा करने के एक ऐसे ही आधुनिक प्रयत्न ने संयुक्त राज्य अमेरिका में राष्ट्रीय ध्यान आकर्षित किया।

नेशनल एरोनॉटिक्स एण्ड स्पेस एडमिनिस्ट्रेशन (नासा) के सेवानिवृत्त स्पेस इंजीनियर एडगर सी. विसेनेंट ने एक व्यापक रूप से प्रसारित पुस्तिका प्रकाशित की जिसका शीर्षक था *अठासी* *कारण कि प्रभु अठासी में आएगा।* यह पुस्तिका सत्य और त्रुटि का एक विचित्र मिश्रण थी। लेखक ने दावा किया कि प्रभु रविवार, 11 सितंबर; सोमवार, 12 सितंबर; या मंगलवार, 13 सितंबर, 1988 को आएगा - पसंदीदा तिथि 12 सितंबर थी, जो यहूदी नव वर्ष की तिथि है।

स्वर्गारोहण की तिथि निर्धारित करने से संतुष्ट न होकर, विसेनेंट ने भविष्यद्वाणियों की एक पूरी श्रृंखला सूचीबद्ध की: मसीह विरोधी 21 सितंबर को इस्राएल के साथ अपनी सात वर्ष की संधि पर हस्ताक्षर करेगा; 26 सितंबर को 1,44,000 गवाहों पर मुहर लगा दी जाएगी; 4 अक्तूबर को तीसरा विश्व युद्ध आरम्भ होगा और साढ़े तीन सप्ताह तक चलेगा। यरूशलेम में मन्दिर का अभिषेक 18 जून, 1989 को किया जाएगा; दो गवाहों को 9 मार्च, 1992 को मार दिया जाएगा; हरमगिद्दोन का युद्ध 4 अक्तूबर, 1995 को होगा; और हज़ार वर्षों का राज्य 23 दिसंबर, 1995 को आरम्भ होगा।

जब सन् 1988 में प्रभु प्रकट नहीं हुआ, तो विसेनेंट ने पुनर्गणना की। उसने कहा कि उसकी मूल पुस्तक परमेश्वर के द्वारा चेतावनी के रूप में लिखी गई थी। विसेनेंट ने स्वर्गारोहण के लिये एक संशोधित तिथि सुझाई—1 सितंबर, 1989। एक और चूक! और कोई आश्चर्य नहीं—स्वर्गारोहण की तिथि एक रहस्य है।

*देखो, जागते और प्रार्थना करते रहो; क्योंकि तुम नहीं जानते कि वह समय कब आएगा। (13:33)*

*जागते रहने का* अर्थ है “बिना सोए पड़े रहना” या “जागते रहना” (देखभाल या चिन्ता के कारण)। जैसे-जैसे चिह्न बढ़ने लगते हैं, उन्हें हमारी आँखों से नींद भगा देनी चाहिए। हमें रात में जागते समय अपने मन में उसके आने के विचार के साथ जागना चाहिए। हमें हर दिन यह शब्द लिखने चाहिए कि *शायद वह आज* का दिन हो! और *नींद* न आने को प्रार्थना से जोड़ना चाहिए, विशेष रूप से जब हम खोए हुए प्रियजनों के बारे में सोचते हैं, यदि प्रभु वास्तव में आज आता हैं, तो सर्वनाश की भयावहता का सामना करना पड़ेगा।

**च. परीक्षा (13:34-37)**

*यह उस मनुष्य की सी दशा है, जो परदेश जाते समय अपना घर छोड़ जाए, और अपने दासों को अधिकार दे : और हर एक को उसका काम बता दे, और द्वारपाल को जागते रहने की आज्ञा दे। (13:34)*

प्रभु यीशु ने बिलकुल यही किया। ऊपरौठी कोठरी में उपदेश के दौरान, उसने अपने चेलों से कहा कि वह जल्द ही पृथ्वी छोड़कर स्वर्ग जाने वाला हैं (यूहन्ना 14:1-6)। वह अपने पिता के घर जा रहा था। यह “एक लम्बी यात्रा” थी - शायद समय और यात्रा के अनुमान से दूर नहीं, उस व्यक्ति के लिये भी दूर नहीं जो दूरी को मिटा सकता है। परन्तु, उसके चेलों के दृष्टिकोण से, यह वास्तव में एक बहुत दूर लम्बी यात्रा थी। वह चला जाएगा! और यह बहुत लम्बे समय के लिये होगा - लगभग दो हज़ार वर्ष।

इस बीच, उन्हें प्रतीक्षा करनी चाहिए और काम करना चाहिए और देखना चाहिए! “द्वारपाल” के लिये, वुएस्ट का सुझाव है कि वह प्रेरितों का प्रतिनिधित्व करता है। अन्य सभी से ऊपर, प्रेरितों को सतर्क रहना था। उन्हें “जागते रहना” था। इस बार, उपयोग किए गए शब्द का अर्थ है “जागते रहना।” नि:संदेह, पतरस ने मरकुस को गतसमनी में जागते रहने में अपनी दुःखद अक्षमता के बारे में बताया होगा। जब तक कुछ दशक बीत गए, विधर्म ने अपना सिर उठाया और धर्मत्याग तेजी से दुस्साहसपूर्ण होता गया, तब तक सतर्कता की आवश्यकता बहुत स्पष्ट थी। सतर्कता की भावना अब हम तक पहुँच गई है। उदाहरण के लिये, पौलुस ने इफिसुस के प्राचीनों को बहुत शक्तिशाली विदाई भाषण में सतर्क रहने के लिये कहा (प्रेरितों 20:17-38)। उन्हें भेड़ियों से सावधान रहना था।

*इसलिये जागते रहो, क्योंकि तुम नहीं जानते कि घर का स्वामी कब आएगा, साँझ को या आधी रात को, या मुर्ग़ के बाँग देने के समय या भोर को। (13:35)*

जागते रहो! जागते रहो! जागते रहो! यही शब्द पद 34, 35 और 37 में उपयोग किया गया है। इसका अर्थ है “जागते रहना।” कौन जानता है कि स्वामी की वापसी आधी रात को होगी, दोपहर के समय, जब सूरज ढल रहा होगा, या जब मुर्गा दूसरे दिन की सुबह का चिह्न देगा? फिर से पतरस ने मरकुस को बताया कि वह विशेष चिह्न उसके लिये कितना पीड़ादायी था (यूहन्ना 13:37-38; 18:15-27)।

*ऐसा न हो कि वह अचानक आकर तुम्हें सोते पाए। 37और जो मैं तुम से कहता हूँ, वही सबसे कहता हूँ : जागते रहो!” (13:36-37)*

“सोने” के शब्द का अर्थ है स्वेच्छा से सोने के लिये स्वयं को तैयार करना। इस प्रकार, प्रभु अपने लोगों को चेतावनियों से भर देता है। जैसे-जैसे उसके लौटने का समय करीब आता है, हमें अपने आसपास चल रही हर वस्तु पर दृष्टि रखनी चाहिए। क्यों? क्योंकि वह आ रहा *है* ! वह बिना बताए आ रहा है! वह अपने सेवकों का लेखा लेने आ रहा है। हम किसी भी तरह की सुस्ती या आलस्य को उसके आने से अचानक नहीं रोक सकते।

**खंड 3—रूपरेखा**

**खंड 3: कलवरी के क्रूस का चित्रण (14:1-31)**

1. शत्रु (14:1-2)
   1. अवधि (14:1a)
   2. प्रस्ताव (14:1b)
   3. समस्या (14:2)
2. मित्र (14:3-9)
   1. आराधना (14:3)
      1. घर (14:3a)
      2. श्रद्धांजलि (14:3b-c)
         1. यह अनमोल था (14:3b)
         2. यह व्यक्तिगत् था (14:3c)
   2. आरोप (14:4-5)
      1. विस्मयादिबोधक (14:4)
      2. मूल्यांकन (14:5a)
      3. एक व्याख्या (14:5b)
      4. एक भावना (14:5c)
   3. प्रशंसा (14:6-8)
      1. प्रभु ने उसकी रक्षा की (14:6)
      2. प्रभु ने उन्हें नष्ट कर दिया (14:7-8)
         1. उनका सामाजिक अंधापन (14:7)
         2. उनका आत्मिक अंधापन (14:8)
   4. प्रशंसा (14:9)
3. अनुयायी (14:10-11)
   1. तथ्य (14:10)
   2. संधि (14:11a-b)
      1. प्रधान याजकों की प्रसन्नता (14:11a)
      2. प्रधान याजकों की प्रतिज्ञा (14:11b)
   3. कार्य (14:11c-d)
      1. यह कितना जानबूझकर किया गया था (14:11c)
      2. यह कितना शैतानी था (14:11d)
4. पर्व (14:12-15)
   1. पुराने युग का अंतिम फसह (14:12-21)
      1. तैयारी (14:12-16)
         1. दिन (14:12a)
         2. चेले (14:12b)
         3. निर्देश (14:13-16)
            1. वे कितने सरल थे (14:13-14)

एक पुरुष (14:13)

एक संदेश (14:14)

* + - * 1. वे कितने सफल हुए (14:15-16)

जगह तैयार हो गई (14:15)

फसह का पर्व तैयार किया गया (14:16)

* + 1. भविष्यद्वाणी (14:17-21)
       1. वचन (14:17-18)
          1. समय (14:17)
          2. सत्य (14:18)

इसने एक आनन्दपूर्ण भोज में बाधा उत्पन्न की (14:18a)

इसने एक चौंकाने वाला तथ्य प्रस्तुत किया (14:18b)

* + - 1. हाय (14:19-20)
         1. बारहों की निराशा (14:19)
         2. धोखेबाज का खुलासा (14:20)
      2. चेतावनी (14:21)
         1. पवित्रशास्त्र ने क्या घोषित किया (14:21a)
         2. उद्धारकर्ता ने क्या घोषणा की (14:21b-c)

विश्वासघाती का दण्ड प्रकट किया गया (14:21b)

विश्वासघाती का दण्ड प्रबल किया गया (14:21c)

* 1. नये युग के लिये प्रभु का प्रबन्ध (14:22-25)
     1. एक सचित्र दृश्य (14:22-24)
        1. उसकी देह का प्रतीक (14:22)
           1. धन्य रोटी (14:22a)
           2. तोड़ी गई रोटी (14:22b)
        2. उसके लहू का प्रतीक (14:23-24)
           1. कटोरा (14:23)
           2. वाचा (14:24)
     2. एक व्यक्तिगत् प्रतिज्ञा (14:25a)
     3. एक भविष्यसूचक दर्शन (14:25b)

1. पूर्वानुमान (14:26-31)
   1. फसह का समापन (14:26)
   2. दुःखभोग का आरम्भ (14:27-31)
      1. एक उद्धरण (14:27)
         1. उद्धारकर्ता ने क्या कहा (14:27a)
         2. पवित्रशास्त्र ने क्या कहा (14:27b)
      2. योग्यता (14:28)
      3. एक झगड़ा (14:29-31)
         1. पतरस का घमण्ड (14:29-31a)
            1. घमण्ड को दर्ज किया गया (14:29)
            2. घमण्ड का खण्डन (14:30)
            3. घमण्ड दोगुना हो गया (14:31a)
         2. पतरस के भाई (14:31b)

**खंड 3: कलवरी के क्रूस का चित्रण (14:1-31)**

**क. शत्रु (14:1-2)**

*दो दिन के बाद फसह और अखमीरी रोटी का पर्व होनेवाला था। प्रधान याजक और शास्त्री इस बात की खोज में थे कि उसे कैसे छल से पकड़ कर मार डालें; परन्तु कहते थे, “पर्व के दिन नहीं, कहीं ऐसा न हो कि लोगों में बलवा मचे।” (14:1-2)*

फसह का वार्षिक पर्व, जिसके साथ अखमीरी रोटी खाने का सप्ताह भी था, निकट था। लगभग पंद्रह सौ वर्षों से, यहूदी लोग मिस्र की गुलामी से अपने छुटकारे और प्रतिज्ञा किए गए देश की यात्रा के आरम्भ का आनन्द मनाते आ रहे थे।

अब फसह का सच्चा मेम्ना उनके बीच में था। उसके लहू के बहने से अशुद्धता का एक फव्वारा खुल जाएगा (जकर्याह 13:1) जो सभी मानवजाति के लिये छुटकारा उपलब्ध करवाएगा। वह बिना दाग या दोष के था, और यहूदी अधिकारी यह अच्छी तरह जानते थे। वे जानते थे कि वे उसे व्यवस्था के द्वारा परख कर कुछ नहीं पा सकते थे; उसने सब कुछ, अक्षर और आत्मा दोनों में, हर एक आज्ञा, हर एक दिन के हर एक पल का पालन किया था। अत: उन्होंने छल का सहारा लेने का निर्णय किया। वे उसके विरुद्ध मामला गढ़ेंगे।

उनकी समस्या का एक हिस्सा यह जानना था कि उसे कैसे पकड़ा जाए। भीड़ के लिये उनके मन में एक स्वस्थ सम्मान था। लोगों ने यीशु को आश्चर्यकर्म करने वाले भविष्यद्वक्ता के रूप में स्वीकार किया था, अत: दिन के उजाले में उसके विरुद्ध कोई भी कदम दंगा भड़का सकता था। सबसे बढ़कर, उन्हें फसह के समय दंगा नहीं भड़काना चाहिए था, जब यरूशलेम न केवल पूरे देश से बल्कि समूचे संसार से यहूदियों से भरा हुआ था। कौन बता सकता था कि यदि वे एक बार गलती से उस भीड़ के जुनून को भड़का दें तो एक चिंगारी से किस तरह की आग भड़क सकती है?

अत: वे अपने धार्मिक वस्त्रों में वहाँ बैठे और परमेश्वर के पुत्र की हत्या का षड्यंत्र रचा। वे कितने अंधे थे! उस दिन जब वह वापस आएगा, तो वे कितने अंधे हो जाएँगे। उसके सामने तारे फट जाएँगे, असीम आकाशीय आतिशबाज़ी की तरह आग की चिंगारी में बिखर जाएँगे। सूर्य अंधकार में डूब जाएगा जैसा कि कलवरी में हुआ था, और चाँद आधी रात की तरह काला हो जाएगा। और एक छोटे-से राजनीतिक-धार्मिक न्यायालय के ये षड्यंत्रकारी, षड्यंत्र रचने वाला, तुच्छ छोटे टिन के डब्बे वाले गणमान्य व्यक्ति, जिन्हें केवल एक कब्जा करने वाली शक्ति की इच्छा पर अपने सत्र आयोजित करने की अनुमति है, उसे देखेंगे (प्रकाशितवाक्य 1:7)। और वे अंत में उसके सामने भय से काँप उठेंगे।

**ख. मित्र (14:3-9)**

*जब वह बैतनिय्याह में शमौन कोढ़ी के घर भोजन करने बैठा हुआ था, तब एक स्त्री संगमरमर के पात्र में जटामांसी का बहुमूल्य शुद्ध इत्र लेकर आई; और पात्र तोड़ कर इत्र को उसके सिर पर उण्डेला। (14:3)*

हम नहीं जानते कि यह स्त्री कौन थी। स्पष्ट है, यह वह घटना नहीं है जो यूहन्ना ने दर्ज की थी, जो फसह से छह दिन पहले लाज़र के घर में हुई थी (यूहन्ना 12:1)। न ही हम जानते हैं कि शमौन कोढ़ी कौन था। वह सम्भवतः उन कई कोढ़ियों में से एक था, जिनकी प्रभु के द्वारा शुद्धि करने का वर्णन सुसमाचारों में दर्ज है।

प्रभु उसका अतिथि था। उसी गाँव में मार्था, मरियम और लाज़र रहते थे। शायद जिस स्त्री के बारे में मरकुस ने लिखा है, वह मरियम के उदाहरण से प्रेरित थी। शायद, शमौन ने भी, जो पहले कोढ़ी था, अपनी कृतज्ञता व्यक्त करने के लिये यीशु और उसके चेलों को भोजन के लिये अपने घर आमंत्रित किया था। हर जगह महासभा के गुप्तचरों के साथ, ऐसा करना एक साहसिक काम था।

जटामांसी एक दुर्लभ और महंगा इत्र था। जिस संगमरमर के पात्र में इसे रखा गया था वह भंगुर था, इसलिये इसे आसानी से तोड़ा जा सकता था। उण्डेले गए इत्र ने प्रभु के सिर का अभिषेक किया और पूरे घर को अपनी सुगंध से भर दिया। यह सबसे गर्मजोशी और ईमानदारी से की गई भक्ति का कार्य था। हर तरफ यीशु के शत्रुओं की संख्या बढ़ने के साथ, इन विभिन्न व्यक्तियों के द्वारा किए गए प्रेम और विश्वासयोग्यता के इन अंतिम कार्यों ने उसके हृदय को गर्म कर दिया होगा।

*परन्तु कोई कोई अपने मन में रिसियाकर कहने लगे, “इस इत्र का क्यों सत्यानाश किया गया? (14:4)*

दूसरे अभिषेक में, केवल यहूदा का उल्लेख किया गया है। वह वही व्यक्ति था जिसने मरियम की भेंट का इतना बड़ा नगद मूल्य लगाया था। प्रभु ने उसे डाँटा था। परन्तु स्पष्ट है कि कुछ चेलों ने गुप्त रूप से यहूदा से सहमति जताई थी और इस विशेष घटना के समय भी ऐसा ही था। महंगे इत्र के इस उण्डेले जाने से उनके बुरे विचार फिर से जाग उठे, हालाँकि वे पहले अपनी राय व्यक्त करने में बहुत समझदार थे। जब उन्होंने अपनी बात कही, तो वे सभी यहूदा की तरह ही बोल रहे थे।

*क्योंकि यह इत्र तो तीन सौ दीनार से अधिक मूल्य में बेचा जा कर कंगालों में बाँटा जा सकता था।” और वे उसको झिड़कने लगे। (14:5)*

उन दिनों में, तीन सौ दीनार एक बड़ी रकम हुआ करती थी। एक व्यक्ति एक दीनार के लिये पूरे दिन खेतों में मजदूरी करता था। चेलों के मन में जो रकम थी, वह एक वर्ष की मजदूरी के बराबर थी। उन्हें यह एक बहुत बड़ी रकम लगी। यह सुनकर यहूदा को थोड़ी देर के लिये व्यंग्यात्मक संतुष्टि मिली होगी कि दूसरे चेले भी वही कह रहे थे जो उसने कहा था। हालाँकि, प्रभु के सच्चे चेलों को कंगालों की कुछ वास्तविक चिन्ता थी, जबकि यहूदा एक चोर था और थैला लूटने का अवसर खो देने से वह परेशान था (यूहन्ना 12:6)।

वे उस स्त्री को “झिड़कने लगे”। यूनानी भाषा शब्द का अर्थ है कि वे “बहुत दुःखी” थे। उन्होंने इस मुद्दे पर कुछ गर्माहट उत्पन्न की। आखिरकार, वे जानते थे कि निर्धन होना कैसा होता है।

*यीशु ने कहा, “उसे छोड़ दो; उसे क्यों सताते हो? उस ने तो मेरे साथ भलाई की है। कंगाल तुम्हारे साथ सदा रहते हैं, और तुम जब चाहो तब उनसे भलाई कर सकते हो; पर मैं तुम्हारे साथ सदा न रहूँगा। (14:6-7)*

चेलों के द्वारा की गई आलोचना ने कटुता को जन्म दिया। स्पष्ट है कि वह स्त्री स्वयं उनके आक्रमण के आगे झुक गई। इस बलिदानपूर्ण और सार्वजनिक आराधना को करने के लिये उसे पहले से ही काफी सोच-विचार, संकल्प और साहस की आवश्यकता रही होगी। शायद प्रभु ने उस स्त्री को सिकुड़ते हुए देखा होगा । किसी भी मामले में, उसने चेलों के कठोर और विचारहीन शब्दों को सुना और तुरन्त उसके बचाव में आगे आया।

हमेशा मौजूद रहने वाले कंगाल! जल्द ही जाने वाला प्रभु! उनके पास कंगालों की सेवा करने के अनन्त अवसर होंगे! परन्तु अब उनके पास यीशु के लिये कुछ व्यक्तिगत् करने के लिये केवल क्षणभंगुर अवसर थे, जैसा कि इस स्त्री ने किया था। उसने इसे “एक भला कार्य,” कहा, एक अच्छा काम एक ऐसे संसार में जहाँ भले काम दुर्लभ हैं।

कंगालों की सेवा करना हमेशा से कलीसिया की चिन्ता का विषय रहा है। विधवाएँ और अनाथ, बीमार और पीड़ित, विकलांग और अपंग, पागल, समाज से बाहर हुए लोग - सभी को कलीसिया की सेवाओं के द्वारा एक ठंडे, क्रूर संसार में आश्रय मिला है। यह मसीह ही था जिसने अपने चेलों को बहिष्कृत लोगों की देखभाल करना सिखाया; यह उसकी कलीसिया ही थी जिसने संसार को अस्पताल और शरणालय बनाना सिखाया। कलीसिया के इतिहास समाज की विफलताओं और कुरूप लोगों की देखभाल करने के उसके प्रयासों से भरे पड़े हैं।

*जो कुछ वह कर सकी, उसने किया; उसने मेरे गाड़े जाने की तैयारी में पहले से मेरी देह पर इत्र मला है। (14:8)*

इस प्रकार, यीशु ने उसके कार्य को समझ लिया। उसकी आराधना का कार्य चेलों की समझ से बहुत ऊपर था। उन्होंने प्रभु की आने वाली मृत्यु, गाड़े जाने और पुनरुत्थान के सभी विचारों को लगातार रोकते रहे। हालाँकि, इस स्त्री ने इस तथ्य को समझ लिया था कि प्रभु जल्द ही मरने वाला था और उसे गाड़ा जाना था। वह घटनाओं के आगे बढ़ने, अधिकारियों के द्वारा यीशु को मार डालने की स्पष्ट मंशा को रोक नहीं सकती थी। न ही यह सम्भव था कि उसे यीशु के गाड़े जाने में हिस्सा लेने की अनुमति दी जाती। वैसे, वह *अब* जो कर सकती थी, वह करेगी।इस प्रकार, उसने आकर भक्ति के एक शानदार असाधारण कार्य में, गाड़े जाने के लिये उसका अभिषेक किया! पतरस ऐसा कर सकता था! यूहन्ना ऐसा कर सकता था! थोमा ऐसा कर सकता था! उनमें से कोई भी ऐसा कर सकता था! परन्तु उनमें से किसी ने भी ऐसा नहीं किया। *उसने* किया! और यीशु उसकी आलोचना नहीं होने देगा।

*मैं तुम से सच कहता हूँ कि सारे जगत में जहाँ कहीं सुसमाचार प्रचार किया जाएगा, वहाँ उसके इस काम की चर्चा भी उसके स्मरण में की जाएगी।” (14:9)*

तुरन्त प्रसिद्धि ! हालाँकि, हमें महिमा तक पहुँचने तक प्रतीक्षा करनी होगी, इससे पहले कि हम यह जान सकें कि वह कौन थी। सुसमाचार की कहानी अब हज़ारों भाषाओं में प्रकाशित हो चुकी है, और दो हज़ार से अधिक वर्षों से इसका प्रचार किया जा रहा है। सदियों से हर देश में इस स्त्री के “भले काम” के बारे में बताया जाता रहा है। यह वह प्रसिद्धि थी जिसकी उसे खोज नहीं थी, बल्कि प्रभु ने उसे तुरन्त प्रदान की।

कोई भी व्यक्ति प्रभु की सेवा नहीं कर सकता, जो उसके हृदय को छू ले, और एक दिन उसका प्रचार न किया जाए। यह मसीह के न्याय सिंहासन पर सभी को सुनने के लिये बताया जाएगा! यह अनन्त पहाड़ियों में घोषित किया जाएगा। इसे अनन्त काल तक याद रखा जाएगा।

**ग. अनुयायी (14:10-11)**

*तब यहूदा इस्करियोती जो बारह में से एक था, प्रधान याजकों के पास गया कि उसे उनके हाथ पकड़वा दे। (14:10)*

यह यहूदा के लिये अंतिम तिनका था। प्रभु के द्वारा अपने कुड़कुड़ाते चेलों को फटकारना और उस स्त्री की प्रशंसा करना उसके मन को खट्टा कर गया। उसने गलत काम में हाथ डाला था। वह ऐसे अवास्तविक “मसीहा” के साथ बने रहने में कोई राजनीतिक या आर्थिक लाभ नहीं देख सकता था। उसने कुछ दिन पहले, यरूशलेम में विजयी प्रवेश के समय सोचा था कि, आखिरकार, आंदोलन कहीं पहुँचने वाला है। परन्तु नहीं! यह वही का वही था, प्रतिष्ठानों को और अधिक परेशान करना, महासभा को और अधिक भड़काना। वे अब इस अवांछित मसीह से छुटकारा पाने के बारे में गम्भीर थे। डूबते जहाज के साथ रहना सरासर मूर्खता होगी। नि:संदेह, जो करना था वह अपने नुकसान को कम करना था, जब तक वह अभी भी बाहर निकल सकता था, और इस प्रक्रिया में कुछ शेकेल कमाना था। अत: वह याजकों के साथ सौदा करने के लिये खिसक गया।

यहाँ “गया” शब्द का अर्थ है पकड़ना। इसका अर्थ है “वह चला गया।” इसका तात्पर्य यह था कि वह प्रभु के द्वारा अपने चेलों को दी गई नवीनतम फटकार से दुःखी था। नि:संदेह, उसने उस फटकार को अपने ऊपर एक और प्रहार के रूप में देखा।

*वे यह सुनकर आनन्दित हुए, और उसको रुपये देना स्वीकार किया; और वह अवसर ढूँढ़ने लगा कि उसे किसी प्रकार पकड़वा दे। (14:11)*

धार्मिक अगुवे अपनी समस्या के इस अप्रत्याशित समाधान से बहुत प्रसन्न थे—कैसे मसीह पर सुविधाजनक समय पर हाथ रखा जाए, जब कोई भीड़ बीच में न आए। यह कितनी अच्छी बात थी कि उनके पास एक ऐसा भेदिया था जो प्रभु की गतिविधियों और मंशाओं के बारे में सबसे अधिक जानकारी रखता था! मरकुस कहता हैं, “वे आनन्दित हुए।” कल्पना कीजिए! वे आनन्दित थे। कितना भयानक उल्लास था! कितनी विकृत आत्माएँ थीं! एक बार जब यह भयानक सौदा हो गया और यहूदा चला गया तो चारों ओर हार्दिक हाथ मिलाना आरम्भ हो गया।

जहाँ तक उस धोखेबाज का प्रश्न है, वह “अवसर ढूँढ़ने लगा” कि कैसे यीशु को चुपचाप उनके दुष्ट हाथों में सौंप दिया जाए। उपयोग किए गए शब्द का अर्थ है वांछित अवसर की “खोज में लगा रहा।” वह “लगातार स्वयं को व्यस्त रखता था” क्रिया के अपूर्ण काल के द्वारा व्यक्त किया गया अर्थ है। वह यीशु को एक बाज की तरह देखता था। वह हर शब्द को सुनता था। वह उस समय और स्थान के बारे में सुराग की खोज में था जब वह पैसे कमा सकता था और अंधेरे, शैतानी काम को पूरा कर सकता था।

**घ. पर्व (14:12-15)**

**1. पुराने युग का अंतिम फसह (14:12-21)**

सबसे पहले *तैयारी पर ध्यान दें* (14:12-16):

*अखमीरी रोटी के पर्व के पहले दिन, जिसमें वे फसह का बलिदान करते थे, उसके चेलों ने उससे पूछा, “तू कहाँ चाहता है कि हम जाकर तेरे लिये फसह खाने की तैयारी करें?” (14:12)*

इस प्रकार, अनजाने में, प्रभु ऐसे बिंदु को पार कर चूका था जहाँ से वापसी संभव नहीं थी। सार्वजनिक सेवकाई समाप्त हो गई। वह फसह का मेम्ना था। यह वही था जिसे मारा जाना था।

“अखमीरी रोटी के पर्व के पहले दिन” यह यहूदी धार्मिक घटनाओं के वार्षिक कैलेंडर पर निसान का चौदहवाँ दिन था। चेलों को अभी भी इन सबका महत्व समझ में नहीं आया था।

उनके समूह में एक दर्जन लोग थे, इसलिये यदि उन्हें साथ मिलकर फसह मनाना था तो उन्हें एक बड़े कमरे की आवश्यकता थी। उन्हें सामान्य खाद्य सामग्री खरीदनी थी और मेम्ने को मारना था। उनके पास करने के लिये बहुत कुछ था।

चेलों ने सोचा होगा कि अपने मित्रों के घर भोजन करना, प्रशंसा पाना और निहित फटकार लगाना सब ठीक है। अब पृथ्वी पर वापस आने और जीवन के कामों में लग जाने का समय आ गया था। यह *फसह का* समय था! नगर में लोगों की भारी भीड़ थी, और सभी उपलब्ध जगहें तेज़ी से समाप्त हो रही थीं। उन्होंने प्रभु को उकसाया, मानो उसने स्वयं ही सभी आवश्यक व्यवस्थाएँ पहले से ही नहीं की थीं।

*उसने अपने चेलों में से दो को यह कहकर भेजा, “नगर में जाओ, और एक मनुष्य जल का घड़ा उठाए हुए तुम्हें मिलेगा, उसके पीछे हो लेना। (14:13)*

निर्देश उतने अस्पष्ट नहीं थे, जितने वे लग सकते हैं। उन दिनों पुरुषों के लिये घड़े ले जाना बहुत दुर्लभ था; स्त्रियाँ ऐसा करती थीं। स्त्रियाँ घड़े को कुएँ पर ले जाती थीं, उन्हें भरती थीं, और उन्हें अपने कंधे या सिर पर रखकर घर ले जाती थीं। यदि पुरुषों को ऐसी कोई वस्तु उठानी होती, तो वह दाखरस की बोतल या पानी की बोतल होती। चेलों को घड़ा लिये हुए किसी व्यक्ति को पहचानने में कोई कठिनाई नहीं होती। एक बार जब वे उसे पहचान लेते, तो उन्हें उसका पीछा करना होता। प्रभु पहले से ही जानता था कि वह व्यक्ति कौन था और कहाँ रहता था।

*और वह जिस घर में जाए, उस घर के स्वामी से कहना, ‘गुरु कहता है कि मेरी पाहुनशाला जिसमें मैं अपने चेलों के साथ फसह खाऊँ कहाँ है?’ वह तुम्हें एक सजी सजाई, और तैयार की हुई बड़ी अटारी दिखा देगा, वहाँ हमारे लिये तैयारी करो।” (14:14-15)*

सब कुछ पहले से ही व्यवस्थित था। चेले घड़े वाले व्यक्ति के पीछे चले गए जो स्पष्ट रूप से एक दास था। उन्होंने घर के स्वामी को बुलाया, और वह उन्हें ऊपर ले गया जहाँ सब कुछ तैयार था। सोफे, गद्दी और सभी बुनियादी फर्नीचर वहाँ थे। प्रभु हमेशा की तरह अपने चेलों से आगे था। जैसा कि कहावत है, “सर्वशक्तिमान के हर जगह अपने सेवक होते हैं।” सभी आधिकारिक शत्रुता के बावजूद, प्रभु के पास कभी भी एक ऐसे मित्र की जो आवश्यकता पड़ने पर उनकी सहायता करने के लिये तैयार और सक्षम था कमी नहीं थी । क्या उसे नाव की आवश्यकता थी? पतरस के पास एक उपलब्ध थी। क्या उसे गधे, ऊपरौठी कोठरी या कब्र की आवश्यकता थी? जो कुछ भी आवश्यक था, वह हमेशा हाथोंहाथ तैयार था।

सदियों से प्रभु के सेवकों ने इसे ऐसा ही पाया है। क्या पौलुस को कुरिन्थ या फिलिप्पी में प्रचार करते समय घर की आवश्यकता थी? अक्विला और प्रिस्किल्ला कुरिन्थ में थे - पौलुस के लिये एक नौकरी के साथ - और लुदिया फिलिप्पी में थी। क्या उसे एक शास्त्री की आवश्यकता थी? तिमुथियुस वहाँ था। क्या उसे एक डॉक्टर (वैध) की आवश्यकता थी? लूका उपलब्ध था। प्रभु के सेवकों में से कौन ऐसे लोगों की एक बड़ी सूची नहीं बना सकता जो समय आने पर आवश्यकता के हिसाब से वहाँ मौजूद रहे हैं?

*चेले निकलकर नगर में आए, और जैसा उसने उनसे कहा था, वैसा ही पाया; और फसह तैयार किया। (14:16)*

यह व्यक्ति कौन था? यह कमरा कहाँ था? उस दिन उसने क्या सेवा की! वह कमरा तुरन्त प्रसिद्ध हो गया। वहाँ प्रभु ने चेलों के पाँव धोए। वहाँ उसने उन्हें अपने आने वाले प्रस्थान के बारे में बताया, उन्हें पवित्र आत्मा के बारे में बताया, उन्हें नयी दाखलता-डाली के सम्बन्ध के बारे में सिखाया, और उनके लिये कोमल वाक्पटुता से प्रार्थना की। वहाँ यहूदा ने रोटी खाई और अपनी आत्मा को शाप दिया। वहाँ प्रभु ने अपना अंतिम “हाल्लेलुयाह समूहगान” गाया (भजन 115-118)। वहाँ कुछ सबसे प्रारम्भिक और सबसे यादगार पुनरुत्थान प्रकट हुए। वहाँ, ऐसा प्रतीत होता है, पवित्र आत्मा पिन्तेकुस्त पर आया था। वहाँ कलीसिया का जन्म हुआ!

धन्यवाद, भाई अजनबी! उस कमरे को उधार देने के लिये स्वर्ग में तुम्हें बहुत बड़ा प्रतिफल मिलेगा।

*इस भविष्यद्वाणी* पर भी ध्यान दें (14:17-21):

*जब साँझ हुई, तो वह बारहों के साथ आया। जब वे बैठे भोजन कर रहे थे, तो यीशु ने कहा, “मैं तुम से सच कहता हूँ कि तुम में से एक, जो मेरे साथ भोजन कर रहा है, मुझे पकड़वाएगा।” (14:17-18)*

यह एक धमाकेदार घटना थी, हालाँकि सभा के दौरान पहले से ही संकेत मिल गए थे, कि यीशु को उस रात धोखा दिए जाने की अपेक्षा थी। वह अच्छी तरह से जानता था कि उनमें से कौन धोखा देने वाला है। क्या यहूदा का हृदय धड़कना बंद हो गया और उसका लहू ठंडा हो गया? उन दिनों राजा और सरदार धोखेबाजों को बहुत कम महत्व देते थे।

परन्तु यह घोषणा करने में प्रभु का उद्देश्य यह नहीं था। वह यहूदा को मन फिराव करने, पाप स्वीकार करने और प्रेरिताई संगति में पुनः शामिल होने का हर अवसर दे रहा था। वह बदनामी के मार्ग पर बहुत आगे निकल गया था, परन्तु वह अभी भी शापित नहीं हुआ था।

*उन पर उदासी छा गई और वे एक एक करके उससे कहने लगे, “क्या वह मैं हूँ?” (14:19)*

वे प्रभु से प्रेम करते थे, परन्तु स्पष्ट है कि उन्हें अपने हृदय की ईमानदारी पर संदेह था। परन्तु उसे *धोखा देना*? *क्या मैं? उसे* धोखा देना *?* “हे प्रभु? क्या वह मैं हूँ?”

क्या यह अचानक आया समूहगान था? या फिर हर कोई बारी-बारी से बोल रहा था? “हे प्रभु? क्या वह मैं हूँ?” यदि ऐसा था, तो जब यहूदा की बारी आई, तो उसने साहसपूर्वक सूत्र का उच्चारण किया। वह इसे बेशर्मी से करने जा रहा था। उसने अपने विश्वासघात में बहुत अधिक निवेश किया था, अब पीछे हटना उसके लिये सम्भव नहीं था। पैसे हाथ बदल चुके थे। उसे खरीदा जा चुका था; अब वह अपना नहीं था। अब कैफा और हन्ना जैसे लोगों को निराश करना उसके लिये उतना ही मूल्यवान था जितना कि उसका जीवन।

*उसने उनसे कहा, “वह बारहों में से एक है, जो मेरे साथ थाली में हाथ डालता है। (14:20)*

अन्य सुसमाचार प्रचारक बताते हैं कि प्रभु ने (कम से कम यूहन्ना को) कैसे संकेत दिया कि यह यहूदा ही होगा जो उसे धोखा देगा। उसने ऐसा तरी के माध्यम से किया। वे हमें यह भी बताते हैं कि जब यहूदा अपने अनुचित काम को पूरा करने के लिये द्वार की ओर बढ़ा, तो प्रभु ने उसे पुकारा, “जो तू करता है, तुरन्त कर” (यूहन्ना 13:27)। पतरस, शायद यह जानते हुए कि मसीह को नकारने के कारण वह आत्मिक विनाश के कितने करीब पहुँच गया था, यहूदा को हल्के में छोड़ देता है। और पतरस के नेतृत्व का अनुसरण करते हुए मरकुस भी ऐसा ही करता है।

*क्योंकि मनुष्य का पुत्र तो, जैसा उसके विषय में लिखा है, जाता ही है; परन्तु उस मनुष्य पर हाय जिसके द्वारा मनुष्य का पुत्र पकड़वाया जाता है! यदि उस मनुष्य का जन्म ही न होता, तो उसके लिये भला होता।” (14:21)*

पतरस ने यहूदा को हल्के में निराश किया होगा, परन्तु प्रभु ने ऐसा नहीं किया। उसने वास्तव में बहुत स्पष्ट रूप से बात की। वह उस व्यक्ति के विवेक तक पहुँचना चाहता था, इससे पहले कि हमेशा के लिये बहुत देर हो जाए। भजन 42:9 ने एक हज़ार वर्ष तक की भविष्यद्वाणी की थी कि मसीह का अपना एक घनिष्ठ मित्र उसे धोखा देगा। भजन 42 मुख्य रूप से अहीतोपेल को संदर्भित करता है, जो दाऊद का एक समय का मित्र और प्रतिभाशाली सलाहकार था। विद्रोह के समय अहीतोपेल अबशालोम के पक्ष में चला गया था और उसने अबशालोम को अपनी शैतानी दुष्टतापूर्ण परन्तु अत्यधिक चतुर सलाह का लाभ दिया था। जब अबशालोम पराजित हुआ, तो (दाऊद के यहूदा) अहीतोपेल ने स्वयं को फाँसी लगा ली। यहूदा को प्रभु की चेतावनी कीकिसी व्याख्या की आवश्यकता नहीं थी। अहीतोपेल का विश्वासघात और आत्महत्या कमरे में एक खतरे की तरह मण्डरा रही थी। यहूदा ने जल्दबाजी में पीछे हटना आरम्भ कर दिया।

और उसका विनाश कितना अंधकारमय था! “ताकि वह अपने स्थान पर जा सके,” पतरस ने बाद में कहा - इसी ऊपरौठी कोठरी में, प्रभु के स्वर्गारोहण के बाद, जब चेले यहूदा के दलबदल पर चर्चा कर रहे थे (प्रेरितों 1:25)। वह स्थान कहाँ था, हमें स्पष्ट रूप से नहीं बताया गया है। कुछ विद्वानों का मानना है कि यहूदा अधोलोक में है, जहाँ दुष्टात्माओं के द्वारा उसे अंतिम समय की घटनाओं में सम्भावित, फिर भी व्यर्थ, भूमिका के लिये प्रशिक्षित किया जा रहा है।

**2. नये युग के लिये प्रभु का प्रबन्ध (14:22-25)**

*जब वे खा ही रहे थे, उसने रोटी ली, और आशीष माँगकर तोड़ी, और उन्हें दी, और कहा, “लो, यह मेरी देह है।” (14:22)*

इस प्रकार, प्रभु ने फसह और उससे जुड़ी सभी बातों को पीछे छोड़ दिया। कुछ ही घंटों में, वह, फसह का सच्चा मेम्ना, मारा जाएगा और पुराने नियम का प्रतीक पूरा होगा। यहूदी धर्म अप्रचलित हो जाएगा, और फसह का पूरा वार्षिक अनुष्ठान एक कालभ्रम से अधिक कुछ नहीं रह जाएगा - वास्तव में आत्मिक शिक्षाओं से भरा हुआ, परन्तु अब केवल एक प्रतीक।

पुराने भोज की जगह एक नया भोज आया। इसमें दो प्रतीक थे, जिनमें से पहला रोटी थी। अब प्रभु ने कहा कि वह रोटीउसके शरीर को दर्शाती है। उसने इसे तोड़ा। इस प्रकार, उसका शरीर जल्द ही पेड़ (क्रूस) पर तोड़ा जाने वाला था। यह एक ऐसा चित्र था जिसे उसने इस तरह चित्रित किया, जिसे चेले कभी नहीं भूले।

*फिर उसने कटोरा लेकर धन्यवाद किया, और उन्हें दिया; और उन सब ने उसमें से पीया। और उसने उनसे कहा, “यह वाचा का मेरा वह लहू है, जो बहुतों के लिये बहाया जाता है। (14:23-24)*

नयी वाचा! *उसका* लहू! नयी वाचा यिर्मयाह की भविष्यद्वाणियों में से एक का विषय है (यिर्मयाह 31:31)। इसमें उद्धार सम्बन्धी खण्ड (अर्थात्, उद्धार से सम्बन्धित खण्ड) और युगांत सम्बन्धी खण्ड (अर्थात्, भविष्य से सम्बन्धित खण्ड) दोनों शामिल हैं। युगांत सम्बन्धी खण्ड *विशेष रूप से* इस्राएल के लिये हैं; उद्धार सम्बन्धी खण्ड भी इस्राएल के लिये हैं (एक आने वाले दिन की आशा करते हुए जब यहूदी लोग मसीह को पृथ्वी पर उसकी वापसी के समय स्वीकार करेंगे), परन्तु उनमें कलीसिया भी शामिल है।

यह नयी वाचा, और यहूदियों और अन्यजातियों दोनों को मिलने वाला पूर्ण और नि:शुलक उद्धार, मसीह के बहाए गए लहू पर आधारित है। पुराने नियम के अंतहीन लहू वाले बलिदान केवल अस्थायी उपाय थे। वे किसी को नहीं बचा सकते थे। वे कलवरी की ओर संकेत करते थे। जैसा कि इसहाक वॉट्स ने अपने भजन “ज्वाइन ऑल द ग्लोरियस नेम्स” में कहा है,

विवेक को शान्ति देने के लिये

और उसके दागों को धो देने के लिये;

श्रेष्ठ नसों से

उत्तम लहू बह गया है।

अत:, जैसे प्रभु ने घोषणा की कि टूटी हुई रोटी अब से कलवरी पर टूटी हुई उसकी देह को दर्शाएगी, वैसे ही दाखरस अब से कलवरी पर बहाए गए उसके लहू का प्रतीक होगा। तब से लेकर अब तक सदियों से, परमेश्वर के लोग इस आज्ञा का पालन करते हुए प्रभु भोज मनाते आए हैं। इसे कुछ लोगों के द्वारा विकृत किया गया है (जैसा कि अन्य अधिनियम, बपतिस्मा के साथ हुआ है), परन्तु इसका महत्व बना हुआ है। हम क्रूस पर हमारे लिये उसकी मृत्यु की याद में रोटी तोड़ते हैं और कटोरे का दाखरस पीते हैं।

*मैं तुम से सच कहता हूँ कि दाख का रस उस दिन तक फिर कभी न पीऊँगा, जब तक परमेश्‍वर के राज्य में नया न पीऊँ।” (14:25)*

यह एक और महान भविष्यद्वाणी कथन है जो शाब्दिक व्याख्या की माँग करता है। यीशु फिर से आ रहा है! वह स्वर्ग में अपने पिता के सिंहासन से उठकर इस ग्रह पर वापस आएगा, जहाँ उसे अस्वीकार किया गया था और पीड़ा झेलनी पड़ी थी, और अपने पिता दाऊद के सिंहासन पर बैठेगा। वह अपने सभी शत्रुओं को परास्त करेगा। वह एक हज़ार वर्ष तक शासन करेगा। तब दाखरस, जो अब उसके बहाए गए लहू का प्रतीक है, को दूसरा अर्थ दिया जाएगा: यह उसकी वापसी की प्रसन्नता का प्रतीक होगा।

**ङ. पूर्वानुमान (14:26-31)**

*फसह के समापन पर* ध्यान दें (14:26):

*फिर वे भजन गाकर बाहर जैतून के पहाड़ पर गए। (14:26)*

यहूदी भजन 113-118 को हलेल भजन के रूप में जानते थे। भजन 113-114 फसह के भोज से पहले (परन्तु दाखरस के चार कटोरों में से दूसरे के बाद) गाए गए थे। भजन 115-118 फसह के भोज के बाद गाए गए थे। ये विशेष भजन “भजनों” का हिस्सा हैं जो उन सभी के ऊपरौठी कोठरी से निकलनेसे ठीक पहले गाया गया था। बहुत सम्भव है कि इसे स्वयं प्रभु ने गाया हो। भजनों के इस समूह में कई यादगार कथन हैं जो ऊपरी कक्ष के दृश्य के उजियाले में चमकीले रंगों से चमकते हैं। “यहोवा मेरी ओर है, मैं न डरूँगा। मनुष्य मेरा क्या कर सकता है?” (भजन 118:6)। “राजमिस्त्रियों ने जिस पत्थर को निकम्मा ठहराया था, वही कोने का सिरा हो गया है” (भजन 118:22)। “आज वह दिन है जो यहोवा ने बनाया है; हम इसमें मगन और आनन्दित हों” (भजन 118:24)।

*दुःखभोग (पीड़ा) के आरम्भ पर* भी ध्यान दें (14:27-31):

*तब यीशु ने उनसे कहा, “तुम सब ठोकर खाओगे, क्योंकि लिखा है : ‘मैं रखवाले को मारूँगा, और भेड़ें तितर–बितर हो जाएँगी।’ (14:27)*

प्रभु पुराने नियम की उन अनेक भविष्यद्वाणियों को मन ही मन में पंक्तिबद्ध कर रहा था और जाँच रहा था, जो अब पूरी होने की माँग कर रही थीं। यह पद उनमें से एक था, जो जकर्याह 13:7 में दर्ज है। *ठोकर खाओगे शब्द* का अर्थ है “ठोकर खाएगा।” प्रभु की दृष्टि यहूदा को पहले से ही उन लोगों को इकट्ठा करते हुए देख सकती थी जो उसके साथ गतसमनी जाएँगे। वह अच्छी तरह से जानता था कि संकट आने पर उसके चेलों का उसके प्रति विश्वासयोग्य रहने का मानवीय संकल्प कितनी जल्दी टूट जाएगा। उसने उन्हें चेतावनी दी कि वे बिखर जाएँगे।

*परन्तु मैं अपने जी उठने के बाद तुम से पहले गलील को जाऊँगा।” (14:28)*

वह यरूशलेम में था, परन्तु उसका हृदय गलील में था। यरूशलेम परिष्कृत, निंदक, अभिमानी और उपहास करने वाला था। यरूशलेम ने भविष्यद्वक्ताओं को पत्थर मारा और उन लोगों को मार डाला जो परमेश्वर के लिये बोलते थे। गलील ही वह जगह थी जहाँ वह उत्पन्न हुआ था। उसके बचपन और लड़कपन की सारी यादें वहाँ थीं। गलील ही वह जगह थी जहाँ उसने परिश्रम किया और जीत हासिल की। गलील के लोगों ने उसे प्रसन्नता से स्वीकार किया था; हालाँकि गलती से, उन्होंने उसे अपना राजा बना लिया होता। वह गलील वापस चला जाता! उसने अपने चेलों के साथ एक तारीख तय की थी: यह सब समाप्त होने के बाद, गलील चले जाना। “मैं वहाँ होऊँगा!”

*पतरस ने उससे कहा, “यदि सब ठोकर खाएँ तो खाएँ, पर मैं ठोकर नहीं खाऊँगा।” यीशु ने उससे कहा, “मैं तुझ से सच कहता हूँ कि आज ही इसी रात को मुर्ग़ के दो बार बाँग देने से पहले, तू तीन बार मुझ से मुकर जाएगा।” (14:29-30)*

पतरस ने जकर्याह की पुस्तक से प्रभु के उद्धरण को अनदेखा कर दिया। पवित्रशास्त्र को देखने के बजाय, उसने स्वयं को देखा। उसने एक ऐसे व्यक्ति को देखा, जो शायद घमण्डी था, परन्तु जो प्रभु से पूरे हृदय से प्रेम करता था। खतरे के पहले संकेत पर भाग जाना? प्रभु ने उसे किस तरह का व्यक्ति समझ रहा था? शायद मत्ती या थोमा या बाकी सभी भाग जाते, परन्तु वह नहीं! वह पतरस था - चट्टान की तरह दृढ़। दूसरे लोग “ठोकर खा सकते थे”, परन्तु वह नहीं। उसने ऐसा कहा।

परन्तु प्रभु पतरस को उससे भी बेहतर जानता था जितना पतरस स्वयं को जानता था। “मुर्गे के दो बार बाँग देने से पहले, पतरस, तू तीन बार मुझ से मुकर जाएगा।” पतरस हठीला और क्रोधित था कि प्रभु ने इतने आत्मविश्वास से यहाँ तक कि उसकी स्वयं की मृत्यु तक भी उसकी विश्वासयोग्यता को खारिज कर दिया।

*पर उसने और भी जोर देकर कहा, “यदि मुझे तेरे साथ मरना भी पड़े, तौभी मैं तेरा इन्कार कभी न करूँगा।” इसी प्रकार और सब ने भी कहा। (14:31)*

वह इसे और अधिक जोश के साथ कहता रहा। प्रयुक्त शब्द प्रवाहपूर्ण शब्दों और दृढ़ हाव-भाव के साथ अतिशयोक्तिपूर्ण बोलने का सुझाव देता है। प्रभु प्रभावित नहीं हुआ क्योंकि वह जानता था। उसने जकर्याह पढ़ा था। ऐसा लगता है कि अन्य चेलों को पतरस की वाक्पटुता से जलन हो गई और वे भी उसके साथ अपनी विश्वासयोग्यता का जोरदार विरोध करने लगे। प्रभु ने इसे यहीं छोड़ दिया। दुःख की बात है कि मुर्गे की बाँग ने उसे सही साबित कर दिया।

**खंड 4—रूपरेखा**

**खंड 4: कलवरी का दाम चुकाना (14:32-15:47)**

1. परमेश्वर की इच्छा (14:32-42)
   1. स्थान (14:32a)
   2. पीड़ा (14:32b-34)
      1. उसकी आज्ञा (14:32b)
      2. उसके साथी (14:33a)
      3. उसकी समझ (14:33b-c)
         1. उसका पूर्ण विस्मय (14:33b)
         2. उसकी कुचलने वाली पीड़ा (14:33c)
      4. उसकी टिप्पणी (14:34a)
      5. उसकी आज्ञा (14:34b)
   3. प्रार्थनाएँ (14:35-42)
      1. पहली प्रार्थना (14:35-38)
         1. उसकी पीड़ा (14:35-36)
            1. उसका साष्टांग प्रणाम (14:35a)
            2. उसकी विनती (14:35b-36)

वह परमेश्वर की घड़ी से परामर्श कर रहा था (14:35b-c)

असम्भव आशा (14:35b)

आने वाली घड़ी (14:35c)

वह हमारे कटोरे के बारे में सोच रहा था (14:36)

उसका ईश्वरीय सम्बन्ध (14:36a)

उसका भयानक एहसास (14:36b)

उसका जानबूझकर दिया गया त्यागपत्र (14:36c)

* + - 1. इसका अन्त (14:37-38)
         1. जो उसने देखा (14:37a)
         2. जो उसने कहा (14:37b-38)

पतरस के लिये एक वचन (14:37b)

सावधानी का एक वचन (14:38)

उसने क्या चेतावनी दी (14:38a)

उसने क्या स्वीकार किया (14:38b)

* + 1. आगे की प्रार्थना (14:39-40)
       1. उनकी सेवानिवृत्ति (14:39)
       2. उसकी वापसी (14:40)
          1. उसके चेलों की कमजोरी (14:40a)
          2. उसके चेलों की थकान (14:40b)
    2. अंतिम प्रार्थना (14:41-42)
       1. उनका त्यागपत्र (14:41a)
       2. उसका एहसास (14:41b-42)
          1. समय आ गया था (14:41b)
          2. धोखेबाज आ गया था (14:41c-42)

1. मनुष्य की दुष्टता (14:43-15:15)
   1. पकड़वाया जाना (14:43-52)
      1. विचारहीन भीड़ (14:43-46)
         1. विद्रोही (14:43a)
         2. भीड़ (14:43b)
         3. शासक (14:43c)
         4. छल (14:44-46)
            1. यहूदा का आगमन (14:44-45)

धोखेबाज का मार्गदर्शन (14:44)

प्रतिज्ञा किया गया चिह्न (14:44a)

प्रस्तावित पाप (14:44b)

धोखेबाज का अपराध (14:45)

उसके झूठे शब्द (14:45a)

उसका शर्मनाक काम (14:45b)

* + - * 1. यीशु को पकड़ लिया गया (14:46)
    1. अविचल प्रभु (14:47-50)
       1. प्रभु और उसके शत्रु (14:47-49)
          1. घायल व्यक्ति (14:47)
          2. दुष्ट लोग (14:48-49)

चुनौती (14:48)

आरोप (14:49)

* + - 1. प्रभु और उसके मित्र (14:50)
    1. अज्ञात व्यक्ति (14:51-52)
       1. कैसे उसने पीछा किया (14:51)
       2. वह कैसे भाग गया (14:52)
  1. अभियोग (14:53-15:15)
     1. इब्रानी मुकदमा (14:53-72)
        1. प्रस्तावना (14:53-54)
           1. न्यायालय (14:53)
           2. समझौता (14:54)

पतरस ने कैसे उसका अनुसरण किया (14:54a)

पतरस का क्या हुआ (14:54b)

* + - 1. कार्यवाही (14:55-65)
         1. झूठे गवाह (14:55-61a)

जानबूझकर की गई खोज (14:55-56)

शासकों ने क्या किया (14:55)

शासकों को क्या पता चला (14:56)

एक संदिग्ध कथन (14:57-59)

झूठे गवाहों की गवाही (14:57-58)

झूठे गवाहों का संकट (14:59)

एक गर्जनापूर्ण सन्नाटा (14:60-61a)

कैफा ने क्या कहा (14:60)

मसीह ने क्या कहा (14:61a)

* + - * 1. विश्वासयोग्य गवाह (14:61b-65)

पूछा गया गम्भीर प्रश्न (14:61b)

गम्भीर प्रश्न का उत्तर (14:62-65)

उत्तर (14:62)

प्रभु का उत्कृष्ट अंगीकार (14:62a)

प्रभु का दूसरा आगमन (14:62b)

प्रत्युत्तर (14:63-65)

किराए का बागा (14:63-64)

अवैध कार्य (14:63a)

अवैध निर्णय (14:63b-64)

उग्र भीड़ (14:65)

* + - 1. उपसंहार (14:66-72)
         1. पतरस का इन्कार (14:66-72a)

पतरस महल में (14:66-68a)

युवती की टिप्पणी (14:66-67)

उसने किसे देखा (14:66)

उसने क्या कहा (14:67)

हानिकारक उत्तर (14:68a)

पतरस आँगन में (14:68b-72a)

मुर्गे की पहली बाँग (14:68b-70a)

परिस्थिति (14:68b)

कहावत (14:69)

छनाई (14:70a)

मुर्गे की दूसरी बाँग (14:70b-72a)

एक स्पष्ट टिप्पणी (14:70b)

दयनीय प्रत्युत्तर (14:71)

एक शक्तिशाली स्मरण (14:72a)

* + - * 1. पतरस की निराशा (14:72b-c)

पतरस की स्मृति (14:72b)

पतरस का दुःख (14:72c)

**खंड 4: कलवरी का दाम चुकाना (14:32-15:47)**

**क. परमेश्वर की इच्छा (14:32-42)**

सबसे पहले, हम *स्थान* पर ध्यान देते हैं(14:32a):

*फिर वे गतसमनी नामक एक जगह में आए,*

और हम *पीड़ा* पर भी ध्यान देते हैं (14:32b-34):

*और उसने अपने चेलों से कहा, “यहाँ बैठे रहो, जब तक मैं प्रार्थना करूँ।” (14:32)*

गतसमनी में एक बंद भूमि थी। ऐसा लगता है कि प्रभु ने चेलों के मुख्य समूह को बाहर ही छोड़ दिया था। हालाँकि, उसके पास उनके लिये एक सलाह थी: “यहाँ बैठे रहो!” उसने कहा, “मैं प्रार्थना करने जा रहा हूँ।” इसका तात्पर्य यह है कि उन्हें भी ऐसा ही करने की सलाह दी जानी चाहिए, विशेष रूप से जकर्याह 13:7 के बारे में जो अभी भी उनके मनों में तरोताजा है। उन्हें अपने संकल्पों का विरोध करना बंद कर देना चाहिए और प्रार्थना करना आरम्भ कर देना चाहिए। यहूदा और भीड़ जल्द ही वहाँ पहुँच जाएगी।

*और वह पतरस और याकूब और यूहन्ना को अपने साथ ले गया; और बहुत ही अधीर और व्याकुल होने लगा। (14:33)*

अन्य चेलों को आगे के प्रकाशन के लिये इन तीनों के चयन की आदत हो रही थी। ऐसा पहले दो बार हुआ था, एक बार याईर के घर में, जब उन्हें एक छोटी लड़की को जीवन में वापस लाने में उसकी *महानता* को देखने के लिये चुना गया था*,* और एक बार उसके साथ रहने और रूपान्तरण पर्वत पर उसकी *महिमा* को देखने के लिये। *अब उन्हें उसके दुःख को* देखने के लिये अलग ले जाया जा रहा था।

और यह कितना दुःखद था! “बहुत ही अधीर” शब्द केवल दो अन्य स्थानों पर आता है, दोनों ही मरकुस के सुसमाचार में हैं। हम इस शब्द से पहले भी मिल चुके हैं। जब प्रभु रूपान्तरण के पर्वत से नीचे उतरा, तो हम पढ़ते हैं कि “उसे देखते ही सब बहुत ही आश्‍चर्य करने लगे...” (9:15)। उस दूसरे संसार की महिमा, जो पर्वत पर ही अपनी सभी विस्मयकारी भव्यता में प्रकट हुई, ऐसा लगता है कि उसने उसके चारों ओर अपनी आभा छोड़ दी थी। लोग दूसरे संसार की भव्यता से भयभीत थे। पुनरुत्थान की सुबह भी ऐसा ही होगा; जब स्त्रियाँ कब्र पर आईं और वहाँ स्वर्गदूत को देखा, तो “वे डर गईं” और उन्हें “डरो नहीं” कहा गया। फिर से, यह दूसरे संसार के साथ सम्पर्क था जिसने उन्हें भयभीत कर दिया (16:5-6)।

गतसमनी में, प्रभु को एक अन्य संसार से भी सम्पर्क करवाया गया - हमारे पाप का संसार, अकथनीय भय का संसार जो कलवरी में उसके सामने था जब उसने हमारे अपराध को अपने ऊपर ले लिया और “हमारे लिये पाप बना।” वह “बहुत ही अधीर होने लगा।”

यूनानी भाषा के इस शब्द का अर्थ वास्तव में “आश्चर्य से स्तब्ध होना” है। यह उस पीड़ा को दर्शाता है जो किसी बड़े आघात से उत्पन्न होती है। बैतलहम में जन्म लेने के बाद से ही प्रभु इस पाप-शापित ग्रह पर रहता था। उसने अपने सम्पूर्ण जीवन में पापी मानवता के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम किया था। परन्तु यह अलग था। यह कच्चा, नग्न पाप था, अपनी पूरी दुष्टता में पाप। मानवीय पाप की पूरी भयावहता और जघन्यता के प्रति प्रभु की पहली प्रतिक्रिया अत्यधिक आघात की थी। वास्तविकता उसकी सभी अपेक्षाओं से बढ़कर थी।

वह “बहुत ही अधीर होने लगा।” मरकुस आगे कहता है कि वह “व्याकुल होने लगा” था। इस शब्द का अर्थ है बहुत अधिक बोझिल होना, उदास होना, असहज होना, ऐसी स्थिति में होना जिसमें उसे अब घर जैसा महसूस न हो।

*और उनसे कहा, “मेरा मन बहुत उदास है, यहाँ तक कि मैं मरने पर हूँ : तुम यहाँ ठहरो, और जागते रहो।” (14:34)*

*बहुत उदास* शब्दों का अर्थ है कि वह पूरी तरह से दुःख से घिरा हुआ था। “मरने पर हूँ” - “मैं लगभग मर ही गया!” वह आगे कहता है।

उसने कहा, “तुम यहाँ ठहरो, और जागते रहो।” और अपने चुने हुए तीन लोगों को जागते रहने के साथ-साथ प्रार्थना करने का भी अतिरिक्त आदेश दिया। उन्होंने पहले कभी उसे व्यक्तिगत् दुःख के ऐसे वचन बोलते नहीं सुना था। निश्चित रूप से, उन्होंने वहीं और उसी समय अपना मन बना लिया होगा कि वे वही करेंगे जो उसने कहा था - जागते रहना और प्रार्थना करना।

इसके बाद, हम *प्रार्थनाओं* पर ध्यान देते हैं(14:35-42):

*फिर वह थोड़ा आगे बढ़ा और भूमि पर गिरकर प्रार्थना करने लगा कि यदि हो सके तो यह घड़ी मुझ पर से टल जाए। (14:35)*

यदि हमें प्रभु यीशु की सच्ची मानवता कभी दिखाई गई है, तो वह गतसमनी में है। वह घड़ी उसके सामने थी। “गिरकर” के लिये क्रिया अपूर्ण काल में है। वह न केवल भूमि पर गिरा बल्कि भूमि पर गिरा ही रहा। वह किसी शक्तिशाली पहलवान की तरह था जो किसी शक्तिशाली प्रतिद्वंद्वी के साथ घातक संघर्ष में फँसा हुआ था। अंधेरे में संघर्ष भयानक था। “प्रार्थना करने लगा” के लिये शब्द भी अपूर्ण काल में है - वह प्रार्थना करता रहा। हमें उसकी प्रार्थना का बोझ बताया गया है:

*और कहा, “हे अब्बा, हे पिता, तुझ से सब कुछ हो सकता है; इस कटोरे को मेरे पास से हटा ले : तौभी जैसा मैं चाहता हूँ वैसा नहीं, पर जो तू चाहता है वही हो।” (14:36)*

प्रभु ने यहाँ परमेश्वर के लिये दो शब्दों का प्रयोग किया। उसने उसे “हे अब्बा” कहा, जो एक अरामी भाषा का शब्द है जो केवल यहाँ, रोमियों 8:5 में, और गलातियों 4:6 में पाया जाता है। *अब्बा* शब्द एक बच्चे का शब्द है। यह हमारे शब्द *पापा* या *डैडी* का उत्तर देता है।यह उस गहरी, भावनात्मक भक्ति और भरोसे को व्यक्त करता है जो प्रभु यीशु को स्वर्ग में अपने प्रिय पिता पर था।

*हे पिता* शब्द यूनानी भाषा के शब्द *पैटर* से आया है।यह एक वयस्क पुत्र का शब्द है। प्रभु यीशु ने परमेश्वर के मन और इच्छा में पूरी तरह से प्रवेश किया। परमेश्वर के रूप में, वह समय के आरम्भ से पहले ही मौजूद था, जब पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा ने अनन्त सलाह में एक ऐसी जाति के उद्धार की योजना बनाई थी जो अभी तक उत्पन्न नहीं हुई थी। एक सिद्ध मनुष्य के रूप में, उसे निर्देश देने के लिये पवित्रशास्त्र की पूर्ण समझ के साथ, और उसे बनाए रखने के लिये पिता के साथ एक अद्वितीय सम्बन्ध के साथ, वह पिता से पूरे विश्वास के साथ बात कर सकता था।

प्रभु ने *दोनों* अभिव्यक्तियों का प्रयोग किया - न केवल *अब्बा* और न केवल *पिता,* बल्कि दोनों को एक साथ जोड़कर रिश्ते की परिपूर्णता को व्यक्त किया।

हालाँकि, मनुष्य के रूप में ही उसने अपना अनुरोध किया। उस अंधेरे और भयानक कटोरे की भयावहता ने उसकी पवित्र आत्मा को घृणा से भर दिया। प्रभु ने परमेश्वर की सर्वशक्तिमत्ता को स्वीकार किया; परमेश्वर के लिये सब कुछ सम्भव है। उसने पूछा कि कोई और मार्ग निकाला जाए। और फिर उसने तुरन्त उस “परमेश्वर की भली, और ग्रहणयोग्य, और सिद्ध इच्छा” के आगे समर्पण कर दिया (रोमियों 12:2)।

*फिर वह आया और उन्हें सोते पाकर पतरस से कहा, “हे शमौन, तू सो रहा है? क्या तू एक घड़ी भी न जाग सका? जागते और प्रार्थना करते रहो कि तुम परीक्षा में न पड़ो। आत्मा तो तैयार है, पर शरीर दुर्बल है।” (14:37-38)*

मानवीय स्तर पर, यह एक भयानक निराशा रही होगी! प्रभु, एक भयानक आत्मिक संघर्ष से वापस आकर, अपने उन तीन मित्रों के साथ संगति की खोज में आया, जिन्हें उसने “अपने दु:खों की संगति” (फिलिप्पियों 3:10) के लिये आमंत्रित किया था। उसने आकर उन्हें सोते हुए पाया। उसने उन्हें चुनौती दी, पतरस को सम्बोधित करते हुए कहा कि वह व्यक्ति है जिसने मृत्यु तक अपनी विश्वासयोग्यता के बारे में सबसे जोरदार और सबसे लम्बे समय तक दावा किया था। उसे और भी अधिक उत्तेजित करने के लिये, उसने उसे उसके पुराने नाम से पुकारा- शमौन! उसने उसे चेतावनी दी। उसे अपनी आत्मा की भलाई के लिये जागते रहना *चाहिए* और प्रार्थना करनी चाहिए। ऐसी शक्तियाँ पहले से ही काम कर रही थीं जो उसे उसके अस्तित्व के मूल में गेहूँ की तरह फटक लेंगी। फिर, असीम करुणा के साथ, उन्होंने उसकी नश्वर कमजोरियों के लिये छूट दी। शरीर कमजोर था, वे केवल मनुष्य थे, वे सम्भवतः उसकी पीड़ा में शामिल नहीं हो सकते थे, हालाँकि, आत्मा में, वे इसके लिये तैयार थे। पहले से कहीं अधिक अकेला वह अपने युद्ध में लौट आया।

*और वह फिर चला गया और उन्हीं शब्दों में प्रार्थना की। (14:39)*

यह प्रार्थना पर एक रोचक पहलू है। इसे हमेशा मौलिक और आविष्कारशील होने की आवश्यकता नहीं है, हमेशा एक ही बात कहने के लिये नये तरीके खोजने की आवश्यकता नहीं है। स्पष्ट है कि हमें “व्यर्थ दोहराव” , या अपनी प्रार्थनाओं को यांत्रिक, दोहरावदार और मृत होने से सावधान रहना चाहिए। परन्तु उसकी प्रार्थना में कोई मृतता नहीं थी। आक्रमण पहले की तरह ही ताजा और भयंकर था, और प्रभु की पीड़ा उतनी ही तीव्र थी। सम्भावना पहले की तरह ही भयानक थी। नये शब्दों से कोई सहायता नहीं मिलती। वही शब्द पर्याप्त थे।

*फिर आकर उन्हें सोते पाया, क्योंकि उनकी आँखें नींद से भरी थीं; और नहीं जानते थे कि उसे क्या उत्तर दें। फिर तीसरी बार आकर उनसे कहा, “अब सोते रहो और विश्राम करो, बस, घड़ी आ पहुँची; देखो मनुष्य का पुत्र पापियों के हाथ पकड़वाया जाता है। उठो, चलें! देखो, मेरा पकड़वानेवाला निकट आ पहुँचा है!” (14:40-42)*

तीन बार वह प्रार्थना करने के लिये चला गया। तीन बार जब वह वापस आया तो उसने पाया कि तीनों चेले सो रहे हैं। बेचारे लोग अपनी आँखें खुली नहीं रख सकते थे, हालाँकि वह स्वयं इतनी पीड़ा में था कि उसे नींद के बारे में सोचना भी कठिन था। हम कहीं और पढ़ते हैं कि उसने जो पीड़ा सहन की वह इतनी तीव्र थी कि वह न केवल पसीने से भीग गया बल्कि उसके पसीने में लहू की बड़ी-बड़ी बूँदें भी बह निकलीं (लूका 22:44)। वास्तव में, एक स्वर्गदूत को आकर उसकी देखभाल करनी थी - कुछ ऐसा जो पतरस कर सकता था, इसमें कोई संदेह नहीं, यदि वह जागता रहता। ऐसा लगता है कि शैतान ने उसे गतसमनी में मार डालने का प्रयत्न किया था।

जब वह तीसरी बार लौटा, तो उसने चेलों से कहा कि वे अपनी नींद पूरी कर लें। वह वास्तव में पूरी तरह से जाग रहा था। परन्तु वह वह देख सकता था जो वे नहीं देख सकते थे: यहूदा याजकों के साथ अपना सौदा पूरा कर रहा था।

फिर यीशु ने कहा, “बस।” यह एक महत्वपूर्ण कथन था। एक अधिकारी के अनुसार, यह अभिव्यक्ति इस विचार को व्यक्त करती है कि “वह ग्रहण कर रहा है” (अर्थात्, पद 11 में प्रतिज्ञा किया गया धन)। *पपीरी में प्रयुक्त क्रिया* “रसीद देने” के लिये तकनीकी शब्द है।[1] अत:, सर्वज्ञ मसीह वास्तव में यहूदा को उसी क्षण लहू का धन प्राप्त करते हुए देख सकता था।

कुछ ही देर बाद, रात के सन्नाटे को चीरती हुई भीड़ की आवाज सुनाई देने लगी। अब किसी भी क्षण वह, मनुष्य का पुत्र, इन पापी लोगों के हाथों में सौंप दिया जाएगा।

**ख. मनुष्य की दुष्टता (14:43-15:15)**

**1. पकड़वाया जाना (14:43-52)**

सबसे पहले, *विचारहीन भीड़* पर ध्यान दें(14:43-46):

*वह यह कह ही रहा था कि यहूदा जो बारहों में से एक था, अपने साथ प्रधान याजकों और शास्त्रियों और पुरनियों की ओर से एक बड़ी भीड़ लेकर तुरन्त आ पहुँचा, जो तलवारें और लाठियाँ लिये थी। (14:43)*

महासभा कोई जोखिम नहीं लेना चाहती थी। इसके सदस्यों में से प्रत्येक तीन समूहों का उल्लेख इस आधी रात में पकड़े जाने में शामिल होने के रूप में किया गया है। हर जगह तलवारें और डण्डे मौजूद थे। स्पष्ट है कि यहूदी अधिकारी इस बात से डरे हुए थे कि प्रभु पकड़े जाने का विरोध करेगा- हालाँकि उन्हें लगा कि उनकी कमजोर शक्ति उसकी सर्वशक्तिमान सामर्थ्य के सामने क्या कर सकती है, यह हमें नहीं बताया गया है। किसी भी मामले में, यदि चेलों ने प्रतिरोध का प्रदर्शन किया, तो अपेक्षा है कि भीड़ पर्याप्त संख्या में थी और उन्हें पराजित करने के लिये पर्याप्त रूप से सशस्त्र थी। और वहाँ, पीतल की तरह साहसी, यहूदा था।

*उसके पकड़वानेवाले ने उन्हें यह पता दिया था कि जिसको मैं चूमूँ वही है, उसे पकड़कर यत्न से ले जाना। (14:44)*

यहूदा अब पूरी तरह से शत्रु के प्रति समर्पित था। उनका मामला अब उसका हो गया था। उसने उन्हें बता दिया था कि वह क्या करेगा। वह संकेत देगा कि उनमें से कौन सा व्यक्ति वे चाहते हैं, परन्तु फिर यह उन पर निर्भर करेगा। परन्तु बेहतर होगा कि वे शीघ्रता से काम करें, अपने कब्जे को ठीक करें और उसे सुरक्षित स्थान पर ले जाएँ।

जहाँ तक यहूदा का प्रश्न है, वह अंत तक दो-चेहरे वाला था। वह प्रभु को एक चुम्बन के साथ धोखा देगा, जो कि अभिवादन का सामान्य पूर्वी रूप है। एक चुम्बन! धोखे और विश्वासघात में उपयोग किया जाने वाला प्रेम और स्नेह का प्रतीक।

*वह आया, और तुरन्त उसके पास जाकर कहा, “हे रब्बी!” और उसको बहुत चूमा। (14:45)*

इस प्रकार, भयानक विश्वासघात पूरा हुआ। वुएस्ट बताते हैं कि “चूमा” के लिये क्रिया का नाम काटाफिलेओ है। सरल क्रिया को उपसर्ग पूर्वसर्ग के साथ तीव्र किया जाता है। दूसरे शब्दों में, “यह एक स्नेही, जोशीला चुम्बन था जो धोखेबाज ने हमारे प्रभु को दिया” जबकि उसने उसे “हे रब्बी! हे रब्बी!” कहकर सम्बोधित किया था। वह चुम्बन यहूदा को अनन्तकाल तक सताता रहेगा।

*तब उन्होंने उस पर हाथ डालकर उसे पकड़ लिया। (14:46)*

हम कहीं और पढ़ते हैं कि हथियारबंद भीड़ को उससे डरने का पूरा हक था। जब प्रभु ने अपना ईश्वरत्व प्रदर्शित किया (यूहन्ना 18:3-9) और इन दुष्ट एवं भ्रमित लोगों को यह पूरी तरह से स्पष्ट कर दिया कि उनके पास उस पर कोई शक्ति नहीं है, तो वे पीछे हट गए। फिर उसने स्वयं को उनके हाथों में सौंप दिया।

अब *अविचल प्रभु* पर ध्यान दें(14:47-52):

*उन में से जो पास खड़े थे, एक ने तलवार खींच कर महायाजक के दास पर चलाई, और उसका कान उड़ा दिया। (14:47)*

हम तलवार चलाने वाले का नाम जानते हैं - वह कोई और नहीं बल्कि पतरस था (यूहन्ना 18:10), और हम सेवक का नाम भी जानते हैं - वह मलखुस था, जो महायाजक का एक विशेष सेवक था (यूहन्ना 18:10)। इस प्रकार, महायाजक अपने निजी सेवक के रूप में उपस्थित था। यह यीशु की तरह है कि वह अपना अंतिम आश्चर्यकर्म करे और उस दुर्भाग्यपूर्ण व्यक्ति के कान को ठीक करे (लूका 22:51)।

*यीशु ने उनसे कहा, “क्या तुम डाकू जानकर मुझे पकड़ने के लिये तलवारें और लाठियाँ लेकर निकले हो? मैं तो हर दिन मन्दिर में तुम्हारे साथ रहकर उपदेश दिया करता था, और तब तुम ने मुझे न पकड़ा : परन्तु यह इसलिये हुआ है कि पवित्रशास्त्र की बातें पूरी हों।” (14:48-49)*

वे उसे दिन के उजियाले में मन्दिर में से आसानी से ले जा सकते थे। उसकी पकड़े जाने का विरोध करने या दंगा भड़काने की कोई मंशा नहीं थी। यदि वह स्वयं का बचाव करना चाहता, तो उसके पास स्वर्गदूतों की बारह सेनाएँ थीं जो उसके वचन पर उपस्थित थीं, जो उन सभी को समाप्त करने में सक्षम और इच्छुक थीं। किसी भी मामले में, वह बरअब्बा की तरह एक डाकू या लुटेरों का सरदार नहीं था; वह एक शिक्षक था। यदि उन्होंने उसके पहाड़ी उपदेश पर थोड़ा भी ध्यान दिया होता, तो वे उसके शान्तिपूर्ण और सौम्य वचनों और तरीकों को जान पाते।

हालाँकि, वे मन्दिर में उसके विरुद्ध सार्वजनिक रूप से कोई कदम उठाने के लिये बहुत कायर और चालाक थे। परन्तु वचनों को पूरा होना था, और वे उन्हें पूरा करने में सहायता कर रहे थे। यशायाह ने उसकी पकड़े जाने की भविष्यद्वाणी की थी और बताया था कि कैसे उसे वध के लिये एक मेम्ने की तरह ले जाया जाएगा, जो उनकी बात मानेगा और उनका विरोध नहीं करेगा (यशायाह 53:7)। जकर्याह ने भी इसी तरह भविष्यद्वाणी की थी कि प्रभु की रक्षा के लिये जुटने के बजाय, उसके अनुयायी तितर-बितर हो जाएँगे। जहाँ तक उसे पकड़े जाने की बात थी, महासभा को उससे डरने की कोई आवश्यकता नहीं थी। जकर्याह की भविष्यद्वाणी (जकर्याह 13:7) की सच्चाई बगीचे में तुरन्त ही साबित हो गई।

*इस पर सब चेले उसे छोड़कर भाग गए। (14:50)*

अचानक इन लोगों में घबराहट फैल गई। पतरस की शारीरिक वीरता की भावना फूट पड़ी; वैसे भी, यह पूरी तरह से अनुचित था। यह देखकर कि भीड़ के अगुवे गम्भीर थे, चेले भाग गए। शायद उन्होंने रोमी सैनिकों को देखा जो भीड़ को दृढ़ करने के लिये आए थे। यूहन्ना हमें बताता है कि वहाँ एक “सूबेदार” था। वह जिस शब्द का उपयोग करता है वह है चिलियार्चोस, “एक हजार का सेनापति”, अर्थात् दस सूबेदार। एक सेना में ऐसे छह हाकिम जुड़े हुए थे। स्पष्ट है, यहूदियों ने रोमी अधिकारियों को सूचित किया था कि यह राजद्रोह का एक खतरनाक मामला था। रोमी सेना वहाँ पीछे ही थी, ताकि इस पकड़े जाने के साथ होने वाली किसी भी लड़ाई को शीघ्रता से समाप्त किया जा सके (यूहन्ना 18:12)।

*एक जवान अपनी नंगी देह पर चादर ओढ़े हुए उसके पीछे हो लिया; और लोगों ने उसे पकड़ा। पर वह चादर छोड़कर नंगा भाग गया। (14:51-52)*

केवल मरकुस ने ही इस घटना को दर्ज किया है। इस बात पर काफी अटकलें लगाई गई हैं कि यह युवक कौन था। कुछ विद्वानों का मानना है कि यह स्वयं मरकुस था और इस घटना का लेखा “इस चित्र के एक अंधेरे कोने में चित्रकार (मरकुस) के मोनोग्राम” जैसा है। स्पष्ट है कि यह युवक जल्दी में गतसमनी पहुँचा था, उसने ठीक से कपड़े पहनने की प्रतीक्षा नहीं की। चादर से पता चलता है कि वह किसी सम्पन्न व्यक्ति का था। इतना सब कहने के बाद भी, हम अभी भी नहीं जानते कि यह व्यक्ति कौन था या यह घटना क्यों दर्ज की गई।

एक और सुझाव यह है कि घटनाओं की परिधि पर मण्डराता हुआ युवक लाज़र था। प्रभु ने बैतनिय्याह को, और नि:संदेह लाज़र के घर को, पृथ्वी पर अपना अंतिम मुख्यालय बनाया था। लाज़र का नाम उन लोगों की सूची में सबसे ऊपर था जिन्हें महासभा मरवाना चाहती थी (यूहन्ना 12:10)। निश्चित रूप से यह युवक प्रभु के तत्काल चेलों में से कोई भी नहीं हो सकता था।

**2. अभियोग (14:53-15:15)**

**क. इब्रानी मुकदमा (14:53-72)**

सबसे पहले *प्रस्तावना* आती है(14:53-54):

*फिर वे यीशु को महायाजक के पास ले गए; और सब प्रधान याजक और पुरनिए और शास्त्री उसके यहाँ इकट्ठे हो गए। (14:53)*

*पॉलीसिंडेटन* इस असाधारण रात्रि सत्र के लिये महायाजक के आदेश से एकत्रित प्रत्येक अलग-अलग वर्ग कीओर ध्यान आकर्षित करता है। इसके बाद यहूदी जाति ने अपने मान्यता प्राप्त शासकों के माध्यम से एक आधिकारिक कार्य किया। महायाजक और उसके बुलावे पर प्रतिक्रिया देने वाले अधिकारियों सहित पूरी महासभा अब इस अवांछित, स्वयंभू गलीली मसीह का अंत करने के लिये तैयार थी। वे बहुत ही दुःखी थे, कैफा और उसके चालाक बूढ़े ससुर, हन्ना, और बाकी सभी - याजक, शास्त्री, पुरनिए, और सभी।

*पतरस दूर ही दूर उसके पीछे–पीछे महायाजक के आँगन के भीतर तक गया, और प्यादों के साथ बैठ कर आग तापने लगा। (14:54)*

वह आग बहुत जल्दी ही बहुत भड़कने वाली थी। आखिरकार, पतरस ने अपनी बेतहाशा भागने का प्रयत्न रोक दिया । उसने साहस जुटाया और यीशु और उसके बन्दी बनाने वालों का पीछा किया, परन्तु वह अपनी दूरी बनाए रखने के लिये सावधान था। पतरस सीधे महल में नहीं गया, बल्कि महल के आँगन में गया जहाँ प्यादे इकट्ठे थे। फिर भी, वह स्वयं को खतरे में डाल रहा था। उसने सोचा कि प्रभु के शत्रुओं के साथ घूमकर वह क्या हासिल कर सकता है, यह कहना कठिन है। परन्तु वह वहाँ खड़ा था, संसार की आग पर अपने हाथ गर्म कर रहा था, जबकि कुछ गज की दूरी पर, प्रभु को कैफा और उसके गुण्डों के द्वारा धमकाया और पीटा जा रहा था। और वहाँ पतरस खड़ा था, एक बार के लिये अपनी जीभ को पकड़े हुए, सोच रहा था कि स्वयं के साथ क्या करना है और ऐसा लग रहा था कि वह प्रभु की किसी भी तरह से सहायता करने में असहाय है।

आगे, हमारे पास *कार्यवाही है* (14:55-65):

*प्रधान याजक और सारी महासभा यीशु को मार डालने के लिये उसके विरोध में गवाही की खोज में थे, पर न मिली। क्योंकि बहुत से उसके विरोध में झूठी गवाही दे रहे थे, पर उनकी गवाही एक सी न थी। (14:55-56)*

मनुष्यों की घोर दुष्टता का कितना बढ़िया प्रकाशन है! “बहुत से” झूठे गवाह सामने आए। बहुत से! वे वहाँ याजकों, पुरनियों और शास्त्रियों के सामने खड़े होकर झूठ बोलने लगे। उन्होंने परमेश्वर के सामने शपथ ली और फिर उस व्यक्ति के विरुद्ध गवाही गढ़ी जिसने उनके बीमारों को चंगा किया था, उनके अंधों को दृष्टि दी थी, उनके कोढ़ियों को शुद्ध किया था, और उनके भूखे लोगों को भोजन खिलाया था। और वहाँ वह खड़ा था - महिमा का प्रभु, जगत का सृष्टिकर्ता, परमेश्वर का पापरहित पुत्र - यह सब सुन रहा था।

हे पतरस, तू कहाँ है? चल, यार। जब तक तेरा सम्मान बचा है, उस आग से दूर हो जा। यहाँ आ। स्वयं को एक गवाह के रूप में प्रस्तुत कर। उन्हें मसीह के साथ अपनी मुलाकात के बारे में बता: “हे मेरे प्रभुओं, मैं इस व्यक्ति को अच्छी तरह से जानता हूँ। वह मेरे घर में रहता था। उसने मेरी सास को बुखार से ठीक किया। मैं तीन लोगों को जानता हूँ जिन्हें उसने मरे हुओं में से जीवित किया है। आरम्भ में मैं एक मछुआरा था जब उसने मुझे अपना चेले बनने के लिये बुलाया।, मैं और मेरा भाई और हमारे व्यापारिक साझेदार थे। हम सब एक दर्जन लोग थे। वह भलाई करता रहा। उसने यही *किया।* जहाँ तक उसने जो *कहा,* अच्छा कभी भी मनुष्य ने इस व्यक्ति की तरह बात नहीं की। और, जहाँ तक मेरा प्रश्न है, मैंने उसकी महिमा देखी है। मैं उसे मसीह, जीवित परमेश्वर का पुत्र घोषित करता हूँ।”

परन्तु नहीं! पतरस बाहर ही रहा। ठण्ड थी। संसार में अंगारों की आग जल रही थी, और पतरस ने अपने हाथ गर्म किए।

*तब कुछ लोगों ने उठकर उस के विरुद्ध यह झूठी गवाही दी, “हम ने इसे यह कहते सुना है, ‘मैं इस हाथ के बनाए हुए मन्दिर को ढा दूँगा, और तीन दिन में दूसरा बनाऊँगा,जो हाथ से न बना हो।’” इस पर भी उनकी गवाही एक सी न निकली। (14:57-59)*

बिलकुल नहीं! न तो उसने ऐसा कहा था और न ही उसका अर्थ यही था। सच है, उसने मन्दिर का उल्लेख किया था, परन्तु वह प्रतीकात्मक रूप से अपने भौतिक शरीर का उल्लेख कर रहा था। उसने यह नहीं कहा था कि *वह* इसे नष्ट कर देगा। उसने कहा था कि यदि इसे नष्ट किया जाता है, तो वह निश्चित रूप से इसे तीन दिनों में फिर से बनाएगा - यह उसके पुनरुत्थान की भविष्यद्वाणी थी। ये दुष्ट लोग अब उसे मारने की योजना बना रहे थे। वे उसके शरीर (पवित्र आत्मा के मन्दिर) को नष्ट करना चाहते थे और इस तरह उससे छुटकारा पाना चाहते थे। वे उससे छुटकारा नहीं पाएँगे, भले ही वे उसे मार डालने में सफल हो जाएँ। वह पुनरुत्थान और जीवन था। वे उसे मार नहीं सकते थे (यूहन्ना 10:18)।

अब स्थिति महासभा के लिये विचित्र होती जा रही थी। वे यीशु से छुटकारा पाना चाहते थे, परन्तु साथ ही, वे सब कुछ “कानूनी” रखना चाहते थे। कुछ लगातार झूठ बोलने वाले लोग उनके उद्देश्य के अनुकूल होते, परन्तु वे जिस कानूनी तमाशे की देखरेख कर रहे थे, वह शर्मनाक होता जा रहा था। झूठे गवाह विरोधाभासी झूठ बोल रहे थे। कैफा से उस तरह की झूठी गवाही के आधार पर दोषी नहीं ठहराया जा सकता था। कम से कम उन्हें दोषी नहीं ठहराया जा सकता था और कानूनी मुकदमे की कोई झलक नहीं मिल सकती थी।

*तब महायाजक ने बीच में खड़े होकर यीशु से पूछा, “तू कोई उत्तर नहीं देता? ये लोग तेरे विरोध में क्या गवाही देते हैं?” परन्तु वह मौन साधे रहा, और कुछ उत्तर न दिया। महायाजक ने उससे फिर पूछा, “क्या तू उस परम धन्य का पुत्र मसीह है?” (14:60-61)*

एक समय में, महायाजक का पद देश में सबसे ऊँचा और पवित्र पद हुआ करता था। परमेश्वर ने इसकी योजना बनाई और यहूदियों को मसीह का एक महान उदाहरण प्रदान करने के लिये इसे मूसा की व्यवस्था में प्रस्तुत किया। परन्तु यह बहुत पहले ही कठिन समय से गुजर चुका था। यहाँ-वहाँ कुछ विश्वासयोग्य याजक मिल जाते थे (उदाहरण के लिये, यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला के पिता जकर्याह जैसे लोग), परन्तु महायाजक, अधिकांशतः स्वार्थी राजनीतिक अवसरवादी, हन्ना और कैफा जैसे प्रथम श्रेणी के बदमाश थे। फिर भी, जब वे अपना सबसे बुरा काम कर रहे थे, तब भी यीशु उनके लिये मरने की तैयारी कर रहा था। मसीह में परमेश्वर का प्रेम ऐसा ही है।

अब तक, कार्यवाही पूरी तरह से अवैध थी, जैसा कि कैफा को पता था। यहूदियों के बीच मृत्युदण्ड के मामले में अच्छी तरह से स्थापित मिसाल यह थी कि पहले ऐसे प्रमाणों की खोज की जाती थी जो आरोपी को बरी कर सकें। उसके बाद ही दोषी ठहराने वाली गवाही की खोज की जाती थी। इसके अलावा, रात की कार्यवाही पूरी तरह से अनियमित थी।

कैफा को पता था कि पूरा मुकदमा तेजी से बिखर रहा था, इसलिये उसने बीच में आकर मसीह का सामना किया। अब तक प्रभु ने अपने शत्रुओं के लिये उचित परन्तु क्रोधित करने वाली चुप्पी बनाए रखी थी। उसने अदालत के सामने प्रस्तुत किए गए सभी झूठ और विकृतियों को अनदेखा कर दिया था। इस चुप्पी ने कैफा को और भी क्रोधित कर दिया। वह कैदी के मुँह से कुछ ऐसा सुनना चाहता था जिसका उपयोग पिलातुस के सामने उसके विरुद्ध किया जा सके।

उसने पूछा, “ये लोग तेरे विरोध में क्या गवाही देते हैं?” प्रभु ने अपनी चुप्पी बनाए रखी। फिर चालाक याजक को एक शानदार विचार आया। वह इस मसीह को शपथ दिलाएगा और उससे एक ऐसा प्रश्न पूछेगा जिसका उत्तर शपथ दिलाए जाने के बाद उसे देना होगा। उसने पूछा, “क्या तू उस परम धन्य का पुत्र मसीह हैं?” यदि मसीह ने उत्तर दिया, “नहीं!” तो वह एक विश्वसनीय मसीह के रूप में समाप्त हो गया। यदि उसने कहा, “हाँ!” तो वे निश्चित रूप से उसे स्वीकार कर लेंगे।

महायाजक ने यहोवा के अकथनीय नाम का उपयोग करने से बचने के लिये *परम* *धन्य के पुत्र* की अभिव्यक्ति का उपयोग किया, जो सदियों से चली आ रही एक अंधविश्वासी प्रथा का पालन करता है।क्या मूर्खता है! अकथनीय *व्यक्ति बीच में था। नया नियम का यीशु* वही *यहोवा था* जिसका नाम लेने में कैफा बहुत अंधविश्वासी था। उसे उसके उत्तर के लिये लम्बी प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी।

*यीशु ने कहा, “मैं हूँ : और तुम मनुष्य के पुत्र को सर्वशक्‍तिमान की दाहिनी ओर बैठे, और आकाश के बादलों के साथ आते देखोगे।” (14:62)*

“मैं हूँ!” यीशु ने कहा। वह, नये नियम का यीशु, पुराने नियम का यहोवा था। वचन इससे अधिक स्पष्ट नहीं हो सकते थे। यीशु ने न केवल अचूक नाम का उच्चारण किया, एक ऐसा नाम जिसे यहूदियों ने सदियों से नहीं बोला था, बल्कि उसने यह भी घोषित किया कि वह यहोवा *था।* परन्तु इससे भी अधिक था। यीशु ने कैफा से कहा कि एक दिन वह और उसकी भीड़ प्रभु की महिमा का जबरदस्त प्रकटीकरण देखेंगे। वे उसे ऊँचे सिंहासन पर विराजमान, सभी सामर्थ्य के सिंहासन पर बैठा देखेंगे। वे उसे स्वर्ग के बादलों को चीरते हुए, शासन करने के लिये वापस आते देखेंगे। यह कैफा की अपेक्षा से कहीं अधिक था। यह ईश्वरत्व की एक स्पष्ट घोषणा थी। यीशु इन दुष्ट और बेईमान लोगों को इस बारे में कोई संदेह नहीं छोड़ेगा कि वह कौन था, वह कौन होने का दावा करता था, और वे किसके साथ खिलवाड़ कर रहे थे।

*तब महायाजक ने अपने वस्त्र फाड़कर कहा, “अब हमें गवाहों का और क्या प्रयोजन है? तुम ने यह निन्दा सुनी। तुम्हारी क्या राय है?” उन सब ने कहा कि यह वध के योग्य है। (14:63-64)*

उन्होंने ईशनिंदा बिलकुल नहीं सुनी थी; उन्होंने सच सुना था। इसके अलावा, कैफा का अतिशयोक्तिपूर्ण प्रदर्शन पूरी तरह से अवैध था। मूसा की व्यवस्था के अधीन, महायाजक को अपने कपड़े फाड़ने से स्पष्ट रूप से मना किया गया था (लैव्यव्यवस्था 10:6; 21:10)। प्रभु ने इस नाटक का उत्तर मन्दिर के पर्दे को फाड़कर दिया (मत्ती 27:51), जिससे यहूदी धर्म निरर्थक और अमान्य हो गया।

परन्तु महायाजक के प्रदर्शन ने जीत हासिल कर ली। सभा ने इस आधार पर मसीह को मृत्युदण्ड देने के लिये मतदान किया कि उसने ईशनिंदा करते हुए स्वयं को परमेश्वर घोषित किया था।

*तब कोई तो उस पर थूकने, और कोई उसका मुँह ढाँकने और उसे घूँसे मारने, और उससे कहने लगे, “भविष्यद्वाणी कर!” और प्यादों ने उसे पकड़कर थप्पड़ मारे। (14:65)*

इन लोगों ने, जो उस जाति के कथित आत्मिक अगुवे थे, उस पर थूका, जो महिमा का प्रभु, जगत का सृष्टिकर्ता था। फिर उन्होंने उसे पीटना आरम्भ कर दिया, जिसकी स्वर्गदूत उपासना करते थे। शरारत और गाली-गलौज और भी बुरी हो गई। उन्होंने उसकी आँखों पर पट्टी बाँध दी और उसे हथकड़ी लगा दी। उन्होंने उसे चुनौती दी कि वह उन्हें बताए कि उसे किसने मारा है। वह जानता था कि यह सब ठीक है और उसने अपना हाथ मारने से रोक लिया। वह अभी भी जानता है। वह आने वाले न्याय के दिन के लिये उस ज्ञान को धारण किए हुए है।

जब धार्मिक यहूदी अभिजात वर्ग ने संसार को अपना असली रूप दिखा दिया, तो उन्होंने प्रभु को सेवकों को सौंप दिया ताकि वे अपनी बारी का प्रतीक्षा करें। उन्होंने “उसे थप्पड़ मारे।” क्रिया रूप का अर्थ है कि वे उसे मारते रहे। मरकुस कहता हैं, “अपने हाथों की हथेलियों से।” यूनानी भाषा के इस शब्द का अर्थ है कि उन्होंने उसे तेज प्रहारों से मारा। और वह, अपनी सारी शक्ति के साथ, वहाँ खड़ा रहा और उनके बार-बार के प्रहारों और अपमानों को बहुत ही उपेक्षा और उन लोगों के लिये बहुत दुःख के साथ सहा जिन्होंने उसे इस तरह मारा था।

अंत में, हमारे पास *उपसंहार* (14:66-72) है:

*जब पतरस नीचे आँगन में था, तो महायाजक की दासियों में से एक वहाँ आई, और पतरस को आग तापते देख उसे टकटकी लगाकर देखा और कहने लगी, “तू भी तो उस नासरी यीशु के साथ था।” वह मुकर गया, और कहा, “मैं न ही जानता और न ही समझता हूँ कि तू क्या कह रही है।” फिर वह बाहर डेवढ़ी में गया; और मुर्ग़ ने बाँग दी। (14:66-68)*

मरकुस अपने वृत्तांत में पतरस के पास लौटता है जो अभी भी आग के पास स्वयं को गर्म कर रहा था। एक युवती आई जिसने पतरस को ध्यान से देखा। यहाँ “देखा” शब्द का अर्थ है ध्यान से देखना, स्थिर रूप से देखना और निरीक्षण करना। उसके मन में कुछ दर्ज हुआ, और वह निकल पड़ा: उसने कहा, “तू भी तो... साथ था।”

एक पल की तरह, एक त्वरित प्रतिक्रिया में, पतरस बोल पड़ा। उसने कहा, “मैं न ही जानता और न ही समझता हूँ कि तू क्या कह रही है।” उसने बस यह बात कह दी, एक बेशर्म झूठ। अंदर के प्रभु के बीच का अंतर - चालाक कैफा को सच्चाई बताना, अपने जीवन के मूल्य पर यह बताना कि वह कौन और क्या था - और बाहर के पतरस के बीच – अपने प्राण बचाने के लिये कायरतापूर्ण झूठ बोलना – यह दुःखद है।

अब डरकर पतरस आग से दूर चला गया। वह “ओसारे” की ओर चला गया, अर्थात् डेवढ़ी की ओर, जो बाहरी द्वार से आँगन की ओर जाता था। जब वह इस तरह से भागने का प्रयत्न कर रहा था, तभी एक मुर्गे ने बाँग दी। ऐसा लगता है कि पतरस ने इस पर ध्यान नहीं दिया। वह अब स्वयं को उस खतरनाक जगह से निकालने के प्रयत्न में बहुत व्यस्त था जिसमें उसने स्वयं को पाया था। उसके पास सोचने के लिये मुर्गे की बाँग से अधिक और भी महत्वपूर्ण बातें थीं।

*वह दासी उसे देखकर उनसे जो पास खड़े थे, फिर कहने लगी, “यह उनमें से एक है।” परन्तु वह फिर मुकर गया। थोड़ी देर बाद उन्होंने जो पास खड़े थे फिर पतरस से कहा, “निश्‍चय तू उनमें से एक है; क्योंकि तू गलीली भी है।” (14:69-70)*

दासी वापस आई। इस बार, उसने आसपास खड़े अन्य लोगों को अपनी राय बताई। स्पष्ट है कि वह पतरस के इन्कार से सहमत नहीं थी। उसने सभी का ध्यान पतरस की ओर खींचा। उसे अब गर्म रहने के लिये आग की आवश्यकता नहीं थी; उसके बिना भी उसे बहुत पसीना आ रहा था! दासी ने घूमने फिरने वाले लोगों से कहा, “यह उनमें से एक है।” फिर से, जल्दी से, पतरस ने इन्कार कर दिया।

परन्तु उसके इन्कार ने ही उसकी पोल खोल दी। उन्होंने उसकी बोली को पहचान लिया। इस तथ्य के महत्व को समझने में कुछ मिनट लगे। कुछ ही देर में, उन्होंने दो और दो जोड़ दिए। उन्होंने कहा, “तेरी बोली से तेरा पता चलता है कि तू एक गलीली है। तू उनमें से एक है।” हम उनके आरोप में बढ़ती शत्रुता को देख सकते हैं।

अब हताश पतरस ने तुरन्त उत्तर दिया।

*तब वह धिक्‍कारने और शपथ खाने लगा, “मैं उस मनुष्य को, जिसकी तुम चर्चा करते हो, नहीं जानता।” (14:71)*

उसने धिक्कारना और शपथ खाना आरम्भ कर दिया, रात के समय हवा में मछुआरे की शपथें भर दीं। इससे उनके आरोप समाप्त हो गए। उन्होंने सोचा *कि यीशु का कोई भी सच्चा अनुयायी इस तरह नहीं बोल सकता।* वे संतुष्ट थे। नि:संदेह, वह एक गलीली था, परन्तु यीशु का चेला? कभी नहीं! अंदर, यीशु ने अभी-अभी अपने कट्टर शत्रु कैफा के द्वारा दिलाई गई शपथ ली थी; बाहर, पतरस ने अपने पिछले अपवित्र दिनों की शपथों को उगल दिया।

*तब तुरन्त दूसरी बार मुर्ग़ ने बाँग दी। पतरस को वह बात जो यीशु ने उससे कही थी स्मरण आई : “मुर्ग़ के दो बार बाँग देने से पहले तू तीन बार मेरा इन्कार करेगा।” और वह इस बात को सोचकर रोने लगा। (14:72)*

इस बार पतरस ने मुर्गे की बाँग सुनी, और इसने उसकी अपवित्रता को अचानक समाप्त कर दिया। प्रभु की चेतावनी उसके मन में फिर से आ गई, और वह जो कुछ उसने किया था, उससे स्तब्ध रह गया। हमें कहीं और भी बताया गया है कि प्रभु ने उसकी ओर देखा। मन फिराव से भरा हुआ, वह अकेले अंधेरे में चला गया और हृदय खोलकर रोया। शायद वह वापस गतसमनी चला गया।

अगले कुछ दिन और रातें लम्बी और भयानक थीं। यीशु को पिलातुस को सौंप दिया गया। उसे क्रूस पर चढ़ाया गया और नगर में गाड़ा गया। पतरस अपने शापों, अपने विवेक और अपनी कायरता से पीड़ित होकर जगह-जगह भटकता रहा। अंत में, वह वापस उस जगह पहुँच गया जहाँ कुछ अन्य चेले थे। यह एक दुःखद और दयनीय समूह था, वे सभी भागने के लिये अपराध बोध से भरे हुए थे और शायद, एक विनम्र और दण्डित पतरस को अपनी संगति में फिर से शामिल होने देना चाहते थे, जो दुःख और मन फिराव की संगति थी।

1. अन्यजातियों का मुकदमा (15:1-15)
   1. चुनौती (15:1-5)
      1. याजक (15:1)
         1. परामर्श (15:1a)
         2. परिषद (15:1b)
         3. अपराध (15:1c)
      2. राज्यपाल (15:2-5)
         1. मुख्य आरोप (15:2)
            1. पूछा गया प्रश्न (15:2a)
            2. दोषी (15:3b-5)

शासकों के सामने उसकी चुप्पी (15:3b)

रोमी के सामने उसकी चुप्पी (15:4-5)

पिलातुस की अपील (15:4)

पिलातुस का आश्चर्य (15:5)

* 1. चुनाव (15:6-15)
     1. कैदी (15:6-8)
        1. प्रथा (15:6)
        2. अपराधी (15:7)
        3. कोलाहल (15:8)
     2. प्रस्ताव (15:9-11)
        1. यह कैसे दिया गया (15:9-10)
           1. पिलातुस की स्पष्ट सहानुभूति (15:9)
           2. पिलातुस की स्पष्ट बुद्धिमत्ता (15:10)
        2. इसकी भरपाई कैसे हुई (15:11)
     3. समस्या (15:12-15)
        1. पिलातुस का संघर्ष (15:2-14)
           1. पहला प्रश्न (15:12-13)

न्यायाधीश के द्वारा पूछा गया (15:12)

भीड़ के द्वारा उत्तर दिया गया (15:13)

* + - * 1. आगे का प्रश्न (15:14)

अभियोजक के द्वारा पूछा गया (15:14a)

लोगों के द्वारा उत्तर दिया गया (15:14b)

* + - 1. पिलातुस का आत्मसमर्पण (15:15)
         1. उसकी कायरता (15:15a)
         2. उसका अपराध (15:15b-c)

यीशु को कोड़े मारे जाना (15:15b)

यीशु को दण्ड सुनाना (15:15c)

ग. बलिदान का मार्ग (15:16-47)

1. मुकुट (15:16-20)
   1. रोमी सेना (15:16)
      1. आँगन (15:16a)
      2. संगठन (15:16b)
   2. फूहड़ उपहास (15:17-20)
      1. इसकी पूर्णता (15:17-19)
         1. उसका उपहास करना कि वह क्या था (15:17-18)
            1. उपहास करने वाले वस्त्र (15:17)
            2. उपहास करने वाली आवाजें (15:18)
         2. उसका उपहास करना कि वह कौन था (15:19)
            1. मारना (15:19a)
            2. थूकना (15:19b)
            3. उपहास (15:19c)
      2. इसका निष्कर्ष (15:20)
2. क्रूस (15:21-26)
   1. विवशता (15:21)
      1. उस व्यक्ति का नाम (15:21a)
      2. उस व्यक्ति की प्रसिद्धि (15:21b)
   2. क्रूस पर चढ़ना (15:22-26)
      1. स्थान (15:22)
      2. औषधि (15:23)
      3. दण्ड (15:24a)
      4. खेल (15:24b)
      5. अवधि (15:25)
      6. तख्ती (15:26)
3. अपराधी (15:27-28)
   1. इतिहास का एक तथ्य (15:27)
      1. वे क्या थे (15:27a)
      2. वे कहाँ थे (15:27b)
   2. भविष्यद्वाणी की पूर्ति (15:28)
4. भीड़ (15:29-32)
   1. भीड़ का उपहास (15:29-30)
      1. उपहासपूर्ण सिर हिलाना (15:29a)
      2. उपहासपूर्ण टिप्पणी (15:29ब-30)
         1. उन्होंने उसके सामने आरोप लगाया (15:29b)
         2. उन्होंने उसके सामने चुनौती रखी (15:30)
   2. शासकों का उपहास (15:30-32a)
      1. उन्होंने उसे उद्धारकर्ता कहकर उसका उपहास किया (15:31)
      2. उन्होंने उसे सर्वोच्च प्रभुता सम्पन्न कहकर उसका उपहास किया (15:32a)
   3. डाकुओं का उपहास (15:32b)
5. पुकार (15:33-37)
   1. अंधकार (15:33)
      1. इसमें लगा समय (15:33a)
      2. सम्मिलित क्षेत्र (15:33b)
   2. निराशा (15:34)
      1. जब यह था (15:34a)
      2. यह क्या था (15:34b)
   3. चर्चा (15:35-36)
      1. क्या सोचा गया (15:35)
      2. क्या किया गया (15:36)
         1. एक व्यक्ति ने क्या किया (15:36a)
         2. एक व्यक्ति ने क्या घोषित किया (15:36b)
   4. मृत्यु (15:37)
      1. विजयी पुकार (15:37a)
      2. आत्मविश्वास से भरी प्रतिबद्धता (15:37b)
6. परदा (15:38)
   1. पर्दे का कारण (15:38a)
   2. पर्दे का फटना (15:38b-c)
      1. उसके फटने का तरीका (15:38b)
      2. इसके फाड़े जाने का अर्थ (15:38c)
7. अंगीकार (15:39)
   1. प्रमाणों पर सूबेदार का चिन्तन (15:39 )
   2. प्रमाणों से सूबेदार का निष्कर्ष (15:39b)
8. साथी (15:40-41)
   1. उत्कृष्ट स्त्रियाँ (15:40-41a)
      1. उनके नाम उजागर किए गए (15:40)
      2. उनकी कुलीनता का वर्णन (15:41a-b)
         1. उनकी व्यक्तिगत् प्रतिबद्धता (15:41a)
         2. उनकी व्यावहारिक प्रतिबद्धता (15:41b)
   2. अन्य स्त्रियाँ (15:41c)
9. सलाहकार (15:42-46)
   1. वह कौन था (15:42-43)
      1. सही क्षण (15:42)
      2. सही व्यक्ति (15:43)
         1. उसकी प्रसिद्धि (15:43a)
         2. उसका विश्वास (15:43b)
   2. वह क्या चाहता था (15:44-45)
      1. उसकी अपील का सार (15:44)
         1. उसने जो निर्भीकता दिखाई (15:44a)
         2. वह इच्छा जो उसने चाही (15:44b)
      2. उसकी अपील की सफलता (15:45)
   3. वह कहाँ गया (15:46)
      1. शव को कब्र में ले जाया गया ([15:46a-b](file:///Z:\Finished%20CROSS%20Goods\SOURCE\PhillipsCmty\ExpMark\source\%25server%25ref=Mark%2015:46) )
         1. यह कैसे लपेटा गया था (15:46a)
         2. इसे कैसे कब्र में रखा गया (15:46b)
      2. कब्र में बंद शव (15:46c)
10. टिप्पणी (15:47)
    1. दो स्त्रियाँ (15:47a)
    2. दोनों ने देखा (15:47b)

**ख. अन्यजातियों का मुकदमा (15:1-15)**

**(1) चुनौती (15:1-5)**

*भोर होते ही तुरन्त प्रधान याजकों, पुरनियों, और शास्त्रियों ने वरन् सारी महासभा ने सलाह करके यीशु को बन्धवाया, और उसे ले जाकर पिलातुस के हाथ सौंप दिया। (15:1)*

अभी सूरज भी नहीं निकला था कि महासभा की परिषद के बहुमत या सर्वसम्मति से उन्होंने यीशु को मुकदमे के लिये रोमी राज्यपाल को सौंपने का निर्णय लिया। यहूदी धार्मिक अगुवों के मन में दो तरह के उद्देश्य थे। सबसे पहले, रोमियों ने महासभा को लोगों को मृत्युदण्ड देने के अधिकार से वंचित कर दिया था, और वे चाहते थे कि यीशु को मार दिया जाए (गलातियों 3:13)। दूसरा, यीशु को रोमियों के हवाले करके, यहूदी यीशु को मृत्युदण्ड देने की बुरी गंध को अपने ऊपर से हटाना चाहते थे। इसके अलावा, यदि रोमी यीशु को दण्ड सुनाते तो वे उसे क्रूस पर चढ़ा देते, और इससे यहूदियों को अतिरिक्त संतुष्टि मिलती। यह पत्थर मारकर की गई मृत्यु से कहीं अधिक भयानक मृत्यु थी। इसके अलावा, यह मृत्युदण्ड में व्यवस्था के अभिशाप को भी जोड़ देता (गलातियों 3:13)।

हम जानते हैं कि जब प्रभु को पिलातुस के सामने लाया गया था, तब भी अंधेरा था। यह रात का “लगभग छठवाँ घंटा” था (यूहन्ना 19:14) जब पिलातुस ने कहा, “देखो तुम्हारा राजा।” यह तथ्य पुष्टि करता है कि सम्पूर्ण महासभा की कार्यवाही अवैध थी क्योंकि न केवल रात में कैदी की परीक्षा करना बल्कि सब्त के दिन की पूर्व संध्या पर भी परीक्षा करना व्यवस्था के विरुद्ध था। प्रभु का परीक्षण उच्च सब्त (निसान 15) की पूर्व संध्या पर किया गया था। *सुबह की* अभिव्यक्तिका अर्थ है, “सूर्योदय से पहले।”

*पिलातुस ने उससे पूछा, “क्या तू यहूदियों का राजा है?” उसने उसको उत्तर दिया, “तू आप ही कह रहा है।” (15:2)*

यहूदी अधिकारियों ने पिलातुस को इस बात की जानकारी दी होगी कि क्या चल रहा था और उनके पास एक उच्च राजद्रोह का मामला था जिसे जल्द ही उसके सामने लाया जाएगा। ऐसा लगता है कि पिलातुस पूरे मामले के बारे में संदेहवादी था। यह उसके लिये एक नया अनुभव रहा होगा कि महासभा एक यहूदी पर रोम के विरुद्ध राजद्रोह का आरोप लगाने के लिये इतनी उत्सुक थी, जिस जाति से वे *घृणा* करते थे। वह अच्छी तरह से जानता था कि पिछले कुछ वर्षों में पूरे देश में क्या चल रहा था। यीशु रोम के लिये कोई प्रत्यक्ष खतरा नहीं था। महासभा यीशु से ईर्ष्या करती थी। पिलातुस भी यह जानता था।

यहूदी अधिकारियों ने मसीह के विरुद्ध आरोप को तब बदल दिया जब वे उसे पिलातुस के सामने ले गए। ईशनिंदा का आरोप रोम के लिये उतना महत्वपूर्ण नहीं था जितना कि राजद्रोह का आरोप।

मरकुस ने पिलातुस को जहाँ तक उसका सम्बन्ध था मामले के मूल तक पहुँचते हुए दिखाया, । उसने यीशु से स्पष्ट रूप से पूछा कि क्या वह वास्तव में यहूदियों का राजा था, एक ऐसा प्रश्न जिसे यीशु ने टाला नहीं। उसका उत्तर था, “तू आप ही कह रहा है,” या, जैसा कि हम आज कहेंगे, “तू ने कह दिया है।”

*प्रधान याजक उस पर बहुत बातों का दोष लगा रहे थे। (15:3)*

इस क्रिया के काल का अर्थ है कि वे उस पर आरोप लगाते रहे। प्रभु ने उन्हें अनदेखा कर दिया। हम उनकी तीखी, क्रोधित आवाजें सुन सकते हैं। उन्होंने अपने दुष्ट हृदय की अंधेरी गहराइयों से क्या झूठ और विकृतियाँ निकालीं, यह हमें नहीं बताया गया। हम उन्हें लगभग यह कहते हुए सुन सकते हैं, “वह हमारा राजा होने का दावा करता है। वह एक ईशनिंदा करने वाला है। उसने यहाँ से लेकर गलील तक के लोगों को अपने दावों से भड़का दिया है। हमें उसे रात में पकड़ना पड़ा; अन्यथा, वह दंगा भड़का देता। उसने पकड़े जाने का विरोध किया!” और इसी तरह की बातें। उसका एकमात्र उत्तर मौन था।

*पिलातुस ने उससे फिर पूछा, “क्या तू कुछ उत्तर नहीं देता, देख ये तुझ पर कितनी बातों का दोष लगाते हैं?” (15:4)*

मुकदमे के इस चरण में, पिलातुस अभी भी मामले की जड़ तक पहुँचने का प्रयत्न कर रहा था। वह निष्पक्ष था, उसने अभियुक्त को उन आरोपों से इन्कार करने का हर अवसर दिया जो तीखे याजकों ने उस पर लगाए थे। यीशु की चुप्पी पूर्ण आत्म-संयम की चुप्पी थी। वह बस वहाँ खड़ा था, एक तूफानी समुद्र में एक शक्तिशाली चट्टान की तरह, जबकि याजक, क्रोधित लहरों की तरह, उसके विरुद्ध अपने झागदार आरोपों की बौछार करते हुए आगे बढ़ते रहे, केवल उसकी विशाल, अभेद्य चुप्पी से पीछे हटने के लिये। क्योंकि “जिस प्रकार... भेड़ी ऊन कतरने के समय चुपचाप शान्त रहती है, वैसे ही उसने भी अपना मुँह न खोला।” भविष्यद्वक्ता ने सैकड़ों वर्ष पहले इसकी भविष्यद्वाणी की थी (यशायाह 53:7)।

पिलातुस ने स्वयं प्रभु से अपने बचाव में कुछ कहने का आग्रह किया, यह महसूस किए बिना कि उसकी चुप्पी ने सब कुछ कह दिया। यदि उसने कहा होता, तो स्वर्गदूतों की सेना स्वर्ग की दीवारों पर चढ़कर सात समुद्रों के पानी को लहू में बदल देती, यहूदा की ऊँची पहाड़ियों को रौंद देती और वहीं पर उसका अंत कर देती। परन्तु उसके होठों से एक भी शब्द नहीं निकला। स्वर्गदूतों ने अपनी तलवारें रख दीं। उद्धार की योजना आगे बढ़ी जैसा कि अनन्त काल पहले महिमा में तय किया गया था।

*यीशु ने फिर कुछ उत्तर नहीं दिया; यहाँ तक कि पिलातुस को बड़ा आश्‍चर्य हुआ। (15:5)*

रोमी राज्यपाल को इस तरह का व्यक्ति पहले कभी नहीं मिला था। वह बातें करने वाले कैदियों, क्रोधी कैदियों और डरे हुए कैदियों को अच्छी तरह जानता था। इससे पहले उसे कभी ऐसा चुप कैदी नहीं मिला था, जो सबसे गम्भीर उकसावे के बावजूद भी स्वयं का बचाव करने से साफ इन्कार कर देता हो। वह हैरान था।

**(2) चुनाव (15:6-15)**

*पिलातुस उस पर्व में किसी एक बन्दी को जिसे वे चाहते थे, उनके लिये छोड़ दिया करता था। (15:6)*

पिलातुस ने पराजित परन्तु बेचैन लोगों को प्रसन्न करने का एक तरीका निकाला। ऐसा लगता है कि पिलातुस ने पहले भी इस प्रथा का लाभ उठाया था। उसे लगा कि वह इस प्रथा का लाभ उठाकर यीशु को जीवन का एक अवसर दे सकता है।

*बरअब्बा नाम का एक मनुष्य उन बलवाइयों के साथ बन्दी था, जिन्होंने बलवे में हत्या की थी। (15:7)*

बरअब्बा वह सब था जो यीशु नहीं था। वह रोम के विरुद्ध एक विद्रोही था। उसने एक सशस्त्र विद्रोह का नेतृत्व किया था और इस प्रक्रिया में किसी को मार डाला था। उसे मृत्युदण्ड सुनाया गया था और वह अपने साथी विद्रोहियों के साथ फाँसी की प्रतीक्षा में अपनी कोठरी में लेटा हुआ था। उसका नाम बहुत रोचक है। ऐसा लगता है कि उसका पूरा नाम यीशु बरअब्बा था। *बरअब्बा नाम का अर्थ है “पिता का पुत्र।” अब्बा* शब्द से पता चलता है कि उसका पिता एक रब्बी था। इस प्रकार, बरअब्बा एक अच्छे घर से आया था। वह या तो अपराध के जीवन में चला गया था या एक स्वतंत्रता सेनानी, एक कट्टरपंथी, शायद, एक समूह का अगुवा बन गया था जो अपने देश को रोम के जुए से मुक्त करने के लिये प्राण देने और गला कटवाने का जोखिम उठाने को तैयार था।

*और भीड़ ऊपर जाकर उससे विनती करने लगी, कि जैसा तू हमारे लिये करता आया है वैसा ही कर। पिलातुस ने उनको उत्तर दिया, “क्या तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिये यहूदियों के राजा को छोड़ दूँ?” क्योंकि वह जानता था कि प्रधान याजकों ने उसे डाह से पकड़वाया था। (15:8-10)*

हालाँकि, अब तक वह भीड़ एक असंयमित भीड़ बन चुकी थी। हम कल्पना कर सकते हैं कि याजक एक समूह से दूसरे समूह में जा रहे हैं, उन्हें अपना हक माँगने के लिये उकसा रहे हैं - एक कैदी की रिहाई। *बरअब्बा का नाम* एक से दूसरे मुँह तक तेज़ी से फैल गया। “उसे एक कैदी को रिहा करने के लिये विवश करो। सुनिश्चित करो कि तुम बरअब्बा की माँग करो। यदि हमें मसीह चाहिए, तो बरअब्बा हमारे लिये अधिक बेहतर है। कम से कम बरअब्बा रोम से मुक्ति के लिये समर्पित एक साहसी व्यक्ति है!” ऐसे शब्दों के साथ उन्होंने भीड़ को पिलातुस की योजना को विफल करने के लिये तैयार किया, जो लोगों को यीशु की रिहाई की माँग करने के लिये विवश कर रहा था।

अंत में, यह महान प्रश्न जनता के सामने रखा गया: “तुम किसे चाहते हो? यीशु जिसे बरअब्बा कहते हैं, या यीशु जिसे मसीह कहते हैं?”

रोम के प्रति प्रधान याजकों की अचानक विश्वासयोग्यता से पिलातुस धोखा नहीं खाया । यह कैसर के लिये उत्साह नहीं था जिसने उन्हें प्रेरित किया बल्कि मसीह के प्रति ईर्ष्या थी। हम निश्चित हो सकते हैं कि पिलातुस यीशु के आंदोलनों, आश्चर्यकर्मों और सेवकाई के बारे में बहुत कुछ जानता था। “यह बात किसी कोने में नहीं हुई थी,” पौलुस ने कुछ समय बाद राजा अग्रिप्पा को याद दिलाया (प्रेरितों के काम 26:26)। रोमी राज्यपाल यह समझने में काफी चतुर था कि यीशु के प्रति याजकों की घृणा का मूल कारण ईर्ष्या थी। वह आश्चर्यकर्म कर सकता था; वे नहीं कर सकते थे। लोगों ने उसे प्रसन्नता से सुना, परन्तु उनको अनिच्छा से से सुना । उसने अधिकार के साथ बात की; उन्होंने केवल शब्दों को बुड़बुड़ाया। अत:, कम से कम अभी के लिये, पिलातुस ने उस निर्दोष व्यक्ति को रिहा करने का एक आसान तरीका खोजने का प्रयत्न किया जिसे उसके हवाले कर दिया गया था।

*परन्तु प्रधान याजकों ने लोगों को उभारा कि वह बरअब्बा ही को उनके लिये छोड़ दे। (15:11)*

हालाँकि, पिलातुस ने एक गलती की थी। वह भूल गया था कि बरअब्बा यहूदी राष्ट्रवादियों के लिये किसी तरह का लोक नायक था। उसने स्वतंत्रता के लिये एक प्रहार किया था। पिलातुस ने सोचा था कि यहूदी यीशु की रिहाई को पसंद करेंगे, जो भलाई के लिये घूम रहा था, और शायद, वे ऐसा करते भी, यदि यहाँ, वहाँ और हर जगह मौजूद प्रधान याजक बरअब्बा की रिहाई का आग्रह न करते। भीड़ हमेशा अस्थिर होती है। जो लोग कुछ दिन पहले चिल्ला रहे थे, “होसन्ना!” अब चिल्लाने के लिये तैयार थे, “क्रूस पर चढ़ा दे!”

*यह सुन पिलातुस ने उनसे फिर पूछा, “तो जिसे तुम यहूदियों का राजा कहते हो, उसको मैं क्या करूँ?” वे फिर चिल्‍लाए, “उसे क्रूस पर चढ़ा दे!” (15:12-13)*

प्रधान याजकों ने अपना काम बखूबी किया था। उन्होंने भीड़ को नियंत्रण में कर लिया था, उसके गुस्से को अपने राजा को क्रूस पर चढ़ाने के लिये एक बेतुकी चीख में बदल दिया था, और पिलातुस को उसकी जीत से वंचित कर दिया था। शायद उस भीड़ में एक भी व्यक्ति नहीं था - यदि शान्त, चुप और व्यक्तिगत् रूप से अपील करता - जिसने उनसे प्रेम किया था, उनकी देखभाल की थी, उन्हें सिखाया था, और उन्हें चंगा किया था, जिस व्यक्ति को उन्होंने मसीह और प्रभु के रूप में सम्मानित किया था और जो वास्तव में, दाऊद का पुत्र और परमेश्वर का पुत्र था -उस व्यक्ति की तत्काल रिहाई की माँग नहीं करता । शायद जब वे घर पहुँचे और उनके पास उस भयानक काम के बारे में निष्पक्ष रूप से सोचने का समय था जो उन्होंने किया था, तो उनमें से प्रत्येक को शर्म और भय हुआ। उन्होंने माँग की थी कि यीशु को - जिसने उनके अंधों को दृष्टि दी थी, उनके कोढ़ियों को शुद्ध किया था, उनके मरे हुओं को जीवित किया था, और उनके दुष्टात्माओं से मुक्त किया था - *क्रूस पर चढ़ाया जाए।* वे किसी अन्य यहूदी के लिये ऐसी मृत्यु की कामना नहीं करेंगे। वे बेतुके क्रोध से इतने अंधे कैसे *हो सकते थे*?

*पिलातुस ने उनसे कहा, “क्यों, इसने क्या बुराई की है?” परन्तु वे और भी चिल्‍लाए, “उसे क्रूस पर चढ़ा दे!” (15:14)*

पिलातुस अवाक रह गया। वह जानता था कि यीशु एक अच्छा मनुष्य था। वह उससे थोड़ा डरता था। उसे अपने सूचना देने वालों और भेदियों की सेना से कभी भी उसके बारे में कोई समाचार नहीं मिला था, जिसमें इस अच्छे और लोकप्रिय शिक्षक के द्वारा किए गए किसी भी गलत काम के बारे में बताया गया हो। उसे अपेक्षा थी कि शायद वह यहूदी राष्ट्रीय गौरव को आकर्षित कर सके। यदि वह उनके *राजा* को रिहा करने का प्रस्ताव रखता तो निश्चित रूप से वे प्रतिक्रिया देते।रोम को यीशु जैसे राजा से डरने की कोई आवश्यकता नहीं थी।

परन्तु नहीं! क्रूस पर चढ़ाने की पुकार फिर से गूँज उठी। यह पुकार एक जयघोष बन गई। जयघोष ने एक लय, अपना जीवन प्राप्त कर लिया। “क्रूस पर चढ़ा दे! क्रूस पर चढ़ा दे! क्रूस पर चढ़ा दे!” अत: पिलातुस ने हार मान ली। भीड़ से कौन बहस कर सकता है?

*तब पिलातुस ने भीड़ को प्रसन्न करने की इच्छा से, बरअब्बा को उनके लिये छोड़ दिया, और यीशु को कोड़े लगवाकर सौंप दिया कि क्रूस पर चढ़ाया जाए। (15:15)*

अत: अमर बदनामी पिलातुस की होगी। वह जानता था कि यीशु निर्दोष है। उसने उसे निर्दोष भी घोषित कर दिया। उसने कहा, वास्तव में, “वह निर्दोष है - इसलिये मैं उसे कोड़े लगवाऊँगा।” रोमी कोड़े लगवाना एक भयानक मामला था। कोड़े में लगी हड्डियों से मांस फट जाता था और नीचे के अंग उजागर हो जाते थे। उस कोड़े से कई लोग मर गए। अपने कार्यों से, पिलातुस ने कहा, “यीशु निर्दोष है, इसलिये मैं न केवल उसे कोड़े लगवाऊँगा, बल्कि उसे क्रूस पर भी चढ़ाऊँगा; मैं उसे एक धीमी, पीड़ादायक, अपराधी की मृत्यु के लिये सौंप दूँगा।”

यह सब भीड़ को संतुष्ट करने के लिये था।

अत: पिलातुस ने बरअब्बा को रिहा कर दिया था और उसकी जगह दूसरे की मृत्यु हो गई थी । नि:संदेह, भीड़ ने उस समय के अपने नायक, रोम के विरुद्ध लड़ने वाले कार्यकर्ता को जय-जयकार करते हुए ले लिया। यीशु और पिलातुस वहीं रह गए; पिलातुस, अपनी कुतरती हुई अंतरात्मा के साथ, और यीशु, विपत्ति के क्रूर प्रहारों से भयानक घावों का ढेर के साथ ।

**ग. बलिदान का मार्ग (15:16-47)**

**1. मुकुट (15:16-20)**

*सैनिक उसे किले के भीतर के आँगन में ले गए जो प्रीटोरियुम कहलाता है, और सारी पलटन को बुला लाए। (15:16)*

जिस तरह से महासभा के अगुवों ने परमेश्वर के पुत्र की आँखों पर पट्टी बाँधकर और उसे हृदय खोलकर पीटकर उसे सेवकों के हवाले कर दिया था, ताकि वे अपनी बारी का प्रतीक्षा करें, उसी तरह अब पिलातुस ने यीशु को कोड़े लगवाकर उसे सैनिकों के हवाले कर दिया, ताकि वे भी अपना मजा ले सकें। प्रीटोरियम सैनिक निवास था। सैनिक निवास में पहुँचने के बाद, वह सैनिकों के हाथों में था। जब तक वे उसे मार नहीं देते, वे उसे जितना चाहें उतना गाली दे सकते थे।

प्रीटोरियम में समाचार तेजी से फैल गया: एक यहूदी को क्रूस पर चढ़ाया जाना था, और रोमी यहूदियों से कैसे घृणा करते थे और उनका तिरस्कार करते थे! और यह यहूदी यहूदियों का *राजा* होने का दावा कर रहा था! सैनिक दौड़े-दौड़े आए। यह इतना अच्छा होने वाला था कि वे इसे अनदेखा नहीं कर सकते थे। हर दिन ऐसा नहीं होता कि वे यहूदियों के राजा पर अपनी मसखरी का अभ्यास कर सकें! जल्द ही पूरा दल आ गया। यीशु वहाँ खड़ा था, उसका पूरा शरीर उस कोड़े की भयानक पीड़ा से जल रहा था जो उसे सहना पड़ा था। इन रोमी सैनिकों को इसकी थोड़ी भी परवाह नहीं थी!

*तब उन्होंने उसे बैंजनी वस्त्र पहनाया और काँटों का मुकुट गूँथकर उसके सिर पर रखा, और यह कहकर उसे नमस्कार करने लगे, “हे यहूदियों के राजा, नमस्कार!” (15:17-18)*

इन निर्दयी लोगों के लिये यह सब मजाक था। एक राजा! अच्छा, उसके पास एक बागा होना चाहिए! किसी ने उसके लहू से लथपथ कंधों पर बैंगनी रंग का वस्त्र डाल दिया। उसके पास एक मुकुट होना चाहिए! किसी ने काँटों का एक घेरा बनाया, जिसमें बड़े, तीखे काँटे थे, और उसे उसके माथे पर कुचल दिया। उसके पास एक दरबार होना चाहिए! सैनिक उसके चारों ओर इकट्ठा हो गए, और उसे मजाक में नमस्कार किया। परन्तु अब तक यह सब गाली हल्की थी। भी बुरा होने वाला था।

*वे उसके सिर पर सरकण्डे मारते, और उस पर थूकते, और घुटने टेककर उसे प्रणाम करते रहे। (15:19)*

प्रयुक्त काल का तात्पर्य है कि वे उसे मारते रहे। एक राजा को राजदण्ड की आवश्यकता थी। उन्होंने उसे एक बेंत दिया। हम उस दृश्य की कल्पना कर सकते हैं। जब प्रत्येक सैनिक ने इस यहूदी “राजा” को सम्मान देने के लिये अपनी बारी ली, तो उसने सम्भवतः मसीह के हाथ से सरकण्डा छीन लिया, उसके सिर पर उससे एक जोरदार प्रहार किया, और फिर उसे अगले सैनिक के लिये तैयार करके उसके हाथ में वापस थमा दिया।

उन्होंने उस पर थूका। फिर से यूनानी में अपूर्ण काल का प्रयोग किया गया है - वे उस पर थूकते रहे। जब प्रत्येक सैनिक ने उपहासपूर्ण सम्मान दिया, तो उसने थूका।

इस प्रकार, महिमा का प्रभु, जिसकी स्वर्गदूत उपासना करते हैं, वहीं खड़ा रहा, जबकि सैनिकों की पूरी इकट्ठी टोली मार रही थी, थूक रही थी, और उपहास कर रही थी: “हे यहूदियों के राजा, नमस्कार!” अंत में, वह कठिन परीक्षा भी समाप्त हो गई।

*जब वे उसका ठट्ठा कर चुके, तो उस पर से बैंजनी वस्त्र उतारकर उसी के कपड़े पहनाए; और तब उसे क्रूस पर चढ़ाने के लिये बाहर ले गए। (15:20)*

सबसे पहले, उसने अपना क्रूस उठाया, जो कि खुरदरी लकड़ी का एक भारी और बोझिल लट्ठा था। उसे इसे उठाकर अपने कटे-फटे कंधे पर रखना पड़ा और इसे मृत्युदण्ड की पहाड़ी की ओर घसीटना पड़ा। यह कि वह अभी भी इतना दृढ़ था कि इसे कलवरी तक कम से कम आधे मार्ग तक ले जा सके, यह प्रभु के शानदार शरीर के बारे में कुछ कहता है।

वह पूरी रात जागता रहा। उसे यहाँ-वहाँ घुमाया गया था - गतसमनी से लेकर महायाजक के महल तक, एक विशाल आत्मिक संघर्ष से तरोताजा होकर जिसने उसे थका दिया था - महायाजक के महल से पिलातुस के न्याय कक्ष तक, वहाँ से हेरोदेस के महल तक, महल से वापस पिलातुस के पास। यहूदियों ने उसके साथ दुर्व्यवहार किया और उसे घायल किया। उसे कोड़े मारे गए और फिर सैनिकों ने उसके साथ दुर्व्यवहार किया। फिर भी, वह अभी भी उस भारी क्रूस को उठा सकता था और कलवरी के मार्ग पर चल सकता था! परन्तु, अंत में, वह लड़खड़ा गया और गिर गया।

**2. क्रूस (15:21-26)**

हम *बाध्यता* से आरम्भ करते हैं(15:21):

*सिकन्दर और रूफुस का पिता शमौन, एक कुरेनी मनुष्य, जो गाँव से आ रहा था उधर से निकला; उन्होंने उसे बेगार में पकड़ा कि उसका क्रूस उठा ले चले। (15:21)*

हम इस बात की कल्पना कर सकते हैं कि शमौन नामक इस व्यक्ति के हृदय में कितनी नाराजगी थी। वह भूमध्य सागर पर यूनान के पार लबानोन के नगर कुरेन का निवासी था। इस नगर में एक प्रभावशाली यहूदी समुदाय था, और इसकी जड़ें टॉल्मी प्रथम के दिनों से चली आ रही थीं। इस समुदाय का यरूशलेम में अपना आराधनालय था (प्रेरितों 6:9), और पिन्तेकुस्त के दिन कुरेन के यहूदी यरूशलेम में मौजूद थे। हम नहीं जानते कि यह व्यक्ति यहूदी था या कोई गैर-यहूदी हृदय परिवर्तित व्यक्ति था।

यह सम्भव है कि यीशु ने अपना क्रूस नगर के फाटक तक उठाया, जहाँ वह गिर पड़ा। उसके गिरने से सैनिकों की ओर से और भी क्रूरता भड़क उठी। हालाँकि, जल्द ही यह स्पष्ट हो गया, यहाँ तक कि उन्हें भी, कि यीशु अपनी अंतिम सीमा पर पहुँच गया था। एक बात पक्की थी: *उनमें* से किसीकी भी उस क्रूस को उठाने की मंशा नहीं थी। इधर-उधर देखने पर, उन्होंने इस अजनबी को आते देखा। उन्होंने उसे पकड़ लिया और उसे बाकी के मार्ग के लिये क्रूस उठाने को विवश किया। हम अच्छी तरह से मान सकते हैं कि, आरम्भ में, वह क्रोध और शर्म से भरा हुआ था। हर कोई सोच रहा होगा कि *वह* क्रूस पर चढ़ाए जाने के लिये जा रहा है।

हालाँकि, सब कुछ समाप्त होने से पहले, इस व्यक्ति का हृदय आनन्द से भर गया होगा। शायद यह कुछ ऐसा था जो यीशु ने उससे कहा था। शायद वह कलवरी में रुका और उसने ऐसी बातें देखी और सुनीं जो सब कुछ समाप्त होने से पहले, सूबेदार और उसके आदमियों के हृदयों तक पहुँच गईं (मत्ती 27:54)। किसी भी मामले में, ऐसा लगता है कि वह एक मसीही बन गया था। मरकुस ने उसके पुत्रों, सिकन्दर और रूफुस का उल्लेख किया है, जिन्हें उसके पाठक अच्छी तरह से जानते थे। स्पष्ट है, उन पुत्रों में से एक, रूफुस, रोम की कलीसिया का सदस्य था क्योंकि पौलुस ने अपनी रोमियों की पत्री में उसका और उसकी माता दोनों का सम्मानजनक उल्लेख किया है (रोमियों 16:13)। इस व्यक्ति, शमौन के लिये यह कितना महान दिन था, जब वह कलवरी के मार्ग पर मसीह से मिला। हम अच्छी तरह से कल्पना कर सकते हैं कि वह इसके बारे में बात करने से कभी नहीं थकता था, दूसरों से अपना क्रूस उठाने और *उसका* अनुसरण करने का आग्रह करता था।

और उस दूसरे शमौन, अर्थात् शमौन पतरस के बारे में क्या? यदि वह इतनी दूर तक नहीं गया होता और इस प्रक्रिया में इतनी बुरी तरह से नहीं गिरा होता, तो *वह* शायद वही शमौन होता जिसने उस क्रूस को उठाया था।

इसके बाद, हमारे पास *क्रूस पर चढ़ाए जाने* (15:22-26) का वृतांत है:

*वे यीशु को गुलगुता नामक जगह पर, जिस का अर्थ खोपड़ी की जगह है, लाए। (15:22)*

गुलगुता! इस शब्द की ध्वनि भी भयानक है, जैसे *भूत या पिशाच* शब्द। इसका अर्थ है “खोपड़ी का स्थान।” यरूशलेम आने वाले पर्यटक अभी भी खोपड़ी के आकार की पहाड़ी देख सकते हैं, जिसे कई लोग असली गुलगुता मानते हैं। यह वास्तव में मनुष्यों के लिये अपने सृष्टिकर्ता की हत्या करने और यहूदियों के लिये अपने मसीह की हत्या करने के लिये एक उपयुक्त स्थान था। खोपड़ी एक चेहरे से एक भयानक, मुस्कुराहट वाली समानता रखती है। परन्तु इसमें वह सब कुछ नहीं है जो एक चेहरे को एक चेहरा बनाता है - नाचती हुई आँखें, हिलते हुए होंठ, बदलते भाव, गर्मजोशी और चमक। जो कुछ बचता है वह है दांत और हड्डियाँ और एक व्यंग्यात्मक मुस्कान।

यहीं पर उन्होंने उसे, जीवन और महिमा के प्रभु को, क्रूस पर चढ़ाया था। चारों सुसमाचार लेखक भयानक विवरणों पर जल्दी से चर्चा करते हैं: चुभने वाली कीलें, हथौड़े के वार, जलन, चुभन वाली पीड़ा, क्रूस को ऊपर उठाकर उसके प्रतीक्षारत छेद में गिराए जाने पर होने वाला हिंसक झटका, गर्मी और मक्खियाँ और कष्टदायक प्यास, और ऐंठन वाली मांसपेशियाँ और चीखती हुई नसें। यीशु ने यह सब सहा।

*वहाँ उसे मुर्र मिला हुआ दाखरस देने लगे, परन्तु उस ने नहीं लिया। (15:23)*

यह एक मानवीय रिवाज था जिसे रोमियों ने एक व्यक्ति को क्रूस पर चढ़ाने के भयानक काम में अनुमति दी थी। दोषी को दाखरस का एक कटोरा दिया गया, जिसमें मादक गंधरस मिलाया गया था, ताकि वह पहले अवर्णनीय पीड़ा को कम कर सके। प्रभु ने इसे पीने से इन्कार कर दिया। वह मृत्यु को उसकी सभी अथाह पीड़ाओं में चखने के लिये वहाँ था। उसने अपनी इंद्रियों को भ्रमित करने और अपने मस्तिष्क को स्तब्ध करने से इन्कार कर दिया। वह अपने पिता के काम में लगा हुआ था। खोई हुई मानवजाति के लिये उद्धार प्राप्त करने के दौरान उसके पास अभी भी काम थे। वह एक स्पष्ट मन और अपनी क्षमताओं पर पूर्ण अधिकार चाहता था।

*तब उन्होंने उसको क्रूस पर चढ़ाया और उसके कपड़ों पर चिट्ठियाँ डालकर, कि किस को क्या मिले, उन्हें बाँट लिया। (15:24)*

भयानक काम हो चुका था, इस ग्रह पर अब तक का सबसे भयानक काम - और बढ़ई के औजारों से किया गया। सैनिकों ने अपने किए गए काम से मुँह मोड़ लिया और लूट का माल अपने पास रख लिया। अब लूट को बाँटने का समय आ गया था।

प्रभु के पास इस संसार में जो भी भौतिक वस्तुएँ थीं, वे उसकी पीठ पर पहने गए वस्त्र थे। सैनिकों ने उन्हें आपस में बाँट लिया और फिर उसके बिना सिलवट वाले वस्त्र के लिये चिट्ठियाँ डालीं। यदि वे वस्त्र सुरक्षित रखे गए होते, तो आज उनका कितना अमूल्य मूल्य होता। सम्भवतः समय के साथ रोम की कलीसिया ने उन्हें हासिल कर लिया होता और उन्हें रखने के लिये एक विशाल कलीसिया का निर्माण किया होता, उन्हें आश्चर्यकर्म करने की एक प्रतिष्ठित शक्ति प्रदान की होती, उन वस्त्रो की आराधना के लिये श्रद्धालुओं के लिये तीर्थयात्राओं का आयोजन किया होता , उन लोगों के लिये भोग-विलास का प्रस्ताव दिया होता जो उन्हें रखने वाले मन्दिर में प्रार्थना करते थे, और साथ ही, उनसे बहुत सारा धन कमाया होता। इसके बजाय, अज्ञात नाम या प्रसिद्धि वाले रोमी सैनिकों ने अपना हिस्सा ले लिया और उसके वस्त्र और बागा लूट लिया। फिर, धन्यवाद हो कि वे इस तरह इतिहास से गायब हो गए। परमेश्वर ने यह देखा।

*और एक पहर दिन चढ़ आया था, जब उन्होंने उसको क्रूस पर चढ़ाया। (15:25)*

सुबह के नौ बजे थे, सुबह की बलि का समय, जब उसे क्रूस पर चढ़ाया गया। अगले छह घंटों तक, प्रभु ने अनन्त काल तक पीड़ा और दुःख सहा। पहले तीन घंटों में उसे अपने शत्रुओं के हाथों पीड़ा झेलनी पड़ी। हालाँकि, ये केवल दुःख का आरम्भ था। अंतिम तीन घंटे उसने परमेश्वर के हाथों पीड़ा झेली।

सुबह के नौ बज रहे थे। संसार अपने काम में व्यस्त था। लोग बाज़ारों में सामान खरीद-बेच रहे थे। याजक अपने अनुष्ठान कर रहे थे। मन्दिर में व्यापारी भेड़-बकरियाँ बेच रहे थे और पैसे बदलने वाले अपना लाभ दिखा रहे थे। पाठशालाओं में रब्बी अपने छात्रों को पढ़ा रहे थे। राज्यपाल के महल में पिलातुस सरकार के काम में व्यस्त था या अपनी पत्नी को यह समझाने का प्रयत्न कर रहा था कि उसने एक निर्दोष व्यक्ति की हत्या क्यों की। और यीशु ने क्रूस पर चढ़ने की पहली पीड़ा सहन की। और, हमेशा दूसरों के बारे में सोचते हुए, उसने अपने हृदय में उन लोगों के लिये क्षमा की प्रार्थना की जो उसके पीड़ा के लिये जिम्मेदार थे।

*और उसका दोषपत्र लिखकर उसके ऊपर लगा दिया गया कि “यहूदियों का राजा”। (15:26)*

पिलातुस ने महासभा पर व्यंग्यात्मक कटाक्ष किया। वह इस मामले में शामिल नहीं होना चाहता था। उसकी पत्नी ने उसे इसके विरुद्ध चेतावनी दी थी, और उसके अपने निर्णय ने भी उसे इसके विरुद्ध चेतावनी दी थी, परन्तु यहूदियों ने उसे विवश कर दिया था। एक बार जब देशद्रोह का मुद्दा उठाया गया, तो वह अपनी आत्मा की गहराई में जानता था कि यह केवल समय की बात है कि वह हार मान लेगा। उन्होंने कहा, “यह व्यक्ति हमारा राजा होने का दावा करता है।” उन्होंने आगे कहा, “कैसर को छोड़ हमारा और कोई राजा नहीं है।”

उसने पूछा था, “क्या मैं तुम्हारे राजा को क्रूस पर चढ़ा दूँ?”

वे जीत गए थे। पिलातुस मसीह से अधिक कैसर से डरता था। कैसर किसी प्रतिद्वंद्वी को सहन नहीं करता था। वैसे, एक काम तो वह कर सकता था। वह अंतिम शब्द कह सकता था। अत: उसने प्रभु के आरोप और उपाधि को लिखा और संसार को पढ़ने के लिये तीन भाषाओं में क्रूस पर जड़ दिया: यहूदियों का राजा। इसने महासभा को पागल कर दिया। उन्होंने माँग की कि वह इसे बदल दे, परन्तु, एक बार के लिये, ढुलमुल पिलातुस दृढ़ रहा। उसने कहा, “मैंने जो लिख दिया, सो लिख दिया।” और उसने जो लिखा, वह सच था।

अत: यह था, उसके सिर पर लातीनी, यूनानी और इब्रानी भाषा में लिखा गया - संसार के लिये एक घोषणा कि यहूदियों ने दाऊद के सिंहासन के अंतिम वास्तविक दावेदार के साथ क्या किया था।

**3. अपराधी (15:27-28)**

*उन्होंने उसके साथ दो डाकू, एक उसकी दाहिनी और एक उसकी बाईं ओर क्रूस पर चढ़ाए। [तब पवित्रशास्त्र का वह वचन कि वह अपराधियों के संग गिना गया, पूरा हुआ।] (15:27-28)*

यह उद्धरण यशायाह 53:12 से लिया गया है। यहाँ “डाकू” के लिये शब्द का अर्थ है “लुटेरे।” “अपराधियों” के लिये शब्द का अर्थ है “अधर्मी लोग।” इस प्रकार, यह “चुंगी लेने वालों और पापियों का मित्र” उन लोगों के साथ मर गया जिन्हें वह खोजने और बचाने के लिये आया था। उनमें से एक के लिये वह वास्तव में एक मित्र बन गया। इससे पहले कि यह सब समाप्त हो जाए, यीशु ने उसके लिये स्वर्ग के द्वार खोल दिए। दूसरा तब तक मजाक करता रहा जब तक कि मृत्यु ने उसका मुँह बंद नहीं कर दिया।

**4. भीड़ (15:29-32)**

*और मार्ग में जानेवाले सिर हिला–हिलाकर और यह कहकर उसकी निन्दा करते थे, “वाह! मन्दिर के ढानेवाले, और तीन दिन में बनानेवाले! क्रूस पर से उतर कर अपने आप को बचा ले।” (15:29-30)*

सबसे पहले, *भीड़!* भीड़ से बहुत अधिक अपेक्षा नहीं की जा सकती। क्रूस के पास से “मार्ग में जानेवाले” वे लोग किसी भी युग में गुजरने वाले लोगों की तरह ही थे। वे सभी तरह के स्वभाव के लोग होंगे, जिसमें ऐसे लोग भी शामिल होंगे जो कटहरे में बंधे हुए दुर्भाग्यपूर्ण कैदियों पर मल और मृत बिल्लियाँ फेंकना बहुत मज़ेदार समझते होंगे। कलवरी में, उन्होंने अपने “सिर हिला-हिलाकर” एक मजाक में, “हमने-तुम्हें-पहले-ही-बता-दिया-था” का संकेत किया। वे “उसकी निन्दा करते थे।” इस वाक्यांश का अर्थ है कि वे ईशनिंदा कर रहे थे। वे उन शब्दों को दोहरा रहे थे जो उसके यहूदी परीक्षा से निकले थे। “अच्छा! तो वह यहाँ है, जिस व्यक्ति ने कहा था कि वह मन्दिर को नष्ट कर सकता है और तीन दिनों में इसे बना सकता है! क्या वह नहीं जानता था कि वे उस मन्दिर पर पहले से ही लगभग तिरपन वर्षों से काम कर रहे थे, और यह अभी तक पूरा नहीं हुआ था? वह स्वयं को क्या था? वास्तव में मन्दिर को नष्ट कर देगा! इसे तीन दिनों में बना देगा, क्या वह करेगा? यह तो बकवास है!”

यदि मान भी लिया जाए कि उसने वही कहा था जो उन्होंने गलती से, अपने सारे बुद्धिमानी भरे सिर हिलाने के बाद, समझ लिया था, तो उसके लिये तीन दिन में मन्दिर बनाना कठिन नहीं होता। आखिरकार, उसने छह दिन में एक जगत का निर्माण किया था!

उन्होंने कहा, “क्रूस पर से उतर कर अपने आप को बचा ले।!” बिना यह जाने कि नरक से बचने की उनकी एकमात्र आशा यह थी कि वह जहाँ था, वहीं रहे। प्रभु ने उनकी उपेक्षा की। उन्हें नहेम्याह के महान वचनों में पहले ही उत्तर मिल चुका था, जब सम्बल्लत और गेशेम ने उसे भेजा कि वह जो कर रहा था उसे रोक दे और आकर उनके साथ चर्चा करे। उसने कहा, “मैं तो भारी काम में लगा हूँ, वहाँ नहीं जा सकता; मेरे इसे छोड़कर तुम्हारे पास जाने से वह काम क्यों बन्द रहे?” (नहे. 6:3)।

*इसी रीति से प्रधान याजक भी, शास्त्रियों समेत, आपस में ठट्ठे से कहते थे, “इस ने औरों को बचाया, पर अपने को नहीं बचा सकता। इस्राएल का राजा, मसीह, अब क्रूस पर से उतर आए कि हम देखकर विश्‍वास करें।” और जो उसके साथ क्रूसों पर चढ़ाए गए थे, वे भी उसकी निन्दा करते थे। (15:31-32)*

पहले भीड़, अब *शासक।* शायद विचारहीन भीड़ के लिये कुछ छूट दी जा सकती है, परन्तु इन याजकों और शास्त्रियों के लिये क्या छूट दी जा सकती है? वे अनुष्ठान व्यवस्था और नैतिक व्यवस्था दोनों के कथित विशेषज्ञ थे। उन्हें पवित्रशास्त्र को जानना चाहिए था। वे एक भी नैतिक व्यवस्था नहीं खोज पाए जिसे उसने तोड़ा हो। पूरी बलिदान प्रणाली, सदियों से, उसके क्रूस की ओर संकेत करती रही है। याजक और शास्त्री दोनों को ही उसके चरणों में आराधना करनी चाहिए थी। इसके बजाय, वे वहाँ खड़े होकर उपहास करते रहे।

उन्होंने एक और आश्चर्यकर्म की माँग की। दिन निकलने से पहले, वह सूरज को बुझा देगा, सृष्टि की चट्टानों को हिला देगा, मन्दिर के पर्दे को फाड़ देगा, और कब्रों को चीर देगा। और ये संकेत उन दुष्ट लोगों के लिये बहुत अच्छे थे जो एक मरते हुए व्यक्ति का मजाक उड़ा सकते थे और परमेश्वर के मसीह को गाली दे सकते थे।

फिर वहाँ *लुटेरे* थे। यहाँ तक कि डाकू भी, जो उसके साथ दो क्रूसों पर तड़प रहे थे, उन्हें लगा कि उनके दुष्ट वचनों के लिये उसे निशाना बनाया जा रहा है। सोचिए कि वह वास्तव में कौन था जो उस बीच के काठ पर लटका हुआ था। फिर सोचिए कि अपराधियों ने भी उसके चेहरे पर अपमान करना उचित समझा।

इस तरह के व्यवहार के लिये एकमात्र स्पष्टीकरण यह है कि यह शैतान के द्वारा प्रेरित था। शैतान अपनी प्रधानताओं और शक्तियों के साथ क्रूस पर था, उद्धारकर्ता की पीड़ाओं पर प्रसन्नता मना रहा था, लोगों को केवल द्वेष से प्रेरित होकर अनन्त परमेश्वर का अपमान और उपहास करने के लिये उकसा रहा था। शैतान की ये “प्रधानताएँ और शक्तियाँ” जल्द ही एक अलग गीत गाएँगी (कुलुस्सियों 2:15)।

**5. पुकार (15:33-37):**

*दोपहर होने पर सारे देश में अन्धियारा छा गया, और तीसरे पहर तक रहा। (15:33)*

दोपहर के समय, सूरज ढल गया। दान से लेकर बेर्शेबा तक, नदी से लेकर समुद्र तक, हर नगर, कस्बे और बस्ती में, हर घाटी में, और हर पहाड़ी पर अंधकार छाया हुआ था। लोग अपने घरों में दुबके हुए थे, यह सोचकर कि संसार का अंत आ गया है। सृष्टि का कार्य उजियाले में किया गया था (उत्पत्ति 1:3); छुटकारे का कार्य अंधकार में किया गया था। और वह अंधकार कितना बड़ा और भयानक था! यह ऐसा अंधकार था, जिसने मिस्र को ढक लिया था, ऐसा अंधकार जिसे महसूस किया जा सकता था (निर्गमन 10:21), ऐसा अंधकार जिसने अब्राहम को अभिभूत कर दिया था, “एक बड़े अंधकार की भयावहता” (उत्पत्ति 15:12)। अंधकार दोपहर तीन बजे तक रहा, जो शाम की बलि का समय था।

*तीसरे पहर यीशु ने बड़े शब्द से पुकार कर कहा, “इलोई, इलोई, लमा शबक्‍तनी?” जिसका अर्थ यह है, “हे मेरे परमेश्‍वर, हे मेरे परमेश्‍वर, तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया?” (15:34)*

यह भजन 22 से अरामी भाषा का एक उद्धरण था। हम यह नहीं समझ सकते कि अंधकार के उन घंटों में प्रभु ने क्या सहा होगा जब वह, जो पाप से अज्ञात था, हमारे लिये पाप बन गया (2 कुरिं. 5:21)। उन भयानक घंटों के दौरान, परमेश्वर ने हमारे ईश्वरीय प्रतिस्थापन पर पूरे संसार के पाप का आरोप लगाया। यह उसके सभी दु:खों का चरम था। यह अंतिम परीक्षा की सम्भावना थी जिसने उसे गतसमनी में अभिभूत कर दिया था। यह परम भयावहता थी - पाप बना दिया जाना। प्रभु एक वीर व्यक्ति था। वह बिना कुछ कहे क्रूस पर चढ़ने की पीड़ा सह सकता था। आखिरकार, हजारों लोगों को क्रूस पर चढ़ने से मृत्यु का सामना करना पड़ा था। रोमी साम्राज्य में उन दिनों यह बहुत आम बात थी। परन्तु पाप बना दिया जाना! परमेश्वर के द्वारा त्याग दिया जाना! यही वह था जिससे वह डरता था। भजन लेखक एलिजाबेथ क्लेफेन इसे इस प्रकार कहती है:

परन्तु छुड़ाए हुओं में से किसी को भी कभी पता नहीं चला

पार किया गया पानी कितना गहरा था,

या वह रात कितनी अंधेरी थी जिससे प्रभु होकर निकला

यहाँ उसने अपनी खोई हुई भेड़ को ढूँढ़ लिया।

*जो पास खड़े थे, उनमें से कुछ ने यह सुनकर कहा, “देखो, वह एलिय्याह को पुकारता है।” और एक ने दौड़कर स्पंज को सिरके में डुबोया, और सरकण्डे पर रखकर उसे चुसाया और कहा, “ठहर जाओ, देखें, एलिय्याह उसे उतारने के लिये आता है कि नहीं।” (15:35-36)*

यह अज्ञात पहरेदार कौन था जिसने क्रूस पर अकेले पीड़ित को इतनी दयालुता से एक पेय, भले ही कड़वा हो, पिलाया? यहाँ “सिरका” शब्द का अर्थ है पानी के साथ मिलाया गया खट्टा दाखरस, जिसे रोमी सैनिक आमतौर पर पीते थे। शायद एक दिन हम जान जाएँगे।

जहाँ तक एलिय्याह का प्रश्न है, वह लगभग एक वर्ष पहले आया और चला गया था। रूपान्तरण के पर्वत पर, उसने और यीशु ने पहले ही क्रूस पर चढ़ने के बारे में चर्चा कर ली थी और इसे एक उपलब्धि के रूप में पहचाना था। यीशु को उसे बचाने के लिये एलिय्याह की आवश्यकता नहीं थी। एलिय्याह स्वर्ग वापस चला गया था, जो क्रूस पर प्रभु के आने वाले विजय के विचारों से भरा हुआ था। प्रभु की पीड़ा भरी पुकार, “एलोई! एलोई!” ने पीड़ाओं को समाप्त कर दिया। अब से, सब महिमा होगी! पाप का प्रश्न हल हो गया था। भुगतान कर दिया गया था। उपलब्धि पूरी हो गई थी (यूहन्ना 19:28-30)। महिमा का पालन होना था।

*तब यीशु ने बड़े शब्द से चिल्‍लाकर प्राण छोड़ दिए। (15:37)*

वह कमजोरी और थकावट से नहीं मरा। यहूदियों ने उसे नहीं मारा। रोमियों ने उसे नहीं मारा। मनुष्य का कोई भी उपाय उसे नहीं मार सकता था। वह जानता था कि अब सब कुछ पूरा हो चुका है, इसलिये उसने अपनी इच्छा के एक जानबूझकर किए गए कार्य के द्वारा अपनी आत्मा को सम्प्रभुतापूर्वक विदा कर दिया। और उसने एक शानदार, विजयी जयघोष के साथ ऐसा किया!

**6. परदा (15:38)**

*और मन्दिर का परदा ऊपर से नीचे तक फटकर दो टुकड़े हो गया। (15:38)*

इस प्रकार, उसने यहूदी धर्म के अंत का संकेत दिया। इब्रानी कैलेंडर पर विभिन्न धार्मिक गतिविधियाँ प्रायश्चित के दिन (लैव्यव्यवस्था 16 अध्याय) पर चरमोत्कर्ष पर पहुँचीं, जब सबसे विस्तृत अनुष्ठान सावधानियों के बाद, महायाजक पर्दे को पार करके परम पवित्र स्थान में चले गए। मन्दिर और तम्बू में परदा लगभग पंद्रह सौ वर्षों से पवित्र स्थान में सभी लोगों को परमेश्वर की उपस्थिति से दूर रखने के लिये खड़ा था। उस अवरोध को केवल महायाजक ही पार कर सकता था, प्रायश्चित के दिन, वर्ष में एक बार, और तब भी, केवल सबसे विस्तृत अनुष्ठान सावधानियों के बाद (लैव्यव्यवस्था 16 अध्याय)। अब वह परदा लटका हुआ था, एक बर्बाद चीथड़ा, यहूदी धर्म को समाप्त कर रहा था और हर जगह सभी लोगों को साहसपूर्वक परमेश्वर की उपस्थिति में आने के लिये आमंत्रित कर रहा था (इब्रानियों 10:19-22)। यहूदियों ने उसे मार डाला था। उसने उनके धर्म को समाप्त कर दिया जैसा कि पुराने नियम में उस धर्म को दर्शाया गया था। एक नया धर्म उसकी जगह लेगा।

**7. अंगीकार (15:39)**

*जो सूबेदार उसके सामने खड़ा था, जब उसे यूँ चिल्‍लाकर प्राण छोड़ते हुए देखा, तो उसने कहा, “सचमुच यह मनुष्य, परमेश्‍वर का पुत्र था!” (15:39)*

क्रूस पर चढ़ाए जाने से मृत्यु सामान्यतः एक लम्बी, धीमी, विलम्बित मृत्यु होती थी और आमतौर पर थकावट का अंतिम परिणाम होती थी। जिन लोगों को क्रूस पर कीलों से ठोंका जाता था, वे आधे दर्जन घंटों के भीतर और अपनी इच्छा से नहीं मरते थे। इसमें कोई संदेह नहीं कि सूबेदार, जैसा कि मत्ती बताता है (मत्ती 27:45-54), अंधकार, भूकम्प, फटे हुए पर्दे और खुली कब्रों से प्रभावित था। परन्तु जिस बात ने उसे सबसे अधिक प्रभावित किया, वह था उस क्षण और उसकी मृत्यु के तरीके पर मसीह का पूर्ण प्रभुत्व। उसने कहा, “यह परमेश्वर का पुत्र था!”

**8. साथी (15:40-41)**

*कई स्त्रियाँ भी दूर से देख रही थीं : उन में मरियम मगदलीनी, छोटे याकूब और योसेस की माता मरियम, और सलोमी थीं। जब वह गलील में था तो ये उसके पीछे हो लेती थीं और उसकी सेवाटहल किया करती थीं; और अन्य बहुत सी स्त्रियाँ भी थीं, जो उसके साथ यरूशलेम में आई थीं। (15:40-41)*

मत्ती हमें बताता है कि बहुत सी स्त्रियाँ, गलील की स्त्रियाँ, देख रही थीं (मत्ती 27:54)। वे पुरुषों से अधिक वीर थीं; स्त्रियाँ उससे अधिक प्रेम करती थीं। उन्होंने प्रभु की भयानक मृत्यु को कुछ दूरी से चुपके से देखा, जहाँ वे भीड़ की अश्लीलता और याजकों की सक्रिय दुर्भावना से सुरक्षित थीं।

मरियम मगदलीनी वहाँ थी, एक स्त्री जिसमें से यीशु ने सात दुष्टात्माओं को निकाला था और जो उसके बाद, प्रभु की सबसे समर्पित शिष्याओं में से एक बन गई। दूसरी क्लोपास (या क्लियोफ़ास) की पत्नी मरियम प्रतीत होती है। वह और उसका पति दोनों ही प्रभु के अनुयायी थे। एक और स्त्री जिसका नाम मरकुस ने सलोमी बताया, वह जब्दी की पत्नी और प्रभु के दो चेलों, याकूब और यूहन्ना की माता थी।

ये स्त्रियाँ प्रभु से प्रेम करती थीं। वे उसके वचनों पर टिकी हुई थीं, उसके आश्चर्यकर्मों से रोमांचित थीं, उसके चरित्र से बहुत आकर्षित थीं, और उसके कार्यकलापों का उत्सुकता से अनुसरण करती थीं। हालाँकि, सलोमी ने गलती से प्रभु के *राज्याभिषेक के* दिन का पूर्वानुमान लगा लिया था (मत्ती 20:21)। उसके *क्रूस पर चढ़ने* के दिनसे वे सभी कितने दुःखी हुए होंगे। सब कुछ अचानक हुआ था। बस एक या दो दिन पहले, वह मन्दिर में निर्भीकता से शिक्षा दे रहा था। उसने लाज़र को मरे हुओं में से जीवित करके नगर और महासभा को हिला दिया था। यरूशलेम में उसके विजयी प्रवेश ने उनकी आशाएँ जगा दी थीं।

उसकी प्रशंसा करने और अपने पुत्रों को उसकी सेवा में देने से संतुष्ट न होकर, इन स्त्रियों ने उसकी “सेवा” की थी। उन्होंने उसे और उसके चेलों को आर्थिक रूप से सहायता प्रदान की। उन्होंने उसे वह सेवा प्रदान की जो उनके लिये सम्भव थी, उसकी सहायता करने के लिये काम किया; नि:संदेह, उसे और उसके चेलों को अपने घरों में आतिथ्य प्रदान किया; और शायद उनके कपड़े धोने या उनके लिये भोजन तैयार करने का काम किया।

और यह सब इस तरह समाप्त हुआ था - एक खोपड़ी के आकार की पहाड़ी पर एक रोमी क्रूस और इस्राएल के राजा को महायाजक की योजनाओं और षड्यंत्रों के द्वारा वहाँ लाया गया, वही व्यक्ति जिसे उसे सिंहासन पर लाने में सबसे आगे होना चाहिए था।

**9. सलाहकार (15:42-46):**

*जब संध्या हो गई तो इसलिये कि तैयारी का दिन था, जो सब्त के एक दिन पहले होता है। (15:42)*

वास्तविक फसह निसान के पंद्रहवें दिन मनाया गया था। फसह से एक दिन पहले, चौदहवाँ दिन “तैयारी” का दिन था, जिस दिन फसह के मेम्ने को मारा जाता था। दैनिक बलिदान छठे घंटे (दोपहर) पर मारा जाता था; दैनिक बलिदान सातवें घंटे पर चढ़ाया जाता था। फसह मेम्नों की हत्या उसके ठीक बाद आरम्भ हुई - तब प्रभु चार घंटे तक क्रूस पर रहा होगा। इस विशेष सब्त के दिन उस समय पूरे देश में अंधकार छाया हुआ था। प्रभु की मृत्यु नौवें घंटे (दोपहर 3 बजे) पर हुई। “उच्च” दिन (पर्व का पहला दिन) सूर्यास्त के समय आरम्भ हुआ। उन्हें मसीह को उस क्रूस से उतारकर उसकी कब्र में ले जाने के लिये जल्दी करनी पड़ी। सम्भवतः उसे सूर्यास्त (लगभग शाम 6 बजे) से पहले गाड़ा गया था।

*अरिमतिया का रहनेवाला यूसुफ आया, जो महासभा का सदस्य था और आप भी परमेश्‍वर के राज्य की बाट जोहता था। वह हियाव करके पिलातुस के पास गया और यीशु का शव माँगा। (15:43)*

यहूदियों ने पहले ही तीन क्रूस पर चढ़ाए गए लोगों के शवों को उच्च सब्त के दिन के आरम्भ से पहले ही हटाने के लिये कदम उठा लिये थे। उस शव को हटाना सम्भव बनाने के लिये उनकी मृत्यु को जल्दी किया जाना था। नि:संदेह, यदि अधिकारियों ने साहस किया होता, तो वे प्रभु के शरीर को नरक की आग में फेंकना पसंद करते, जहाँ अपशिष्ट भस्म करने वाली आग हमेशा जलती रहती थी। किसी भी मामले में, उन्होंने उसे एक आम अपराधी की कब्र में फेंकने का प्रस्ताव रखा। हालाँकि, अरिमतिया के यूसुफ ने उन्हें विफल कर दिया, जो एक धनी व्यक्ति और महासभा का सदस्य था। उसने, नीकुदेमुस (यूहन्ना 3 अध्याय) के साथ, यीशु की हत्या की व्यवस्था करने में महासभा के बुरे कामों से असहमति जताई थी।

यह यूसुफ के द्वारा उठाया गया एक साहसिक कदम था। अब वह खुलेआम अपने सहकर्मियों से अलग हो गया। वह साहस जुटाकर पिलातुस से मिलने गया। यह एक साहसिक कदम था क्योंकि आखिरकार पिलातुस ने यीशु को इस आधार पर दण्ड सुनाया था कि वह एक धोखेबाज था। हालाँकि, अब तक पिलातुस को इस पूरे मामले में अपनी स्वयं की अप्रिय भूमिका के बारे में दोबारा सोचना पड़ रहा था। उसने इस धनी और प्रभावशाली यहूदी को तुरन्त अपने पास आने की अनुमति दे दी। यूसुफ सीधे मुद्दे पर आया: क्या वह यीशु के शव को एक सभ्य अंतिम संस्कार देने के लिये ले सकता है?

*पिलातुस को आश्‍चर्य हुआ कि वह इतने शीघ्र मर गया; और उसने सूबेदार को बुलाकर पूछा, “क्या उसको मरे हुए देर हुई?” जब उसने सूबेदार के द्वारा हाल जान लिया, तो शव यूसुफ को दिला दिया। (15:44-45)*

पिलातुस भी यीशु की अचानक मृत्यु पर सूबेदार की तरह ही आश्चर्यचकित था। उसने पुरुषत्व का ऐसा शानदार नमूना कभी नहीं देखा था। सामान्य घटनाओं के अनुसार, प्रभु को उस क्रूस पर कई दिनों तक रहना चाहिए था। जैसे ही पिलातुस सूबेदार के समाचार से संतुष्ट हुआ, तो उसने वह शव को यूसुफ को दे दिया। यह महासभा से बदला लेने का एक और तरीका था। “दिया” शब्द का अर्थ है कि उसने वह शव उसे उपहार में दिया। नया नियम में इस शब्द का उपयोग केवल एक और जगह पर किया गया है, जहाँ हमें बताया गया है कि परमेश्वर ने हमें क्या *दिया* है - “जीवन और भक्ति से सम्बन्धित सभी बातें,” और “अत्यंत महान और बहुमूल्य प्रतिज्ञाएँ” (2 पतरस 1:3-4)। पिलातुस ने यूसुफ को एक शव भेंट किया। परमेश्वर हमें आत्मिक और अनन्त जीवन का उपहार देता है - यह सब कलवरी के कारण है।

*तब उसने मलमल की एक चादर मोल ली, और शव को उतारकर उस चादर में लपेटा, और एक कब्र में जो चट्टान में खोदी गई थी रखा, और कब्र के द्वार पर एक पत्थर लुढ़का दिया। (15:46)*

कई वर्ष पहले, यूसुफ ने यरूशलेम में एक कब्र के लिये उपयुक्त भूमि का एक टुकड़ा खरीदा था। ऐसा लगता है कि क्रूस पर चढ़ाए जाने के समय भी इस पर काम चल रहा था। चट्टान से बनी यह कब्र गुलगुता के पास एक बगीचे में स्थित थी। इस कब्र में उसके और उसके परिवार के सदस्यों के अवशेष रखे जाने थे।

जब उसने निराशा के साथ महासभा की दुष्ट चालों को देखा और यीशु के शव को जब्त करने और उसे अपमानजनक तरीके से गाड़ने की उनकी नवीनतम योजना को सुना, तो उसने तुरन्त निर्णय लिया: वह यीशु को अपनी कब्र दे देगा। और उसने ऐसा ही किया।

इसके अलावा, उसने महंगी मलमल की चादरें उपलब्ध करवाईं जिसमें यीशु के घायल शव को लपेटा गया था जब उसे प्रेम से, देखभाल करने वाले हाथों से क्रूस से उतारा गया था। इस प्रकार, उसने एक प्राचीन भविष्यद्वाणी के वचनों को पूरा करने में सहायता की, शायद जानबूझकर या शायद अनजाने में: “और उसने अपनी कब्र दुष्टों के साथ बनाई” - या, “उसकी कब्र भी दुष्‍टों के संग ठहराई गई,” जैसा कि कुछ लोग कहते हैं - “और मृत्यु के समय वह धनवान का संगी हुआ” (यशायाह 53:9)।

इस प्रकार, यह हुआ कि, अरिमतिया के यूसुफ नामक इस व्यक्ति के कारण, प्रभु को एक धनी व्यक्ति की कब्र में सम्मानपूर्वक गाड़ा गया।

**10. टिप्पणी (15:47)**

*मरियम मगदलीनी और योसेस की माता मरियम देख रही थीं कि वह कहाँ रखा गया है। (15:47)*

यहाँ “देख रही थीं” शब्द से पता चलता है कि वे ध्यान से देख रही थीं कि उनके प्रिय को कहाँ गाड़ा गया था। उच्च सब्त ने गाड़ने की प्रक्रिया को अचानक समाप्त कर दिया था। कब्र को जल्दबाजी में बंद कर दिया गया और फिर पिलातुस ने अचानक महासभा की शंकाओं को दूर करने के लिये उस पर मुहर लगा दी। कुछ काम अभी भी किए जाने की आवश्यकता थी। नीकुदेमुस ने बहुत सारे मसाले उपलब्ध करवाए थे और शव को जल्दबाजी में सुगंधित किया गया था। उन्हें शव का अभिषेक पूरा करने के लिये जल्द से जल्द वापस आना था, परन्तु इसके लिये प्रतीक्षा करना होगा। कम से कम, उन्हें पता था कि उसका शव कहाँ है।

**खंड 5—रूपरेखा**

**खंड 5: कलवरी के अपराध को साबित करना (16:1-20)**

1. कब्र पर विजय पाना (16:1-14)
   1. उसका पुनरुत्थान (16:1-8)
      1. कब्र पर आई स्त्रियाँ (16:1-4)
         1. उनकी इच्छा (16:1)
            1. उनकी पहचान (16:1a)
            2. उनकी मंशा (16:1b)
         2. उनकी शंकाएँ (16:2-4)
            1. उनकी शंकाओं पर चर्चा (16:2-3)

दिन का समय (16:2)

उनके मार्ग में आने वाली परेशानियाँ (16:3)

* + - * 1. उनके संदेह दूर हो गए (16:4)
    1. कब्र पर भयभीत स्त्रियाँ (16:5-8)
       1. उन्होंने क्या साहस किया (16:5a)
       2. उन्होंने क्या समझा (16:5b)
       3. उन्होंने क्या पाया (16:6-7)
          1. स्थान (16:6)
          2. योजना (16:7)

उन्हें किसको बताना चाहिए (16:7a)

उन्हें क्या बताना चाहिए (16:7b)

* + - 1. उन्होंने क्या किया (16:8)
  1. उनकी प्रतिक्रिया (16:9-14)
     1. चेलों का अविश्वास दर्ज किया गया (16:9-13)
        1. पहली मुलाकात (16:9-11)
           1. मरियम की प्रभु से मुलाकात (16:9)
           2. मरियम की पुरुषों से मुलाकात (16:10-11)

उनकी निराशा का वर्णन (16:10)

उनके अविश्वास का वर्णन (16:11)

* + - 1. आगे की मुलाकात (16:12-13)
         1. उन दोनों पर पुनरुत्थान का तथ्य प्रकट किया गया (16:12)
         2. दोनों के द्वारा पुनरुत्थान का तथ्य बताया गया (16:13)

उनकी कहानी का वर्णन (16:13a)

उनकी कहानी अस्वीकार कर दी गई (16:13b)

* + 1. चेलों के अविश्वास की निन्दा (16:14)
       1. प्रभु का अचानक उनके सामने प्रकट होना (16:14a)
       2. प्रभु की उनको दी गई दुःखद चेतावनी (16:14b)

1. पृथ्वी पर विजय प्राप्त करना (16:15-20)
   1. महान आदेश दिया जाना (16:15-18)
      1. सरल संदेश (16:15-16)
         1. संसार तक पहुँचना (16:15)
         2. वचन का प्रचार करना (16:16)
            1. विश्वास करने का महत्व (16:16a)
            2. बपतिस्मा का महत्व (16:16b)
      2. सहायक आश्चर्यकर्म (16:17-18)
         1. ईश्वरीय सामर्थ्य प्रदान करना (16:17)
            1. अलौकिक रूप से शत्रु को आदेश देना (16:17a)
            2. अलौकिक रूप से विश्‍वास का संचार करना (16:17b)
         2. ईश्वरीय सुरक्षा महसूस हुई (16:18)
            1. बिना संदेह के फंदे हानिरहित हैं ([16:18a-b](file:///Z:\Finished%20CROSS%20Goods\SOURCE\PhillipsCmty\ExpMark\source\%25server%25ref=Mark%2016:18) )

विषैला प्राणी (16:18a)

विष का कटोरा (16:18b)

* + - * 1. अनिर्दिष्ट बीमारियाँ चंगी की जाएँगी (16:18c)
  1. महिमामयी मसीह का स्वर्गारोहण (16:19-20)
     1. क्या रोमांच है (16:19a)
     2. कैसा सिंहासन है (16:19b)
     3. कैसी भीड़ है (16:20)
        1. आज्ञाकारी लोग (16:20a)
        2. विजयी लोग (16:20b)
           1. अद्भुत रहस्य (16:20b-d)

संसार पर सुसमाचार प्रचार किया (16:20b)

काम ने ऊर्जा प्रदान की (16:20c)

वचन पर जोर दिया गया (16:20d)

* + - * 1. अद्भुत सफलता (16:20e)

**खंड 5: कलवरी के अपराध को साबित करना (16:1-20)**

**क. कब्र पर विजय पाना (16:1-14)**

**1. उसका पुनरुत्थान (16:1-8)**

सबसे पहले हम *कब्र पर आने वाली स्त्रियों* पर ध्यान देते हैं(16:1-4):

*जब सब्त का दिन बीत गया, तो मरियम मगदलीनी, और याकूब की माता मरियम, और सलोमी ने सुगन्धित वस्तुएँ मोल लीं कि आकर उस पर मलें। (16:1)*

अब संदर्भ साप्ताहिक सब्त का है, तैयारी के दिन से तीन दिन और तीन रातें, जब उसे गाड़ा गया था। स्त्रियों ने सुगंधित मसाले खरीदे, प्रभु के शव को सुगंधित करने के लिये नहीं, जो यूसुफ और नीकुदेमुस ने किया था, बल्कि शव को और अधिक अभिषेक करने के लिये। सम्भवतः, उन्होंने सूर्यास्त के बाद ये अतिरिक्त मसाले खरीदे, जिसने नियमित सब्त को समाप्त कर दिया। यह कार्य प्रभु के प्रति अपने स्वयं के प्रेम को दिखाने का उनका तरीका था। नीकुदेमुस ने वास्तविक शव को सुगंधित करने के लिये पहले से ही पर्याप्त मसाले दे दिए थे।

*सप्‍ताह के पहले दिन बड़े भोर जब सूरज निकला ही था, वे कब्र पर आईं। (16:2)*

उन्हें यह नहीं मालूम था कि अब से सप्ताह का पहला दिन समाप्त किए गए सब्त का स्थान ले लेगा!

तीन दिन और तीन रातों तक पृथ्वी अपने शक्तिशाली सृष्टिकर्ता के नश्वर अवशेषों को अपने अक्ष पर रखती हुई अंतरिक्ष में घूमती रही। ऐसा लगता था कि कुछ भी नहीं बदला है। लोग बिस्तर पर चले गए, उठे और अपनी छोटी-छोटी चिन्ताओं में लग गए। और फिर भी वह महान शव एक पत्थर से बंद कब्र में एक चट्टानी किनारे पर मृत्यु की स्थिति में स्थिर और ठण्डा पड़ा रहा, क्षय की प्रक्रिया से अछूता। और पृथ्वी गोल-गोल घूमती रही।

परन्तु अब सूरज एक नये सप्ताह और एक नये युग के एकदम नये पहले दिन उस कब्र को गले लगा रहा था। सब्त और वह सब जो इसके लिये खड़ा था, वह बीत चुका था। अब से, मनुष्य सब्त में नहीं बल्कि एक उद्धारकर्ता में विश्राम करेंगे (मत्ती 11:28-30; इब्रानियों 4)।

*और आपस में कहती थीं, “हमारे लिये कब्र के द्वार पर से पत्थर कौन लुढ़काएगा?” जब उन्होंने आँख उठाई, तो देखा कि पत्थर लुढ़का हुआ है–वह बहुत ही बड़ा था। (16:3-4)*

कब्र का दरवाजा एक बड़ा और भारी पत्थर का पहिया था। यह एक ढलानदार खाँचे में लगाया गया था, इस तरह से व्यवस्थित किया गया था कि यह ढलान से नीचे चला जाता था। इस कारण, इसे बंद करना जितना आसान था, खोलना उतना ही कठिन था। ढलान के विरुद्ध खाँचे में उस पत्थर को वापस धकेलने के लिये कई शक्तिशाली पुरुषों की आवश्यकता होगी। इसने इन स्त्रियों को उनकी योजना के लिये व्यावहारिक रूप से दुर्गम बाधा उत्पन्न की। ऐसा लगता है कि उन्हें न तो सशस्त्र पहरेदारों की चिन्ता थी और न ही कब्र पर राज्यपाल की मुहर की। उन्हें शायद उन बातों के बारे में पता नहीं था।

हालाँकि, हम इन वीर स्त्रियों की प्रतिक्रिया की कल्पना कर सकते हैं, जब उन्होंने देखा कि उनसे पहले भी कोई वहाँ गया था और बाधा पहले ही हटा दी गई थी। कब्र खुली थी!

मरकुस कहता है कि उन्होंने “आँख उठाई” और *देखा* - एक ऐसा शब्द जो ध्यान, आश्चर्य और आनन्द के विचारों को व्यक्त करता है। उनकी समस्या हल हो गई थी। उन्हें पुनरुत्थान के बारे में कोई विचार नहीं था। बहुत कम लोगों ने प्रभु के उस बारे में कहे गए वचनों को गम्भीरता से लिया था। परन्तु बैतनिय्याह की मरियम ने (यूहन्ना 12 अध्याय), और प्रभु के शत्रुओं ने भी इसे गम्भीरता से लिया । , हालाँकि प्रभु ने उन्हें बार-बार इसकी अपेक्षा करने के लिये कहा था, चेले स्वयं इससे पूरी तरह से हैरान थे और जब बढ़ते प्रमाणों का सामना किया, तब भी उन्होंने इस पर विश्वास करने से इन्कार कर दिया। उन्हें बहुत समझाने की आवश्यकता थी।

आगे हम *कब्र पर भयभीत स्त्रियों को* देखते हैं(16:5-8):

*कब्र के भीतर जाकर उन्होंने एक जवान को श्‍वेत वस्त्र पहने हुए दाहिनी ओर बैठे देखा, और बहुत चकित हुईं। (16:5)*

यहाँ “वस्त्र” के लिये शब्द पाँवों तक पहुँचने वाले और भूमि को छूते हुए लटकने वाले, वैभवशाली वस्त्र का वर्णन करता है। यह सुंदरता के वस्त्र को दर्शाता है, जो वैभव और गम्भीरता से जुड़ा हुआ है। यह उस वस्त्र का वर्णन करने के लिये एक उपयुक्त शब्द है जिसे एक स्वर्गदूत ने पहना होगा। इस एक के प्रकट होने से स्त्रियों में “भय” भर गया। हम पहले ही इस शब्द को रूपान्तरण (9:15) और गतसमनी (14:33) में प्रभु के अनुभव के सम्बन्ध में देख चुके हैं। स्त्रियों ने जो देखा वह एक स्वर्गदूत था। कुछ लोगों ने सोचा है कि यह आगंतुक यूहन्ना मरकुस था और उसने पत्थर को लुढ़का दिया था, परन्तु यूहन्ना मरकुस ने उन्हें आश्चर्य और विस्मय से नहीं भरा होगा। यह दूसरे संसार से आया एक आगंतुक था।

*उसने उनसे कहा, “चकित मत हो, तुम यीशु नासरी को, जो क्रूस पर चढ़ाया गया था, ढूँढ़ती हो। वह जी उठा है, यहाँ नहीं है; देखो, यही वह स्थान है, जहाँ उन्होंने उसे रखा था। (16:6)*

स्वर्गदूतों के आने से उनका डर दूर हो गया। वह जानता था कि वे क्यों आए थे। उसने पुनरुत्थान का शुभ संदेश सुनाया, ठीक वैसे ही जैसे तीस वर्ष पहले स्वर्गदूतों ने देहधारण का शुभ संदेश सुनाया था। चेलों ने अपने अविश्वास के कारण कितना बड़ा अनुभव खो दिया! उन्हें बताया गया था कि वह कितने समय तक कब्र में रहने की मंशा रखता है - तीन दिन और तीन रात। वे स्वयं ही कब्र में एक शरीर के रूप में आ सकते थे, उसके पुनरुत्थान की उत्सुकता से प्रतीक्षा में, कब्र पर उसकी विजय का स्वागत करने के लिये एक स्वागत समिति रूप में। स्वर्गदूतों को मानवीय अविश्वास पर कितना आश्चर्य हुआ होगा।

स्वर्गदूत ने स्त्रियों को कब्र में आने के लिये आमंत्रित किया, जहाँ अब वह पहरा दे रहा था, और स्वयं देख ले कि यह खाली है। वे भीतर चली गईं। वहाँ कब्र के कपड़े और अंगोछे का प्रमाण था, जिसने कुछ ही समय बाद प्रेरित यूहन्ना को बहुत प्रभावित किया (यूहन्ना 20:3-8)। इस बारे में कोई संदेह नहीं हो सकता था: प्रभु वास्तव में जी उठा था, मसाले से लथपथ, कपड़े के बीच से, जो अब एक उल्लेखनीय पुनरुत्थान की मूक गवाही के रूप में मौजूद थे।

*परन्तु तुम जाओ, और उसके चेलों और पतरस से कहो कि वह तुम से पहले गलील को जाएगा। जैसा उसने तुम से कहा था, तुम वहीं उसे देखोगे। ” और वे निकलकर कब्र से भाग गईं; क्योंकि कँपकँपी और घबराहट उन पर छा गई थी; और उन्होंने किसी से कुछ न कहा, क्योंकि डरती थीं। (16:7-8)*

जैसे ही खाली कब्र की सच्चाई उन पर हावी हुई, स्त्रियाँ भाग खड़ी हुईं। स्वर्गदूतों की एक छोटी सी संगति ने बहुत सहायता की! हालाँकि, उसके शब्द अभी भी उनके कानों में गूँज रहे थे। उन्हें असहाय, दुःखी, विवेक से पीड़ित पतरस को एक आश्वस्त करने वाला वचन बताना था। उन्हें चेलों से कहना था कि वे यरूशलेम के खतरों से दूर गलील वापस चले जाएँ। यीशु वहाँ उनसे मिलेगा। हालाँकि, कुछ समय के लिये, वे बहुत भ्रमित और भयभीत थे और कुछ भी करने के लिये तैयार नहीं थे। यहाँ तक कि जब उनमें से कम से कम एक (मरियम मगदलीनी) ने चेलों को खाली कब्र के बारे में बताया, तो उन्होंने उस पर विश्वास नहीं किया (11 आयत)।

कुछ लोग मरकुस की अंतिम एक दर्जन आयतों को तुरन्त खारिज कर देते हैं। ये मुद्दे अत्यधिक तकनीकी हैं और इस टिप्पणी के दायरे से बाहर हैं। हालाँकि, हम यह ध्यान दे सकते हैं कि पुराने संस्करणों में ये आयतें बड़ी संख्या में मिलती हैं। सीरियाई अपने विभिन्न रूपों (“पेशिटो” और “क्यूरेटोनियन सीरियाई”) में ये पद शामिल हैं। जेरोम (जिनके पास आज उपलब्ध आमतौर पर पुराने यूनानी भाषा MSS तक पहुँच थी) ने उन्हें वुल्गेट में शामिल किया है, जो वेटस इटाला का एक संशोधन है, जो दूसरी शताब्दी का है और इसमें भी ये आयतें शामिल हैं। मिस्र के संस्करणों (मेम्फिटिक और थेबियाक) में ये आयतें शामिल हैं। अर्मेनियाई, इथियोपियाई और जॉर्जियाई संस्करणों में ये आयतें शामिल हैं। कई कलीसियाओं के पूर्वज इनका उल्लेख करते हैं - उदाहरण के लिये, पापियास, जस्टिन मार्टियर, आयरेनियस, होपोलिटस, यूसेबियस, क्रिसोस्टम, ऑगस्टीन, नेस्टोरियस और अलेक्जेंड्रिया के सिरिल।[1]

इन आयतों की समस्या सामर्थ्य वाले वरदानों (16:17-18) के उल्लेख से उत्पन्न होती है, जिन्हें यरूशलेम के पतन के बाद बंद कर दिया गया था। ऐसा होने के संकेत 1 कुरिन्थियों 13:8-13 में पाए जाते हैं। अगले सौ वर्षों तक, कलीसिया के इतिहास के बारे में बहुत कम या कुछ भी ज्ञात नहीं है। संगठित मसीहियत, जैसा कि हम आज देखते हैं, बाद में आरम्भ नहीं हुई। बाद के विद्वानों ने, यूनानी भाषा पाण्डुलिपियों को लिपिबद्ध करते हुए, इन संक्रमणकालीन वरदानों का कोई निशान नहीं देखा। उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि इन आयतों के बारे में कुछ संदेह वाली बात होनी चाहिए, अत: उन्होंने उन्हें छोड़ दिया!

आज हमारे सामने विपरीत समस्या है। बहुत से लोग इन वरदानों को पाने के लिये दृढ़ संकल्पित हैं, भले ही पवित्र आत्मा ने उन्हें बंद कर दिया हो। वे उन्हें पाने के लिये सभी चरम सीमाओं और सबसे खतरनाक उपायों तक जाते हैं। उनके दावे, गर्व और अतिरेक कई लोगों को धोखा देते हैं। हालाँकि, हम इन आयतों को उनके वास्तविक मूल्य पर परमेश्वर के द्वारा दिए गए वचन के भाग के रूप में स्वीकार करते हैं।

**2. उनकी प्रतिक्रिया (16:9-14)**

*सप्‍ताह के पहले दिन भोर होते ही वह जी उठ कर पहले–पहल मरियम मगदलीनी को जिसमें से उसने सात दुष्‍टात्माएँ निकाली थीं, दिखाई दिया। (16:9)*

यूहन्ना इस प्रकटीकरण के बारे में बताता है। खाली कब्र के प्रमाण ने मरियम को अभिभूत कर दिया। स्वर्गदूत के वचन के बावजूद, वह इस निष्कर्ष पर पहुँच गई कि किसी ने शव को हटा दिया है। उसने स्वर्गदूत से मुँह मोड़ लिया! स्वर्गदूतों का उसके लिये क्या अर्थ था? यीशु ही वह था जिसे वह चाहती थी, और अब उसका शव भी गायब हो गया था।

स्वर्गदूत की ओर पीठ करके उसने यीशु को देखा! परन्तु वह उसे पहचान नहीं पाई; उसने सोचा कि वह माली है। उसने उससे पूछा कि क्या वह जानता है कि वे शव को कहाँ ले गए हैं। उसने केवल एक शब्द कहा: “हे मरियम!” तुरन्त, वह उसे पहचान गई, और “स्वर्ग नीचे उतर आया और महिमा ने उसकी आत्मा को भर दिया।” उसने तुरन्त उसे आज्ञा दी कि वह जाकर चेलों को बताए कि वह जीवित है!

*उसने जाकर यीशु के साथियों को जो शोक में डूबे हुए थे और रो रहे थे, समाचार दिया। उन्होंने यह सुनकर कि वह जीवित है और उसने उसे देखा है, प्रतीति न की। (16:10-11)*

चेले अभी भी अपनी सारी अपेक्षाओं के अचानक समाप्त होने से सदमे और दुःख की पीड़ा में थे। जल्दबाजी में की गई परीक्षा, जल्दी-जल्दी मृत्युदण्ड, जल्दी-जल्दी मृत्यु, जल्दबाजी में गाड़ा जाना - तब टूटे हुए हृदयों और बिखरी हुई अपेक्षाओं के अलावा कुछ नहीं था।

परन्तु जब मरियम मगदलीनी ने, जो उसके पुनरुत्थान के बाद उसे देखने वाली पहली स्त्री थी, यह समाचार दिया, तो उन्होंने इसे तुरन्त बकवास मान लिया।

*इसके बाद वह दूसरे रूप में उनमें से दो को जब वे गाँव की ओर जा रहे थे, दिखाई दिया। उन्होंने भी जाकर दूसरों को समाचार दिया, परन्तु उन्होंने उनकी भी प्रतीति न की। (16:12-13)*

लूका ने पूरी कहानी बताई (लूका 24:13-33)। दो लोग (सम्भवतः पति-पत्नी) इम्माऊस गाँव जा रहे थे। अपनी सात या आठ मील की यात्रा पर, वे पिछले कुछ दिनों की घटनाओं के बारे में दुःखी होकर बात कर रहे थे, तभी यीशु उनके साथ आ गया, उनसे बातचीत की और फिर उन्हें पवित्रशास्त्र की व्याख्या की। उनके हृदयों में प्रसन्नता थी, हालाँकि वे उसे पहचान नहीं पाए, जब तक कि यात्रा के अंत में रात के खाने पर, उनके किसी परिचित हाव-भाव ने उनकी आँखें नहीं खोल दीं। वे तुरन्त वापस यरूशलेम गए और दुःखी चेलों को बताया कि यीशु वास्तव में जीवित हैं! हालाँकि, यह एक व्यर्थ यात्रा थी, क्योंकि चेलों ने उन पर विश्वास करने से इन्कार कर दिया, उनका अविश्वास इतना हठीला था।

*पीछे वह उन ग्यारहों को भी, जब वे भोजन करने बैठे थे दिखाई दिया, और उनके अविश्‍वास और मन की कठोरता पर उलाहना दिया, क्योंकि जिन्होंने उसके जी उठने के बाद उसे देखा था, इन्होंने उनकी प्रतीति न की थी। (16:14)*

नि:संदेह, यही वह अवसर था जब वह उनके बीच में प्रकट हुआ, मछली और शहद खाया ताकि यह प्रदर्शित हो सके कि उसका शरीर वास्तविक था, और फिर, थोड़ी देर बाद, वह गायब हो गया! इससे उनके अविश्वास का प्रभावी अंत हो गया। चूँकि इस अवसर पर सभी ग्यारह चेले उपस्थित थे, इसलिये यह ऐसे प्रकटीकरणों में से दूसरा रहा होगा जिसका उल्लेख मरकुस ने किया है क्योंकि थोमा उस समय मौजूद नहीं था जब वह पहली बार उनके सामने प्रकट हुआ था।

प्रभु ने उन सभी को उनके लगातार अविश्वास के लिये फटकार लगाई। इस अवसर पर, उसने विशेष रूप से थोमा को उसके दृढ़ अज्ञेयवाद के लिये फटकार लगाई (यूहन्ना 20:24-29)।

**ख. पृथ्वी पर विजय प्राप्त करना (16:15-20)**

**1. महान आदेश दिया जाना (16:15-18)**

*और उसने उनसे कहा, “तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्‍टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो। जो विश्‍वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्‍वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा। (16:15-16)*

उद्धार इतने बड़े मूल्य पर खरीदा गया था कि इसे हल्के में नहीं लिया जा सकता। जो लोग विश्वास करते हैं उन्हें बपतिस्मा लेना चाहिए, जिससे वे मसीह की मृत्यु, गाड़े जाने और पुनरुत्थान में उसके साथ अपनी एकता की घोषणा कर सकें। उन्हें सुसमाचार की जानकारी को दूर-दूर तक, पृथ्वी की सबसे दूर की सीमाओं तक फैलाना है। जो लोग विश्वास करने से इन्कार करते हैं उन्हें दोषी ठहराए जाने का सामना करना पड़ेगा। यह दोषी ठहराया जाना उनके अविश्वास पर आधारित है, न कि बपतिस्मा लेने में उनकी विफलता पर। हम बपतिस्मा, लहू या पानी से नहीं बल्कि मसीह के द्वारा बचाए जाते हैं।

*विश्‍वास करनेवालों में ये चिह्न होंगे कि वे मेरे नाम से दुष्‍टात्माओं को निकालेंगे, नई नई भाषा बोलेंगे, साँपों को उठा लेंगे, और यदि वे प्राणनाशक वस्तु भी पी जाएँ तौभी उनकी कुछ हानि न होगी; वे बीमारों पर हाथ रखेंगे, और वे चंगे हो जाएँगे।” (16:17-18)*

ये चिह्न परिवर्तन काल के थे। प्रेरितों के काम की पुस्तक के प्रारम्भिक अध्याय ऐसे निम्नलिखित संकेतों से भरे पड़े हैं। पतरस और पौलुस दोनों ने बीमारों को चंगा किया और मरे हुओं को जीवित किया। प्रारम्भिक कलीसिया में अन्यभाषा का उपयोग आम बात थी; हालाँकि, यह अनिवार्य रूप से अविश्वासी यहूदियों के लिये एक निर्णय और चेतावनी का चिह्न था। पौलुस ने बुरी आत्माओं को बाहर निकाला। एक अवसर पर, उसे एक जहरीले साँप ने काट लिया और उसे कोई हानि नहीं पहुँची। युसेबियस ने ऐसे उदाहरण दर्ज किए हैं जब यूहन्ना और बरनबास दोनों विष पीने के बाद भी सुरक्षित बच गए।[2]

जैसे-जैसे यहूदी जाति अपने देश और विदेश में सुसमाचार को अस्वीकार करने की एक स्थापित नीति में कठोर होती गई, ये चिह्न वरदान लुप्त हो गए। यरूशलेम के विनाश और नये नियम की ग्रंथसूती के पूरा होने के साथ ही वे समाप्त हो गए। उन्होंने यहूदी लोगों के लिये स्पष्ट गवाही देने का अपना उद्देश्य पूरा कर लिया था (1 कुरिं. 1:22)। जब उस गवाही को अस्वीकार कर दिया गया, तो चिह्न वापस ले लिये गए।

**2. महिमामयी मसीह का स्वर्गारोहण (16:19-20)**

*प्रभु यीशु उनसे बातें करने के बाद स्वर्ग पर उठा लिया गया, और परमेश्‍वर की दाहिनी ओर बैठ गया। (16:19)*

जैतून पहाड़ की चोटी से यीशु ने सीधे महिमा में कदम रखा। वह स्वर्गदूतों की जय-जयकार करने वाली पंक्तियों के बीच से अपना मार्ग ढूँढ़कर परमेश्वर के महान श्वेत सिंहासन तक पहुँचा। उसने परमेश्वर के दाहिने हाथ पर अपना स्थान ग्रहण किया, एक मानवीय शरीर में एक मनुष्य, जगत के सिंहासन पर बैठा, वहाँ रहने का हर अधिकार रखता है क्योंकि वह सब पर परमेश्वर है, सदा के लिये धन्य है! वहाँ वह “उसी समय से इसकी बाट जोह रहा है, कि उसके बैरी उसके पाँवों के नीचे की पीढ़ी बनें” (इब्रानियों 10:13)।

*और उन्होंने निकलकर हर जगह प्रचार किया, और प्रभु उनके साथ काम करता रहा, और उन चिह्नों के द्वारा जो साथ साथ होते थे, वचन को दृढ़ करता रहा। आमीन। (16:20)*

प्रभु के चेलों के लिये, वे पिन्तेकुस्त तक यरूशलेम में प्रतीक्षा करते रहे, जैसा कि प्रभु ने उन्हें करने के लिये कहा था। फिर, उनके भीतर और उनके ऊपर उण्डेले गए पवित्र आत्मा के साथ, वे संसार को जीतने के लिये निकल पड़े - “यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक” (प्रेरितों के काम 1:8)।

तब से लेकर अब तक, हर एक देश में, सुसमाचार का शुभ संदेश फैलता रहा है। असंख्य लाखों लोगों को बचाया गया है। ऊँचे सिंहासन पर विराजमान प्रभु ने पवित्र आत्मा के द्वारा अपने नाम के लिये लोगों को बुलाने के कार्य को जारी रखने पर गहरी रूचि से देखा है। सेवक आते हैं और चले जाते हैं, परन्तु काम कभी नहीं रुकता। कभी-कभी हज़ारों की संख्या में, जैसे कि पिन्तेकुस्त के दिन, कभी-कभी अकेले या जोड़े में - यहाँ एक बच्चा अपनी माता के घुटनों पर, वहाँ एक बूढ़ा व्यक्ति जिसका एक पाँव कब्र में है - वे आते हैं। कलीसिया विशाल है। यह “अनन्त काल में निहित है,” जैसा कि सी.एस. लुईस कहते हैं, “यह सभी समय और स्थान में फैली हुई है, और झण्डे वाली सेना की तरह भयानक है।”[3]

इन दिनों में से एक दिन, अंतिम व्यक्ति मसीह के पास आएगा। हाजिरी पूरी हो जाएगी, और प्रभु हम सभी को घर बुलाने के लिये आकाश से उतरेगा।

फिर अन्तिम “आमीन” लिखा जाएगा!